प्रकाशकः—
श्री कन्हैयालाल मूलचन्द
मालिक सद्बोधरत्नाकर कार्यालय
बडाबाजार सागर सी. पी.

※ ※ ※

मुद्रकः—
ईश्वरलाल किसनदास कापड़िया
'जैनविजय प्रिन्टिंग प्रेस' खपाटिया चकला
लक्ष्मीनारायणवाडी, सूरत।

प्रस्तावना।

सज्जनो,

जिस ग्रन्थकी हम प्रस्तावना लिखनेका आरभ करते हैं वह वास्तवमें बहुत ही महत्वका है। ग्रन्थकर्त्ताने इस ग्रन्थकी रचना कर जैनजातिका बड़ा भारी उपकार किया है। इस ग्रन्थके रचियता श्रीयुत विद्वद्वर्य प० रायमल्लजी सा० जयपुरनिवासी हैं। आपके विषयमे बहुत कुछ लिखनेकी हमारी इच्छा थी परन्तु जैनसमाज ऐतिहासिक विषयोंमें सबसे पीछे पडा हुआ है इसी कारण आज कोई किसी आचार्य, विद्वानकी जीवनी लिखना चाहे तो पहले तो उसे सामग्री ही नहीं मिलती, यदि कुछ सामग्री भी मिल गई तो पूरी न मिलनेके कारण पाठकोंको संतोष नहीं होता। ऐतिहासिक विषयोंकी खोज करनेके लिये जिस शिक्षाकी आवश्यकता है हमारे समाजमें सच पूछो तो उसका प्रारम्भ ही नहीं हुआ है। ग्रन्थकर्त्ताकी जीवनीका मैंने बहुत खोज किया, कई ग्रन्थ देखे, कई जगह ढूंढ खोज की किन्तु दुःखका विषय है कि ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थके रचयिता विद्वान्का केवल नाम और ग्राम विदित होनेके सिवाय और कुछ पता न लगा। इतना भी परिचय श्रीयुत मास्टर दरयावसिंहजी सोधिया इन्दौर निवासीद्वारा प्राप्त हुआ। यह ग्रन्थ (ज्ञानानंद श्रावकाचार) जैनियोंका आचार प्रधान ग्रन्थ है इस ग्रन्थकी एक २ प्रति वर्तमान समयमें प्रत्येक जैनीके हाथमें होना आवश्यक है,

विना इसका संस्करण निकाले ऐसा होना असम्भव था इसी लिये मैंने इस ग्रन्थको प्रकाशित करनेका साहस किया है।

ग्रन्थकर्त्ताकी कृतिमे लेशमात्र फेरफार न करके जयपुरी भाषामें इसको जैसाका तैसा छपाया है। इस ग्रन्थके संशोधनमें श्रीयुत पं० बालचन्दजी संघी तथा श्रीयुत मास्टर दीपचन्द्रजीने विशेष सहायता दी इसलिये मैं उनका आभारी होकर उन्हें कोटिशः धन्यवाद देता हूं।

जखौरा जिला झांसी
चैत्र वदी २ सं० १९७१

हितैषी—
मूलचन्द मैनेजर

यह पुस्तक मिलनेका पता—
मूलचन्द मैनेजर
सद्बोधरत्नाकर कार्यालय
बड़ा बाजार, सागर (सी. पी.)

श्री ॐ नमः सिद्धेभ्यः

ज्ञानानन्द श्रावकाचार।

मंगलाचरण।

दोहा।

राजत केवलज्ञान युत परमौदारिक काय।
निरख छवि भवि छकित ह्वै पी रस सहज सुभाय॥१॥
अरहत जी हन अरिनकौं पायो सहज निवास।
ज्ञान ज्योति परगट भई ज्ञेय किये सब ग्रास॥२॥
सकल सिद्ध वन्दौं सुविधि समयसार अविकार।
स्वच्छ स्वछन्द उद्योत नित लख्यो ज्ञान विस्तार॥३॥
ज्ञान स्वच्छ जसु भावमें लोकालोक समाय।
ज्ञेयाकार न परनवे सहज ज्ञान रस पाय॥४॥
अन्त आँचके पाचतें शुद्ध भये शिवराय।
अभेद रूप जे परनवे सहजानंद सुपाय॥५॥
जिन मुखतैं उत्पन्न भई ज्ञानामृत रस धार।
स्वच्छ प्रवाह वहै ललित जग पवित्र करतार॥६॥
जिन मुखतैं उत्पन्न भई सुरति सिन्धुमय सोय।
मो निमित्त अघ हरणतैं सब कारज सिध होय॥७॥
निरविकार निर्ग्रन्थ ए ज्ञान ध्यान रस लीन।

ज्ञासा अंग्रजु दृष्टि धर कर कर्म मल छीन ॥८॥
इह विधि मंगल करनतैं सब विधि मंगल होन ।
होत उदंग्न दूर सब तम ज्यों भानु उद्योत ॥९॥

इसप्रकार मंगलाचरण पूर्वक अपने इष्टदेवको नमस्कार कर ज्ञानानन्द पूरित निज रस नाम शास्त्र ताका अनुभवन करूंगा । सो हे भव्य ! तूं सुन । कैसा है इष्ट देव, अरु कैसा है यह शास्त्र, अरु कैसा हूं मैं सोई कहिये है। देव दोय प्रकार है—अर्हन्त, सिद्ध । गुरू तीन प्रकार है—आचार्य, उपाध्याय, साधु । धर्म एक ही प्रकार है सो विशेषपने भिन्न भिन्न निरूपण करिये है । सो कैसे हैं अर्हन्तदेव परमौदारिक शरीर ताविषे पुरुषाकार आत्मद्रव्य है । बहुरि नाश किया है घातिया कर्ममल जाने अर धोया है आत्मासे कर्मरूपी मैल जाने, अरु अनन्त चतुष्टयको प्राप्त भया है, अरु निराकुलित अनुपम वाधारहित ज्ञान सुरस करि पूर्ण भरया है, अरु लोकालोकको प्रकाशक ज्ञेयरूप नाहीं परनवे है । एक टंकोत्कीर्ण ज्ञायक स्वभावको धरे है, अरु शान्तिक रसकर अत्यन्त तृप्त हैं । क्षुधादि अठारह दोषनसौं रहित हैं । निर्मल (स्वच्छ) ज्ञानका पिंड हैं, जाका निर्मल स्वभाव विषै लोकालोकके चराचर पदार्थ स्वयमेव आन प्रतिबिंब हुवे हैं। मानो भगवानका स्वभाव विषैं पहिले ही ए पदार्थ तिष्ठे था । ताका निर्मल स्वभावकी महिमा वचन अगोचर है । बहुरि कैसे हैं अरहंत देव जैसे साचा विषै रूपा धातुका पिंड निरमापिए है । तैसे अरहंत देव चैतन्य धातुका पिंड परम औदारिक शरीर वि-

है। शरीर न्यारा है अरहत आत्मा द्रव्य न्यारा है ताकौ हुं अजुली जोर नमस्कार करों हौं। वहुरि कैसे हैं परम वीतराग देव अतीन्द्रिय आनंद रसको पीवे है वा आस्वादै है। ताका सुखकी महिमा हम कहवा समर्थ नाहीं। पन छद्मस्थका जानवनै उपमा सभनै है। तीन काल सम्बन्धी वारहा गुनस्थानके धारी मुनि ताके आत्मीक सुखकी जुदी जात है। सो ऐ तौ अतेन्द्रिय क्षायिक सम्पूर्ण स्वाधीन सुख है। अरु छद्मस्थकै इन्द्रियजनित पराधीन किंचित् सुख है। ऐसा निसंदेह है वहुरि कैसे है केवलज्ञानी केवल एक निज स्वच्छ ज्ञानका पुंज है। ता विषै और भी अनंतगुण भरे हैं। वहुरि कैसे है तीर्थंकर देव अपना उपयोगकू अपने स्वभाव विषै गाल दिया है। जैसे लूनकी डली पानी विषै गल जाय त्यो ही केवली भगवानका उपयोग स्वभाव विषै गल गया है। फेरि वाहिज निकसवाने असमर्थ है नियम करि। वहुरि आत्मीक सुख सौ अत्यन्त रत भया है। ताका रस पीवाकर तृप्ति नाहीं होय है वा अत्यंत तृप्ति है और वाका शरीरकी ऐसी सौम्य दृष्टि ध्यानमय अरूप आत्मीक प्रभावकरि सोभै है मानौ भव्य जीवनै उपदेश ही देय है कि रे भव्य जीवो! अपना स्वरूप विषै ऐसै लागौ। विलम्ब मत करो ऐसा शातीक रस पीवौ ऐसे सेन करि भव्य जीवनकू अपना स्वरूप विषै लगावे है। इह निमत्तनै पाय अनेक जीव संसार समुद्रसूं तिरे। अनेक जीव आगे तिरैंगे। वर्तमान विषै तिरते देखिये है। सो ऐसा परम औदारिक शरीरको भी हमारा नमस्कार होहु। जिनेन्द्रदेव है सो तौ आत्मद्रव्य ही हैं परन्तु आत्मद्रव्यके निमित्तते शरीरको भी

स्तुति उचित है । अरु भव्य जीवनै मुख्यपने शरीरकाही उपकार है तातैं स्तुति वा नमस्कार करवौ उचित है । अर जैसे कुला-चलनके मध्य मेरु शोभे है । तैसे गणधरानके विषैं वा इन्द्रोंके विषै श्री भगवान शोभै है । ऐसा श्री अरहंत देवाधिदेव या ग्रन्थकूं पूरा करै ।

आगे श्री सिद्ध परमेष्ठीकी स्तुति महिमा करि अष्ट कर्म हनूं हू । सो कैसे है श्री सिद्ध परम देव जिन धोया है घातिया अघातिया कर्ममल **निपपन्न भया** जैसे सोला वानीका शुद्ध कंचन अंतकी आंचकर पचाया हुवा निषपन्न होय है । तैसे अपनी स्वच्छ शक्ति कर दैदीप्यमान प्रगट भया है स्वरूप जाका । सो प्रगट हीतै मानूं **समस्त ज्ञेयकौ** निगल गया है । वहुरि कैसे है सिद्ध एक एक सिद्धकी अवगाहना विषै अनंत अनत सिद्ध न्यारे न्यारे अपनी अपनी सत्तासहित तिष्टै है । कोऊ सिद्ध महाराज काहु सिद्धसे मिलें नाहीं वहुरि कैसे हैं सिद्ध परम पवित्र हैं । अरु स्वय सुद्ध है अरु आत्मीक स्वभाव विषै लीन हैं । परम अतेंद्री अनुपम बाधा रहित निराकुलित सुरसकू निरत्तर अखंड पीवै है । तामै अंतर नाहीं पडै है । वहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान असंख्यात प्रदेश चेतन्य धातुके पिड निवड घनरूप धरे हैं अरु अमूर्तीक चर्म शरीर है किंचित् ऊन हैं । सर्वज्ञ देवकों प्रत्यक्ष विद्यमान न्यारे न्यारे दीसे हैं वहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान अपना ज्ञायक स्वभावतै प्रगट किया है । अरु समय २ षट् प्रकार हानि वृद्धि रूप अनत अगुरु 'लघु' गुणरूप परनवै हैं । अनंतानंत आत्मीक सुखकों आचरैं हैं । वा आस्वादैं है । अरु तृप्ति नाहीं होय हैं वा अत्यंत

तृप्त होय है। अब कुछ भी चाह रही नाहीं कृत्य कृत्य हुआ कारज करता था सो कर चुका। बहुरि कैसे हैं परमात्मा देव ज्ञानामृत कर श्रवे है स्वभाव जिनका अरु स्वसंवेदन करि उछलैं हैं। आनंदरसकी धारा जाविषैं उछलकर अपने ही स्वभाव विषैं गड़फ होय है अथवा सक्करकी डली जल विषैं गल जाय। तैसे स्वभाव विषैं उपयोग गल गया है। बाहरें निकसनेको असमर्थ हैं। अरु निज परिनति (अपने स्वभाव) विषैं रमैं हैं। एक समय विषैं उपजै हैं अरु विनसैं हैं अरु ध्रुव रहैं हैं। पर **परनतिसे भिन्न अपने ज्ञान स्वभाव विषैं** प्रवेश किया है। अरु ज्ञान परिनति विषैं प्रवेश किया है। अर एकमेक होय अभिन्न परिणवै है। ज्ञानमें अरु परिनतिमें दो जायगा रहै नाहीं। ऐसा अमृत पूर्व कौतूहल सिद्ध स्वभाव विषैं होय है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध अत्यंत गंभीर हैं अरु उदार है अर उत्कृष्ट है स्वभाव जाका। बहुरि कैसे हैं सिद्ध निराकुलित अनुपम बाधा रहित स्वरस कर पूर्ण भरया है वा ज्ञानानंद करि अह्लाद है वा सुख स्वभाव विषैं मगन हैं। बहुरि कैसे हैं सिद्ध अखंड हैं, अजर हैं, अमर हैं, अविनाशी हैं। निर्मल हैं, अरु चेतना स्वरूप हैं, सुद्ध ज्ञानमूर्त्त हैं। ज्ञायक हैं, वीतराग हैं, सर्वज्ञ हैं, त्रिकाल सम्बन्धी चराचर पदार्थ द्रव्य गुन पर्याय संयुक्त ताकों एक समय विषैं युगपत जानैं हैं। अरु सहजानन्द हैं, सर्व कल्यानके पुंज हैं, त्रैलोक्य करि पूज्य हैं, सेवत सर्व विघन विलय जाय हैं, श्री तीर्थंकर देव भी तिनकों नमस्कार करैं हैं, सो मैं भी वारम्वार हस्त जुगल मस्तकको लगाय नमस्कार करूं हूं सो क्या वास्ते नमस्कार करूं हूं वाही

के गुनकी प्राप्तिके अर्थ। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान देवाधिदेव हैं। सो देव सज्ञा सिद्ध भगवान विषे ही शोभै है। अरु चार परमेष्ठिनकी गुरु संज्ञा है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध परमेष्ठी सर्व तत्वकों प्रकाश ज्ञेयरूप नाही परणमै हैं अपना स्वभावरूप ही रहै हैं। अरु ज्ञेयको जानैं ही हैं सो कैसे जाने हैं। जो ए समस्त ज्ञेय पदार्थ मानूं शुद्ध ज्ञानमे डूब गया है। कि मानूं प्रतिबिंबित हुवा है कै मानू ज्ञानमे उकीर काढ्यौ हैं। बहुरि कैसे है सिद्ध महाराज शांतिकरस अर असंख्यात प्रदेश भरे है। अरु ज्ञानरस करि अहलादित है शुद्धामृत सोई भया परम रस ताकौ ज्ञानांजलि कर पीवे है बहुरि कैसे है सिद्ध जैसे चन्द्रमाका विमान विषे अमृत श्रवै है। अरु औराकूं आहलादि आनद उपजावै है। अरु आतापकूं दूर करै त्यौ ही श्री सिद्ध महाराज आप तौ ज्ञानामृत पीवें हैं वा आजरै हैं अर औराकूं आह्लादि आनद उपजावै है। ताकौ नाम स्तुति वा ध्यान करते जो भव्य जीव ताका आताप विलै जाय है। परनाम शांत होय हैं। अर आपा परकी सिद्धि होय है अरु ज्ञानामृतनै पीवै हैं। अरु निज स्वरूपकी प्राप्त होवे है ऐसे सिद्ध भगवानकौ फिर भी नमस्कार होहु। ऐसे सिद्ध भगवान जैवन्तै प्रवर्तौ अरु ससार समुद्र माहीसूं काढ़ौ अरु संसार समुद्र विषै पडनैतै राखौ म्हारा अष्ट कर्मकौ नाश करौ अरु मानै आप सरीखौ करौ। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान् जाकै जन्म मरन नाहीं जाकै शरीर नाही है, जाकै विनास नाही है, ससार विषे गमन नाहीं है, जाकै असंख्यात प्रदेश ज्ञानका आधार है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान अनत गुनकी खान हैं। अनतगुन करि पूर्ण

भरया है । तातैं अवगुन आवनै जांगा नाही। ऐसे सिद्ध परमेष्ठीकी महिमा वर्णन कर स्तुति करि । आगै सरस्वती कहिऐ जिनवानी-ताकी महिमा स्तुति करिये है। सो हे भव्य! तू सुन सो कैसी है जिनवानी जिनेन्द्रका हृदय सोई भया द्रह तहा थकी उत्पन्न भई है। वहां थकी आगै चली सो चल करि जिनेन्द्र मुखारविदंते निकसी, सो निकसकरि गनधर देवाका कान विषै जाय पडी। अरु पडिकरि या थकी आगे चलि गणधर देवाका मुखारविदंत निकसी। निकसिकरि आगाने चाल सुरत सिन्धुमे जाय प्राप्त भई। भावार्थ—या जिनवानी गगा नदीकी उपमानै धरचा है। वहुर कैसी है जिनेन्द्र देवकी वानी स्याद्वाद लक्षण करि अंकित है वा दया अमृत करि भरी है। अर चन्द्रमा समान उज्वल है वा निर्मल है, जेसे जैमे चन्द्रमाकी चांदनी चन्द्रवंसी कमलानै प्रफुल्लित करै है और सव जीवोंके आतापनै हरै है। तैसे ही जिनवानी भव्य जीव सोई भया कमल त्यानै प्रफुल्लित करै है। वा आनद उपजावै है, अरु भव आतापमै दूर करै है। बहुरि कैसी है सरस्वती जगत्की माता है सर्व जीवानै हितकारी है। परम पवित्र है। पुन कुवादी रूप हस्ती ताका विदारवाणै वा परिहार करवानै वादित्त रिद्धिका धारी महा मुनि सोई भया शार्दूल सिह ताकी माता है। बहुरि कैसी है जिन प्रणीत बानी अज्ञान अंधकार विध्वंश करवानै जिनेन्द्र देव सूर्य ताकी किरन ही है। या ज्ञानामृतकी धार बरषावनेकों मेघमाला है। इत्यादि अनेक महिमानै धरचा है। ऐसी जिनवानी ताकै अर्थ म्हारा नमस्कार होहु। ईहां सरूपानुभवनका विचार मैनै किया है सो इस कार्यकी

सिद्धता ही है । ऐसी जिनवानीकी स्तुति वा महिमा वरनन करि। आगे निरग्रन्थ गुरू ताकी महिमा स्तुति करै हैं। सो हे भव्य! तूं सावधान होयके नीके सुन । कैसे हैं निरग्रन्थ गुरु दयालु है चित्त जाका अरु वीतराग है स्वभाव जाका अर प्रभुत्व शक्ति कर आभूषित है । अर हेय ज्ञेय उपादेय ऐसा विचार करि संयुक्त है। अरु निर्विकार महिमाने प्राप्ति भये हैं। जैसे राजपुत्र वालक नगन निर्विकार शोभे हैं । अरु सर्व मनुष्य वा स्त्रीकूं प्रिय लागे है। मनुष्य वा स्त्री वाका रूपकूं देख्या चाहे है । वा स्त्री वाका आलिगन करै है। पर तु स्त्रीका परनाम निर्विकार हो रहे है सरागतादिकको नहीं प्राप्त होय है । तैसे ही जिन लिङ्गका धारक महा मुनि वालवत निर्विकार शोभै है । सर्व जनको प्रिय लागे है, सर्व स्त्री वा पुरुष मुन्याका रूपनै देख देख तृप्त नाहीं होय है अथवा वह मुनि निर्ग्रन्थ नाहीं हुवा है। अपना निर्विकारादि गुनानै ही प्रगट किया है। बहुरि कैसे है शुद्धोपयोगी मुनि ध्यानारूढ है । अरु आत्मा स्वभाव विषै स्थिति हैं । ध्यान विना क्षणमात्र गमावै नाहीं, कैसे स्थिति है नासाग्र दृष्टि धर अपनै स्वरूपनं देखै हैं, जैसे गाय बच्छानै देख देख तृप्ति नाहीं होय है। निरतर गायके हृदय विषै बच्छा वसै है तैसे ही शुद्धोपयोगी मुनि अपना स्वरूपनै छिनमात्र भी विसरै नाही है। गौवच्छावत् निज स्वभावसौ वात्सल्य किए हैं । अथवा अनादि कालका अपना स्वरूप गुमिगया है ताको तेरै हैं । अथवा ध्यानअगनि कर कर्म ईंधन कू आभ्यंतर गुप्त होमै है। अथवा नगरादिक नैं छोड वनके विषै जाय नासाग्र दृष्टि धर

ज्ञान सरोवर विषै पैठ सुधा अमृतनै पीवै है। वा सुधा अमृत विषै केलि करै है वा ज्ञान समुद्रमे डुब गया है अथवा संसारका भय थकी डरपि आभ्यन्तर विषै अमूर्तीक पुरुषाकार ज्ञानमय मूरत ऐसा चैतन्य देवके शरणकू प्राप्त हुवा है या विचारै है भाई म्हांने तो एक चैतन्य धातुमय पुरुष ज्ञायक महिमानै धरचा ऐसा परमदेव सोही शरण है। अन्य शरण नाही ऐसा म्हांके नि:सन्देह अवगाढ है। बहुरि सुधामृत करि चैतन्य देवका कर्म कलंकनै धोय लेपन कहिये प्रक्षालण करिये है पाछे मगन होय ताकौ सन्मुख ज्ञान धाराकौ क्षेपै है। पाछै निज स्वभाव सोही भया चन्दन ताकी अर्चा कहिये ताकौं पूजै है। अरु अनत गुण सोई भया अक्षत ताकौ तिन विषै क्षेपै है। पाछै सुमन कहिये भला मन सोई भया आठ पांखुड़ी संयुक्त पद्म--पुष्प ताकौ वा विषै चढ़ावै है। अरु ध्यान सो ही भया नैवेद्य ता विषै सन्मुख करै है अरु ज्ञान सोही भया दीपताकौं ताविषै प्रकाशित करै है। मानौं ज्ञान दीपकर चैतन्य देवका स्वरूप अवलोकन करै है। पाछै ध्यानरूपी अगनि विषै कर्म सो ही भया धूप ताकौ उदार मन करि शीघ्रपने आछे २ क्षेपै है, पाछै निजानद सो ही भया फल ताकू भलीभांत ताविषै प्राप्त करै है ऐसे अष्ट द्रव्य करि पूजन करै है। मोक्ष सुखकी प्राप्तिके अर्थ। बहुरि कैसे है शुद्धोपयोगी मुनि आप तौ शुद्ध स्वरूप विषै लग गया है। तहा मारगमे कोई भोला जनावर ठूठ जान वाके शरीर सौं खाज खुजावै है। तोहू मुन्याका उपयोग ध्यानसौ चलै नाहीं है। ऐसा निज स्वभावसौ रत हुवा है। बहुरि हस्ती, सिंघ, शूकर, व्याघ्र, मृग, गाय इत्यादि वैरभाव छोड सन्मुख खडा

होय नमस्कार करैं है। अरु अपना हितके अर्थ मुन्याके उपदेश नै चाहै है। बहुरि ज्ञानामृतका आचरन करि नेत्रविषै अश्रुपात चालैसो अंजुली विषै पडे है ताको चिडी कबूतर आदि भोला-पक्षी जल जान रुचिसो पीवे हैं। सो ए अश्रुपात नाहीं चाले हैं यह तो आत्मीक रस ही श्रवै है। सो आत्मीकरस समाया नहीं है ताते बाह्य निकस्या है अथवा मानौ कर्मरूपी वैरीको ज्ञानरूपी पड्ग करि सघार किया है। ताते रुधिर उछलिकर बाह्य निकसे है। बहुर कैसे हैं शुद्धोपयोगी मुनि अपना ज्ञान रस करि छक रह्या है। ताते बाह्य निकसवाने असमर्थ है। कदाचित् पूर्वकी वासना कर निकसै है तौ वानैं जगत इन्द्र जालवत् भासै है। फेर तत्क्षण ही स्वरूप विषै ही लग जाय है। फेरि स्वरूपका लागवा करि आनंद उपजै है। ताकर शरीरकी ऐसी दशा होय है। अरु गदगद शब्द होय है। अरु कही तो जगतके जीवानै उदासीन मुद्रा प्रति भास है। अरु कहे मानू मुन्यानिधि पाई ऐसी हस मुखमुद्रा प्रतिभासे है। ये दोऊ दशा मुनियाकी अत्यन्त शोभै है। बहुर मुनि तौ ध्यान विषै गरक (लीन) हुवा सौम्य दृष्टिनै धरया है। अर जहां नगरादिकसू राजादिक बंधवाने आवे है सो अवै वे मुनि कहा तिष्ठै है। कै तो मसान भूमिका विषै कै निरजन पुराना वन विषै अरु कै पर्वतादिककी कंदरा कहिये गुफा विषै अरु कै पर्वतका सिखर विषै अरु कै नदीके तीर विषैं अथवा नगर बाह्य चैत्यालय विषै इत्यादि रमनीक मनके लगवाने कारन जो होय ता अरु उदासीनताके कारन ऐसा स्थान विषै तिष्ठै हैं जैसै कोई अपनी निधिनै छिपावता फिरै अर एकान्त जायगाका

अनुभव करे तैसे ही महामुनि अपना ज्ञान ध्यान निधिकौ छिपावता फिरै है अर एकान्त हीमे वाका अनुभव किया चाहै है। अरु ऐसा विचारे है कि म्हाकी ज्ञान ध्यान निधि जाती न रहै अरु म्हाका ज्ञान भोगमै अतर न पैरै, तिहि वास्ते महा मुनि कठिन कठिन स्थानक विषै बसै है। जेठे मनुष्यका सचार नही तेठे वसे है अरु मुनिनि पर्वत गुफा नदी मसान वन ऐसा लागे है मानौ ध्यान ध्यान ही पुकारै है। कहा कहि पुकारै है कहै आवो आवो यहा ध्यान करौ ध्यान करौ निजानन्द स्वरूपनै विलासौ विलासौ। थाकौ उपयोग स्वरूप विषै बहुत लागसी तीसौं और मत विचारो ऐसे कहै है। बहुर शुद्धोपयोगी मुनि घनौ पवन चालै तेठै, अर घना घाम होई तेठै वा घना मुनुष्याका संचार होई तेठै जोरावरीतै नही वसै है। क्यो नाहीं वसै है मुन्याका अभिप्राय एक ध्यानाध्यन करि वाकौ ही ऐ। जेठे ध्यानाध्यन घनौ वधै तेठै ही वसै। कोई या जानेगा कि मुनि सर्व प्रकार ऐसा कठिन कठिन स्थानक विषै ही वसै अर स्वत चाहि चाहि परीषहनकौ सहै अर एता दुद्धर तपश्चरन करे है। अर साम्वता ध्यानमई ही रहै सो यूतौ नाही। कारण कि मुन्याके वाह्य क्रियासूं तौ प्रजोजन है नाही, अर अटाईस मूल गुन ग्रहन किया है तानै सिला ऊपर वा पर्वतके सिखिर विषै ध्यान धरै वा चौमासेमें वृक्ष्याके तलै ध्यानकौ धरै ही तौ अपने परनामाकी विशुद्धताकै अनुसार धरे है।

अत्यंत विरक्त होय तौ ऐसी जागे ध्यान धरे। नाही तौ और ठौर मन लागे जेठे ध्याण धरे अर साम्हा आया उपसर्गकौ

छोडि नाहीं जाय है सो मुन्याकी सिंघवत् वृत्ति है और मुन्याका परिनाम ध्यान विषै स्थिति होय है । तव ध्यानको छोड़ और कार्यको नाही विचारे है । अरु ध्यानसूं परनाम उतरै है तव शास्त्राभ्यास करे है । वा औराकूं करावे है । वा अपूर्व जिनवानीके अनुसार ग्रंथ जोडै है । अरु शास्त्राभ्यास करता करता परनाम लग जाई । तौ शास्त्राभ्यास छोडि ध्यान विषै लाग जाय है । सो शास्त्राभ्यास बीच ध्यानका फल बहुत है । तातैं ओछा कार्यको छोडि ऊंचा कार्यकूं लागवो उचित ही है । सो ध्यान विषै उपयोगकी थिरता बहुत रहै है । अर शास्त्राभ्यास विषैं उपयोगकी थिरता वहुत रहै है । तीसौ मुनि महाराज ध्यान भी धरै हैं । अर शास्त्र भी वांचै है । अर आप गुरन पै पढ़ै है वा चरचा करै हैं । मूल ग्रन्थाके अनुसार अपूर्व ग्रन्थ जोडै हैं । वा नगरसूं नगरान्तर देशसूं देशान्तर विहार करै हैं । अरु भोजनके अर्थ नगरादिक विषै जाय हैं । तेठै पडगाह्या ऊंचा क्षत्री, वैश्य, ब्राह्मन कुल विषै नवधा भक्ति संयुक्त छियालीस दोष बत्तीस अंतराय टाल खडा खडा एकवार कर पात्रमें आहार लेय हैं इत्यादि शुभ कार्य विषै प्रवर्तै है । और मुनि उत्सर्गने छोड़ तौ परनामोंकी निर्मलताके अर्थ अपवादमार्गनै आदरे है । अरु अपवादमार्गनै छोड उत्सर्गनै आदरे है । सो उत्सर्ग तौ कठिन है अर अपवाद मार्ग सुगम है । मुन्याकै ऐसा हठ नाही की म्हानै कठन हीं आचरन आचरना वा सुगम ही आचरनका आचरन करना । भावार्थ—मुन्याकै तौ परनामका तौल है वाह्य क्रिया ऊपर प्रयोज

नहीं ना प्रविर्ति विषै परनामाकी शुद्धता बधै अर ज्ञानका क्षयो-पशम बधै सोई आचरन आचरै। ज्ञान वैराग्य आत्माका निज लक्षन है ताहीकौ चाहै है। और अंबे मुनिराज कैसे ध्यान विषै स्थिति है। अरु कैसे विहार करे है अर कैसे राजादिक आय बंदै है सोई कहिए है। मुनि तौ वन विषै वा मसान विषै वा पर्वतकी गुफा विषै वा पर्वतकी सिखिर विषै वा सिला विषै ध्यान दिया है। अर नगरादिक सौ राजा विद्याधर व देव बंदवाणे आवै है। अर मुन्याकी ध्यान अवस्था देषि दूर थकी नमस्कार करि उहा ही खड़ा रहै हैं। अर कैई पुरुषाके यह अभिलाषा वर्तै है। कदि (कब) मुन्याका ध्यान खुलै अर कदि मैं निकट जाई प्रश्न करौं। अर गुराका उपदेशनै सुनौ अर प्रश्नका उत्तर जानौं अर अतीत अनागतके पर्यायांकू जानो। इत्यादि अनेक प्रकारका स्वरूप ताकौ गुराकी मुखथकी जान्या जाय छै ऐसै कैई पुरुष नमस्कार करि करि उठजाई है। अर कैई ऐसा विचारै है सो म्हैं मुन्याका उपदेश सुन्या विना घर जाई काई करा। म्हे तौ मुन्याका उपदेश विना अतृप्त छा। अरु हाकै नानातरहका सदेह छै। अर नाना तरैका प्रश्न छै। सो या दयालु गुरां विना और कौन निवारन करै। तीसूं हे भाई म्हैनौ जेतै मुन्याका ध्यान खुलैते तै ऊभाईछा। अर मुन छै सो परम दयाल छै मुन अपना हेत नै छोडि अन्य जीवानै उपदेश दे हैं। तीस्यूं मुन्यानै अपना आगमन जनावो मति, 'अपना आगमन करि कदाच ध्यान सौं चलसी तौ अपना अपराध लागि तीसूं गोप्य ही रहै है। अर कैई परस्पर ऐसे कहै देषौ भाई मुन्याकी काई दशा है। काष्ठ पाषाणका

स्थंभवत अचल है। अर नासाग्र दृष्ट धरया है। अत्यंत संसारसूं उदासीन है। अपना स्वरूपसूं अत्यंत लीन है इहां आत्मीक सुखके वास्तै राज लक्ष्मीनै वो वोदा तृणकी नाई छोडि है। सो अपनी याकै काई गिनती छै। अर कैई कहता हुवा रे भाई आपनी गिनती तो नाहीं सो सत्य परंतु यह परम दयाल है महा उपकारी है, तारन तरन समर्थ है। तासूं ध्यान खुलै अपनो भी कार्य सिद्ध करसी। बहुरि कैई ऐसा कहता हुवा देखौ माई मुन्याकी कान्ति अर देखौ भाई मुन्याका अतिशय अर मुन्याकौ साहसूं क्रांति कर तौ दशौ दिशा उद्योत कीनी है अरु अतिशयका प्रभाव करि मारगकै सिघ हस्तीसूं व्याघ्र, रींछ, चीता, मृग इत्यादिक जनावर वैरभाव छोड़ि मुन्यांनै नमस्कार करि निकट बैठा है। अरु मुन्याकौ साहस ऐसा है सो ऐसा क्रूर जनावर ताकी भय थकी निर्भै हुवा है उद्यान विषै तिष्ठै है।

अर ध्यानसूं छिन मात्र भी नाहीं चलै है। अर क्रूर जनावरनै अपूरामोह लिया है। सो यह वात न्याय ही है जैसा निमित्त मिलै तैसा ही कार्य उपजै। सो मुन्याकी शांतिता देख क्रूर जनावर भी शांतिताकु प्राप्त हुवा है। रे भाई या मुन्याका साहसपनौ अद्भुत है। कांई जाने ध्यान खुलै कै ना भी खुलै। तीसूं ऐठाही सूं नमस्कार करि घरां चालौ फेर आवलौ। और कोई ऐसैं कहता हुवा रे भाई अबै कोई उतावलौ होहु छो श्री गुरूकी वानी सोई हुवो अमृत तीका पिया विना घर जावा मै कांई सिद्ध है। थानै घर आछौ लागै है म्हानै तो लागै नाहीं म्हानै तौ मुन्याका दरशन उत्कृष्ट प्रिय लागै है। अर मुन्याका ध्यान अब खुलसी।

घनी वार हुई है तीमूं कोई प्रकारकौ विकल्प मत करौ। और कोई ऐसै कहता हुवा रे भाई तै या आछी कही याकै अत्यंत अनुराग छै। श्रावक धन्य छै ऐसै परस्पर वतलावता हुवा। अर मन जै विचारता हुवा तैसै ही मुनिका ध्यान खुल्या। अर बाह्य उपजोग करि सिष्य जनादिने देखवा लागा तव सिष्य कहता हुवा। रे भाई सुन परम दयाल आपाने दया करि सन्मुख अवलोकन करै है। मानू आपनै वुलावै ही है हीमू अबै सावधान होइ अर सितावी चालौ चालिकर अपना कारज सिद्ध करौ। सो वे सिष्य मुन्याके निकट जाता हुवा अर श्री गुराकी तीन प्रदक्षिना देता हुवा अर हस्त जुगल मस्तक कै लगाई नमस्कार करता हुवा। अर मुन्याका चरन कमल विषै मस्तक धरता हुआ। अर चरननकी रज मस्तककै लगावता हुवा अर अपनौ धन्यपनौ मानता हुवा। अर न घना दूर न घना नजीक ऐसे विनय सयुक्त खडा हुआ अरु हाथ जोर स्तुति करता भया, काई स्तुति करता हुआ हे प्रभू, हे दयाल, हे करुनानिधि, हे परम उपगारी, संसार समुद्रके तारक, भोगनमू परानमुख, अरु संसारमूं परानमुख, अर ससार सूं उदासीन, अर शरीरसूं निस्नेह अर स्वपर कार्य विषै लीन, ऐसै ज्ञानामृत करि लिप्त थे जैवता प्रवर्तौ। अर मो ऊपर प्रसन्न हो, प्रसन्न हो, वहुरि हे भगवान् था विना और म्हा कौ रक्षक नाहीं थै अबै म्हांनै ससारमाहि सू काढौ अर संसार विषै पडता जीवानै थैं ही आधार छै। अर थै ही सरन छो। तीसूं जीवातमे म्हाकौ कल्याण होइ सोई करौ अर

म्हाकै आपकी आज्ञा प्रमान है । म्है निर बुद्धी क्षा अर विवेक रहित क्षा । तिसूं विनय अविनयमैं समझा नाही क्षा । गुरु आपनै हेतुनै ही चाहूं क्षा । जैसे वालक मातानैं लाड करि चाहें ज्यौं बोलै । अर लडूवा आदि वस्तुनै मागै सो माता पिता वालक जान वासूं प्रीति ही करै । अर खावानै मिठानादिक चोखी वस्तु काड ही दे । जैसे ही प्रभु मै वालक क्षो आप माता पिता क्षो । वालक जान म्हां ऊपर क्षिमा करो ।- अर म्हाका प्रश्नका उत्तर करौ अर सन्देहका निवारन करौ । त्यूं म्हाकौ अज्ञान अंधकार विलै जाई । अर तत्त्वका स्वरूप प्रतिभासै । आपा परकी पिछान होई । सो उपदेश म्हांनै द्यो । ऐसे शिल्य जन खडा खडा वचनालाप करता हुवा पाछै चुपका होय रह्या पाछै मुनि महाराज सिख्य जनाका अभिप्रायके अनुसार मिष्ट मधुर आत्म हितकारी कोमल ऐसा अमृतमई वचनकी यकिततता कर मेघ कैसी नाई सिरव्य जनानै पोपिता हुवा अर कैसे वचन उच्चारता हुवा हे राजन! हे पुत्र! हे भव्य! हे वक्ष! तै निकट भव्य क्षौ । अर अवै थाकै संसार थोरौ क्षे । तीसूं थाकै यह धर्म रुचि उपजी क्षै । अव थै म्हाका वचन अंगीकार करौ सो मै थानै जिनवानीके अनुसार कहौ क्षा सो चित दै सुनो । यौ संसार महा भयानक क्षै । धर्म विना यौ संसारकौ नाश होइ नाहीं । तीसुं एक धर्मनै सेवौ पाछै ऐसा मुन्याकौ उपदेश पाय जथा जोग्य जिन धर्म गृहन करता हुवा । अर केई प्रश्नका उत्तर सुनना [illegible]

जोग्य आखडीकौ गृहण करता हुवा अरु कई प्रश्न करता हुवा। केई अपना अपना संदेहका निवारन करता हुवा ऐसे नाना प्रकारके पुन्य उपार्जे ज्ञानकौं वधाई मुन्यांनै फेर नमस्कार करि मुन्याका गुनानै सुमरता सुमरता आपनै ठिकाना जाता हुवा।

ऐठा आगे मुन्याका विहार स्वरूप कहिए है जेसे निरवध स्वेच्छाचारी वनविषै हस्ती गमन करै है। तैसे ही मुनि महाराज गमन करै है सो हस्ती भी धीरे धीरे सूडिकी चालन करिता अरु सूंडनै भूमसूं सपर्स करावता थका अरु सूडनै ऐठी उठी फैलावता थका अरु धरतीनै सूडसु सूघता थका निशंक निर-भय गमन करै है। त्योंही मुनि महाराज धीरै धीरै ज्ञानदृष्टि करि भूमिकू सोधता निरभय निशंक स्व इच्छाचारी विहार कर्म्म करै है। मुन्यांकै भी नेत्रकै द्वारै ज्ञानदृष्टि धरती पर्यंत फैली है। सो याकै यही सूड है तीसूं हाथीकी उपमा संभवै है अरु गमन करता जीवांकू विराध्या नाही चाहै है। अथवा मुनि गमन नाही करै है भूमी निधनै हेरता जाय है। अरु गमन करता करता ही स्वरूपमै लग जाय है। तब खडा रहि जाइ है। फेर उपयोग तला उतरै है तब फेर गमन करै है पाछै एकात तीष्ठ फेर आत्मीक ध्यान करै है। अरु आत्मीक रस पीवै है जैसे कोई पुरुष क्षुधा करि पीडित त्रषावान ग्रीष्म समय शीतल जल करि गल्या मिश्री काढेला अत्यत रुचिसूं गडक गडक पीवै है। अरु अत्यंत तृप्ति होई है। तैसे शुद्धोपयोगी महामुन स्वरूपाचरन करि अत्यंत तृप्ति है वार वार वेई रसनै चाहै है वाकूं छोडि कोई काल पूर्व ली वासना करि शुभोपयो ग विषै लागै हैं। तब या जानै है म्हा ऊपर आफत

आई । यह हलाहल विष सारसी आकुलता म्हासूं कैसी भोगी जाई । अबार म्हाको आनंद रस कडि गयो । फेर भी म्हाकै ज्ञानन्द रस की प्राप्ति होती कै नांही । हाय. हाय अबै म्है कांई करों यौ म्हाकौ स्वभाव नाहीं छे, म्हाको स्वभाव तौ एक निराकुलित बाधा-रहित अतेन्द्री अनोपम सुरस पीवाको है। सोई म्हांने प्राप्ति होई कैसै प्राप्त होइ । जैसे समुद्र विषै मगन हुवा मच्छा बाह्य निकस्या न चाहै । अरु बाह्य निकसवाने असमर्थ होय । त्योंही मैं ज्ञान समुद्र विषै डूब फेर नाहीं निकस्या चाहूं हूं । एक ज्ञानरस हीकौं पीवौ करौ आत्मीकरस विना और काहूमें रस नाहीं सर्व जगकी सामग्री चेतन रस विना जडत्व स्वभाव नें धव्या फीकी, जैसे लून विना अलूनी रोटी फीकी; तीसूं ऐसो ज्ञानी पुरुष कौन है सो ज्ञानामृतनै छोडि उपादीक आकुलता सहित दुख आचेरै, कदाचन आचेरै । ऐसे शुद्धोपयोगी महामुन ज्ञानरसके लोभी अरु आत्मीक रसके स्वादी निजस्वभावतें छूटे हैं तब ऐसे झूरे है । बहुरि आगे और भी कहिए है मुनि ध्यान ही धरे हैं सो मानूं केवलीकी वा प्रतिमाजीकी होड ही करै हैं । कैसे होड करैं है भगवानजी थांके प्रसादकरि म्है भी निजस्वरूपनै पाया है । सो अबै म्हैं निजस्वरूप कौ ही ध्यान करता । थाको ध्यान नहीं करा थांका ध्यान वीच म्हांका निजस्वरूपकौ ध्यान करता आनंद विशेष होय छै । म्हांके अनुभव करि प्रतीति हैं । अरु आगमसें आप भी ऐसौ ही उपदेश दियौ छै । रे भव्यजीवौ ! कुदेवानै पूजौ तातैं अनंत संसारके विषे भ्रमोला अर नारकादिका दुख सहौला अरु म्हांनै पुजो तातै स्वर्गादिक मंद क्लेशसहेला । अरु निजस्व-

रूपनै धावौला तौ नियमकरि मोक्ष सुखनै पावौला। तीसूं भगवानजी मैं थानै ऐसा उपदेशकरि सर्वज्ञ-वीतराग जान्यां अरजे सर्वज्ञ वीतराग हैं तेही सर्व प्रकार जगत विषै पूज्य हैं ऐसा सर्वज्ञ वीतराग जान भगवानजी म्हैं थानै नमस्कार करू छूं। सर्वज्ञ विना तौ सर्व पदार्थोंका स्वरूप जान्या जाई नाहीं अरु वीतराग विना राग द्वेषकौं वसकरि यथार्थ उपदेश दिया जाई नाही। कैतौ अपनी सर्व प्रकार निंदाका ही उपदेश है। कै अपनी सर्व प्रकार वडाई महंत ताका उपदेश है सो ए लक्षन भलीभाति कुदे-वादिक विषै संभवे है। तीसूं भगवानजी म्हैं भी वीतराग छा। तीसूं म्हाका स्वरूपकी वडाई करा छा। सो म्हानै दोष नाहीं। एक राग द्वेष ही का दोष है। सो म्हाके राग द्वेष आपके प्रसाद करि विलै गया है। वहुरि कैसे हैं शुद्धोपयोगी महा मुनि जाकै राग अरु द्वेष समान है। अरु जाकै सत्कार पुरस्कार समान है। अरु जाके रतन अरु कौडी समान है। अरु जाकैं सुख दुख समान हैं। अरु जाकै उपसर्ग अनउपसर्ग समान है। जाकैं मित्र शत्रु समान है। कैसै समान हैं सो कहिए है पूर्व तौ तीर्थंकर चक्रवर्त्ति वा वलिभद्र वा कामदेव वा विद्याधर वा वडा मंडलेश्वर मुकुट बंधराजा इत्यादि वडा महंत पुरुष मोक्ष लक्ष्मीके अर्थ ससार देह भोगसूं विरक्त होई राज्य लक्ष्मीनै जोढा तृणकी नाईं छोडि संसार बंधननै हस्तीकी नाई तोड वनकै विषैं जाइ दीक्षा धरै हैं। निरग्रन्थ दिगम्बर मुद्रा आदरै हैं। पाछैं परनामोंका महात्म करि नाना प्रकारकी रिद्धि फुरै है कसी है रिद्धि काय वलि रिद्धिका वल करि चाहे जेता छोटा वडा शरीर वना ले है। वा सारंखी सामर्थता होय है अरु वचन वलि रिद्धि करि द्वादशांग

शास्त्र अंतर मुहूर्तमै पड जाइ है। अरु मन वल रिद्धि कर द्वादशांग शास्त्रका अंतर मुहूर्त्तमै चितवन कर लें हैं। अरु आकाश विषै गमन करै हैं और जलविषै ऊपर गमन करै हैं पनजलका जीवकौ विरोधै नाही है। अरु धरती विषै डूबि जाई हैं पण पृथ्वी कायकी जीवकौ विरोधै नाहीं हैं। और कही विषावह गया है, अरु शुभ द्रष्टि करि देखै तौ अमृत होई जाय है पन ऐसे मुन महाराज करै नांही। और कहीं अमृत वह गया है। अरु मुनमहाराज करै द्रष्टि कर देखे तौ विष होय जाइ पन ऐसे भी करै नाही। और दया शाति द्रष्टि करि देखै तौ केतईक योजन पर्यंतकाका जीव सुखी होइ जाइ। अरु दुर्भिक्ष आदि ईत भीत दुख मिटि जाइ। सो ऐसी शुभ रिद्धि दयाल बुद्धि करि फुरै है तौ दोष नाही। अरु क्रूरि द्रष्टि करि देखै तौ केताइक जोजनके जीव भस्म होइ जाइ। पन ऐसे करै नाही, अरु जाका शरीरका गधोदक व नवो द्वारोको मल अरु चरनातरली धूल अरु शरीरका सपर्सा पवन शरीरकूं लगै तब लगता को आदि सर्व प्रकारके रोग नाशकु प्राप्ति होइ। और मुनि महाराजजी गृहस्थ के आहार कीया है तीके भोजन विषै नाना प्रकारकी अटूट रसोई होयजाई तिहि दिन सर्व चक्रवर्तिका कटक जीमै तौ भी टूटै नाहीं अरु चार हाथकी रसोईके क्षेत्रमे ऐसी अय गाहन शक्ति होयजाई सो चक्रवर्तिका कटक सर्व समाइ जाई। अरु बैठ कर जुदा जुदा भोजन करै तब भी सकडाई होइ नाही। अरु जेठै मुन अहार करै तीके दुवारै पंचाचार्य होई। रत्नवृष्टि, पहुपवृष्टि, गंधोकवृष्टि अरु जय जयकार शब्द, अरु देव दुंदुभि ये पंचाचार्य जाननै। अरु सम्य-

ग्दृष्टी श्रावक मुन्यांनें एकवार भोजन दे तो कल्पवासी देव ही होय ऐसे शुद्धोपयोगी मुन्यानै एकवार भोजन देवाका फल निपजे। और मुन मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय ज्ञानका धारी होइ है इत्यादि अनेक प्रकारके गुन संयुक्त होते संतै भी कोई रंक पुरुष आइ महा मुनकू गाली दे वा उपसर्ग करै तौ वासू कदाचित् भी क्रोध न करै। परम दयालु बुद्धि करि वाका भला चाहै है और ऐसा विचारै ए भोला जीव है याकौ अपना हित अहित की खबर नाहीं ये जीव या परनामो करि बहुत दुख पावसी। म्हाकौं कुछ विगार है नाहीं परन्तु ये जीव संसार समुद्रमाहीं डूबसी। तीसू जो होई तौ याकौ समुझाईए ऐसा विचार करि हितमित वचन दया अमृत करि करता भव्य जीवनकूं आनंदकारी ऐसा वचन प्रकाशै कांई प्रकाशै हे भव्य! हे पुत्र! तूं आपानै संसार समुद्रा विषै मति डोबै या परिनामोंका फल तोंने खोटा लागसी अरु तू निकट भव्य छै। अरु थारा आयु भी सुच्छ रहा है। तीसूं अवै सावधान होई जिनप्रणीत धर्म अंगीकार करि ई धर्म बिना तू अनादि कालकौ ससार विषै रुल्यौ अरु नरक निगोद आदि नाना प्रकार दुष सह्या सो तूं भूल गया। ऐसा श्री गुराका दयाल वचन सुन वह पुरुष ससारका भय थकी कंपाईमान होता हुवा अरु शीघ्र ही गुरुके चरनाकू नमस्कार करता हुवा। अरु अपना किया अपराधनै निन्दता हुवा अरु हाथ जोड़ खडा हुवा अरु ऐसा वचन कहता हुवा। हे प्रभु! हे दया सागर! मो ऊपर क्षिमा करौ, क्षिमा करौ, हाय हाय, अवै हूं कांई करू। यौ म्हारौ पाप निवृत्ति कैसे होई। म्हारे कौन पाप उदय आयौ सो म्हारे या खोटी बुद्धि उपजी। विना

अपराध म्हा मुन्यानै मै उपसर्ग कियो। अरु जाका चरनाकी सेवा इन्द्रादिक देवानै भी दुर्लभ है। अरु मै एकने ऐसी करी ये परम उपगारी त्रैलोकाकरि पूज्य तानै मै कांई जाण उपसर्ग कियो। हाय हाय, अब म्हारो कांई होसी। अरु हूंसी गति जामूं। इत्यादि ऐसे वह पुरुष वहुत विलाप करतौ हुवौ अरु हाथ मसलतो ह्वो अरु वारंवार मुन्याके चरणने नमस्कार करतो ह्वो जेसे कोई पुरुष दरआव विषै डूवतौ जिहाजनै अवलंबै। तैसे गुरांका चरन-विषै अवलवतौ हुवौ। अबै तो मानै ऐहीका चरनको मरन छे। अन्य शरन नाही। जोई अपराध मूं बचौ तौ याहीके चरनाका सेवनि करि वचूं छूं, और उपाई नाही। म्हारो तौ दुख काटवानै ऐही समर्थ है। पाछै ई पुरुषकी धरम बुद्धि देख श्री गुरु फेर वोल्या हे पुत्र! हे वच्छ! तूं मति डरपै। थारे ससार निकट आयौ छै। तीसू अबैथै धर्म्मामृत रसाईनने पी। अरु जरामरन दु:खका नाश कर। ऐसा अमृतमई वचन करि वे पुरुषनै पोषता हुवा जैसे ग्रीषम समय कर मुरझाई वन-स्पतिकूं मेघ पोषे तैसें पोषता हुवा सोमहंत पुरुषाका यह स्वभाव ही है। अव गुणका ऊपर गुण ही करै सो ऐसे गुरू तारवा समर्थ क्यौं नांही होई है। बहुर ये शुद्धोपयोगी वीतराग संसार भोग सामग्री तासू उदासीन शरीर सूं निष्प्रेह शुद्धोपयोगकी थिरताके अर्थि शरीरनै आहार दे है। सो कैसे दे है ताकूं कहिये है मुन्याकै आहार कै पांच अर्थ है। गोचरी कहिये जैसे गऊनै रंक वा पुन्यवान कोई घासादि डौरै सो चरवा ही सौं प्रयोजन है। अरु कोई पुरुष सौं प्रयोजन नाही। त्यों ही मुन्यानै भावै तौ

रंक पडगाहि अहार द्यौ। भावै राजादिक पडगाहि अहार द्यौ। सो आहार लेवा सौ तौ प्रयोजन है। रंक वा पुन्यवान पुरुष-सू प्रयोजन नाहीं। बहुर दूसरा अर्थ भ्रामरी कहिये जैसे भौरा उडता फूलकी बासनातै फूलनै विरोधै नाही। बहुर तीसरा अर्थ दाहश्रमन कहिये जैसे लाय लगी होई तानै जेती प्रकार बुझाई देना। त्यौंही मुन्यांके उदराग्न सोई भई लाय तीनै जीसौ तीसौ आहार मिलै तिहिकरि बुझावै है। आछा बुरा स्वादका प्रयोजन नाहीं। बहुरि चौथा अक्ष प्रक्ष्यन कहिये जैसे गाडी औगन बिना चालै नाही। त्यौंही मुन या जानै यह शरीर अहार दिया बिना सिथिल होसी अरु म्हानै पासू मोक्षस्थान विषै पहुचा जै तौ यासूं काम है। ताहै याकू अहार है या कै आसरै सजम आदि गुन ऐकठा करि मोक्षस्थान विषै पहुचना बहुरि पाचमा गरत पूर्न कहिये जैसे कोई पुरुषके साप आदिका खाडा खाली होइ गया होई। तीनै वे पुरुष भाटा ईंट माटी काकरि पूर दिया चाहै। त्योही मुन्यांके निराहारादिक करि खाडा कहिये उदर होई तौ जीती भांति अहार करि वाकूं भरहे। ऐसा पाच प्रकारके अभिप्राय जान वीतरागी मुन शरीरकी थिरताके अर्थ अहार लै है। शरीरकी थिरतामूं परिनामकी थिरता होय है। अरु मुन्यांकै परनाम सुधर वा कोई निरंतर उपाय रहै है। ती वातमै रागद्वेष न उपजै तिहि क्रियारूप वर्त्तै। और प्रयोजन नाही सो ऐसा शुद्धोपयोगी मुन्यानै गृहस्थ दातारका सात गुण संयुक्त नवधाभक्ति करि आहार दे है। प्रतिग्राहन कहिये प्रथम तौ मुन्यानै पडगाहा है। पाछै ऊचौ स्थान कहिये मुन्यानै ऊंचा स्थान विषै स्थापै। पाछै पादोदक

कहिये मुन्याका पद कमल प्रक्षालन करै सोई भया गंधोदिक सो अपना मस्तक आदि उत्तम अङ्गों के कर्मका नाश कै अर्थ लगावै अपनैको धन्य मानै वा कृत्य कृत्य मानै। पाछै अर्चन कहिये मुन्याकी पूजा करै। पाछै प्रनाम कहिये मुन्याका चरनानै नमस्कार करै। बहुरि मन शुद्ध कहिये मन प्रफुल्लित होय महा हर्ष होय बहुरि वचन शुद्धि कहिये मीठा मीठा वचन बोलै बहुरि काय शुद्धि कहिये विनयवान होइ शरीरका अङ्गोपांगकौ नम्रीभूत करै।

बहुर ऐषण शुद्धि कहिये दोष रहित शुद्ध अहार देई। ऐसै नवधाभक्तिका स्वरूप जानना। आगै दातारके सात गुन कहिये मुन्याने अहार देई लोकके फलकी वांक्षा न करै क्षमावान होई कपट रहित होई अदेक सखापनो न होइ अरु विषाद करि रहित होई हरष संजुक्त होई अहंकार रहित होई ऐसे सात गुण सहित जानना सोई दातार स्वर्गादिकका सुख भोग परंपरा मोक्ष-स्थान पहुंचै है ऐसै शुद्धोपयोगी मुन तारनतरन है। आचार्य, उपाध्याय, साधु ताके चरनकमलको म्हारा नमस्कार होउ। अरु कल्यानके कर्ता हो। अरु भवसागर विषै पड़तानै राखौ ऐसे मुन्याका स्वरूप वर्नन करा। सो हे भव्य! जौ तू आपना हित-नै वांक्षे छै। तौ सदैव ऐसा गुर यांका चरनारविंद सेवो अन्यका सेवन दूरही तै तजो। इति गुरु स्वरूप वर्णन सम्पूर्ण॥

१--ऐसें आचार्य, उपाध्याय, साधु या तीन प्रकारके गुराका भेला ही वर्नन किया तीनों ही शुद्धोपयोगी हैं। तातै समानता है विशेषता नाहीं ऐसे श्री गुराकी स्तुति करि वा नमस्कार करि वा ताके गुन वर्नन करि ईठै आगै ज्ञानानंद पूरित निरभर निज रस श्रावकाचार नाम

शास्त्र जिनवानीके अनुसार मेरी बुद्धि माफिक निरूपन करूंगा। सो कैसा है यह शास्त्र क्षीर समुद्रकी शोभाने धरैं है सो कैसा है समुद्र अत्यंत गम्भीर है अरु निर्मल जल करि पूर्ण भरचा है अरु अनेक तरगोंके समूह कर व्याप्त है। ताका जलकू श्री तीर्थकर देव भी अंगीकार करैं हैं। त्यों ही शास्त्रार्थ करि अत्यत गम्भीर है। अरु सुरस करि पूर्ण भरचा है सोई जल है। अरु सर्व दोष रहित अत्यत निर्मल है। अरु ज्ञान लहर करि व्याप्त है। ताकौं भी श्री तीर्थंकर देव सेवें है। ऐसे शास्त्रकों म्हारा नमस्कार होहु चया वास्तै नमस्कार होय ज्ञानानंदके प्राप्तके अर्थ, और प्रयोजन नाहीं। आगे करता अपना स्वरूपकौं प्रगट करै है वा अपना अभिप्राय जनावै है। सो कैसा हूं मैं ज्ञानजोति कर प्रगट भया हूं तातैं ज्ञान ही नै चाहूं हूं। ज्ञान छै सो म्हारा स्वरूप छै। सोई ज्ञान अनुभव न कर मेरैं ज्ञान ही की प्राप्ति होय मैं तौ एक चेतन स्वरूप करि उत्पन्न भया। ऐसा जो शान्तिक रस ताकै पीवाकौं उद्यम किया है। ग्रंथ बनावा का अभिप्राय नाही, ग्रन्थ तौ बडा बडा पंडितोंनें घना ही बनाया है मेरी बुद्धि काई। पुन उस विषै बुद्धिकी मंदता करि अर्थ विशेष भासता नहीं। अर्थ विशेष भास्या विना चित्त ऐकाग्र होता नही॥ अरु चित्तकी एकाग्रता विना कषाय गलै नही। अरु कषाय गल्या विना आत्मीक रस उपजै नही॥ आत्मीक रस उपज्या विना निराकुलित सुख ताकौं भोग कैसे होई॥ तातै ग्रन्थका मिस कर चित्त एकाग्र करि वाका उद्यम किया। सो ए कार्य तौ बडा है। अरु हम जोग्य नहीं। ऐसा हम भी जाने है। परन्तु अर्थी

दोषान्न पश्यति ॥ अर्थी पुरुष छे ते शुभाशुभ कार्यकुं विचारे नहीं आपना हेत नहीं चाहै है ॥ तातै मै निज स्वरूप अनुभवन-का अत्यंत लोभी हों ॥ जातै मेरे ताई और कछू सूझता नांही। मेरेताई एक ज्ञान सूझता है ॥ ज्ञान भोग विना कांई भोग तातै मै और कार्य छोडि ज्ञान हीकु आराधूं छूं, अरु ज्ञान हीकौ आदर करुं छूं, अरु ज्ञानहीका आचरण करूं छूं अरु ज्ञान हीका शरन रह्या चाहूं छूं बहुरि कैसा हूं मैं शुद्ध परनति कर प्राप्त भया हौ। अरु ज्ञान अनुभूत करि संयुक्त हौ अरु ज्ञायक स्वभावने धरचा हूं। अरु ज्ञानानंद सहज रस ताका अभिलाषी हौ वा भोगता हूं ऐसा मेरा निज स्वभाव छै ताके अनुभवनका मेरे ताई भय नाही अपनी निज लक्ष्मीका भोगता पुरुषने भय नाही त्यौं ही मोनै स्वभाव विषै गमन करता भय नांही। या वात न्याय ही है। अपना भावका ग्रहन करता कोई दंड देवा समर्थ नांही पर द्रव्यका ग्रहन करता दंड पावै है तातै मै पर द्रव्यका ग्रहन छोडा है तीस्यूं मे निशंक स्वच्छंद हुवा प्रवर्त्तौ हों मेरे तांई कोई भय नांही जैसे शार्दूल सिंहके ताई कोई जीव जतू आदि वैरीका भय नांही। त्यो ही मेरै भी कर्मरूप वैरी ताका भय नांही। तीसूं ऐसौ जान अपने इष्ट-देव ताकूं विनयपूर्वक नमस्कार करि आगे ज्ञानानंद पूरित निर-भर निजरस श्रावकाचार नाम शास्त्र ताका प्रारम्भ करिए है। इति श्री स्वरूप अनुभूत लक्ष्मीकरि आभूषित ऐसा मैं जु हो सम्यक्त ज्ञानी आत्मा सोई भया ज्ञायक परम पुरुष ताकरि चितते ज्ञाना-नंद पूरित निरभर निज रस नाम शास्त्र ता विषै वंदना ऐसा जो नामाधिकार ता विषै अनुभवन पूर्वक वर्नन भया।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

दोहा—जिनराज देव वन्दौ सदा कहू श्रावकाचार।
पापारम्भ तव ही मिटे कटै कर्म्म अघद्वार ॥१॥

अर्थः—ऐसे अपने इष्ट देवकूं नमस्कार करि सामान्यपनैं करि श्रावकाचार कहिये है सो हे भव्य! तू सुन, श्रावक तीन प्रकार है। एक तौ पाक्षिक, एक नैष्ठिक, एक साधक॥ सो पाक्षिक के देव गुरु धर्मकी प्रतीत तौ जथार्थ होय। अरु आठ मूल गुणता विषै। अरु सात विकृता जो सप्त व्यसनता विषै अतीचार लागै। अर नैष्ठिकके मूल गुन विषै वा सात विकृता विषै अतीचार लागै नाहीं ताका ग्यारह भेद है ताकौ वर्नन आगै होयगा अर साधक अत विषै सन्यास मरन करै है। ऐसे ये श्रावक तीनौ देव, गुरु, धर्म्मकी प्रतीत सहित छे। अरु आठ समकितका अङ्ग सहित है निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य, प्रभावना। एवं आठ अरु आठ समकितके गुण सहित है ताके नाम कहिये है। करुनावान, क्षमावान सौजनिता आपनिंदा, समता, भक्ति, वीतरागता, धर्म्मानुराग। एवं आठ, अरु पच्चीस दोष ताके नाम कहिये है। जाति १ लाभ २ कुल ३ रूप ४ तप ५ बल ६ विद्या ७ सिरदारी ८ इन आठोंका गर्भ है। आठ मद जानना। शंका १ कांक्षा २ विचिकित्सा ३ मूढदृष्टि ४ परदोष भाषन ५ अस्थिरता ६ वात्सल्य रहित ७ प्रभावना रहित ८ ए आठ मूल सम्यक्त्वका आठ अंग त्यासूं उलटा जानना। कुगुरु १ कुदेव २ कुधर्म ३ अरू इन तीनका धारक पाछै वाकी सराहना

करनी ए षट् अनायतन अरु देव गुरु धर्म इन विषै मूढदृष्टि ऐसे पच्चीस दोष २५ । इन करि रहित ऐसे निर्मल दर्शन करि संजुक्त तीन प्रकारके जघन्य मध्यम उत्कृष्ट संजमी जाननै । सो पाक्षिक विषै अरु साधक विषै ग्यारह भेद नाहीं है । नैष्ठिक विषै ही है । सो पाक्षिककौ तौ पांच उदम्बर १ पीपर २ वर ३ ऊंबर ४ कठूंबर ५ पाकर इन पाचका फल अरु मद्य मधु मॉस सहित ये तीन मकार याका प्रत्यक्ष तौ त्याग है अरु आठ मूल गुन विषै अतीचार लागे है सो कहिये है । मास विषै तौ चामके संजोगका वृत तेल हींग, जल अरु रात्रीका भोजन, अरु विदल अरु दो घडीका छान्या जल अरु वीधा अन्न इत्यादि मर्यादा रहित वस्तु, ता विषै त्रस जीवाकी वा निगोदकी उत्पत्ति है ताका भक्षनका दोष लागै है । अरु प्रत्यक्ष पांच उदम्बर तीन मकार भक्षन नाहीं करै है । अरु सात व्यसन भी नाही सेवै है । अरु अनेक प्रकारकी आखडी संजम पाले है । अरु धर्मका जाकै विशेष पक्ष है । ऐसा पाक्षिक विशेष जघन्य सयमी जानना । सो ऐ प्रथम प्रतिमाका भी धारक नाही है । अरु प्रथम प्रतिमा आदि संयमका धारवा का उद्यमी हुआ है । तातै याका दूजा नाम प्रारब्ध है । नैष्ठिकका ग्यारा भेद । दर्शन १ व्रत २ सामायिक ३ प्रोषध ४ सचित्त त्याग ५ रात्रि-भुक्ति वा दिन विषै कुशील त्याग ६ ब्रह्मचर्य ७ आरम्भत्याग ८ परिग्रह त्याग ९ अनुमति त्याग १० उद्दिष्ट त्याग ११ ऐसेई ग्यारह भेद विषै असजंमका हीनपनो जाननां । तातै याका दूजा नाम घटमारग हैं । अरु तीजा साधक ताका दूसरा नाम निपुन है । भावार्थ पाक्षिक तौ संयम विषै उद्यमी हुवा है करवा नहीं लागा

है । अरु साधक सम्पूर्ण कर चुक्या ऐसा प्रयोजन जानना । अबै पाक्षिक वा साधकनै छोडि नैष्ठिक तिनका सामान्यपनै वर्णन करिये है । प्रथम दर्शन प्रतिमाकौ धारक सात व्यसन अतीचार सहित छोडे । अरु आठ मूल गुन अतिचार रहित ग्रहण करै । अर दूसरौ व्रत प्रतिमाको धारक पाच अनुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत इनइ व्रतोंका गृहण करे। अरु तीसरौ सामायिक व्रतधारक अधौन (साझ) सवारे व मध्यान विषै सामायिक करे । अरु चौथा प्रोषध व्रतकौ धारक आंठे चौदश जे परवी तिन विषै आरम्भ छोडि धर्म्मस्थान विषै बसै । अरु पांचमौ सचित्त त्याग व्रतकौ धारक सचित्तकौ त्याग करे । रात्रि भुक्त त्याग व्रत कौ धारक रात्रि भोजन छोडै । अरु दिन विषै कशील छीडै । अरु सातथौ ब्रह्मचर्य्य वृतकौ धारक रात्रि या दिन विषै मैथुन सेवन तजे अर आठमो आरम्भत्याग व्रतको धारक आरम्भ तजे अर नवमौ परिग्रहत्याग व्रतकौ धारक परिग्रह तजे। अरु दशमौ अनुमति त्याग वृतको धारक पाप कार्यका उपदेश वा अनु-मोदना तजे। अरु ग्यारमो उद्दिष्ट त्यागव्रतकौ धारक उपदेशो भोजन तजै। ऐसा सामान्य लक्षण जानना ऐठा आगै इनका विशेष वर्नन करिये है । सो दर्शनप्रतिमाकौ धारक आठ मूल गुण पूर्वे कहा सो ग्रहन करै अरु सात व्यसन तजै अरु इनका अतीचार तजे अथवा कोई आचार्य आठ मूलगुण ऐसै कहे हैं पाच उदम्बरका एक अरु तीन मकारका तीन सो चार भौ पूर्वे आठ कह्या तेही भया। अरु चार और जानना सोई कहिये है। णमोकारमंत्रका धारण अरु दयाचित्त अरु रात्रि भोजनका

त्याग अरु दोय घडी उपरातकौ अनछान्या जलका त्याग ऐसै आठ मूल गुन जाननां। सात व्यसन है ते जानना १ जूवा २ मांस ३ दारू ४ वेश्या ५ परस्त्री ६ शिकार ७ चोरी एवं सात। ज्यासौ राजा दंड देई अरु लौकिक विषै महानिन्दा पावै ऐसा जानना। अवै मूल गुन वा सात व्यसन ताका अतीचार हिये है प्रथम दारूका अतीचार आठ पहर ऊपरका अथाना अरु चलित रस अरु जो वस्तु उफन कै आई वा वस्तुका भक्षण करै। इत्यादि अरु मांसका अतीचार चामके संगमकौ हींगघ्रत तेल जल इत्यादि शहदका अतीचार फूलका भक्षन अरु शहदका अंजन औषधि अरथ लैना इत्यादि। अरु पांच उदम्बरका अतीचार। अनजान फरलाका भक्षण करे अरु विना शोध्या फलका भक्षण करे इत्यादि। आठ मूल गुनके अतिचार जानता। वहुर आगे सात व्यसनके अतीचार कहिये है सो प्रथम जुवा अतिचार होडादि अर मास मदिराके पूर्वे कहि आये। परस्त्रीके अतीचार क्वारी लडक सौ क्रीडा करवौ। अर अकेली स्त्रीसु ऐकात वतलावौ 'इत्यादि' अर वेश्याके अति चार नृत्यादि वादित्र गानता विषै आशक्त होय देखै अरु सुने॥ अरु वेश्या विषै रमे त्यां पुरषासौ गोष्ठी राखै॥ अरु वेष्याके घर विषै जाइ इत्यादि अरू शिकारके अतीचार काष्ठ, पाषाण मृत्तका धातुका चित्रामसे घोड़ा हाथी मनुष्य आदि जीवनके आकार वनाया हुवा ताका घात करना 'इत्यादि' चोरीके अतीचार पराया धनकुं लेना वा जोवरीकरि खोस लेना। थोडा मोल देय घना मोलकी वस्तुसे ले लेनी तौलमै घट

देना वड लेना धरोहर राख मेलनी झोले मारना इत्यादि ऐसे सात व्यसनके अतीचार जानना। ऐ अतीचार छोडै सो दर्शनप्रतिमाका धारी श्रावक जानना और आगे भी केतीक वात नीतपूर्वक प्रथम प्रतिमाके धारक पाले सो कहिये है। अनारम्भ विषै जीवका घात न करे। भावार्थ हवेली महल आदिका करावा विषै हिंसा होई छे सो तौ होई छे ही। परतु विना आरम्भ जीवनै मारे नांही अरु उत्कृष्ट आरम्भ न करे खोटा व्यापार जिहिमैं घनी हिंसा होई घनौ झूठ होई वा जगत विषै निंदहोई। हाड़ चाम आदि अथवा ता विषै घनी त्रष्णा बधै इत्यादि उत्कृष्टका स्वरूप जानना अरु निज स्त्री जिहि तिही प्रकार कर धर्म्म विषै लगावै। स्त्रीकी धर्म्मबुद्धिसौ धर्ममाध नीका साधै है। अरु अपना धर्मका अनुराग होत सूंचे है। अरु धर्माचार रहित लोकाचार उलंघे नाही। जा विषै लोक निंदा करे ऐसा कार्य कौन करे परंतु जा विषै अपना धर्म जाई है अरु लोक भला कहै है सो ऐसा नाही। कै धर्म छोडि लोकका कहा कार्य करै तातै अपनै धर्मकौ राख लोकाचार उलघै नाही अरु स्त्रीनैं पुरुषकी आज्ञा माफिक करवौ उचित है पतिवृता स्त्रीकी यही रीत है। और यह धर्मात्मा पुरुष है सोषट् आवश्यक हमेशा करि भोजन करे सो कहिये है प्रभात ही तौ देव अरहंतकी पूजा करैं पाछै निर्ग्रन्थ गुरुकी सेवा करे। शक्ति अनुसार तप अरु संयम करै शास्त्र श्रवन पढन करे पाछे पात्रके ताई वा दुःखित भुखित जीवाके ताई चार प्रकार दान दे। सुपात्रानै तौ अहार औषधि शास्त्र वस्त्रका दान भक्तिपूर्वक देवे अरु दुखितताकौ आहार औषधि

अभय आदि दान दया करि देवे अरु चार भावना भावता निरंतर तिष्ठै सो सर्व जीवांसूं तौ मैत्री भाव राखै। भावार्थ—सर्व जीवांनै अपना मित्र जांनै। आप सा‹खा स्वरूप उको भी जांनै। तीसूं काइनै विरोधै नांही सर्व जीवांको रक्षपाल ही होय। अरु दूसरी प्रमोद भावनासूं आपसूं अधिक गुनवान पुरुषसूं विनैवान होय प्रवर्त्तौ। अरु तीसरी कारुण्य भावना दुखित जीवांकौ देख वाकी करुना करै अरु जिस प्रकारमे वाकौ दुख दूर होय ती प्रकार दुख्यनै मैटै। अरु आपनी सामर्थ नही होई तौ दयारूप परनाम ही करै। वानै दुखी देख निरर्दई रूप कठोर परनाम छै सो यहा कषाय है। अरु कोमल परनाम छै सो नि.कषाय छै सो ही धर्म छै अरु चौथी माध्यस्त मानना सो विपरीत पुरुष तासूं माध्यस्थ रूप है नहीं तो वेसूं राग करै नहीं वेसूं द्वेष करै। कोई हिंसक पुरुष छै। अथवा सप्त व्यसनी पुरुष छै सो वानै समझै तौ धर्मोपदेश दे करि पाप कार्य छुडाईं दीजे। नहीं समझै तौ आप माध्यस्थ रूप रहनै। ऐसे चार भावनाका स्वरूप जानना। अरु और भी केतीक वस्तूका त्याग करे सो कहै है। अरु बीधा अन्न अरु माखन कहिये नैनू। अरु विदल कहिये दुफाड़ा नाजका संजोग सहित उष्ण बिना। अथवा दाख चिरौंजी आदि वृक्षका फल दही वा छाछका खाना। अरु चौमासे तीन दिन सियाले (सीत ऋतु) सात दिन उन्हाले (गरमीमें) पांच दिन उपरांत कालके आटाका भक्षण नाही करना, आठ पहरके उपरांतका दही न खाइ। भावार्थः—आजका जमाया काव खाना जामन दिया पाछै पहर अष्टकी मर्यादा है और

चीथी वस्तूका भक्षण अर दही गुर मिलाइ खानेका वा जलेवी इत्यादिमें त्रस जीव वा निगोद उपजै है तातें याका त्याग करना। अरु नैनूकी दो घडीकी मर्यादा है वा कोई आचार्य शास्त्र विषै चार घडीकी मर्यादा भी लिख हैं तातें दोय घडी वा चार घडी पाछै जीव उपजे है। परन्तु ये भअक्ष हैं तातें तुरतका भी विलोया खाना उचित है नाही। याका खावा विषै मास कैसा दोष होय है या विषै राग भाव होवे है और वैंगन अरु साधारन वनस्पति अरु घोंसका वरा अरु पाला अथ गाडा मृत्तका अरु विष अरु रात्रि भोजनका भक्षन तजे। पांच उदम्बर अरु वैंगण ताका भी भक्षण नहीं करै। याका खाया सूं रोग भी बहुत उपजे है। और चलित रस ताकौ व्यौरो वासी रसोई मर्यादा उपरात आटा घी तेल मिठा-ईका भक्षन तजे अरु आम व मेवा आदि जाका रस चलि गया होई ताका भक्षन नाही करै है। और बडे वेर वा जारियाका वेर हाथ सूं फोडा विना अरु नेत्र सौ विना देखे आप ही मुखमे न देय। ये काना बहुत होय है ता विषै लट होइ है। अरु गलित आम विषै भी मृतका तार सरीखा लट होय है। नो विना देख्या चूसै नाही। अरु काना साठा वा कानी ककडी इत्यादि काना फूल तामे लट उपजे है ताका भक्षन तजै और सियालेमे साग आदि हरित काय ता विषै वादलाका निमित्त करि लटां उपजे हैं ताका भक्षन तजौ अरु कलीदा तरबूज आदि वडा फल याका घात विषै निर्दईपना विशेष उपजे है। मलीन चित्त होय है अरु याको हस्त विषै छुरियासूं विदारै तब वडा त्रस जीवा कीसी हिंसा किये की सो परनाम विषै प्रतिभाषै है। तातै

बड़ा फलका दोष विशेष है। अरु केला ताका भक्षण तजै या खाया राग बहुत उपजै है। अरु फूल जात वा नरम हरत काय जाकी छालि कहिये छोटा जाडा होय वा बटके इठै वा माटा आदिकी ये लीवा कांकरी आदि ताकी लकीरी अरु निबू दाड़ों आदि ताकी जाली ये गूढ होय याका व्यक्तपना नाहीं भासै ताका भक्षण तजै। भावार्थ ऐसी वनस्पति विषै निगोद हो है। इत्यादि जीव हरित काय विषै निगोद होय वा जा विषै त्रस जीव अरु दुष्ट चित अत्यत होय है। अरु अत्यत गदला परनामा करि पाप करि लित ऐसा बहुत होय ते वनस्पति सर्व ही तजनी उचित है। और आगै ऐसे व्यापारादि नाही करै है ताका व्यौरा—लोह हाड़ चाम केश हीग सींघड़ाका घ्रत तेल तिल नमक हलदी साजी लोह गंग फिटकडी कसुंभा नील साबण लाख विष सहद पसारीपनाका सर्व ही व्यापार निषिद्ध है। अर हरित कायका व्योपार ताका अर वीधा अन्न आदि जा विषै त्रस जीवाक घात बहुत होई ऐसा सर्व ही व्यापार तजै। और चंडाल कसाई धोबी लुहार ढेड डूम भील कोरी बागरी साढना कूंजर नीलगर ठग चोर पालीगर याका वनज कहिये वाकों वस्तु मोल वेचै भी नांही, वाकी वस्तु मोल लैनीका भी त्याग करै वा हलवाईगरीका किसब तजै। वा धोवी पास धुवाई वा छीप नीलगर पास रंगाया कपड़ा वैचना ताकूं तजै वा खेती करावै नांही, खांड पिडावै नाही वा खेतीका करावा वालैनै उधार दे नाही वा चूना खेरकी भट्टी आदि वरै करावै नाहीं और भड़ निमि वस्तु सिकावै नाहीं। वा भड़भूजा वा लुहार ताक

द्रव्य उधार दै नाहीं वा कोयलाकी भट्ठी करावै नाहीं वा दारूकी भट्ठी करावै नाही वा सोरा कहिये दारु जाकौ करावै नाही वा कोइला वा मदिरा वा सोरा कौ करनेवालौ कौ बनजे नाही। चहुर ऊट घोडा भैसा बलद गधा गाडी बहल कुराडी बसूला भाडे दै नांही वा आप भाडौ देय वहावै नाही। वा ताकै वहावनेवाले पुरुषकू उधार द्रव्य दे नाही या विषै महत् पाप है। जा कार्य करि प्रानी दु:खी होई वा विरोधो जाई ऐसा कार्य कौ धरमात्मा पुरुष कैसे करै। जीवहिंसा उपरात और संसार विषै पाप नाहीं तातै सर्व प्रकार त्यजनौ जोग्य है। अर ताकू द्रव्य भी उधार दै नाही और शास्त्रका व्यापार तजै अरु शास्त्रके व्यापारीकू उधार भी दै नाही इत्यादि खोटे किसब तजै अरु याके सेवा वाले ताकी सेवा लेई कौ तजै और पापिनकी वस्तु मोल ले नही और विरांना डील (शरीर) का पहिरया वस्त्र मोल लै आप पहिरै नाहीं। अपनै डील (शरीर) का वस्त्र और कुं बेचै नहीं। अरु मगता आदि भिक्षुक दुखित जीव नाज आदि भिक्षुक वस्तु माग ल्याये होय ताकू मोल दे कर भी लैना नही। अरु देव अरहंत गुरू निरग्रन्थ धर्म्म जिन प्रणीत ताके अर्थ द्रव्य चढाया ताकौ निर्माल्य कहिये ताकै अंश-मात्र भी ग्रहण करै नहीं या का फल नरक निगोद है। इहां प्रश्न जो ऐसा निरमाल्यका दोष कैसे कहा, भगवानकु चढा द्रव्य ऐसा निंद्य कैसे भया ताका समाधान। रे भाई ये सर्वोत्कृष्ट देव है ताकी पूजा करवे समर्थ इन्द्रादि देव भी नाही। अरु ताके अर्थ कोई भक्त पुरुष अनुरागकरि द्रव्य चढाया पाछै अपूठा चहोड़ वाकी जाइगा वाकै द्रव्य कौ विना दिया ग्रहन करै तौ वे पुरुष देव गुरू

धर्म्मका महा अविनय कीया। विना दियाका अर्थ ए है जो अरहत देव तौ वीतराग हैं तातै ऐ तौ आप करि कोई नै दे नाहीं। तातै विना दिया ही कहिये है जैसा राजादिक बड़े पुरुष कोई वस्तु नजर करि पाछै वाका विना दिया ही मांगते है तौ वाकै राजा महादंड दै है। ऐसै ही निरमाल्यका दोष जानना। और भगवानके अर्थ चढाया सर्व द्रव्य परम पवित्र है। महा विनय करनै योग्य है। परन्तु लेना महा अजोग्य है। या समान और अजोग्य नाही तातै निरमाल्य कौ तजना। वा निरमाल्य वस्तुका लेवा वाला ताकौ उधार दे नाहीं। वहन पुत्री आदि सुवासिनी ताकौ द्रव्य उधार तनक भी गृहन करै नाहीं इत्यादि अन्याई पूर्वक सव ही कार्यकूं धर्मात्मा छोडै है, जा कार्य विषै अपजस होय अपना परिणाम संक्लेश रूप रहे वा शोक भयरूप रहे ता कार्यकूं छोडे। तव धर्मात्मा सहज ही होई ऐसा भावार्थ जानना। ऐसै प्रथम प्रतिमा कौ सयमो नीत मारग चालै छै। घरका भार सौंप दूजी प्रतिमाका ग्रहण करे सो कहे है। पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत ए वारह व्रत अतीचार रहित पाले। ताकूं दूसरी प्रतिमाका पालक कहिये प्रतिमा नाम प्रतिज्ञाका है। अव याका विशेष कहिये है। द्वेषवुद्धि कर च्यार प्रकार त्रस जीवका घात। अरु विना प्रयोजन पाच प्रकारका थावर जीवका घात नाहीं करै ताका रक्षक होई। भावार्थ— कैई या कहै तूनै पृथ्वीका राज द्यूं छूं। तू थारां हाथसूं कीडांनै मार अरु नाहीं मारै तौ थारा प्राननका नाश करिसूं। ऐसा राजादिकका हठ जानै। जो हुं याकूं कहौ न करिस्यूं तौ ए विचारी

छे सोई करसी ऐसी जान धर्मात्मा पुरुष ऐसी विचार करे जो हमारे चूतै त्रस जीव ऊपर शस्त्र कैसे चलाये जाई। तीस् शरीर धनादिक जाइ छे। तो जाव याकी स्थिति ये ते ही छै महारो कोई तरो राखा कैसे रहसी। अरु थिति बधती छै। तौ राजा वा देव करि हत्या कैसे जासी। यह नि शन्देह है। तीसू म्हारे सर्वथा करि जीव घात करवौ उचित नाही अरु कोई या कहै अबार तौ एक ही छे सोही करौ पाछे प्रायश्चित करि लीजौ, सो धर्मात्मा पुरुष ई नैया कहै। रे मूढ़ जिन धर्मकी आखडी ऐसी नाहीं। जो शरीर बाधुवादिक वास्ते भग कीजै अरु पाछै फेर प्रायश्चित कीजे यौ उपदेश तौ आनमत मे छै जिनमतमे नाहीं सो ऐसी जान वे धर्मात्मा पुरुष जीवकौ मारवौ तौ दूर ही रहौ। पन अश मात्र भी परनाम चलावे नाहीं अरु कायरताका भी वचन उच्चारै नाहीं। अरु चलन हलनादि क्रिया विषै अरु भोग संजोगादि क्रिया विषै सख्यात असंख्यात जीव त्रस अर अनत निगोद जीवकी हिसा होय है। परन्तु याके जीव मारवा कौ अभिप्राय नाही। हलन चलनादि क्रियाका अभिप्राय है अर वा क्रिया त्रस जीवकी हिसा बिना बनै नाही ताते याकू स्थूलपनै त्रस जीवकी रक्षा कहिये अरु पाच थावरकी हिसाका त्याग है नाहीं तौ भी विना प्रयोजन थावर जीवका स्थूल पनै रक्षक ही है। ताते याकौ अहिसावृतका धारक कहिये। ऐसे जानना आगे सत्य वृत का स्वरूप कहिये है जो झूठ बोलौ राजा दड देवे जगत विषै अपजश होय। ऐसा स्थूल झूठ बोलै नही। अरु ऐसा सत्य वचन भी बोलै नही जा सत्य बचन बोलै परिजीवका बुरा होई। अरु

कठोरताने लिया ऐसा भी सत्य वचन बोलै नहीं। कठोर वचन कहिये वाका प्रान पीडा जाय है अरु अपना भी प्रान पीडा जाय है ऐसा सत्य वचनका स्वरूप जानना। अरु अचौर्यव्रत स्वरूप कहिए है औरांकी चोरी सर्व प्रकार तजे और चोरीकी वस्तु मोल लेना ही। अर गैले पडे पाइ होइ तो वस्तु ताका ग्रहन करै नहीं अरु जो ले मारे नाही अरु वस्त्र अदलाबदली करै नाही काहीकी रकम चुरावै नाही, राजादिकका हामल चुरावै नहीं। तौल विषै घाट दे नहीं। बाढ लेना ही। और गुमास्तागिरी विषै वा घरका व्योपार विषै कि सौकी चोरी भी नही करै इत्यादि सर्व चोरी का त्याग है। भावार्थ॥ मारगकी माटी वा दरयावका जल आदिका तो याके विना दिया ग्रहन है। ये माल राजादिकका है याका नही येती चोरी याकौ लागै है अरु विशेष चोरी नहीं लागै है तिहि वास्तै याकुं स्थुल पनै अचौर्य व्रतका धारक कह्या। आगै ब्रह्मचर्य्य व्रतकौ कहिए है। सो परस्त्रीका तो सर्व प्रकार त्याग करै। अर स्वस्त्री विषै आठै चौदश अठाई सोलह कारन दक्षलक्षन रत्नत्रय आदि जे धर्म्म पर्व ताकौ शील पालै अरु काम विकार विषै घटती करैं। अरु शीलकी नव वाडि ताकूं पालै ताकौ व्यौगै। काम उत्पादक भोजन करै नही, उदर भर भोजन करै नही. श्रगार करे नाही, पर स्त्रीकी सेज्या विषै ऊपर वसै नही अकेली वतलावै नाही। अकेली स्त्रीकी संगति करै नाही रागभाव करि स्त्रीके वचन सुनै नाही रागभाव करि स्त्रीका रूप लावण्य निरख करै नही। मनमथ कथा करै नही ऐसे ब्रह्मचर्य्य व्रत जानना। आगै परिग्रह परिमान व्रत कहिये हैं सो आपना पुण्यके

अनुसार दश प्रकारके सचित अचित बाह्य परिग्रह ताकौ प्रमान न करै ऐसा नहीं के पुन्य तौ थोडा अर प्रमान बहुत राखै ताकों परिग्रह परिमान व्रत कहिये सौ यो नाहीं है या विषै तौ अपन लोभ तीव्र होई है इहां लोभ हीका त्याग करना है ऐसे जानना अबे दश प्रकारके परिग्रहका स्वरूप कहिये है। धरती, जान कहिये पालकी आदि, द्रव्य कहिये धन, धान्य कहिये नाज, हवेली, हलवाई, वरतन, सिज्यासन, चौपद, दुपद, ऐसे दश प्रकारके परिग्रह त्यागका प्रमान राख अवशेष त्याग करना ताकौ परिग्रह त्याग व्रत कहिये है। ऐसे पाच अणुव्रतका स्वरूप जानना। आगे दिग्व्रतका स्वरूप कहिये है। सो दिग नाम दिशाका है। सो दश दिशा विषै सावद्य जोग अर्थि गमन कर वाका परनाम राख जौ वौ जीव मर्यादा कर लेई उपगत क्षेत्रसू वस्तु मगावै नाही वा भेजे नाही चिट्ठीपत्री भेजे नाही। अरु वहाकी पत्री चिट्ठी आई वाचै नाही ऐसे जानना। आगे देशव्रत कहिये है। देश नाम एकौ-देशका है दिन प्रत दिशाव्रत दिशा प्रमान कर लै आज मोनै दोय कोश वा चार कोश वा वीस कोश मौकला है। अवशेष क्षेत्र विषै गमन न करनै आदि कार्यका त्याग है ता विषै भी रातका जुदा प्रमाण है। दिनका जुदा प्रमाण करै रात विषै तुच्छ गमन करना है दिन विषै अरु देश व्रत विषै विशेष गमन करना। तानै ति माफिक गमन करै ता आगे कौन करता। भावार्थ। दिगविरत विषै अरु देश विरत विषै एता विशेष है सो दिगविरत विषै तौ दिशाका जावत जीवनै प्रमान राख त्याग करै। अर देशविरत

विषै मर्यादतीमैं मर्यादअल्प राख घटाय घटाय त्याग करै। जैसे वरस दिनका, छह महीनाका, महीनाका, एक एक पक्षका, वा दिनका वा पहरका वा दोय घडीका ता पर्यंत क्षेत्रका प्रमाण सावद्य जोगके अधिकरि धर्मके अर्थ नाहीं करै। धर्मके अर्थ कोई प्रकारका त्याग है नाहीं। आगें अनर्थदंडत्यागव्रत कहिये है - विना प्रयोजन पाप लगै अथवा प्रयोजन विषै महापाप लगै ताका नाम अनर्थदंड है। ताका पांच भेद है १ पापोदेश २ अपध्यान ३ हिंसादान ४ प्रमादचर्या ५ दुश्रुतिश्रवन एवं पांच याका विशेष कहिये है। अपध्यान कहिये जा वात करि अन्य जीवका वुरा होइ वा राग द्वेष उपजै, कलह उपजै अरु विश्वास उपजै दुःख उपजै, मरचा जाय, धन लुटा जाइ सो कलह उपजै ताका उपायका चितवन करै। मुवा मनुष्यकूं ताके वाके दुष्टकौं सुनाय देना। परस्पर वैर आदि करावना राजादिकका भय वतावना अवगुन प्रकट करना। मरमछेद वचन कहना ताका ध्यान रहै इत्यादि अपध्यानका स्वरूप जानना। वहुरि हिंसादान कहिये है। छुरी, कटारी, तरवार, वरछी इत्यादि हथियार मागा देना। ईधन, अग्नि, दीपक मांग्या दैना, कुसी, कुदारी, फावड़ा, कौ मांग्या देना, गाड़ी वलध ऊंटकौ घोड़ाकौ मागा देना, मिगारादिकको मांगा दैना और चूला, ऊखली, मूसल, घरटी (चक्की) मांगा दैना, काकसी वुहारीकौ मांग्या दैना इत्यादि हिंसाने कारनजे वस्तु सो धरमात्मा पुरुष पेलेका भला मनावा वास्तै मांग्या है नांही। ऐसे ही हिंसानै कारन जे वस्तु ताका व्योपार भी करै नांही, और वैठा वैठा ही विना प्रयोजन खोद नाखे अर पानी ढोलै छै।

अरु अग्निनैं प्रजाले छे । अरु वीजनासौ पवन करवौ करै । वनस्पतीनै शस्त्रकरि छैद नाखै हाथसौ तोडिनाखै ऐसे हिसादानका स्वरूप जानना । आगै प्रमाद चर्याकौ स्वरूप कहिये है। प्रमाद लिये धरती ऊपर विना प्रयोजन आम्हां साम्हा फिरवौ करै, कहीनै हालै कहीने चालै, कठैनै ही वा विना देख्या बैठ जाय, विना देखै वस्तु उठाय लेय वा मेल देय इत्यादि प्रमादचर्याका स्वरूप जानना । आगै पापोदेशका स्वरूप जानना ऐसा उपदेश देना ही फलाना तू हवेली कराई वा कुवा, वावडी, तलाव खनाय वा खेत बाध थारै खेती निदानी आयो है, तीकौ निहाउ वा थारो खेत सूकै छे जाकु जलि करि सीचवा, थारी बेटी कुंवारी है ताकौ व्याह करि वा थारौ बैटा कुवारा छे ताकू व्याह करवा, बजार विषै नींबू, आवला, काकडी, खरबूजा आदि जे फल विकै छै सो तू मोल ल्याव अरु गाजर, कदमूल, सकलकंद, आदि वजारमैं विकै छै सो तू मोल ल्याव वा मेथी, वथुवौ, गॉदल इत्यादि वाजारमै विकै छै सो मोल ल्याव । तोरई, करेला, ढीढसा आदि मोल मगाई वाकी उपदेश देई अर अग्नि ईंधन जल वृत लून मंगाय वाका उपदेश देय, वा चूल्यो वालवाकौ, आगन लिपायवांकौ, गारा गोवर करवाका उपदेश देइ । कपडा धुवावाका, स्नान करावाका, स्त्रीके मस्तकका केश सवारवाका, खाट तावडे नषायवाका, कपडा वा सेज आदि काडवाका, दीवो जोवाकौ, वींध्यो सूल्यो नाज मगावेका वा घृत तैल गुड खाड नाज आदि वस्तु भाडार राखवा का उपदेश देई । वा दान तप शील सजम **सौ सु** आखडी आदि धर्म्म कार्य विषै कोई पुरुष लागै ताकूं मनै करै ऐसा उपदेश

दे अथवा पूर्वै कहै जे सर्व वस्तुका सौदा करे अरु नाना प्रकारकी खोटी वस्तु चतुराई व अकल औराकुं सिखावै अथवा राजकथा वा चोरकथा स्त्रीकथा देशकथा इत्यादि नाना प्रकारकी विकथाका उपदेश देई ऐसे पापोदेशका स्वरूप जानना। आगै दु श्रुतिका स्वरूप कहिये है। दुःश्रुत कहिये है खोटी कथाका सुनना श्रंगारादिक गीत राग वाजित्रका सुनना। काम उत्पादन कथा भोजन चोर राज देश स्त्री वेश्या नृत्यकारणीकी कथा वा रार सग्राम जुद्ध भोगकी कथा स्त्रीका रूप हावभाव कटाक्षकी कथा, जोतिष वैद्यक मंत्र तंत्र जंत्र स्वरोदयकी कथा, ख्याल तमाशा इत्यादि पापनै कारन ताकी कथाका सुनना ताकौं दु.श्रुति श्रवन कहिये है। इत्यादि ये विना प्रयोजन महापाप ताकौं अनर्थदंड कहिये है। ताका त्याग करे ताकौं अनर्थदंड त्याग व्रत कहिये ऐसे तीन गुणवृतका स्वरूप जानना।

आगै सामायिक व्रत कौ स्वरूप कहिये है सो अथोन सवारै मध्यान विपै त्रैकाल (तीन वेर) सामायिक करे। आठै चौदश प्रोषध करै ताका स्वरूप आगै कहैगे। आगै भोगोप-भोग व्रतका स्वरूप कहा है। सो एकवार भोगवामे आवै सो भोग जैसे भोजनादि। अरु वेही वस्तु बार वार भोगिये जैसे स्त्री वस्त्र वा गहना आदि ताकौ उपभोग कहिये। नित्तवार चार पहर कौ प्रमान करले। प्रभात प्रमान करै सो तौ अथौननै याद करले अरु अथौनका प्रमान कीनौ प्रभात याद करले। याका विशेष भेद ताका नाम सत्तरा नेम है ताका व्योरा भोजन १ षट रस २ जलपान ३ कुंकुमादि ४ लेपन ५ पुष्प ६ ताम्बूल ७ गीत ८

नृत्य ९ ब्रह्मचर्य १० श्नान ११ भूषण १२ वस्त्रादि १३ वाहन १४ सेन १५ आसन १६ सचित १७ आदि वस्तु सख्या ऐसा जानना। आगे अतिथि संविभागका स्वरूप कहिये है। विना बुलाया तीन प्रकारके पात्र वा दुखित अपने वारनै आवे अनुराग कर दान दे सो पात्रनै तौ भक्ति करि दें। अरु दुखित जीवनै अनुकंपा कर दें। सो दातारके सात गुण सहित दे अरु मुन्यांनै नवधाभक्ति कर दे। ताकौ व्योरौ नवधाभक्तिका नाम प्रतिग्रहन है। ऊचौ स्थान १ पादोदक २ अर्चन ३ चरण धोना ४ मन-शुद्धि ५ वचनशुद्धि ६ कायशुद्धि ७ एषणाशुद्धि ८ शुद्ध-अहार देना ९ ऐसा जानना और भी दान दे। मुन्यांनै कमडल पिछी पुस्तक वा औषधि वसतका देई। अरु आर्जिका श्रावकांनै पात्र तौ वे ही अरु वस्त्र देई। अरु दुखित जीवनै वस्त्र औषधि आहार आदि देई। अरु अभय दान भी देइ और जिन मंदिर विषै नाना प्रकारके उपकरन चढ़ोडे पूजा करे वा शास्त्र लिखाइ धर्मात्माज्ञानी पुरुषनै देइ। अरु वंदना पूजा करावे, तीर्थ जात्रा विषै द्रव्य खरचै। अरु न्याइपूर्वक द्रव्य पैदा करै ताका तीन भाग करै। तीमैं एक भाग धर्म्म निमित्त खर्चै, अरु एक भाग भोजनके अर्थ कुटुम्बनै सौपै, अरु एक भाग सचय करै सो तौ उत्कृष्ट दातार जानना। अरु एक भाग तौ दान अर्थि तीन भाग संचय करै सो जघन्य त्यागी है। अरु जो दशौ भाग धर्म्ममे खर्चै नाहीं। तौ वाकौ घर मसान समान है। मसानविषै भी अनेक प्रकारके जीव हौमे जाइ है। अरु गृहस्थका चूला विषै नाना प्रकारके जीव दग्ध होय है। अथवा कैसा है वह पुरुष

सो सर्वसू हलकीसौं हलकी तोरई है। और तामे भी हलकौ आकके फूल है, और तासूं भी हलकी परमानू छै तीसूं भी हलकौ जाचक है। तीसूं भी हलकौ कृपण दान रहित पुरुष है। सो वे तौ अपनौ सर्वस खोय हाथमोड़ो, अरु जाचना कौ दीन वचन मुखसेती भाखौ अरु विना बुलाये आपनौ घर आयौ तौ भी वाकौ दान नाहीं दीनौ। तीसौं जाचक पुरुष सौं भी हीन दान करि रहित पुरुष है, और धर्मात्मा पुरुष के धर्म देव पूजा अरु दान छे। षट् आवाश्यक विषै भी ये दोय मुख्य धर्म देवपूजा अरु दान छै। वाकी चार गौण छै गुरुभक्ति १ तप २ संयम ३ स्वाध्याय ४ तातै सात ठिकाना विषै द्रव्य खरचवौ उचित है। मुनः १ अर्जिका २ श्राविका ३ श्रावक ४ जिनमंदिरप्रतिष्ठा ५ तीर्थजात्रा ६ शास्त्र लिखावै ७ ए सात स्थानक जानना। सो दान देना के चार भेद है। प्रथम तौ दुखित भुखित जीवकी खबर पाइ वाके घर देवा जोग्य वस्तु पहुचावै सो तौ उत्कृष्ट दान है सो दान देना। बहुरि वाकूं अपने घर बुलाई कर दान देना सो ए मध्यमदान है। बहुरि अपनौ काम चाकरी कराय दान देना सो ये अधम दान है। और कोई प्रकार धर्म विषै द्रव्य नाहीं खरचे है अरु तृष्णाके वशीभूत हुवा द्रव्य कमाई कमाई इकट्ठा ही किया चाहै है तौ वह पुरुष मरकै सर्प होय है। पाछे परम्परा नरक जाई है निगोद जाइ है। ता विषै नाना प्रकारके भेदन मारन ताडन सूलारोपन आदि तौ नरकके दुख अरु मन कान आंख नाक जिह्वा कौ अभाव है जाके, अरु स्पर्श इन्द्रीकै द्वारा एक अक्षरके अनंतवे भाग ज्ञान वाकी रहै है। ता

विषै भी आकुलता पावैं है। ऐसा एकेन्द्रिय परजाई है सो नरकके दुखतैं भी विशेष दुख्य जाननां। सो वह लोभी पुरुष ऐसी नरक निगोद परजाई विषै अनंतकाल पर्यंत भ्रमन करे है। वामों वे इन्द्री आदि परजाई पावना महा दुर्लभ होई है। तातै लोभ परनतिक अवश्य तजना जोग्य है। जे जीव नरक तिर्यंच परजाइनै छोडि मनुष्य भव विषै प्राप्त होय है। अरु नरक तिर्यंच गत हू कौं पाछे जानें जोग्य है ताका तौ यह स्वभाव होय है ताकौं द्रव्य बहुत प्रिय लागे है अरु धनके वास्ते निज प्रानका त्याग करे पन द्रव्यका ममत्व छोडै नहीं तौ वह रंक वापरा गरीब कृपन हीनबुद्धि महामोही परमारथके अर्थ दान कैसे करे वाके वृते रूपैका रुपैआ कैसे दिया जाई। बहुरि कैसा है वे पुरुष गच्छके समान है स्वभाव व परनति जाकी। बहुरि दातार पुरुष है सो देवगति माहीसू तौ आगे है अरु देवगति वा मोक्षगतिनै जानें जोग्य है। सो ए न्याय ही है। तिरयंच गतितै आए जीवके उदार चित्त कैसे होइ ज्या वापरा असंख्यात अनत काल पर्यंत क्यों भी भोग सामग्री देखी नाही। अरु आगे मिलनेकी आस नाही तौ वाके तृष्णारूपी अग्नि अरु किंचित विषय सुखरूप जल करि कैसे बुझै। अरु असख्यात वर्ष पर्यंत अहमिन्द्र आदि देवोपुनीत आनद सुखके भोगी ऐसा जीव मनुष्य पर्यायके हाड मास चामके पिंड मल मूत्र करि पूरित ऐसा शरीर ताके पोषनें विषै आशक्त कैसे होइ। अरु कंकर पत्थरादि द्रव्य विषै अनुरागी कैसे होइ। अरु भेद विज्ञान करि सपर विचार भया है जानें आपकौ परद्रव्यसूं भिन्न सास्वता अविनाशी

सिद्ध शादृश्य लोकालोकके देखनहारे आनंदमय जान्या है।
ताहीके प्रसाद कर सर्व प्रकार परद्रव्यमूं निवृत्ति हुवा चाहै है
ताका सहजही त्याग वैराग्यरूप भाव वर्ते है। एक मोक्ष ही नें
चाहै है ताकै परद्रव्यमू ममत्व कैसे होइ ए धन महापाप क्लेश
करि तौ उत्पन्न होय है। अरु अनेक उपाय कर वाकौ आपनें आधीन
राखिये है। ताकै विषै भी महा पाप उपजै है। अरु याकै मान वडाई
अर्थि वा विषय भोग सेइवेके अर्थि अपनें हाथांकरि खरचिये है।
ता विषै व्याहादिककी, हिसा करिवा द्रव्यके छीजनै करि महा पाप
कष्ट उपजै है। अरु विना दिया राजा चोर खोस लूट ले है वा
अग्निमें जल जाइ है वा व्यंतरादि हरलै है। वा स्वयमेव गुम जाइ
है वा विनश जाइ है ताके दुखकी वा पाप बंधकी काई पूछनी।
सो ये पर द्रव्यका ममत्व करना सत्पुरुषानें हेय कह्या है। कोई
प्रकार उपादेय नाही परन्तु अपनी इच्छाकरि परमार्थकै अर्थ दान
विषै द्रव्य खरचै तौ ईलोक विषै महासुखनें पावै अरु देवादिक
करि पूज्य होय ताके दानकौ प्रभाव करि त्रैलोक्य करि पूज्य है
चरनकमल जाके ऐसा जो मुनिराज ताका वृंद कहिये समूह सो
दानके प्रभाव करि प्रेरया हुवा विना बुलाया दातारके घर चाल्या
आवे है। पाछै दानके समै वे दातार ऐसा फल सुखकौं
प्राप्त होय है अरु ऐसा शोभै है सो कहिये है मानूं
आज मेरे आंगन कल्पतरु आयौ कै कामधेनु आई है।
कि मानूं चितामन पाया कि मानूं घर मांहि नवनिधि पाई
इत्यादिक सुख फल उपजै है। अरु त्रैलोक्य करि पूज्य है चरन
कमल जाका ऐसा महामुन ताका हस्तकमल तौ तलै अरु दातार

का हस्त ऊपर । सो यासों भी दातारकी उत्कृष्टता पात्रके दान विना और कौन कार्य विषै होय । अर जो वे मुनि रिद्धि धारी होइ तौ पंचाश्चर्य्य होइ ताकौ ब्यौरा । रत्नवृष्टि १ पहुपवृष्टि २ देवदुंदभी आदि वादित्र ३ अरु देवांके जयजयकार शब्द होय ४ गंधोदक वृष्टि यह ५ वात आश्चर्यकारी होय तातै याका नाम पचाश्चर्य है। वहुरि तिहि दिन वा चार हाथकी रसोई विषै नाना प्रकारकी तरकारी वा पकवान सहित अमृतमई अटूट होय जाइ अरु वे रसोईशाला विषै सर्व चक्रवर्त्तिका कटक जुदा जुदा बैठ जीमें तौ भी सकुडाई होय नाही। अरु रसोई टूटै नांही ऐसा अतिशय वरतै। पाछें वडा वडा राजा नगरके लोग सहित अरु इन्द्रादिक देव त्यां कर वह दातार पूज्य होय। अरु वडाई जोग्य होय अरु वाका दीया दानकी अनुमोदना करि घना जीव महा पुन्यकौ उपार्जै । परमपराय मोक्षनै पावे । सो सम्यग्दृष्टी तीन प्रकारके पात्रनै दान दै तौ स्वर्ग ही जाय। अरु मिथ्यादृष्टी दान दै तौ जघन्य मध्यम उत्कृष्ट भोगभूमि जाई । पाछै मोक्ष जाय ऐसा पात्रदानका ईलोक वा परलोक विषै फलै है। अरु दुखित भुखित जीवांने करुना करि दान दीजै तौ वाका भी महा पुन्य होई है। सर्व सौ वडा सुमेर है तासूं भी वडा जंबूद्वीप है तासूं भी वडा तीन लोक है तासू भी वडा अलोकाकाश द्रव्य है। पनि एतौ कछू दे नाही तातै याकी शोभा नाही। तासू भी वडा दातार है तासू भी वडा अजाचीक त्यागी पुरुष है। तातै कोई अज्ञान मूरख कुवुद्धि अपघाती ऐसा फल जान करि भी दान नाही करै है तौ वाकी लोभीकी वा अज्ञानकी कांई पूछनी

अरु कदाच दान करै तौ कुपात्रनै पोखै है अरु पुन्य चाहै है। तौ वे पुरुष कौनकी नाईं, जैसे कोई पुरुष सर्प नै दुग्ध प्याय वाका मुखसो अमृत लीया चाहै है। जल विलोय घ्रतकौ काढ़ा चाहै है, पत्थरकी नाव बैठ स्वयम् रमन समुद्र तिरया चाहै है। वा वज्राग्र विषै कमल कौ बीज बोय वाके कमलनके फूलकी आशा करै है। वा कल्पवृक्ष काट धतूरा बोवै है वा अमृतकूं तज हलाहल विषका प्याला पीके अमर हुवा चाहै है। तौ काई वा पुरुषका मन वांछित कारज सिद्ध हो सी। कार्य सिद्ध तौ कार्य कै लगै होसी। अरु झूठा ही गरज करि मान्या तौ गरज कोई सरी। काच का खंडनै चिन्ता मन रत्न जानै घना अनुराग सूं पल्लै वांध्य राख्या तौ काई वह चिन्तामणि रत्न हुवा। जैसे बालक गारि पाखानके आकारकूं हाथी घोड़ा मान संतुष्ट होय है त्यों ही कुपात्रका दान जाननां घना कहा कहिये। जिनवानी विषै तौ ऐसा उपदेश है रे भाई धन धान्यादिक सामग्री अनिष्ट ही लागै है तो आधेरे कूवामें नाख द्यो तो केवल द्रव्य जाइ लो। और अपराध क्यों नाही होयला अरु कुपात्र कौ दान दिये धन भी जाइ। अरु परलोक विषै नरकादिका भव भव विषै दुख सहनै पडेगा तीसू प्रान जावो तौ जावो पन कुपात्रनै दान देवा उचित नांही। सो ए बात न्याइ ही है। पात्र तौ आहारादिक लै मोक्ष साधन करै है अरु कुपात्र आहारादिक लेइ अनत सागरके बधावनैका कार्य करै है। सो कार्यके अनुसार कारनके कर्त्ता दातार ताकौ फल लागै है। सो वे कुपात्रानै दान दिया मानौ आपाने मोक्षका दान दिया। अरु वे कुपात्रनै दान

दिया अपूठा आपाने अनत ससार विषै डुबोया अन्य घना जीवानै डुबोया ऐसा जान बुद्धिमान् पुरुषन कू सर्व कुपात्र कूं दान तजना सुपात्र दान करना उचित है। ग्रहस्थके घरकी शोभा धनसूं है। अरु धनकी शोभा दानसू है। अरुधन पाईए है सो धर्म्म सो पाई ये है। धर्म्म विना एक कौडी पाइवौ दुर्लभ है। जे अपना पुरुपार्थ कर धनकी प्राप्त होय तौ पुरुपार्थ तौ सर्व जीव कर रहै है। एक ऐक जीवकै तृस्ना रूपी खाडा ऐसा दीर्घ ऊडा है। ताके विषै तीन लोककी सम्पदा पाई हुई परमानू मात्रसी दिखलाई दे है। सो ऐसा तृस्ना रूपी खाडकौ सर्व ही जीव पूरया चाहै हैं। परन्तु आज पर्यंत कोई जीवने नाही पूरया गया। तातै सत्पुरुष तृस्ना छोडि सन्तोपने प्राप्त भया है अर त्याग वैराग्यनै प्राप्त होय है। ताहीका प्रसादकरि ज्ञानानद-मय निराकुलित शांति रस करि पुर्ण सूक्ष्म निर्मल केवलज्ञान लक्ष्मीनै पावे है। अविनाशी अविकार सर्व दोष रहित परम सुखनै सदैव साश्वता अनतकाल पर्यंत भोगवे है। ऐसा निर्लोभ-ताका फल है तातै सर्वजीव निर्लोभ ताकौ सर्व प्रकार उपादेय जान भजौ, कृपनताने दूर ही ते तजनौ। आगे दुखित भुखितके दानका विशेष कहिये है। अधा, वहरा, गृगा, लूला पागुला वा सकल वृद्धि स्त्री रोगी घायल क्षुधाकरि पीडित शीतकी बाधा करि पीडित वंदीवान तिर्यंच व्या व्यावर स्त्री कूंकरी विलाई गाय भैंस घोटी आदि जाका कोइ रक्षक सहाइक खाविद नाहीं। ऐ पूर्व कहे मनुष्य तिर्यंच ते सर्वदा अनाथ पराधीन हैं। अर गरीब है दुखित है, दुखकरि महाकष्टनै सहैं हैं। अरु बिलविलाट करै

हैं । अर दीनपनाका बचन उच्चारे हैं । दुख सहने कूं असमर्थ हैं ताके दुख करि विलखा गया है मुख जाका । अर शरीर करि छीन है बल करि रहित है । सो ऐसा दुखी प्रानिन कुं देख, दयालु पुरुष हैं ते भयभीत होय हैं । अरु वाकैसा दुख आपकै होय हैं । अर घबराइ गया है चित्त जाका ऐसा होतै वह दयालु पुरुष जिहि तिहि प्रकार अपनी शक्ति के अनुसार वाके दुखकों निर्वृत्त करै है । अरु प्रानी जीवकूं मारता होई बाधा करता होई ताकौ जिहि तिहि उपाय करि छुडावै है । दुखी जीवका अवि-लोकन करि निरदई हुवा आगै नाही चल्या जाइ है । अरु वज्र समान है हृदय जाका ऐसा निर्दई पुरुष दुखी प्रानीनकूं भी विलोक जाकै दया भाव नाही उपजै है । अरु या विचारै है ये पापी पूर्व पाप किया ताका फलकूं भोगवे ही भोगवै । ऐसे नाही जानै मै भी पूर्व ऐसा दुख पाया होईगा अरु फेर२ पाऊंगा । तातैं आचार्य कहै हैं धिक्कार होउ ऐसे निरदई परनामकौ । जिनधर्मका फल एक दया ही है । जाके घट दया नाही ते काहेका जैनी । जैनी विना दया नाही यह नियम है ।

आगै दान देनेका स्वरूप कहिये है । रोगी पुरुषन कौं औषधि दान दीजिये सो नाना प्रकारकी औषधि कराइ कराइ राखजै पाछै कोई रोगी आइ मांगै ताकूं दीजिये । अथवा वैद्य चाकर राखवा का इलाज कराइये ताका फल कर देवादिकका निरोग शरीर पाइये है आयु पर्यन्त ताकौ रोगकी उत्पत्ति नाहीं अथवा मनुष्यका शरीर पावै तौ ऐसा पावै--अपनै शरीरमै तौ रोग कोई प्रकार उपजै नाहीं अरु अपनै शरीरका स्पर्श करि वा नहानेका

जल करि अन्य जीवनका अनेक प्रकार छिन मात्र मैं रोग दूर होइ है वहुरि क्षुधा तृषा करि पीडित प्रानीकों शुद्ध अन्न जल दीजै। भावार्थ--अन्न तौ ऐसा त्रस जीव अरु हरित काय कर रहित यथा जोग्य अन्न रोटी अर छान्या जलसौं पोखिये ताका फल करि क्षुधा करि रहित देवपद पावै। अरु मनुष्य होइ तौ जुगलिया तीर्थंकर चक्रवर्ति आदि पदवी धारक महा भोग सामग्री सहित होय बहुर मरते जीवकूं छुडाइये वा आप मारना छोड़िये ताका फल करि महा पराक्रमी वीर्यके धारी देव मनुष्य होइ। ताकौ कोई शंका नाहीं ऐसा निरभय पद पावै। बहुरि आप पढा होय तो औरकौं सिखाइये, तत्वोपदेश देय जिनमारग विषै लगाइये। आप शास्त्र लिखिये वा सोधिये व काव्यशास्त्रकी टीका बनाइये अथवा धन खरच नाना प्रकारकै जैन शास्त्र लिखाइये। अर धर्मात्मा पुरुषनकौं दीजिये। ये ज्ञान दान सर्वोत्कृष्ट है। याका फल भी ज्ञान है। सो ज्ञान दानका प्रभाव करि मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मन:पर्ययज्ञान विना अभ्यास किये ऐसी फुरै है पाछै शीघ्र ही केवलज्ञान उपजै है। बहुरि परनै सुखी किया आपनै जगत सुखदाई परनवै। बहुरि गुरादिककी विनय किया आप जगत करि विनय जोग्य है। अर भगवानके चमर छत्र सिंहासन वादित्र चदोवा झारी रकेवी आदि उपकरन चढ़ोडे। तौ भी ऐसा पद पावै है सो आपके ऊपर छत्र फिरै चमर ढुरै है। वा सिंहासन ऊपर वैठि देव विद्याधरोंका अधिपति होइ। बहुरि जिनमंदिरका करावा अरि भगवानकी पूजा करि आर भी त्रैलोक्य पूज्य पद पावै है।

भावार्थ—तीर्थंकर पद वा सिद्ध पद पावे है। सो ए न्याय ही है जैसा वीज बोवै तैसा फल लागे। ऐसा नाहीं कै बीज तौ और ही वस्तुका अरु फल और ही वस्तुका लागे। सो ए त्रिकाल त्रिलोक विषै होइ नाही यह नियम है। सो ही जगत विषै प्रवृत्ति देखिये है जैसा जैसा ही नाज बोवे तैसा तैसा ही निपजै। सो जैसा ही वृक्षका बीज बोनै तैसा तैसा ही वृक्षके फल उपजे सो जैसा जैसा ही पुरुष वा स्त्री वा तीर्यंचनका संयोग होइ ताकै तैसा ही पुत्रादिक उपजै। ऐसा बीजके अनुसार फलकी उत्पत्ति जाननी। तीसूं श्री गुरु कहै है। हे पुत्र कुपात्र अपात्रनै छोडि सुपात्र अर्थ दान करहु। अथवा अनुकम्पाकरि दुखित भुखित जीवानै पोषि जैसे जीवाकी बाधा निवृत्ति होइ। वा गुरुकी ठसक धरावे ताकौ दमरी मात्र भी देना उचित नाहीं। बहुरि कैसा है अपात्रका दान जैसे मुरदाका चकडोल काढिये है। अरु रुपैया पैसा उछालिये है अरु चडालादिक चुन चुन ले है अरु मुख सू धन्य धन्य करै है। परन्तु दानके करनै वाला घरका धनी तौ ज्यू ज्यू देखे है। त्यूं त्यूं छाती ही कूटै है तैसे ही कुपात्रनै दान दिया लो भी पुरुष जश गावे है। परन्तु दानके करनै देनै वालैकु तौ नरक ही जाना होसी। सम्यक्त्व सहित होय तौ पात्र जानना अरु सम्यक्त्व तौ नाहीं है अरु चारित्र है ते कु-पात्र जानना। अरु सम्यक्त्व वा चारित्र हू है नाहीं ते अपात्र ही है। ताका फल नरकादि अनंत संसारी है। अरु सर्व प्रकार ही दान नाहीं करै है सो कैसा है मसानके स्थूल मुरदा समान है। अरु धन है सौ याका मांस है। अरु कुटुम्ब परवार सो कैसे है गृद्ध पक्षी है याका

धन आमिष खाय है। अरु विषइ कषाय रूपी अरथी है। ता विषै ए जल हैं। तातै ममान मुरदाकी भलीभांति उपमा संभवे है तातै ऐसी सर्व प्रकार निंदित अवस्था जान कृपनता भनि परद्रव्यका ममत्व न करना। संसार ममत्व हीका बीज है। ऐसी हेय उपादेय बुद्धि विचार शीघ्र दान करना। अरु परलोकका फल लेना नाहीं तो यह सर्व सामग्री कालस्वरूप दावाग्नि विषै भस्म होयगी। पाछै तुम बहुत पछतावोगे सो कैसा है वो पछतावो जैसे कोई आइ समुद्रके तीर बैठ काग उड़ावने अर्थि चितामणि रत्न समुद्र विषै फेंक पछतावे है। पाछै रत्नकू झुर मरे है। परन्तु स्वप्न मात्र भी चिन्तामन रत्न पावै नाहीं ऐसा जानना। घनी कहा कहिये उदार पुरुष ही सराहवा योग्य है अरु वे पुरुष देव समान है ताकी कीर्ति देव गावै है। इति अतिथिसंविभागव्रतका स्वरूप सम्पूर्ण।

बारह व्रत सम्पूर्ण ऐसा बारा व्रतका स्वरूप जानना। आगे श्रावकके बारह व्रत तथा सम्यक्त्व अत समाधि मरनके सत्तर अतीचार ताका व्योरा स्वरूप कहिये है। प्रथम सम्यक्त्वके अतीचार ५ ता विषै 'शका' कहिये जिन वचन विषै सन्देह १ कांक्षा कहिये भोगविलासकी इच्छा २ विचिकित्सा कहिये ग्लानि ३ अन्य दृष्टीकी परोक्ष प्रशंसा ४ अन्य दृष्टि संस्तव कहिये मिथ्यादृष्टिकी समीप जाय स्तुति करना ५। ऐसे हिंसा अनुव्रतके अतीचार पाच। ता विषै 'बंध' कहिये बाधना १ वध कहिये मारना २ छेद कहिये छेदना ३ अतिभारारोपन कहिये बहुत बोझा लादना ४ अन्न पान निरोध कहिये खाना पानी

आदिका रोकना ५। ऐसे सत्यानुव्रतके अतीचार ५ मिथ्योपदेश कहिये झूठका उपदेश देना १ रहो व्याख्यान कहिये काहूकी गुप्त बात प्रकाश देना २ कूटलेख क्रिया कहिये झूठा खातादि लिखना ३ न्यासापहारा कहिये काहूकी धरी वस्तु मेटना ४ साकार मंत्र भेद कहिये अन्य पुरुषका मुखादिकका चिन्ह देखि ताकौ अभिप्राय जान प्रकाश देना ५। अबे अचौर्य अनुव्रतके अतीचार पांच। स्तेन प्रयोग कहिये चोरीका उपाइ बताइ देना १ तदाहृतादान कहिये चोरनका हरचा माल मोल लेना २ अरु विरुद्ध राज्यातिक्रम कहिये हासलका चुरावना ३ हीनाधिक-मानोन्मान कहिये घाटि देना बाडि लेना ४ प्रतिरूपक व्यवहार कहिये बाढ मोल वस्तुमै घाट मोली वस्तु मिलावना ५। ऐसे ब्रह्मचर्य अनुव्रतके पाच अतीचार। पर विवाह करन कहिये पराया विवाह करावना १ इत्वरिका परगृहीता गमन कहिये व्यभिचारनी पराई स्त्री सुहागिन ताके विषै गमन करना २ इत्वरिका अपर गृहीता गमन कहिये खाविद रहित स्त्री ता विषै गनम करना ३ अनंग क्रीड़ा कहिये हस्तस्पर्शादिकर क्रीड़ा करना ४ काम तीव्रा-भिनिवेश कहिये कामका तीव्र परिणाम करना। अबे परिगृह के विशेष कहै है। तथा और भी कहिये है। अति वाहन कहिये मनुष्य पशु आदिको अधिक गमन करावना १ अति संग्रह कहिये वस्तुनका संग्रह करना २ अति भारारोपण कहिये लालच करि अति बोझा लादना ३ अति लोभ कहिये अति लोभ करना गये धनका लोभ करना। तथा और प्रकार भी कहै है। क्षेत्र वास्तु कहिये गांव खेत हाट खेली आदि १ हिरन्य सुवर्ण कहिये रोकड़

तथा गहनौ व दासी दास कहिये नौकर नौकरनी १ कूप भांड वस्त्र तथा सुगधि भाजनादि १ इनका प्रतिक्रम कहिये प्रमान किया था ताकौ उलंघना व दिग्व्रतके अतीचार पाच ऊर्ध्व व्यतिक्रम कहिये ऊर्ध्वं दिशाका प्रमान उलंघना व अधो व्यतिक्रम कहिये अधो दिशाका प्रमान उलंघना २ तिर्थ व्यतिक्रम कहिये तिर्यक दिशाकौ उलघन करना ३ क्षेत्र वृद्धि कहिये क्षेत्रका जो प्रमान था सोई क्षेत्रका प्रमान वधाय देना ४ स्मृत्यन्तराधान कहिये क्षेत्रका प्रमान किया था ताहि भूल जाना ५ ऐसे जानना देशव्रतके अतीचार। व आनयन कहिये मर्यादा उपरात क्षेत्र तै वस्तु मगावना १ व प्रेश प्रयोग्य कहिये मर्यादा उपरात वस्तु भेजनी २ शब्दानुपात कहिये प्रमान उपरात क्षेत्र तै शब्द कहि काहू कौ बुलावना ३ रूपानुपात कहिये प्रमान उपरात क्षेत्र विषै अपना रूप दिखाय अभिप्राय जनाय देना ४. पुद्गल क्षेप कहिये प्रमान उपरांत क्षेत्र विषै कंकरी इत्यादि वगावना। ५ अनर्थदड व्रतके अतीचार पांच। कंदर्प कहिये कामोद्दीपन आहारादिकका करना १ कौत्कुच्च कहिये मुख मोडना आंख चलावनी भौंह नचावनी २ मौखर्य कहिये वृथा बकवाद करना ३ अस्मीक्षाधिकरन कहिये बिगर देखै वस्तुनका उठावना मेलना ४ भोगानर्थ कहिये निषिद्ध भोगोपभोगका सेवना ५ सामायिकके अतिचार पांच। मनोयोग दुःप्रनिधानान कहिये मनकी दुष्टता १। वचनयोग दुःप्रनिधानान कहिये वचनकी दुष्टता २ काययोग दुःप्रनिधानान कहिये शरीरकी दुष्टता ३ अनादार कहिये सामायिकका निरादर ४ स्मृति अनुपस्थान कहिये पाठका भूल जाना ५ प्रोपधोपवासके अतीचार

पांच, अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित उत्सर्ग कहिये विना देखे विना पूछे वस्तुका धरना अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित आदान कहिये विना देखे विना शोधे वस्तुका उठावना अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित संस्तर कहिये विना देखै विना पूंछे साथरा विछावना ३ अनादर कहिये निरादरसे प्रोषधका करना ४ स्मृत्यनुपस्थान कहिये प्रोषध दिन आठै चौदश जे परवी दिन तिनको भूल जाना ५ भोगोपभोग परमानके अतीचार, सचित आहार कहिये हरित कायादिकका आहार करना व सचित्त सम्बन्ध आहार कहिये पातल दोना आदि सचित्त वस्तु वर्त्तन विषै मे ले तथा ढाके। इत्यादि सचित्त सम्बधका आहार करना २ सचित्त मिश्राहार कहिये उस्न जलमै शीतल जल नाख्या होय ताका अंगीकार करना ३ अभिषव आहार कहिये सीला विदलि इत्यादि अयोग्य आहार करना ४ दुःपक्वाहार कहिये दुःखंत पचै जो आहार, ताका लैना ५ अतिथि सविभाग व्रतके अतिचार पांच सचित्तनिक्षेप कहिये सचित्त जे पातल दोना ता विषै मेल्यो जो आहार ताका देना व सचित्तोपधान कहिये सचित्त कमल पत्रादिसे ढके हुए आहार औषधि आदिका देना २, परव्यपदेश पात्र दान औरनकौ बनाइ आप अन्य कार्जको जाइ, ३ मात्सर्य कहिये औरनका दान दिया देख न सके, ४, कालातिक्रम कहिये हीनाधिक कालका लगावना, ५, अत सल्लेखनाके अतीचार पान्च। जीवित आशसा कहिये जीवनेकी अभिलाषा १, मरन आशंसा कहिये मरनेकी अभिलाषा, मित्रानुराग मित्रन विषै अनुराग ३, सुखानुबध कहिये इहि भवका सुखका चितवन ४, निदान कहिये

परभवके भोगनकी अभिलाषा ५, ऐसे सब मिल सत्तर अतीचार भये, तिनका त्याग करना। आगे सामायिकका बत्तीस दोष कहै है। अनादृत्त कहिये निरादरसौ सामायिक करै १, पर जीवनै पीडा उपजावे अर्थ सामायिक करै २, प्रतिष्ठा कहिये मान बडाई महिमाके वास्ते सामायिक करै ३, अरु पीडित कहिये परिजीवनै पीडा उपजावे ४, ढोलापति कहिये हूं दीवालाकीसी नाई सामायिक विषै हालै ५, अंकुश कहिये अंकुश कीसी नाई सामायिक वक्रता लिये करै ६ कछुपरित्यागका कछुवाकी नाई शरीर सकोच करि सामायिक करै ७, मत्सोदन वर्त्तन कहिये माछला कैसी नाई नीचौ ऊचौ होई ८, मनोदुष्ट कहिये मन दुष्टता राखै ९, वेदका बंध कहिये आम्नाय बाह्य १०, भय कहिये भयसयुक्त सामायिक करै ११, विभस्त कहिये गिलान सहित सामायिक करै १२, ऋद्धि गौर कहिये रिद्धि गौरव मनसै राखै १३, गौरव कहिये जाति कुलकौ गर्व राखै १४ स्तेन कहिये चोरकीनी नाई करै १५ व्यतीत कहिये व्यतकाल १६, प्रदुष्ट कहिये अत्यत दुष्टतासौ कहै १७, तपित कहिये पैलैनै भय उपजावे १८, शब्द कहिये सामायिकमै सावद्य कार्य लिया बोलै १९, हीलत्ति कहिये परकी निंदा करै २०, तृवली कहिये मस्तककी त्रवली भौह चढाई सामायिक करै २१, कुंचित कहिये मनके विषै संकुच्या सामायिक करै २२, ढिगविलोडन कहिये दशौ दिशामाही अवलोकन करै २३, अदिष्ट कहिये जागा विना देख्यां विना पौछे करै २४. सयम करि मोचन कहिये जैसे काहीको लहनौ दैनौ होई सो जिहितिहि प्रकार पूरौ पाडनौ चाहै त्यौही दैनै कैसी नाई जिहितिहि प्रकौर सामायिककौ काल पूरौ

क्रियौ चाहै २५, लब्ध कहिये सामायिककी सामग्री लंगोटी पीछी वा क्षेत्रकी जोगाई मिलै तौ करै नही तौ आधोकरि जाय २६, अलब्ध कहिये न लब्धी २७, हिन कहिये सामायिकका पाठ है सो हीन पडे अथवा सामायिककौ काल पूरौ हुवा ही विना उठबैठा होय २८, उचूलिका कहिये खंडित पाठ कहै २९, मूक कहिये गूंगा कैसे नाई बोलै ३०, दादुर कहिये मीडककी नांई सुरनै लीया बोलै ३१, चलुनित कहिये चित्तकौ चलाईवौ ३२. ऐसे सामायिकके बत्तीस दोष जानना। आगे सामायिक विषै सात शुद्धि राख सामायिक करै ताका व्योरा। क्षेत्र शुद्धि ऐ जेठे मनुष्याकौ कलकलाट शब्द घना न होय अरु डास मच्छर न होय और घनौ पवन वा घनी गरमी वा घनौ शीत न होई १, काल शुद्धि कहिये प्रातःकाल वा मध्यानकाल वा साझकाल सामायिककौ काल छै उलघै नाही। जघन्य दोय घडी मध्यम चार घडी उत्कृष्ट छह घडी सामायिककौ काल छै। सो दोय घड़ीकी करनी होय तौ घडीका तडका सू लगाई घडी दिन चड़ा पर्यंत। चार घडीकी करनी होय तौ दोय घड़ीका तडकासूं लगाई दोय घडी दिन चडा पर्यंत छह घडीकी करनी होय तौ तीन घड़ीका तड़कासूं लगाय तीन घडी दिन चडा पर्यंत ई कालकी आदि विषै सामायिककी प्रतिज्ञा करै। प्रतिज्ञा सिवाइ काल लगावै नाहीं। ऐसे ही मध्यान समै विषै जानना २, आसन शुद्धि कहिये पद्मासन वा कायोत्सर्गासनसौ सामायिक करै ३, अरु आसनकू चलायमान न करै विनय शुद्धि कहिये देव गुरु धर्म्मकौ वा दर्शन ज्ञान चारित्रताकौ विनय लिया करै मन शुद्धि कहिये राग द्वेष रहित मनकूं राखै ५ वचन

शुद्धि कहिये सावद्य वचन बोलै नांही ६ काल शुद्धि काहिये विना देख्या विना पूंछा हाथ पगि उठावै वा धरे नाही ७ ऐसे सात शुद्धिका स्वरूप जानना। आगे कायोत्सर्गके बाईस दोष कहिये है। कुआश्रित कहिये भीतकौ आसरो लेवौ १ लतावक्र कहिये वेलकी नाई हालता रहना २ स्तभावष्टक कहिये थमका आसरालेना ३ कुचित्कहिये शरीरका संकोचना ४ स्तवेक्षा देखना ५ काकदृष्टि कहिये काक कैसी नाई देखना ६ सीर्ष कपति कहिये मस्तकका कंपावना ७ भ्रूकेष कहिये भंवर कैसी चंचलताई करना ८ उत रीति कहिये मस्तकका ऊचा करना ९ उन्मत्त कहिये मत्तवालाकी नाई चेष्टा करनी १० पिशाच कहिये भूत कैसी नाई चेष्टा करनी ११ अष्ट दिशे क्षण कहिये आठ दिशाकी तरफ चौधना १२ ग्रीवा वन कहिये नाग्रईकौ नमावै १३ मूक सज्ञा कहिये गूंगेकी नाई सैन करना १४ अगुलि चलावन कहिये आगुलि चलावन १५ निष्टीवन कहिये खखारना १६ षलितन कहिये खखारका नाखना १७ सारी गुह्यगूहन कहिये गुह्य अंग काटना १८ कापि मुष्ट कहिये काथोडीकी नाई मुठी बाधना १९ ग्रीवो त्रमन कहिये नाडीका उंचा करना २० श्रखलिताप कहिये साकल कीसी नाई पादका होना २१ मालिकोचलन कहिये कोई पीठ माथा ऊपरि तीकौ आश्रय लेना २२ अग स्पर्सन कहिये अपना अंग सपर्सना २३ घोटकं कहिये घोडा कीसी नाई पादका करना २४ ऐसा चौवीस दोप कायोत्सर्गका जानना। आगे श्रावकके चार प्रकार अतराय कहिये हैं। मदिरा १ मांस २ हाड ३ काचा चर्म ४ चार अंगुल लोहूकी धारा वडा पचेन्द्री जनावर

१ विष्टा मूत्र १ चूहडा १ इन आठौनका तो प्रत्यक्ष नेत्रा करि देखने हीका भोजन विषै अतराय है। बहुरि आठ तो पूर्व देखनै विषै कह्या सोई। अरु मूका चर्म १ नख १ केश १ ऊरात १ पाख १ असजमी स्त्री वा पुरुष १ बडा पञ्चेन्द्री तिर्यच १ ऋतु-वती स्त्री १ आलडीका भंग १ मल मूत्र करनेकी शका १ शूद्रका स्पर्श, कामा विषै कीडा त्रस मृतक जीव निकसै वा हस्तादिक निज अंगसौं वे इन्द्री आदि छोटा बड़ा जीवका घात, इत्यादि भोजन समय स्पर्श होय तौ भोजन विषै अंतराय होइ है। बहुरि मरन आदिका दुख ताका विरह करि रोवना होइ ताके सुननैका, लाय लागी होय तौ ताके सुनवा की, नगरादिकका मारवाका धर्म्मात्मा पुरुषकौं उपसर्ग होई व कोईका नाक कान छेदनैका व कोई चोरादिकके मारने गया होई ताका व चडालके बोलनैका व जिन बिंब व जिन धर्मके अविनयका व धर्म्मात्मा पुरुषके अविनयका व इत्यादि महा पापके वचन सत्यरूप आपनै भासै तौ ऐसे शब्द सुननै विषै भोजनकी अंतराय होय है॥ बहुरि भोजन करती बार आशंका उपजै या तरकारी तौ मांस सारखी है। वा लौही सारखी है। वा चाम सारखी है वा विष्टा वा शहद इत्यादिक निंद्य वस्तु सारखे भोजन विषै कल्पना उपजै अरु मनमे ग्लान होय आवै॥ अरु मन वाके चाखनै विषै औंहौटा होय तौ भोजन विषै अंतराय है। अरु भोजन विषै निंद्य वस्तुको कल्पना तौ नाहीं उपजै अर यहांसे मनि विषैका जानपना होय तौ अंतराय नाही॥ ऐसे देख वाके आठ ८ स्पर्शके बीस २० सुननेकी दश ॥१०॥ मनका छह ॥६॥ सब मिल चारके चवालीस अंतराय

जानना ॥४४॥ केई मूरख अज्ञानी पाखंडी कळंगी राग भाव घटनै-के कारन अरि अन्य जीवकी दया हेत ये अंतराय तौ पाले नाही ॥ अरु झूंठा छोरानका मुखतै भ्रष्टा आदि खोटा वचन सुननेतै अतराय होना मानै ॥ पाछे झालर थाली वजाइ अथा वहरा कैसी नाई देख्या अनदेख्या करे सुना अनसुना करै पाछै नाना प्रकारकी गरिष्ट गरिष्ट मेवा पकवान दही दुग्ध घृत तरकारी खाद्य अखाद्य के विचार विना त्रस थावर जीवका हिसा अहिंसाके विचार विना कामोत्पादक वस्तु अघोरीकी नाई अनभावतै ठग ठग पेट भरै है। गजी होइ स्वाद ले है अरु भिखारीकी नाई सरावगाकी खुसामद करि करि माग माग खाइ। जैसे कोई पुरुष सूक्ष्म थावराकी तौ रक्षा करै अरु वडा वडा त्रस जीवाकु आखमीच साजा ही निगलै। अरु पाछे कहे म्है सूक्ष्म जीवाकी भी दया पालौ हो ऐसा काम करि वापरा गरीब भोला जीवनके धर्म अरु धनकु ठगै है। पाछै आपुन साथि मोहमंत्र करि कुगति ले जाई। तैसे महाकालेश्वर देव अरु पर्वत व्राह्मन मायागई इन्द्रजाल सादृश्य चमत्कार दिखाइ सगरराजाके वंशकु जग्य विषै होम्याकर नरक विषै प्राप्त किये अरु मुखतै ऐसा कहे जग्य विषै होम्या प्रानी वैकुंठ जाय है ऐसा आचार कुलिंगाका जानना। आगे सात जाइगा मौन करनाका स्वरूप कहिये है १ देवपूजा विषैं २ सामायिक विषैं ३ स्नान विषैं ४ भोजन विषैं ५ कुशील विषैं ६ लघुदीर्घ बाधा विषैं ७ वमन विषैं इन सप्त मौनके धारक पुरुष हाथसूं व मुखसूं सैनको नाही करै व हुंकार करैं नाही। आगे वारह स्थान विषै श्रावकके जीवन-की दयाके अर्थ चंदोवा चाहिये १ पूजाजीके स्थानक ऊपर

२ सामायिकका स्थानक ऊपर ३ चूल्हे ऊपर ४ पनहड़े ५ उखली ६ चाकी ७ भोजन स्थान ८ सेज्या स्थान आटौ चालतै ऊपर ९ व्यापारादिक करै तटै १० अरु धर्म चर्चाके स्थान ११ दुग्ध गरमके स्थान १२ ऐसा जानना। आगै सामायिक प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। दूजी प्रतिमा विषै आठै चौदश वा और पर्व विषै तौ सामायिक करै ही करै। औरा दिना विषै मुख्य-पनै तौ सामायिक करै ही करै पन सर्व प्रकार नेम नांही करै वा नाहीं करै। अरु तीसरी प्रतिमा धारीके सर्व प्रकार नेम है। ऐसा विशेष जानना। आगै प्रौषध प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। ऐसी ही दूजी तीजी प्रतिमाधारी कै प्रोषध उपवासका नियम नांही है। मुख्यपनै तौ करै है गौण पनै नाही करै है। अरु चौथी प्रतिमाधारी कै नियम है यावज्जीव करै ही करै। आगै सचित्त त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। दोय घडी उपरांतका अन छान्या पानी अरु हरित काय मुख कर नांही विराधै है। अरु मुख्यपनै हस्तादिक कर भी पांच स्थावरानकुं नाही विरोधै है। याकै सचित्त भक्षन त्याग है पाच स्थावराका शरीरकी क्रियादि करि त्याग नाही मुनीके है। हस्तादिक अंग करि हिंसाका पाप अल्प है अरु मुखमैं भक्ष्यनैका महा पाप है। मुखका त्याग पांचवी प्रतिमा धारी करै है। अरु शरीरादिकका त्याग मुनि करै। मुनि विशेष संयमकूं प्राप्त भया है। आगै रात्रि भुक्ति त्याग दिन विषै कुशील त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। रात्रिभोजनका त्याग तौ पहली दूसरी प्रतिमा सूं ही मुख्य पनै होय आया है। परन्तु क्षत्री, वैश्य, ब्राह्मण, शूद्र आदि जीव नाना प्रकारके हैं। स्पर्श शूद्र पर्यंत श्रावक व्रत

होय है। सो जाकै कुल कर्म विषै ही रात्र भोजनका त्याग चल्या आया है ताकै तौ रात्रि भोजनका त्याग सुगम है। परन्तु अन्य-मती होय अरु श्रावक व्रत धारै ताकुं कठिन है। तीसूं सर्व प्रकार छठी प्रतिमा विषै ही याका त्याग सभंवै है। अथवा अपनै खावा का त्याग तौ पूर्व ही कियौ थौ इहा औराकु भोजन करावनै आदिका त्याग किया। आगै ब्रह्मचर्य प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। यहां घरकी स्त्रीका भी त्याग किया नव वाड सहित ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया। आगै आरम्भ त्याग प्रतिमा कहै है। इहां व्यौपार रसोई आदि आरम्भ करनैका त्याग किया पैलाके घरि वा अपनै घर न्यौता वा बुलाया जीमै है। आगै परिग्रह त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। इहां जो वाकै लक्ष अपनै परवानकै धोवती दुपटा पछेडी इत्यादि राखै है। अवशेष सर्व परिग्रहका त्याग करै। आगै अनुमति त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। इहां सावद्य कार्यका उपदेश देना तज्या है। सावद्य कीया कार्यकी अनुमोदना भी नाही करै है। आगै उद्दिष्ट त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। यहां बुलाया नाहीं जीमै है। उदंड ही उतरै है। एक क्षुल्लक ऐलक, क्षुल्लक तौ कमडलकी पीछी आधा पछे वडा लंगोट राखै है। स्पर्श शूद्र लोहका पात्र राखै है। ऊंच कुली पीतल आदि धातकौ राखै है। अरु पचघरासूं भोजन लेय अतके घर पानी ले वहां ही वैठ लोहके पात्र तामै भोजन करै है। कोई ऊंच कुली एक हीके घर भोजन करै है। अरु एकान्तमे भी करै है। ऐलक पछे वडा विना एक कमंडल पीछी लंगोट राखै है। अन्य नांही राखै है। अरु कर पात्र आहार करै है। अरि लौच करै है।

अरि लंगोट लाल राखै है। अरु लंगोट चाहिये तौ भी लेय। अरि आहारको जाय तब श्रावकके द्वार ऐसा शब्द करै है अक्षै दान। अरि नगर वारै मंडल विषै वसै है। वा मुन्याके सभीप वनादिक विषै वसै है। अरु मुन्याके चरनारविन्द सेवै है। अरु मुन्याके साथ विचरै है। अरि क्षुल्लक भी मुन्याके साथ विचरै है। अरु संसारसौं महा उदासीन है। अरु अनेक शास्त्रांका पारगामी है। अरि स्वपरविचारका वेत्ता है। तातै आप चिन्मूर्त्ति हुवा शरीरसूं भिन्न स्वभाव तिष्टै है। अरि ऐलक आर्जिका जी तौ क्षत्री वैश्य ब्राह्मन ऊच कुली ही नियम करि उत्कृष्ट श्रावकके व्रत धारै है। अरु असपर्श शूद्रनै प्रथम प्रतिमाका धारक जघन्य श्रावक ताकौ भी व्रत नाहीं संभवै है। अरु यामैं आखड़ी पलै नाहीं। अरु बड़ा सैनी पञ्चेन्द्री तिर्यञ्च विषै ज्ञानका धारक तातै भी मध्यम श्रावक व्रत होय है। सो देखो श्रावककौ तौ यह व्रत है। अरि महा पापी अरि महा कषाई महा मिथ्यानी महा परिग्रही व विषई देव गुरु धर्मका अविनई महा तृषावान महा लोभी स्त्रीके राग महा मानी गृहस्थांके विभव महा विकल सप्त व्यसन कर पूरन अरु मन्त्र जंत्र जोतिष वैद्यक कामिनादिके डोरा गडा करि मोहित किया है सारा भोला जीवानै अरि ज्याकै कोई प्रकारका संवर नाहीं। तृष्णा अग्न कर दग्ध होय गया है आत्माजाका। सो अपनै लोभके अर्थ गृहस्थांका भला मना वाचनेके वास्तै त्रैलोकन करि पूज्य श्री तीर्थंकर देवका प्रतिबिंब वाके घर ले जाय, वाकू दर्शन करावै। पाछै औहीटा ल्यावै ऐसा अनर्थ अपने मतलबके अर्थ करै। सो

आप तौ घोरान घोर संसार विषै बूडा ही है। परंतु वापरे भोरा जीवानै संसार विषै डोवोवै है। दोय चार गांव ताका ठाकुर भी सेवकका मतलबके वास्तै सेवकका ले गया सेवकके घर जाय नाहीं। तौ ए सर्वोत्कृष्ट देव याकूं कैसे ले जाई। सो इस समान पाप और हुवा न होसी। सो कैसा कैसा विपर्यय वात कहिये आजीविकाके अर्थ ग्रहस्थाके घर जाय शास्त्र वाचै अरु शास्त्रमै अर्थ तौ विषय कषाय रागद्वेष मोह छुडावाका अरु वे पापी अपूठा विषय कषाय रागद्वेष मोह ताकौ पोखै। अरु या कहै अवार तौ पंचमकाल है, न ऐसा गुरु न ऐसा श्रावक। अपनै गुरु माना वाकै वास्तै ग्रहस्थानै भी धर्मसूं विमुख करै अरु गृहस्थानै एक श्लोक भी प्रीति करि सिखावै नाही। मनमै या विचारै कदाच याकै ज्ञान होय जासी तौ म्हाका औगुन वानै प्रतिभाससी तो पाछै म्हाकी आजीविका मनै किसी रीतिसू होसी। ऐसा निर्दई अपना मतलबके वास्ते जगतनै डोबै है। अरु धर्म पंचमकालके अंत ताईं रहता है ये अब ही धर्म घटावै है अरु जिनधर्मके आसरै जीविका पूरी करै हैं। जैसे कोई पुरुष कोई प्रकार आजीविका करवानै असमर्थ है। पाछै वह अपनी मातानै पीठि बैठार आजीविका पूरी करै है। त्यों ई जिनधर्म्म सेइ सत्पुरुष तौ एक मोक्षनै ही चाहै हैं। स्वर्गादि भी नाही चाहै है तौ आजीविकाकी कहा वात। सो हाय हाय हुंडा व सर्पनी कालदोष करि पंचमकाल विषै कैसी विपरीतिता फैली है। काल दुकाल विषै गरीबाका छोरा भूखा मरता होय चार रुपैया विषै चाकर भया भूरा गोलाकी नाई मोल विकथा पाछै निर्मायल

खाइ खाइ बड़ा हुवा। अरु जिनमंदिरमै अपनै रहवाका घर किया अरु शुद्ध देव गुरु धर्मके विनयका तौ अभाव किया। अरु कुगुरादिके सेवनका अधिकारी हुवा ऐसा ही औरांनै उपदेश दिया। जैसे अमृतनै छोड़ हलाहल विषनै सेवै वा चितामणि रत्न छांड़ि कांच खंडकी चाह करै वा कामदेव सो भरतार छोड़ी असपर्श शुद्र अंधा बहरा गूंगा लूला कोढ़ी तासूं विषय सेय आपनै धन्य मानै अरु या कहै शीलवंती पतिव्रता स्त्री हूं। सो इसी रीत वेश्या विषै पाईये है। अरु ताहीका आंधा जीव आसरा लेइ धर्म साधना कहै है। अरु वह आपकूं पुजाय महंत माननै लगा अरु अपने मुखसै कहै है भट्टारक दिगम्बर गुरू हौ म्हानै पूजौ। अरु नाहीं पूजौ तौ दंड देस्यां वा थाके माथै भूखां रहस्या। वा मानैं चंदा करस्या। अरु स्त्री साथ लिया फिरै सौ भट्टारक नाम तौ तीर्थंकर केवलीका है। अरु दिगम्बर कहिये दिग नाम दिशाका है अंबर नाम वस्त्रका है सो दशूं दिशाके वस्त्र पहिरै होय ताकूं दिगम्बर कहिये है। निग्रन्थ नाम परिग्रह त्यागका है तातै तिल तुस मात्र परिग्रह तौ बाह्य नांही अर चौदा प्रकारको आभ्यंतर तासूं रहित सौ वस्तुका स्वभाव तौ अनादिनिधन है ऐसा अरु यह यसै मानै सो यह बात कैसी है। म्हारी मा अरु बांझ सो जगत विषै परिग्रहसूं नरका जाइ है। अरु परिग्रह ही जगत विषै निंद्य है। ज्यूं ज्यूं परिग्रह छोडै त्यों त्यो सजम नाम पावै। सो या बात तौ ऐसी न्याय बनी अरु हजारा लाखा रुपैयांकी दौलति अरु घोड़ा व हल रथ पालकी चढ़नैकुं चाकर कंकर अरु कड़ा मोती पहरै। नरक लक्ष्मीके पानग्रहन करनैकी दशा करै है।

बहुर चेला चाटा सोई भई फौज अरु चेली सोई हुई स्त्री। ऐसी विभूति सहित राजा सादृश्य होता सता भी आपकौ दिगम्बर मानें है। सो है दिगम्बर हम कैसे जानें मानें एक दिगम्बर नाहि हुंडा सर्पनी पचमकालकी विधातानें एक मूर्त्ति ही गडी है, कै मानूं सात व्यसनकी मूरति ही है कै मानूं पापका पहार ही है। कै मानूं जगतके डुबोवानें पत्थरकी नाव है। बहु २ कैसा है कलिकालके गुरु सो आहारके अर्थ दिनप्रति नगृ व्रत आदरै। अरु स्त्रीका लक्षन देख वांका मिसकर स्त्रीयांका स्पर्श करैं। स्त्रीका मुख कमलनें भवर सादृस्य होइ वाका अवलोकन करै। पाछे अत्यंत मग्न होय आपनें कृत्य कृत्य मानें। सो या बात न्याय ही है। ऐसा तो नाना प्रकारका गरिष्ट नित्य नवा भोजन मिल्या अरु नित्य नई स्त्री मिली तो याका सुखकी कांई पूछनी। ऐसा सुख राजानें भी दुर्लभ सो ऐसा सुखनें पाइ कौन पुरुष मगन न होइ? होय ही होय। सो कैसी है वे स्त्री अरु कैसा है वाका स्वामिंद। सो स्त्रीका तो अंतहकरन परनाम कैसी बनी। अरु पुरुष मोह मदिरा करि मूर्च्छित भया तांते ई अन्यायका भैठ वानें कौन समर्थ है? कोई नाहीं। नीसू आचार्य कहै है म्हें ई विपर्जय देखि मौन करि तिष्ठो याका न्याय विधाता ही करनेकू समर्थ है। अरु वही दड देनेकूं समर्थ हैं हम नाही सो ऐसा गुरानें परलोक विषै भला फलस वोछै है सो वे कोइ करै हैं। जैसे कोई पुरुष बांझके पुत्रका आकाशके फूलस्हं सेहरा गूथ आप मुवा पाछे वाका अवलोकन किया चाहै है वा जस कीर्त्तिकूं सुन्या चाहैं हैं तैहिं सादृस्यनवाका फल स्वरूप जांनना बहुरि वे परस्पर प्रशंसा

करै है थे म्हांके सतगुरु हौ वे कहै है। के पुन्यात्मा श्रावक हौ। कौन दृष्टांत जैसे ऊंटका तौ व्याह अरु गंर्धवगीत गावने वारे वे तौ कहै है वींदका स्वरूप कामदेव सादृस्य बन्या है अरु वे कहे हैं कैसा किन्नर जातके देवके कंठ साद्रस्य कंठसूं राग गावे है। या सादृश्य श्रावक गुराकी शोभा जाननी। इहां कोई कहसी के थे अपना गुराकी दशा बरनई। अरु श्वेताम्बर आदि अन्यमतीन की दशा क्यों न बरनई वे तौ पान या वीच भी खोटा है, ताकुं कहिये है भाई ए न्याय तौ नीकै होसी जद ब्राह्मणाके ही हाथकी रसोई निषद्ध छै। तौ चंडाल दिकके हाथकी रसोई लीन कैसे होसी। ऐसा जांयनां इहां कोई प्रश्न करै ऐसे नाना प्रकारके भेष कैसे भये ताकूं कहिये हैं जैसे राजाके सुभट वैरीके शस्त्रप्रहार करि कायर होय भागे पाछै राजा याकूं भाजे जान नगरमें आवना मने क्‍िया अरु बाहरि ही [illegible] कैईको कालौ मुख करि माथा मूढ ताकौं या कही कै गधे च[illegible]ाई नगर दौल्या फेरौ. कैहीकूं लाल कपडा पहिराये. कैही कूं चुरिया पहिराई, कैही का रांड स्त्रीका सा भेष किया, कैहीका सुहागल स्त्रीका भेस किया है कै इनमे भीख मंगाई इत्यादि नाना प्रकारके स्वांग कराय नगर बारै काढ़ दिया। अरु जे रन विषै वैरीकौ जीत आये मुजरा किया ताकूं राजा नाना प्रकारके पद दिये अरु मुखसूं बड़ाई कीनी तौ यहां दृष्टांतके अनुसार दृष्टांत जाननी। तीर्थंकरादि देव त्रिलोकीनाथ सोई भया राजा ताके भक्त पुरुष भगवानकी मस्तक ऊपर आज्ञा धार मोह कर्म सूं लड़वानें ज्ञान वैराग्यकी फौजि साथ ले वनवासी होय मोहसे लरयौ। पाछै मोहकी विषय कषाय फौज करि ज्ञान वैराग्य फौजकौ

लुटाई अरु आप कायर होय भागे ताकूं भगवानकी आज्ञा अनुसार विधाता कर्मनै गृहस्थपना रूप नगरमें तौ आवा नाही दिया बाह्य ही राख्या अरु रक्तांवर पांटावर स्वेतावर जटाधारी कनफटा आदि नाना प्रकारके स्वांग बनाये अरु जे भक्त पुरुष मोहकर्मकी जयनै प्राप्त भये ताकौं अर्हतदेव नाम नगरका राजा किया ताकी अपनै मुखकरि वहुत बडाई कीनी और भी अनागत काल विषै तीर्थंकर होसी ऐसा याका स्वरूप जानना। ऐसा ग्यारा प्रतिमाका स्वरूप विशेषपनै कह्या।

आगै रात्रि भोजनका स्वरूप वा दोष वा फल कहिये है। प्रथम तौ रात्रि विषै त्रस जीवाकी उत्पत्ति बहुत है सो बडा त्रसजीव तौ डास माच्छर पतंग आदि आंख्या देखिये है, जो महा छोटा जीव दिन विषै भी नजरां नाहीं आवै है ऐसा सख्यात असंख्यात उपजै है। अरु वाका स्वभाव ऐसा होय सो अग्नि विषै तौ दूरसेती भी आई झुकै है। ऐसा ही कोई वाके नेत्र इन्द्रियका विषय पीडै है। बहुरि सरदी बिगटा रस सजाति विषै बेठा हुवा चिपटी जाय है अरु कौडि मकोडि कुथुवा कसार मकड़ी विसमरा आदि त्रस जीवाका समूह छुधाकरि पीडा हुवा वा नासिका नेत्र इन्द्रीका पीडा हुवा भोजन सामग्री विषै आई प्राप्त होई है। अथवा भोजन सामग्रीकूं किया पाछै घनीवार हुई तौ वही विषै मर्यादा उलंघै पाछै घना त्रस जीवाका समूह उपजै। पाछै वही भोजनकूं रात्रिनै कासा विषै धरै पाछै ऊपरसुं माखी माछर टाड़रा कीड़ी मकोडी जाला विसमराका बच्चा आदि आई पड़ै है वा कणसली सर्पका बच्चा आय पड़ै है अथवा सारा कासा विषै

तालासूं चडि आवै है अथवा जटी तटी ऊठीसूं कासा विषै आई डूबै है और निशाचर जीवनकूं रात्रिनै विशेष सूझे है । तातैं रात्रिनै गमन घना करै है । सो गमन करतैं भोजन सामग्री विषै भी आई जाई है। पाछे ऐसा जीवाका समूहनै कोई पशु सादृश्य मनुष्य निरहै हुवा खाई है तो वह मनुष्यामै अघोरी है । पाछै नाना प्रकारके जीवनै भखटा करि नाना प्रकारके रोग उपजै वा इच्छा छीण परै है । जैसा जैसा जीवन कै मासका जैसा विपाक होय तैसा ही रोग उत्पन्न होइ। कोडि उपजावै कोडि होइ शूल होइ सकोदर अतीसार होइ अरु पेटमै गडारी परि-चलै वाल निसरै वाई पित्त कफ उपजै इत्यादि अनेक रोगकी उत्पत्ति होय। अथवा अंधा होइ बुद्धि करि रहित होइ सो ऐसा दुख तौ इही पर्यायमै उपजै । पाछे पाका फल करि अनंत सर्पादिक खोटी पर्याय विषै जन्म पावै है परम्पराय नरकादि जाई है। ऐसे ही नरकसूं तिर्यंच तिर्यंच सौ नरक केताईक पयार्य नर्कका धारी पाछे निगोद माहीं जाइ परै है । पाछे उहांसूं दीर्घकाल पर्यंत भी निकसवौ दुर्लभ है और भी दोष कहिये है । कीडी-भक्षन तै बुद्धि नाश होइ अरु जुवा भक्षन तै जलोधर रोग उपनै, माछी भक्षन तै वमन होइ, वालतै सुरभंग होइ, मकोडी तै कोड होइ, भंवरी तै सुन होई, कसारी तै कंपाइ होइ, आख अंधी होइ । त्रस जीवाका भक्षनमै मांसका दोष लागै १ महा हिंसा होइ २ अपच होय अपचतै अजीर्न होय ३ अजीर्नतै रोग होई ४ तिरखा लगै ५ अरु काम वधै ६ जहरतै मरन होइ ७ डाकनी भूत पिशाच व्यंतरादि भोजन झूठौ करि जाइ । ऐसा पाप करि

नरक विषैं पतन होइ । ऐसा दोषनै धर्मात्मा पुरुष सर्व प्रकार करि जन्म पर्यंत रात्रिका खान पान तजौ । एक मांसका रात्रि भोजनका त्यागका फल पंद्रह उपवासका फल होय ऐसे रात्रि भोजनका स्वरूप जानना । अरि दिन विषै ताखाना विषै गुफा विषै वा बादल विषै आंधी वा धूल्याके निमित्त करि चौहडे अंधेरा होय ता समय भोजन करिये तौ रात्रि सादृश्य दोष जाननां । भावार्थ–जीव नजर न आवे तौ दिन विषै भी भोजन करना उचित नाहीं । इति रात्रि दोष ।

आगै चूल्हा रात्रि न वारिये ताका दोष दिखाईए है । प्रथम तौ रात्रिनै कोई जन्तू सूझै नाहीं अरु छानैमै तौ त्रस जीवाका समूह है अरु आला सुंकाकी खबर परे नाहीं. जो आला छौना होई ता विषै पइसा पइमा भरा गिडोलानै आदि दे बालका अग्रभाग संख्यातका वा भाग पर्यंत सैकडा हजारा लाखा असंख जीवाका समूह पावजै है । सो सर्व चूल्हा विषै भस्म होयजाय । अरु लाकड़ी बालिये तौ वा विषै भी अनेक प्रकारकी लट वा कीडी व कनसला व अलीखा आदि बहुत त्रस जीवका समूह होय है । भावार्थ–घनी तरह लाकड़ी तौ बीधी होय है ता विषै तौ जीव अगिनित है ही अरु लाकड़ी पोली होय है ता विषै कीडी मकोडी मकोडा उदेई कामला सपली आपैस जाई है । अरु जेठमासका निमित्त पाइ सरदी होय तौ कुंथिया निगोद आदि जीवकी उत्पत्ति होय पाछै वैसाही बली तानै बालिये तौ वाके जीव दग्ध होय । ता पापीकी काई पूछनी । बहुरि चूल्हा विषै उस्नताका निमित्त पाइ वा छिद्र आदि आश्रयका निमित्त पाइ कीडी मकोडी आदि त्रस जीव रहै है । सो सब

चूल्हा विषै होम्या जाइ है। बहुरि माखी माकडी आदि जीव रात्रि नै ऊपर छत विषै व ठाट विषै विश्राम लै। अरु पाछै रात्रिनै चूल्हाका धुवॉ करौ होय सारा घरमै आताप फैलै ताका निमित्त करि हजारा जीव दौडा दौडा फिरे है। अरु चूल्हा विषै वा हाँडी विषै वा आटा विषै वा पानी विषैं आई पडै है तौ सब ही प्रानांत होइ। अरु अग्निका झार व लपट दूर ही थकी पतंगा डांस माछर आई चूल्हामै होम होई और रात्रिनै आटा सीधा विषै इली सुलसुली कुंथिया होय अरु कीडी मकोडी ईला आदि आप ही चडि आवै है। अरु घी तेल मीठा विषै जीव आन पडै है। सो वे छोटा जनावर दिन विषै भी दीसै नाहीं तौ रात्रि विषै वा जीवका देखवांकी काई गम्य। तातैं आचार्य कहै है ऐसा दोष संयुक्त आहार कैसा किया जाय तातैं रात्रिका चूल्हा बालना मसानकी अरथीसूं भी अधिक कह्या है। मसान विषै तौ दिननै एक मुरदा हौमिये है अरु चूल्है विषैं अगिनित जीवता प्रानी हौमिये है। तीसूं रात्रि चूल्हा बालवाका महापाप है अरुता विषै चतुर्मास विषै कोई महापापी वाले है तौ वाके पापकी मर्यादा हम नाही जानै केवलज्ञान गम्य है। अरु केई धर्म्मात्मा पुरुष तौ ऐसा है। सो रात्रि विषै दिवा भी जोवै नांही। ऐसे रात्रीके चूल्हा बालनैका दोष कहा।

आगै अनछान्या पानीका दोष कहिये है। लाख कोडि वेडां तुरंतके छान्या पानी डारिये तातै भी एक इन्द्री जीवके मारवेका पाप घना है, तासू असंख्यात गुनावे इन्द्रीके मारवे का पाप है तासूं असंख्यात गुना ते इन्द्रीकौ। तासौ असंख्यात गुना चौ इन्द्री तासूं असंख्यात

गुना असैनी पञ्चेन्द्रीका तासूं असंख्यात गुना सैनी पञ्चेन्द्री मार वा का पाप है। सो अनछान्या पानीका एक चुल् विषै वे इन्द्री ते इन्द्री, चौइन्द्री, पञ्चेन्द्री, सैनी असैनी लाखां कोड्या तौ आकाशके विषै पेहराकी रेन **आध्या सांध्या** गमन करै ता सादृश्य पच प्रकारके त्रस जीव पावजै हैं। सो नीका द्रष्टि करि देखिये तौ ज्योका त्यों नजर आवे। वहुरि तासूं छोटा जीव ताही के संख्यातवै भाग सूक्ष्म अवगाहनाके धारक असंख्यात पांच प्रकारके त्रस और भी पावजै है। ऐक ऐक नातनाका छिद्रमैं असंख्यात त्रस जीवा युगपत पानी छानिती वार निकर जाइ है। इन्द्रिय गोचर नाही आवे, अवधिज्ञान व केवलज्ञान गम्य है। बहुरि कैईक पानी छानै भी हैं। अरु विलछानी जहांका तहां नीका नाहीं पहुंचावे है। तौ वह पानी अनछान्या ही पिया कहिये भावे, तीसूं एक चुल्ल् अनछान्या पानीका अपनै हाथसूं डालौ वा वरतौ वा पीवौ वा औरनै प्यावो ताका पाप एक गाव मारा कैसा है। ऐसे हे भव्य तूं अनछान्या पानीकौ दोष जान अनछान्या पानी पीवौ भावै लोहु पीवौ अरु अनछान्या पानीसौ सापडौ भावै लोहुसौ सापडौ। लोही बीचि भी अन छान्या पानी का विशेष दोष कहै। अरु लोहु तौ निदनीक है ही। अरु अन छान्या पानीका वरतवा विषै असंख्यात त्रस जीवाका घात हो है। अरु जगत विषै निद्य है, महा निर्दई पुरुष याके पाप करि भवि विषै रुलै है नर्क तिर्यंचके क्लेशने पावै है, संसार समुद्रमाही सूं निकसना दुर्ल्लभ होय है। या समान पाप और नांही है घना कहा कहि ये जैनी पुरुपनका तीन चिन्ह है। एक तौ प्रतिमाके

दर्शन किया विना भोजन न करै अरु अनगालौ जल न पीवै और रात्रि विषै भोजन नाही करै। या मैं सूं एक भी कसर होई तौ जैनी नाहीं अन्यमती शूद्र सादृश्य है। तातै अपनी हेतका वांछा करि पुरुष शीघ्र ही अनगाल्या पानीकौ तजौ इति अनगाल्या पानी दोप सम्पूर्ण।

आगै सात व्यसन विषै छह व्यसनानै छोडि जुवाका दोष वर्णन करिये है। छह व्यसनका दोष प्रगट दीसै है जुवाका दोष गूढ है। ताकूं छह व्यसनसूं अधिक प्रगट दिखाइये है। जुवामै हार होइ तौ चोरी करनै परै चोरीके धन आये परस्त्रीकी वा परस्त्रीका संजोग मिलै तव वेश्या यादि आवे। वेश्याके घर आये सुरापान करै, वाके अमल मैं मांसकी चाह होइ. मांस चाह भये शिकार खेला चाहै। तातै सात व्यसनका मूल जुवा है और भी घना दोप उपजै है। जुवारी पुरुपका घरकी जायगा आकास ही रह जाय है, ईलोक विषै अपजश होइ है, पैठि विगैरै है विश्वास मिटै है, राजादिक करि दंडकौ पावै है, अनेक प्रकारके कलह क्लेश बडै है–अरु क्रोध लोभ अत्यत वढै है। जनै जनै आगै दीनपना भासै है–इत्यादि अनेक दोष जानना पाछै ताके पाप करि नरक जाई है जहां सागरा पर्यंत तीव्र वेदना उपजै है। तातै भव्यजीव हैं ते दुष्टकर्म शीघ्र छोड़ौ। पंच पांडव आदि जुवेके वशीभूत होय सर्व विभूति व राज्य खोया ऐसा

छान्या पानी तासूं असंख्यात गुना ते इन्द्रीकौं।

नेतीका दोष कहिये है। असाढके महिना प्रथम निमित्त करि पृथ्वी जीवमई होइ जाइ। ऐसे

जीव विना एक अंगुल भूमिका न पाइये ता भूमिकाकूं हल करि फेरिये सो भूमिका विदारवां करि सर्वत्र स्थावर जीवनै प्राप्त होइ। फेरि पूर्ववत् नवा जीव उपजै पाछै दूजी वरसा करि वे भी मरनकूं प्राप्त होइ। फेरि जीवाकी उत्पत्ति होइ फेरि हल करि हन्या जाइ ता भूमिका विषै बीज बोवै पाछे सर्व जायगा अन्यके अंकूरा अनंन निगोद रासि सहित उत्पन्न होइ। फेरि वर्षा होइ ताकरि अगिनित त्रस थावर जीव उपजै फेरि निदवा करि सर्व जीव हन्या जाइ, फेरि वर्षा करि ऐसी ही और उपजै। फेर धूप वा नुननी करि मरै ऐसे ही चतुर्मास पूर्ण होय। पाछैं सर्व खेती त्रस थावर जीवा करि आश्रित ताकूं दातलादि करि काटिये। सो काटिवा करि सर्व जीवदल मल्या जाइ ऐसे तौ चतुर्मासकी खेतीका स्वरूप जानना। आगै उनारीकी खेतीका स्वरूप वा दोष कहिये है। सो सावनका महिनासूं लगाइ कातिक महिना पर्यंत पांच सात वार हल कुसिया फावड़ा करि भूमिकानै आमी सामी चूर्न करै पाछैं वाके अर्थ दोय चार वर्ष पहली गुवार रोडीका संचय किया था। अथवा दोय चार वरसका एकठी हुई मोललै खेत विषै नाखै। सो वे रोडीका पापकी कांई पूछनी जेती वह रोडीकौ बोझ होय तेताही लटादिक त्रस जीव जानना। एक दोय दिनका गोबर पडा चौंहडे रह जाइ ता विषै लाखां कोडयां आदि अगनित लटादि त्रस जीव किल किल करते आंख्यां देखिये है। तौ दोय चारबरसका संचय किया सैकड़ा गाडा भरगोबर विष्टा आदि अशुचि वस्तु ऊपरा ऊपर एकठी हुई सासती सरदी सहित ता विषै जाय पेखै तौ वाका निर्दयीपनाकी

कहा बात। पाछै वा खातकूं सारा खेत विषै वखेरता ऊपर सारे चखट फेरै ता पीछै बीज बोवै। पीछे मगसिरका महिनासूं लगाई फागुन पर्यंत अनछान्या कुंवा बावड़ी तलावका जल करि दिनप्रति ताई सींच्या करै सो वा जल कर पाहिला त्रस थावर जीव तौ प्रलयनें प्राप्त होइ नवा सरदीका निमित्त करि त्रस थावर जीव फेर उपजै ऐसौ ही दिन प्रति चार पांच महिना ताई पूर्व पूर्व जीव मरते जांय अपूर्व अपूर्व जीव उपजते जांय। ऐसे होते सन्ते अनेक उपद्रव करि निर्विघ्नपनै खेती घरमैं आवै। वा न आवै कदाचिद् आवै तौ राजाका बीजकी दैनी चुकै वा न चुकै सो फल तौ जाकौ ऐसा अरु पाप पूर्वे कह्या तैसा। असंख्यातासंख्याता त्रस जीव अनंतानंत निगोद राशि आदि थावर जीवका घात एक नाजका कनकै वंदा आवे है। भावार्थ—ऐसी ऐसी हिसा करि एक एक नाजका कना पैदा होय है। बहुरि केई या जानैगा खेती करती वार तौ सुखी होयगा ताकौ कहिये है। जहां पर्यंत खेती करनैका संग्रह हो है जहां पर्यंत राक्षस ते दैत्य दरिद्री कलंहरवत् ताका स्वरूप जानना अरु परभव विषै नरकादि फल लागै है। तातै ज्ञानी विचक्षण पुरुष खेतीका किसब छोड़ौ। ऐसे खेतीका दोष जानना सो प्रत्यक्ष चौड़े दीसै हैं ताकौ कहा लिखिये। अरि कुंवा बावडी तलाव खनाइवे का महल अटारी बनावनेका खेती हवेलीके पापसूं असंख्यात अनंत गुना पाप जानना। इति खेती धरती दोष।

आगै रसोई करवाकी विधि कहिये है। सोई रसोई करवा विषै तीन बात करि विशेष पाप उपजै विना सोध्या

अन्न, विवेक बिना गाल्या जल, अरु बिना देख्या वलीता (ईंधन) ऐ तीन पाप कर रसोई उपजै सो रसोई मास समान जानना। अरु ये तीन पाप रहित रसोई निपजै सो रसोई कहिये है। नाजका स्वरूप कहिये हैं। प्रथम तो नाजका अगाऊ सग्रह न करना। दस दिन पन्द्रा दिनका पाच दश जायगा अवधि देख मोल ल्यावै। पीछे ताको दिन विषै नीका सोध वीन दिन ही विषै तावडा माहें कपडासू पोछे तव पिसावै। पाछे लोह पीतल वास आदि चाम विना चालनीसूं चाल लीजै। ऐसे तो आटाकी क्रिया जाननी। वलीता छानानै फौड काढ फार जीव रहित प्रासुक लकडी वा कोडले ए वलिता ताकी शुद्धता है। अरु छाना गोवर रसोई विषै सर्व प्रकार अलीक है। अरु ता विषै जीवकी उत्पत्ति भी विसेष है। अरु अतर मुहूर्त सौ लगाई जहा पर्यंत वा विषै सरदी है। तहा पर्यंत अनेक त्रम जीव उपजै हैं। पाछे गोबरका सूकवा करि सारा नासनै प्राप्त होइ है। सूका पीछै वडा वड़ा ताका कलेवर पईसा पईसा भरि गिडाला आदि शंख्या देखिये है। पाछै फेर चतुर्मास आदि विषै सरदीका निमित्त पाइकर असख्यात कुंथवा लट उपजै हैं। तातै छानाका वलीता तौ हिसाका दोष कर सर्व प्रकार ही तजनी। अरु लकडीका कोइला ग्रहनै योग्य है। सो कोइला तो सर्व प्रकार त्रस थावर जीव रहित प्रासुक है। तातै मनुष्यंनै वालना उचित है। तातै बुद्धिवान पुरुष विशेष पनै वीधी सूखी लकडी फार अववि देखकर गृहन करै। या विषै आलस प्रमाद राखै नाहीं, या विषै पाप अगिनित अपार है। सो विवेककर तछ लागै है। तातै धर्मात्मा पुरुषनै वलीताकी सावधानी राखनी। पोली

लकडी विषै कीडी मकोडी देही कांनखजूरा सर्प आदि अनेक त्रस जीव पैसजाई हैं। सो विना देखी वालिये तौ सर्व भस्म होय। सो पार्श्वनाथ तीर्थंकरके समै कमठ निर्दय हुवा पंचाग्नि तपै। तहां अधजल्या लकडी पोली विषै सर्पनी अर्द्ध दग्धि हुई तांकूं पार्श्वनाथ स्वामी अवधिज्ञान कर वलता देख्या ताकूं नवकार मंत्र सुनाई देवलोकनें प्राप्त किया। ऐसे बिना देख्या वलताता विषै जीवका दग्धि जानना घनी कहा कहिये। बहुरि तलाव कुंड तुच्छ जलकर बहती नदी अरु कुंवा बावडीका पानी तो छान्या हुवा भी अयोग्य है। या जल विषै त्रसकी रास इन्द्रिय गोचर आवै है। तातै जा कुवांका पानी चडस करि छटता होय ताका जल विषै जीव नजर नाहीं आवै। वा जलको कुवा ऊपर आप जय व आपका प्रतीतका आदमी जाय दोवड नातना गाढा गुठलीकर रहित वा जामें जलकौ ग्रास हुवा एक पल भी रहै ततकाल ही ऐके साथ छनं न जाय। अनुक्रम सौं धीरे धीरे छनै ऐसा नातनांसूं जल छानिये ताका प्रमाण। जी वासण विषै छानिये ताका मुंहसूं तिगुना लावा चौडा डयोडा सो ढोबडो वडो किये समचौकोर हो जाय ऐसा नालना। अथवा विना छान्या ही कुंवासो भरि डेरै लै जाय। युक्ति पूर्वक नीका छानना, छानती बार अनछान्या पानीकी बूंद भी गिरै नाहीं वा अनछान्याकी बूंद छानै पानीपै आवै नाही ऐसे पानी छानिये। अनछान्या पानीके हाथसूं छान्या पानी करि अनछान्या पानीके वासनमें न धरिये।

पीछे छान्या पानीका बासनकुं पकड़िये। दोय वार तीन वार छान्यां पानी करि बासनकूं खोलिये। पाछें वाके मोड़े नातिना दीजिये वा

हाथ विषै वेला वेला लेय छोटा बासनसों बोर बोर पानी छानै अरु वह नातना वेला ऊपर धर बहुर कूपसों पानी काढै फेर बाही भाति छानै जब बासन भर चुके तब नातना हाथमें करि वानै पानी भर पाल ऊपर लिया लिया आवना नातिना ऊपर धरि धरि धीरेधीरे काढिये। पीछे अनछान्याका हाथकुं खोल अगल बगल सूं कोना कूं पकड उलटौ करिये। पीछे छान्या पानी करि अविशेष अन-छान्या पानी रह्या ता विषै जीवानी करिये। अथवा जुदी वासना विषै जीवानी करिये। बीचसू जीवानीकी तरफ चिमठी करि नातिना रखडिये नाहीं। पीछे चार पहर दिनका व आठ पहर दिनका जीवानी एकट्ठा कर भंवरकलीका डोलसूं जाका वाका जल आया होय तिहि कूंवे पहुचावे। अथवा भंवरकलीका डोलन होय तो भंवरकलीका डोल बना चरूका लोटासों भी पहुचे है। वाका पासानै उलटौ बाध पीछों डोरा अपूठी ल्याव पांच सात अंगुलकी लाकड़ी बांध लोटेके मौटे भीतर आडी लगाइयो ताका सहारासूं लोटा सूध्या चल्या जाय, कुवाके पीदे जल ऊपर लोटा पहुंचे तब ऊपरसूं डोल हिलाय दीजे। पीछे वह लोटेमू लाकडी निकस औंधा होय ऊपर ते खैंच्या हुवा चल्या आवै ऐसे पहुंचावना। अथवा इ भाति भी न पहुंच्या जाइ तो सारा प्रभात सर्व पानीका जीवनी एकट्ठा कर पानी भरका बासन विषै घालिये अरु पनहारीकु सौपिये पनहारीनै पानी भरवाका महीना सिवाय टको दोटको चढ़ाइये अरु वाकुं ऐसा कहिये। जीवानै शुद्धता पूर्वक कुंवा-में नाख दैनी। गैला वा ऊपरसू कुवा विषै जीवनै न नाखना कदाच नाख्या तौ तूनै पानी भरवासौ ही दूर करौंगा। ऐसो कहा पीछे

भी दोय चार वार गुपति वाके पीछे जाय कुवा पर्यंत ठीक पाड़िये जे पूर्वै कह्या। ता माफिक जीवानी सुद्ध उरासना ऐसे ही कुंवामें उरासे है ताकौ विशेष पढाई दीजिये टका दो टकाकी गम्य खाइये, पापका भय दिखाईये हैं। या भांति जीवानी पहुचावै तिनकुं छान्या पानी पिया कहिये। अरु पूर्ववत् जीवानी न पहुंचे ताकों अनछान्या पानी पिया कहिये। वा शूद्र सादृस्य कहिये। जिनधर्म्म विषै ही तो दया ही का पालना धर्म्म है दया विना धर्म्म नाम पावै नाही। जाके घट दया है तेई सत्पुरुष भवसागर तिरे हैं। ऐसे पानीकी शुद्धता स्वरूप जानना। बहुरि मर्यादा उपरांत आटा विषै कुंथवा सुलसुली आदि अनेक त्रस जीवांकी रास वा सरदी विषै भी निगोदरास सास्वते त्रसरास उपजै है। ज्यो ज्यों मर्यादा उलघ आटा रहै त्यो त्यों अधिक वड़ी वडी अवगाहना-का धारक आटा विषै कनक सारखा त्रस जीव उपजै है। सो प्रत्यक्ष ही आंख्या देखिये है तातें मर्यादा उलंध्या आटा अरु बा-जारका तुरत पिसाया भी अवश्य तजना, जेता आटाका कनका ते ता ही त्रस जीव जानना। तातें धर्म्मात्मा पुरुष ऐसा देखिके आटाका भक्षन कैसे करें। बहुरि चामका सयोग करि घृत विषै अतर मुहूर्तसूं लगाय जहां पर्यंत चामके सीधड़ामें घृत रहै तहां पर्यंत अधिक अधिक संख्याता त्रस जीव उपजै है। अरु चर्मका अस्पर्स करि महा निंद्य अभक्ष होय है। ताका उदाहरण कहिये है। काहू एक सरावगी रसोई करवाके समै कोई सरधानी पुरुष हाथ पैसा टकाका घृत बाजारसों मंगाया तब वह सीघ्र वाका घृत छुडायवाके अर्थ एक अकल उपजावता

हुवा। सो बजारमांसूं नवा जूता मोललें वामें घृत घाल वाकी रसोई विषै जाय धस्यो तब वह रसोई छोड उठवा लागा तब यानै कही रसोई क्यों छोडौ हौ। थे पूर्व या कही था म्हा... तो चर्मके घृतका अ...... नाहीं तातै बजारका महाजनोके तो काचा चर्म्मके बाम ... ... था। मै थाकै अटकाव न जान पाका खालका जूता विषै घृ... ...या अरु थानें सौप्या तौ म्हानै काहेका दोष मै या न जानी थी के पूर्वोवाली क्रिया है। पूरव्या मोकला अनछाना पानीसों तो साफ है। अरु सीसा सादृस्य सोई उज्जल रसोईका बासन रा... । अरु बडा बडा चौका देई कोई ब्राह्मन आदि ...त्तम पुरुषाका स्पर्श ...ोई तो रसोई उतर जाय। पाछै कासामें मा... लै राजी होय हो... ...जाय। तातै त्योंही चामका घृत महा अभक्ष्य जानना। ऐस... ...ुनने प्रमाण चामका घृत तैल, हीग, जल आदि वस्तुका त्याग वे ...ुरु... कीया। ऐसे और भव्य जीव याकौ त्याग करौ। अब र...ोई करनकी विधि कहिये है। जहा जीवकी उत्पत्ति न होई ऐसा ...ान... विषै खाडा खोवरा रहित चूनाकी वा माटीकी साफ जायगानै तौ जीव जतु देख ऊपर चन्दोवा बाँधि गारिका वा लोहका चूला धरिये। चूनाकी जायगा तो जीव जंतु देख कोमल बुहारी-सों बुहार दे फिर तुक्षपानी करि जायगा आला वस्त्रसेती पोंछ नाखै वा धोय नाखै और गारकी जायगानै तुक्ष शुद्ध माटीसेती दयापूर्वक लिपाईये है। ता विषै उजला कपड़ा पहर तुक्ष पानीसूं हाथ पांव धोईये। सर्व वासनोंकूं मांज रसोई विषै धरिये। पूर्वे कह्या ऐसा आटा, सीधा, दाल, चांवल, बलीता सोधि रसोई विषै लै बैठिये। रसोई विषै लागै जेता पानीकी मर्यादा दोय घड़ी हीकी है। तातै

प्रासुक पानी तै रसोई करना उचित है। प्रासुक पानीको दोय पहिर पहिले वरताय देना। आगे राख्या यामें जीव उपजै है जींदानी याकौ होय नाही। ऐसे दयापूर्वक क्रिया सहित रसोई निपजै ताकौ उज्जल कपडा पहर हाथ पांव धोय पत्रानूं, वा दुखित जीवकू दान देई। राग भाव छोड़ चौकी ऊपर भोजनकी थाली धर थाली ऊपर दृष्टि राखे, जीव जंतु देख मौन संजम सहित भोजन करै। ऐसा नाहींकै दया विना अघोरीकी नाई आप तौ खायले पात्र व दुखित जनवारनै आवै आप उठि जाय। ऐसा कृपण महा रागी महा रोगी विषई दंड देने योग्य है। तातै धर्मात्मा पुरुष है ते विधिपूर्वक दान दें, पीछे भोजन करै, ऐसे दया सहित रागभाव रहित भोजनकी विधि कही। वहुरि रसोई जीमें पीछे ई विषै कूकरा बिलाई हाड चाम मैले वस्त्र सूद्र आय जाय। वा विशेष औंठ (जूंठन) पड़ी होय तो प्रभात आय वा परमौ आदि हमेसा रसोई कर वा समय पहली चूलाकी राख सर्व काढ़ी नाखिये। नजरासों जीवजतु देखि कोमल बुहारीसे बुहार देई पीछे चौका दीजे. चौका दिये विना ही राख फैंक कर बुहारी देइ रसोइ करिये विना प्रयोजन चौका देना उचित नाहीं। चौका विषै जीवाकी हिंसा विशेष होवे है। अरु अशुम जायगा विषै रसोई करिये तो चौकाकी हिंसा बीच भी अक्रियाके निमित्तकरि राग भावका पाप विशेष होय है। तातै जामै थोडा पाप लागै, सो करना। धर्म दयामय जानना दया विना कार्यकारी नाहीं। अरु केई दुर्बुद्धी नाज लकड़ीको धोवै हैं। तनेला चरू तवा आदि वासन ताका पैदा धोय आरसी समान उज्जल राखै है। मौकला पानी सोसा पड़े वा चौका दे है। स्त्रीके हाथकी

रसोई नाखाद है । नाना तराकी तरकारी मेवा मिष्टान्न दही, दूध, घृत, हरित काय सहित चार वार भोजन बनवावै है । पीछें रागी होय होय चार वार तिर्यंचकी नाईं पेट भरै है । अरु या कहै है मैं बडा क्रिया पात्र हूं, बडा मैं संजमी हूँ ऐसा झूंठा डिभधारी धर्म्मका आसरे वापरा भोला जीवांने ठगे है । जिनधर्म विषै तो जहा जहां निश्चय एक रागादिक भाव छुड़ावनेका उपदेश है । और याहीके वास्ते अन्न जीवकी हिसा छुडाई है । सो इन पापी राग भाव व अन्य जीवकी हिसा अपूठा बंधाय दीनी तातै जा रसोई विषै ज्यों ज्यों रागभावकी वा अन्य जीवाकी हिसाका निमित्त नाहीं होवै है, सोई रसोई पवित्र है जा विषै ए दोष बंधे सोई रसोई अपवित्र है ऐसा जानना वहुर कुलिग्या आयना विषय पोखवाके अर्थ धर्म्मका आसरा लेय । अष्टानका सोलाकारन दस-लाक्षनी रत्नत्रय आदि पर्व दिना विषै आक्षा आक्षा मन मान्या नाना प्रकार महा गरिष्ट और दिच विषै कबहु मिलै नाहीं । ऐसा तो भोजन खाना अरु चोखा चोखा, वस्त्र आभूषण पहिरना ताका उपदेश दिया पाछें ऐसे ही आय विषय पोखनें लगे तो गृहस्थानिकूं काहेको मनै करे । सो भादवांके पर्व दिना विषै कखायकू छोडना संजमको आदरना जिनपूजा, जिन शास्त्राभ्यास, जागरनका करना दानका देना, वैराग्यका बंधावना, संसारका स्वरूप अनित्य जानना ताका नाम धर्म है, विषय कषाय पोखनेंका नाम धर्म कदापि नाहीं झूंठा मान्या तो गरज काई वाका फल खोटा ही लागसी । आगे कंदोईकी वस्तु खानेंका दोष दिखाईये हैं । प्रथम तो कंदोईका स्वभाव निर्दई होइ है । पाछें लोभका प्रयोजन परै ताकी विशेष

करि दया रहित होय है ताका किसब ही महा हिंसाका कारन है सो विशेषपनै कहिये है। नाज सस्ता होय सो मोल ल्यावे सो सस्ता तो बीधा घुना पुराना ही मिले सो बीना सोधा बीना नाजनें रात बिना देखें पीसै पाछें वह आटा वेसन मेदा महीनों पडा रह जाय ता विषै अगिनति त्रस जीव उपजै है। पीछे वैसा तो आटा अन छान्या मसकका पानी ताकरि उसने बीधा सूल्या आला गीलाभटी विषै रातनै वलीता बालै। अरु चामका घना दिनका वा सड्या घृत विषै बानें तलें। अरु रात्रितें अग्निका निमित्त करि दूर सो डांस, माक्षर, पतंग, माखी मट्टीमे व कडाहीमें आय आय पडै व तपत धुवांके निमित्त करि अनेक जीव मकडी तिसमरा कानखजूरा भरी कडाहीमें परै। पाछे वह मिठाई पकवान तुरत ही तो सारा बिक जाय नाही। अनुक्रमसो विकै सो विकता विकता महीना पन्द्रह दिन दो महीना पर्यंत पडा रहि जाय। ता विषै अनेक लट ईला आदि परि चालै। अरु अस्पर्श सूद्रकूं वह मिठाई बेंचै ताकी मीठी जूंठी मिठाई पाछी अपना वासनमे डार लै है। अरु धनाक दोई कलारि खत्री आदि अन्य जाति होय है। ताकी दया कहा पाईये। अरु कोई वैश्य कुलके भी कंदोई होय सो भी वा सादृस्य जानना अरु जल अन्न नून मिलाय घृतमें तलै सो वह समान ही है। संसारी जीवानै थोडा बहुत अटकमें राखनैके अर्थ सखरा निखरीका प्रमाण बाधा है। वस्तू बिचारता दोन्यों एक है जे कोई जैनी कुल विषै रातनै अन्नका भक्षण छोड़ना अरु फलाहार आदि राख्या तो काई वह रात भोजनका त्यागी हुवा? यदि रात्रिकी परवानगी नहीं देसी तों अन्नादि सर्व ही

वस्तुका भक्षण करना, याकै खाया बिना तो रहौय नाही। तातै अन्नकी वस्तू छुडाय मर्यादामे राख्या अन्नका निमित्त तौ रंकादिकंकै भी सास्ता पाइये। दूध पेडादिक निमित्त कोई पुन्यवानकै कोई काल विंषे पाइये है। तातें घनी वार घनी वस्तुका रात्रिंने सवर होय है। ऐसा प्रयोजन जानना तातै बुद्धिमान पुरुष क्षे, ते असख्यात त्रस जीवांकी हिंसा करि निपजी अनेक त्रस जीवकी रासि महा अक्रिया साद्दश्य अभक्ष्य ऐसी कंदोईकी वस्तू ताकूं कैसे खाय अरु ठग गई है बुद्धि जाकी आचार रहित है स्वभाव जाका। परलोकका भय नाही है जाके ऐसा पुरुष कंदोईकी वस्तु खाइ है। तातें अपना जांने हित चाहिये ते पुरुष हलवाईकी वस्तू सर्वथा तजो। बहुरि कोई अज्ञानी रसना इन्द्रीका लोलपी ऐसे कहै है। कंदोईकी वस्त्र बजारका वांसना विषै मद्य मांस वापेरे। ऐसा गूजर रजपूत कलार आदि सूद्रके घरका दही, दूध, रोटी आदि वस्त्र प्रासुक है तातें निर्दोष है सो महा त्रस थावर जीवाकी हिंसा करि निपजी मद्य मांसके वांसन विपै धरी। ऐसी वस्तृ प्रासुक निर्दोष होय तो और उपरात दोषीक वस्तू कैसे होसी हाड चामके देषनका मृतकके सुननेकाई भोजन विषै अतराइ गीत गे, तो प्रतक्ष खायवेका कैसा दोपण गिननौ जाते जे वस्तू हिंसा करि निपजी वा अक्रिया करि निपजी सो धर्मात्मा पुरुष कोई आचरै नाहीं। प्रान जांवै तौ जावो पन अभक्ष वस्तृ खाना उचित नाही। दीनपना सिवाय और पाप नाही है। तातै जिन धर्म विषै अजाचीक वृत्ति कही है। आगे सहतका दोप दिखाईये है। माखी, खाट या मीठा रस वा जल ओंट विष्टादि मुख्यमें ले आवे। सो वाके मुख्य

विषै वस्तू लालरूप परनवै । पीछें लोभके अर्थ जैसे कीड़ी नाज ल्याय विलमें एकठा करै । पीछें भीलादिक सकल पहुंचे सो वाके सर्व कुटुम्व परवार सहित नाजसोर ल्यावे । पीछें सर्व कीडाका तो संधार होय नाज भील खाये जायँ तैसे ही मछिका तृष्णाके वशीभूत हुवा लालकूं एक स्थानक थूंकि थूंकरैक ढाकैं । पीछे ऐसौ होते होते धनी लाल एकत्र होय घना लालके रहनें करि मिष्ट स्वादरूप परनवे ता विषै समय समय लाखा कोड़ना वडा अंडा आंख्या देखिये तातै आदि दै और असख्यात सूक्ष्म जीव उपजे है । अरु निगोदरास उपजे हैं । अरु तिस ही विषै माख्यां निहार करै है ताकौ मिष्टा भी वाही विषै एकठौ होय है । पीछे भील आदिक महा निर्दई वाकू पथरादि करि पाडै है । पाछें वाके वच्चा सुधा अरु माहिला अंडाशुद्धा मसल मसल निचोय निचोय रस काढ़े है । पीछे पंसारी आदि निर्दय अक्रिय खान लेवें है । ता विषै माखीकी डीम कोड़ी आदि अनेक त्रस जीव उड़ा है वा चपि जाय है । अरु दो चार वरस पर्यंत लोभी पुरुष संचय करै हैं ता विषै पूर्ववत् जा समय हालकी उतपत्ति भई ता समय-सू लगाय तहा [illegible]ई सहित रहै । तहा पर्यंत असंख्यात त्रस जीव सासता उपजै हैं । सो ऐसा सहत पचामृत कैसे हुवा । अपना लोभके अर्थ न जीव कौन कौन अनर्थ न करै । अरु कांई कांई अषाद्य वस्तू न खाय तातै ए सहित मांस सादृस्य है । मद्य, मांस रहित तीनो एकसा है । सो याका खावा तो दूरी रहौ । औषधि मात्र भी याका स्पर्श करना उचित नाही तैसे जानना याको औषधि मात्र भी गृहन किया दीर्घ कालका सच्या पुन्य नासनै

प्राप्त होय है। आगे काजीका दोष कहिये हैं छांछकी मर्यादा बिलोया। पाछें अथौन ताईं की है, पाछे रह्या अनेक त्रस जीव उपजे है ज्यों घनाकाल ताई रहै त्यो त्यों घना त्रस उपजै। जैसे रात बसाका अनछान्या जल अभक्ष है तैसे रात बसाकी छाछ अभक्ष है। सो एक तो यह दोष अरु छाछि विषै राई परै है। राईका निमित्त करि तत्काल छाछि विषै त्रस जीवाकी उतपत्ति होय है। ताही वास्ते राई छाछिका राय तौ अभक्ष है। एक दोष तो यह और छाछ विषै भुजिया परै है। सो एक बिदलका दोष बहुरि छाछि विषै मोकला पानी अरु लून परै है सोई ताका निमित्त पाय शीघ्र ही घना त्रस जीवकी उतपत्ति होय है। सो एक दोष यह पाछे दस पन्द्रह दिन ताईं याकौ भखवौ करै है। जैसे धोवी छीया नीलगरके कुडका जीव रहै। तैसे काजीका जीवा रहा जानना। ज्यो ज्यों घना दिन कांजी रहै त्यों त्यो वाका स्वाद अधिक हौय है। सो अज्ञानी जीव इन्द्रीयाका लोलपी राजी रांजी होय होय खाय जावै ए स्वाद त्रस जीवोका मास कलेवरका है। सो धिक्कार है ऐसे रागभावके ताईं। ऐसा अखाद वस्तुकौ न आचरे। ऐसा ही दोष डोहा किरावका जानना। या विषै भी त्रस जीव घना उपजै है। आगे अथाना संधान ल्योंजीका दोष कहियेहै। सो लून, घृत, तेलका निमित्त पाय नीबू आदिका अथाना विषै दोय चार दिन पर्यंत सरदी मिटै नाहीं। सो लून सरदीका निमित्त पाय त्रस जीवांकी उतपत्ती होय है। वा ही विषै मरै है। ऐसे जन्म मरण जहां ताईं वाकी स्थित रहै तहा ताई हुवा करै। ऐसे ही लौंजी संधान मुरब्बा विषै ज़ीवाको रासका समूह जानना।

सो नष्ट गई है बुद्धि जाकी ऐसे अनाचारी मू पिंडे पुरुष आचरन करै। ए न नाहीं कि यह अनाचारका है ऐसा दोष जान अवश्य न है। अरु सर्वथा न रहा जाय तो आठ पहरकी खावो । अथवा सुकी आवोली व अनाकी बनाय ल्यो वृथा ही संसारसमुद्र विषै मति डूबै। आगे जलेबीका दोष कहिए जो रात्र विषै मैदानै माहि व है सो पटाई उठै तो जी नजर आवै हजारां लाखां ल म समूह उपजै, सो खट्टा मैदा हा ऊपर रह जाय। ऐसी हित मैदानै स्वादके अर्थ घृ कडाहमे तलिये पीछे मिश्री की चासनीमें बोरै है। बहुरि अघोरीकी नाई रात वा दिन विषै भोजन करै सोय भोजन के तो हमनै जानै सर्वज्ञ जानै है आगे भेलै जीमणका दोष कहिये। सो जगत विषै औंठि ऐसी सिद्ध है सो मन दोय मन मिठाईकी छाव भरी ता माहींसू एक कना उठाय मुखमे दीजे तो वा मिठाइनै कोई भेटे नाही। अरु या कहै ऐतो औंठी होगई सो ये तजनें योग्य है। अरु ऐ मूढ़ सराग पीच सात जना एकै साथ भेलै वैठ भोजन प्रसादी करै सो मोहढा मांहिसू सागकी औंठ थाली मांहि परै। वा मुखकी लाल थालीमे परै अथवा ग्रासकी साथि पाचू आंगुरी मुखमे जाय सो मुखमें आगुल्यां लालसों लिप्त होजाय फिर वैसा ही हाथसों ग्रास उठाय मुखमे देय ऐसे ही सारेंकी औंठि कासा विषै धिल मिल एक मेक होजाय। सो परस्परि सरावै तो वे वाकी औंठि खाय, वौ वेकी ओठि खाय परस्पर ए हास्य कौतूहलसूं अत्यन्त स्नेह बंधाय वा मनुहारि करि पूर्न इन्द्री पोखै ताके पोखनें पर काम विकार तीव्र होय। मान

अत्यंत बंधे सो भेलै जीववा विषै ऐसा अनेक तरहका पाप उपजै है। तातें सगा भाई, पुत्र, इष्ट मित्र वा धर्मात्मासा धर्मीके भेले जीमना उचित नाहीं। औंठ खावाका स्वभाव तौ चांडालकूं कराका है। भेले खावाका स्वभाव ऊंच कुलके पुरुषका नाही।

आगै रजस्वला स्त्रीका दोष कहिये। सामान्यपनौ महीनाके माहि वाकी जो निस्थांन माहिसूं ऐसो निन्द रुधिर विकार-समूह निकसै है। ताके निमित्तकरि मनुष्य तिर्यंच केई पुरुष आंधा होय जाय। व आंखमे फूली परजाय, पापर, वडी, मुगोडी, लाल होय जाय इ सादिवाकी छाया देखवा कर कपड़ाका स्पर्श करि करवा कर तीन दिन पर्यंत अनेक औगुन उपजै है। याकै जा समय महा पापका उदय है। ब्रहछा समान है याका हाथकी स्पर्श वस्तु सर्व अलीन है। पीछे चौथे दिन वा केई आचार्य पाचवें दिन छटे दिन कहे है। भावार्थः—छटे दिन व पांचवे दिन व चौथे दिन स्नान कर उज्जल कपडा पहिर भगवानका दर्शन कर पवित्र होय है। मुख्य पनें चौथा स्नान कर भरतार समीप जाय है। कोई मनुष सूद्र समान याकू अपवित्र नाहीं गिने है। सो वह भी चांडाल सादस्य है घना कहा कहिये। आगे दूध दही छांछि घृतकी क्रिया लिखिये है। गरडी ऊट आदिका दूध तो अलीन है। या विषै दोहता दोहता त्रस जीव उपजै है। अरु गाय भैंसका लीन है। सो छान्या पानीसूं दोहनेवारेके हाथ धुवाईये गाय भैसको आंचल धुवाय चोख्या माजा चरू वासन ताकों जल कर धोयवा विषै दुहाईये। पीछे दूजे वासनमें कपडासूं छानिये पीछे दोह्या पीछे दो घडी पहिले पी जाईये अथवा दो घडी पहिले उष्ण करिये। दो घड़ी उपरांत

काचां रह जाय तो वा विषै नाना प्रकारके त्रस जीव उपजे हैं। तातै दोय घडी पहिला गरम करना उचित है। सो प्रथम ही आंवला आदि खटाई बतातां रुप्या दूध विषै डार जमाईये। वाकी मर्याद आठ पहरकी है। आजका जमाया प्रभात दहीकूं कपडा विषै बाध वाकी मुगोड़ी तोड़ सुकाई है। पाछै और ही वाका जावण दे दूध जमाईये। ऐसे दूध, दही आचरने योग्य है। सुठ वा और खटाई वा जमद रुपाका भाजन कर जम जाय है। कोई दुराचारी जाठ गूजर अन्य जातका दूध दही षाईये है। ते धर्म्म विषै वा जगत विषै महा निंद्य है। और ऐसा सूद्र दहीकूं लोयां पीछे तो तुरत अग्नि ऊपर ताता करि जाईये। छांछि अर्थात ताई उठाय दीजे रात विषै राखेय नाहीं। रातकी राखी सवारै अनछान्या पानी समान है। ऐसे दूध देही छांछि क्रिया जाननी अरु केई विषै लोलुपी क्रियाका आसरा लेय गाय भैंस मोल लें निज घर विषै आरम्भ वधावै है। सो आरम्भमें बढावै नांही ज्यों ज्यो आरम्भ वन्धे त्यो हिंसा वधै चौपद जात राखवेका विशेष पाप है सोई कहिये है सो वह तिर्यंच काय वा बिना अनछान्या पानी पिया बिना न रहै। अरु सूके त्रन छान्या पानीका मेर मिलना कठिन अरु जो कदाचित्त कठिनपने वाका साधन राखिये तो विशेष आकुलता उपजे, आकुलता है सो कषायका बीज है। कषाय है सोई महा पाप है, वहुरि कदाचित वाकूं भूखा तिसाया राखये शीत उष्ण माछरादिके दुखका जतन न करिये तो वाके प्राण पीडे जांय, मोहवासो वोल्या जाय नाही। अरु याकूं सासती कैसे खबर रहै। अरु शीत उष्णादि बाधा मेटे

नहीं, तातै वां वेद नाहीं होय तातै वाका महा पाप राखनै वारेकौ लगै। बहुरि वाके गोवरमूत्र विषै विशेष त्रस जीवकी रास उत्पन्न होय है। अरु ईंधनका निमित्त कर सासता रातदिन चूला बाल्या करै। चूलाके निमित्तकरि छह ग्राम दाह करवां जितनो पाप लगे। तातै ऐसा जान चौपद राखना उचित नाही। बहुरि ताकी तेल्ही खानेका विशेष पाप है। घना दिनको दूध गाय भैंसका पेट विषै रहै है। पीछे वे प्रसूत होय अरु ता समय वाके आंचलसू रक्त सादृस्य निचोय काढिये। वाकू उश्नकर जमाइये ताका आकार और ही तरहका होय जाय। ताकू देख गलान उपजै पीछे वैसो निन्द वस्तुको आचरिए तो वाके रागभावकी काई पूछनौ। तातै अवश्य याका आचरन न करना। छेलीका परसूत भया, पीछे आठ दिवसका अरु गायका दिवस दस पीछे। अरु भैंसका पन्द्रह दिवस पीछे दुग्ध लैना योग्य है, पहली अभख्य है। अरु आधा दुग्ध वाके बच्छाको छोडिये। आगे कपडा धुवानैं वरिगावनैका दोष कहिये है। प्रथम तो वा कपडा विषै मल निमित्त कर लीख, जुवा आदि अनेक त्रस जीव उपजे हैं। सो वे जीव कूंपमेतें जीका पानीमे नासनें प्राप्त होय। पीछें ते कपराने दरियाव विषै सिला ऊपर पछाड पछाड धोवै। सो पछाडती वार मींढ़क माछला पर्यंत अनगिनत छोटा वडा जीव कपड़ाके ऊपर तिमें आवै ताका कपडाकी साथ सिला ऊपर पछाडता जाय। सो पछाडिवाकर जीवका खण्डन होय जाय। बहुरि वे तेजीका खारौ पानी दरियाव विषै घनी दूर फैलै। वा बहती नदी होय तो घना दूर कहता चल्या जाय तो तहां पर्यंत जीवको

खारा रस पौहुचै तहां पर्यंत सर्व जीव मृत्यूकूं प्राप्त होय। बहुरि कपराकौ सावन सेती फेर दरियावमें धोवै। सो वैसे ही जहां तांई सावनका अंस पहुंचै तहां ताई दरियावका दरियाव प्रासुक होय जाय। जैसे एक पानीका मटका विषै चिमटी भर लोंग डोडा लायचीका नाखवा कर प्रासुख होय है। तैसे एक दोय कपड़ाका धोयवा करि सर्व दरियावका जल प्रासुक होय है। अरु केई महत पापके धारक सैकरा हजारा थान छदाम अधेलाके वास्ने धुवाय वेचें है। तो वाके पापकी वार्त्ता कौन कहै। तातें धर्मात्मा पुरुष सर्व प्रकार धोवीकै कपडा धुवायवौ तौ तजौ याकौ पाप अगिनित है। अरु कदाच पहिरवेका धोये विना न रहै जाय तो गाढा नातना सूं दरियावके बाहर कुंडी आदि विषै पानी छान छान पाछै जीवानां दरियाव व कुवामें बिलोय कपराकी जूं लीख सोधि धोईये। भावार्थ–मैला कपरानै डील सूं उतठरया पाछ्ै दस पन्द्रह दिन तौ पडा राखिये। पीछे फेरि भी वा विषै कोई जूं लीख रही होय ताकूं नेत्रकर देखिये अरु कोई नजर आवे ताकूं लेय और डीलके पुरा या वस्त्र ता विषै मेल्हि और ठौर न नाखिये नाहीं कपडा विषै जुंवे मैलनै कर घना दिनतांई मरे नांही है। आयु पूरीकर ही मरै है बहुरि ऐसी जागा धोइये कि दरियावके बाहर प्रासुक स्थान विषै जल उहांका उहां ही सूष जाय व भूमि विषै सूख जाय अरु जैसे कदाचि वह पनी वहकर अपूठा दरियाव हीमें जाय, तौ अनछान्या पानी सादृश्य ही धोया करिये। तातें विवेकपूर्वक छान्यापानी सूं धोवना उचित है। बेचवेका कोई प्रकार धोवना उचित नाही। आगै रंगावनैका दोष कहिये है। नीलगर छीपा

आदि रंगरेजके दोय चार व पांच दस वरस पर्यंत रंगके पानीका भांड़ा रहै है। पीछै वा विषै कपराके समूह डुबोय मसलि मसलि रगै है। सो मसल वाकर सारा कुंडका जीव सगराम सल्या जाय है। ता पीछे दरियावमें जाय धोवै है। ऐसे ही पाच सातवार रंगना धोवना करै सो वा धोवा विषै वैसे ही रंगका पानी जहा पर्यंत दरियावमे फैले तहा पर्यंतका जीव बार बार हन्या जाया तातै ऐसा रंगानैका महा पाप जान सत पुरुषनकों रंगावना त्याज्य है। आगेसे तखानाका दोष कहिये है। एक बार मध्यान्ह समय चौंडे ठौर विषै निहार करिये है। सो ततकाल ही सन्मूर्छन मनुष्य और असंख्यात त्रस जीव सूक्ष्म अवगाहनाके धारक उतपन्नि हौय है पीछे दोय चार पहरके आतैर नजर आवै है। ऐसा लटादिकाका समूह जेता बह मल हो य तेता जीवाकी रास उत्पन्न होता देखिये है। सो जहा सासती गृढ सरदी रहै है। अरु ऊपरा ऊपरी दसबीस पुरुष स्त्री मल मूत्र छेपै वी सीला ताता पानी कुड़ेसों ऐसा अशुद्ध स्थान विषै जीवाकी उत्पन्नकी कहा पूंछनी। अरु हिसा दोषकी कहा पूंछनी, तातें ऐसा पाप महत् जान स्वपनै मात्र भी सेतखाना जाना योग्य नाही। आगे निगोद आदि पच थावरके जीवका प्रमाण दिखाईये है। एक खानकी माटीकी डली विषै असंख्यात प्रथ्वी कायके जीव पाईये है। सो निजाराका दाना दानाका प्रमाण देह धरै तौ जम्बूदीपमें मावै नाहीं वा संख्यात असंख्यात दीप समुद्रामें मावै नाहीं। वा तीन लोक वा असंख्यात लोकमें मावै नाहीं। ऐ ताही एक पानीकी बूंदमें वा अग्निके तिनगामें तुच्छ पवनमें व प्रतियेक वनस्पती काइके अग्र भाग मात्र

गाजर, मूला, शकरकन्द, आधा फूल, जुंवारा, कूपल आद नरम वनस्पति विषै तासूं अनंत गुना जीव पाईये हैं। सो ऐसा जान पाचौं थावरकी भी विशेषपनै दया पालनै, विना प्रयोजन थावर भी नहीं विरोधना। अरु त्रस सर्व प्रकार नहीं विरोधना थावर की हिंसा वीचसे त्रसकी हिंसामें वडा दोष है। सो आरंभकी हिंसा वीच निरापराध जीव हतनका महा तीव्र पाप है। आगे दुवा इतका दोषकौ दिखाय है सो दुवायत विषै दोय चार वरस पर्यंत स्याही रहै है। ता विषै असंख्यात त्रस जीव अनंत निगोद ऐसे सासता उपजे है। सो यह नीलगरके कुंड़ी सादृस्य होय है। ताके हजार पांचसे वैभाग समान एक छोटी कुंडी ही है। या विषै जीवाकी हिंसा विशेष होय है तातै उत्तम पानीसो स्याही गाल प्रमाण सो लिखावा करे पीछें साझ समय वह स्याही मिहीन कपडामे सुखायले। प्रभात फेर भिजोईये। ऐसे ही नित्य स्याही कर लेना ऐ प्रासुक है। यामे कोई प्रकार दोष नाहीं थोरौ प्रमाद छोडवाकर अपरपार नफा होय है। आगे धर्मात्मा पुरुषके रहनेका क्षेत्र कहीये है। जहां न्यायवान जैनी राजा होय नाज वलीता सोधा होय विकलत्रय जीव थोरा होय। घरकी वा वारली फौजका उपद्रव न होय। सहरके दोल्यूं गढ होय जिन मंदिर होय, साधर्मी होय, कोई जीवकी हिस्या नहोय, बालक राजा ना होय, राज विषै बहु नायक न होंय, स्त्रीका राज न होय, पंच्याका स्थाप्या राज न होय, अनवैस बुद्धिके धारक राजा न होय औरकी अकलके अनुसार राजा कार्य न करै। नगर दोल्यूं बिरानी फौजका घेरा न होय मिथ्यांती लोगांका प्रवल जोर न होय। इत्यादि दुःखनै

कारण व पापनै कारण एसे स्थानक तानै दूर हीतै तजनै योग्य है। आगे श्री जैन मदिर विषै अज्ञान वा कखाय कर चौरासी आक्षादान दोप लागै, अरु विचक्षण धर्म बुद्धि करि नही लागे ताका स्वरूप कहिये है। श्लेष मानाषे नाही हास्य कौतूहल करे नाहीं। कलह करै नाहीं। कोई कला चतुराई करै नाहीं। नख चाम उपाड नाखे नाही मलमूत्र छेपे नाही स्नान करै नाही गाली बोलै नाही। केस मुडावै नाहीं। नोह लिवावें नाही। लोहू कढावै नाहीं। गृमडा पीव आदि विकार नाखै नाही। नीला पीला पित्त नाखै नाहीं। बमन करै नाही। भोजन पान करै नाहीं ठांडे दात माहसू अन्नादिक अंस काढै नाही। सेनासन करै नाहीं। दांत मल, आंख मल, नख मल, नाक मल काढ़ै नाहीं। गलाका मैल, मस्तकका मैल, शरीरका मैल, पगका मैल उतारै नाहीं। गृहस्थ-पनाकी वातें करै नाहीं। माता, पिता, कुटुब, भ्राता, व्याही बहिन आदि लोक कि जनता श्रुश्रूषा करै नाही। सासु जिठानी ननद आदके पग लागै नाही। धर्म शास्त्र उपरात लेखक विद्या न करै बाचै ही। श्रृंगारका चित्राम चिंत्र नाही। कोई वस्तुका बटवारा करै नाहीं। दिव्यादिकका भंडार राखे नाहीं। अगुली चटकावै नाहीं आलस करै नाहीं। भीतका आसरा लेवे नाहीं। गादी तकिया लगावे न ही। पांव पसारै नाही। पग पर पग धरि बैठे नाही। छान्या थापै नाहीं। कपडा धोवे नाहीं, दाल दलै नाहीं, साल आदि कूटै नाहीं, पापड मुगौडी आदि सुखावै नाहीं, गाय भेंस आदि तिर्यंच बांधै नाही। राजाके भय करि भाज देहरै जाय नाहीं वा लुकै नाहीं रुदन करै नाहीं, राजा चोर स्त्री भोजन देश आदि विकथा न करै।

भाजन गहना शस्त्रादि बनावें नाहीं। तिर्यंचकी थापना करै नाहीं, रुपया मोहरीरत्न परखै नाहीं, प्रतमाजीकी प्रतिष्ठा हुवा पाछै प्रतमाजीकै टांची लगावै नाही, और प्रतमाजीका अंगकै केसर चन्दन आदिका चरचन करै नाहीं, प्रतमाजीके तले सिंघासन ऊपर वस्त्र बिछावै नाहीं ए भगवान सर्वोत्कृष्ट वीतराग है। तातै सरागताके कारण जे सर्व ही वस्तू ताका संसर्ग दूर ही तिष्ठो अरु कोई कुबुद्धी अपना मान बडायका पोखनेके अर्थ नाना प्रकारके सराग-ताके कारण आन मिलावै है ताका दोषका काई पूंछनी मुन महाराज कै भी तिल तुस मात्र गृहन न कहा तो भगवानकै केसर आदिका संयोग कसे चाहिये। कोई इहा प्रश्न करै चमर छत्र सिंघासन कमल भी मंने किया होता ताकू कहिये है। सरागके कारण नाहीं प्रभुत्वनाके कारण है जल करि अभिषेक कराइये है। सोये स्नानादि विषयका कारण नाहीं जल करि अभषेक कराइये है सो ये स्नानादि विषयका कारण है याकै गधोदकके लगाये पाप धोया जाय है अरु चमर छत्र सिंघासन निराला है। जातै जो वस्तु विनयनै सूचती होय ताका दोष नाहीं। विपर्य पनै कारण ताका दोष गनिये है। तातैं भगवानका स्वरूप निराधार नहीं मानना उचित है ताही को पूजना योग्य है। बहुरि प्रतमाजीके हजूर बैठिये नाही। जो पग दूखने लगै तो दूर जाय बैठिये। कांचमे मुख देखिये नाहीं। नख चूटी आदिसूं केस उपाडिये नाही। घरसौं जोड़ा पहरै वस्त्र बांध्या देहरै आवै नाहीं। पांघड़ी पहिरे मंदिर विषै गमन करै नाहीं। वा बेचै नाहीं वा मोल लेय नाहीं। देहराकी बिछायण नगारा उनिशान आदि जावन्त वस्तु विवहारादिकके अर्थ बरतै नाहीं।

अथवा देहराका द्रव्य उधार भी ना लेय । व पैसा दे मोल ना लेय । वा आप मनमे ऐसा विचारै, ए वस्तु ए द्रव्य देवगुरु धर्मके अर्थ है। पाछे वह वस्तु द्रव्य सकल्प किया माफक ना चहोडे । तौ याका अंश मात्र भी अपनै घर विषै रह्या हुवा निर्मायल सादृश्य जानना। निर्मायलका गृहनका पाप सादृश्य और पाप नाही। या पाप अनन्त संसारन करै है नखसूं ले मस्तक ताईं शरीरका मैल उतारै नाहीं । व्रती पुरुष सचित्त वस्तुसौ पूजा न करै । देहराकी भीतके आदि सरागपर नामके कारण ऐसा चित्राम न करावे। देव गुरु शास्त्रनै देखि तत्काल उठे । हाथ जोड नमस्कार करै। स्त्रीजननै एक साडी ओढ देहरे न आवै । ऊपर उपरनी आदि ओढ आवैअरु पूजा विना देहराकी केसर चन्दन आदि तिलक नाहीं करै । स्नान व चन्दनका तिलक अरु आभूषणादि सिगार विना सरागी पुरुष तिनकौ पूजा नाही करनी । त्यागी पुरुषनै अटकाउ नाहीं । पूजा किया पाछे तिलक घोष नाखना । प्रतिमाजीके आगे चहोडनौ फूल सो आप सिरपर धरै नाहीं। वाकागृहण विषै निर्मायलका दोष लगै । गदिरा चौपर स्तरज गजीफा आदि कोई प्रकारके खेल न खेलै । वा होड नाहीं पाटै । देहरामे ववसाखा आदि अशुच क्रिया नाही करै। जुहार व्योहार आदि शृष्टाचार न करै। भाड क्रिया नाहीं करै । रे कारे नूं कारवो कठोर वा तर्क लिये, वचन वा मर्म छेद वचन मसकरी कुठा विवाद अदया मृषा कोई न रोकवौ । डाडवो इत्यादि बचन ना बोलै । कुलांट ना खाय, पगाके दरवडी ना दावै । हाड चाम केस आदि मदिर विषै लै जाय नाहीं । मंदिरमे बिना प्रयोजन आह्या साह्या फिरै नाहीं ।

कपडा हुई स्त्री तीन दिन व प्रसूत हुई स्त्री डेढ महिना पर्यंत देहरा विषै जाय नाही। गुह्य अंग दिखावे नाही। खाट आदि बिछावै नाहीं। जोतिक वेदिक मंत्र जंत्र तंत्र न करै। जलक्रीड़ा आदि कोई प्रकार क्रीड़ा न करै। लूला, पागला, विकल अंगी, अधिक अंगी, वा चन्या, अन्धा, वहिरा, गूगा, काना, माजरा, सूद्र, वरणसंकर वर्ण पुरुष स्नान कर उज्जल कपडा पहिर श्री जिनको पखालादि अभिषेक कर अष्टद्रव्यसूं पूजा न करै अरु अपनें घरसूं विनयपूर्वक चोखा-द्रव्य ल्याय कपडा पहिर श्री जिनके सन्मुख होय आगे धरि देय, पीछे नाना प्रकारकी स्तुति करि पाठ पठन नमस्कारादि करि उठ जाय ऐसी द्रव्यपूजा वा स्तुति पूजा करै। राते पूजा न करै। मंदिरसूं चारों तरफ गृहस्थका हवेली घर ना होय। सो सर्वत्र मलमूत्र आदि अशुच वस्तु रहित पवित्र होय अनछान्या जल करि जिनमदिरका काम करावै नाही। और जिन पूजन आदि सर्व धर्मकार्य विषै वहुत त्रस थावर जीवोंका घात होय सो सर्व कार्य तजनें योग्य है। ऐसे चौरासी आसादनाका भेद जानना।

भावार्थ—जिन मंदिर विषै सर्व सावद्य योग लिया जो कार्य होय सर्व तजना। और स्थानक विषै पाप किया ताके निरवृत्य करनेंकूं जिनमंदिर करिये है। अरु जिनमंदिर विषै उपाया पाप ताके उपसात करवानै और कोई समर्थ नाहीं भुगत्यां छूटै है। जैसे कोई पुरुष किसी जनसूं लरे ताकी तकसीर राजा पास माफ करावे। और राजा सूं भी लडा ताकी तकसीर माफ करवानें ठिकाना, वाको फल बंदीखाना ही है। ऐसा जान निज हितमान जिहि तिहि प्रकार विनयरूप रहना। विनय गुन है सो धर्म्मका मूल

है। मूल विना धर्मरूपी वृक्षके स्वर्ग मोक्षरूपी फल कदाचि लगै नाहीं। तीसूं हे भाई! आलस्य छोड प्रमाद तजि खोटा उपदेशका वमन कर भगवानकी आज्ञा माफिक प्रवर्तो। घनी कहवाकर कांई ए तो अपना हेतकी बात है जामें अपना भला होय सोकौ करना, सो देखौ अरहत देवको उपदेश तौ ऐसाहै या चौरासी माहिंमूं कोई एक दोय भी लागै तौ नर्क निगोद जाय। अरु कुलिंग्या जिनमंदिरनै अपना घर सादृश्य करि गादी तकिया लगाय ऊचा चौका चौकी विछाय ऊपर बैठ बडे महंत पुरुषानै पुजावै है याका फल कैसा लागेगौ सो हम नाही जानै है। अरु गृहस्थयाकी भूल कैसी, ऐसे महत, पापके धारक, ससार समुद्र विषै खेवटिया बिना पत्थरकी नाव सादृश्य ताकों सतगुरु माने है धर्म्म रूपी अमोलक रत्न मुसावै है। तौ भी मान वडाईके अर्थ आपनें अन्य ही माने है। वहुरि गृहस्थानै वरजोरी वुलाय भावना करावै है सो यह तो मुनिकी वृत्ति नाहीं मुनि तो भमरा कीसी नाई उडता फूलकी वास लें फूलनै विरोध नाही त्योंही उदड उतरै। विना वुलाया अजाची वृत्य भरे गृहस्थीके वारनै पडा छ्यालीस दोष बत्तीस अंतराय टालि उदासीन वृत्ति कर विरस अल्प आहार लेय तत्काल वनमें उठ जाय है। गृहस्थनै पीडै नाही ताका नाम भावर वृत्ति कहिये है। अरु जा कुलिगाकी भावना कैसी सो हमनै जानै। अगे चौथाकाल विषै बडे जिन मदिर कराये अरु पाचवां काल विषै जिनमदिर कराया ताका स्वरूप व फल वर्णन करिये है। चौथा काल विषै बड़े धनाढ्यके अभिलाषा होती। मेरे बहुत दुःख ताकूं धर्मके अर्थ कछू खरचाईये है। ऐसा विचार कर धर्मवुद्धी पाक्षिक

श्रावक सादृश्य महंत बुद्धिके धारक अनेक जैनशास्त्रके पारगामी वडे वड़े राजान करि माननीक ऐसे गृहस्थाचार्य हुते ता समीप जाय प्रार्थना करै। हे प्रभु! मेरा जिनमंदिर करायवे का मनोर्थ है आपकी आज्ञा होय तो मै ए कार्य करूं। पीछे धर्म्म बुद्धी गृहस्थाचार्य कहै याका उत्तर प्रभात काल दूंगा। अवार तुम डेरै जावौ। पाछे वे गृहस्थाचार्य रात्रिनै मंत्रका आराधन करि सैन करै। पीछे रात्रिने स्वप्ना देखे सो भला शुभ स्वप्ना आया होय तौ या जानै ए कार्य निर्विघ्नताकौ पहुचसी। अशुभ आया होय तो या जानै ए कार्य निर्विघ्नपनै होनेका नाहीं। पीछे गृहस्थी फेर आवै ताकू शुभ स्वप्ना आया होय तौ ए कहै विचारयासो करौ सिद्धि होसी। अशुभ आया होय तौ ए कहै थाके धन है सो तीर्थयात्रा आदि धर्मकार्य विषै खरचौ। ए कार्य यासूं होता दीसै नाही। जा कार्य वनि आवे सो ही करिये। अरु जो शुभ स्वप्न आवै तो यह कहिये प्रथम तो अपनै परिणाम विषै द्रव्यका संकल्प करै। ऐता द्रव्य म्नै याके अर्थ खरचना। पाछै जैसा परिणाम होय तैसा कार्य विचारेगे। अर या द्रव्य विषै मेरा मत्र नाही ताकूं अलाधा एक जायगा करै ऐसा नाही। कै परिमान किऐ विना देहराके अर्थ अनुक्रमसों खरचै जाय सो याका परमान काई पहली तो परनाम भला होय ताकर वहुत द्रव्य खरचना विचारया है पीछै परिनाम घपि जाय या पुन्य घटि जाय तौ पूर्व विचार माफक खरच सकै नांही, वहुरि जहां मंदिर कराईये सो वह वडा नगर जहां जैनी लोग घना वसता होय ताके बीच आस पास दूर गृहस्थयाका घर छोड पवित्र ऊंची भूमिका दाम दै मोल लेय बरजोरी नांही लेय। पीछै

भला महूर्त्त देख गृहस्थाचार्य वाके ऊपर यन्त्र मांडै। पीछै जंत्रका कोष्ठ विषै सुपारी अक्षत आदि द्रव्य धरै। ताके धरनै कर ऐसा ज्ञान होय फलानी जायगा एता हाथ तलैं मसानकी राख है। एता हाथ तले हाड चाम है। पाछैं वाकूं खुदाय हाड चाम आदि अशुचि वस्तु परी काढ़े पीछैं श्रेष्ठ नक्षत्र लग्न देखि नीव विषै पाखान धरै जी दिन विषै नीव लगावै ती दिनसूं करावने हारा गृहस्थी ब्रह्मचर्य स्त्री सहित अगीकार करै सो प्रतिष्ठा किये पीछे श्रीजी जिनमदिर विषै विराजै तहा पर्यंत प्रतिज्ञा पालै और छान्या पानीसूं काम करावै। चूनाकी भट्टी घरै करावै नाहीं। प्राशुक ही मोल ले और कारीगर मजूरांसूं कामकी घनी ताकीद नाहीं करै। वाका रोजगार विषै कसर नाहीं करै। वाकै सदीव निराकुलता रहे ऐसा द्रव्य दे मंदिरका काम करावै। ईतौ धर्म्म कार्य विचारया है सो मोटा मोटा काम कराय चोखा काम होय है। मोटी वस्तु मोल लेय चोखी होय है अर कृपणाता तज दुखित भुखितनै सदीव दान दे अर कारीगर मजूर चाकर आदि जे प्रानीजन ता ऊपर कोई प्रकार कखाय ना करै। सदा प्रसन्नचित्त ही रहै साराकूं विशेष हित जनावै। एक वाक्ष वर्त्ते कि कब श्रीजिनमदिरकी पूर्णता होय। श्रीजिन विनयपूर्वक विराजै और जिनवानीका व्याख्यान होय ताके निमित्त करि घना जीवाका कल्याण होय। जिन धर्म्मका उद्योत होय धर्म्मात्मा जीव ई स्थानक विषै धर्म्म साधन कर स्वर्ग मोक्ष विषै गमन करै और भी संसारका वधन तोडि मोक्ष जावै। संसारका स्वरूप महा दुःखरूप है। सो फेर जिन धर्मके प्रताप करि न आऊं। वीतराग है सो स्वर्ग मोक्षकू

फलनै शीघ्र दे है। ताते जिनदेवकी भक्ति परम आनंदकारी है। आत्मीक सुखकी प्राप्ति याही ते होय है ताते मे स्वर्गादिकके लौकिक सुखने छोडि अलौकिक सुखनै वांछ् हूं। और म्हारे कोई बातका प्रयोजन नाही। संसार सुखसू पूरं पडौ धर्मात्मा पुरुषकै तौ एक मोक्ष ही उपादेय है। मैं हूं नै एक मोक्ष हीका अर्थी हू। मो याका फल मेरे उपजै। भावार्थ—धर्मात्मा पुरुष तौ एक मोक्ष हीनैं चाहै है। मान बडाई जस कीर्ति वा गौरव वा स्वर्गादिक पुन्यफल नाहीं चाहै है। याकी चाह अधम पुरुषकै होय है याहीकी चाहके अर्थि जिनमंदिर करावै है सो वे जीव अधोगतनै ही जाय है। आगे प्रतमाका निर्मापनकै अर्थ खान जाय पाखान ल्यावै ताका स्वरूप कहिये है। सो वह गृहस्थी महां उछावसूं खान जावै खानकी पूजा करै। पीछे खानकूं न्यौत आवै। अरु कारीगरनै मेल आवै सो वह कारीगर ब्रह्मचर्य अंगीकार करै। अल्प भोजन ले उज्जल वस्त्र पहिरै। शिल्पशास्त्रका ज्ञानी घना विनयसूं टांकी करि पाखानकी धीरे धीरे कोर काटै। पीछे वह गृहस्थ गृहस्थाचार्य सहित और घना जैनी लोग कुटुंब परवारके लोग और गाजा बाजा बजाते मंगल गावते जिन गुणके स्तोत्र पढ़ते महा उत्सव सूं खान जाय। पीछे फेरि वाका पूजन कर विना चामका संजोगकरि महा मनोज्ञ रूपा सोनाके कामका महा पवित्र मनकुं रजायमान करनै वारा रथ विषै मोकली रूईका पहलामै लपेट पाखान रथमे धरै। पीछे पूर्ववत् महा उत्सवसूं जिनमंदिर ल्यावै। पीछे एकांत स्थानक विषै घना विनय सहित शिल्पशास्त्र अनुसार प्रतमाजीका निर्मापन करै ता विषै अनेक प्रकार गुण दोष लिख्या

वै। सो सर्व दोषनै छोड सम्पूर्ण गुण सहित यथा जात स्वरूप निपुणता होय चार पांच सात बरसमे होय। एक तरफनै तौ जिनमंदिरकी पूर्णता होय। एक तरफनै प्रतिमाजी अवतार धरैं पीछे घनै गृहस्थाचार्य पडित अरि देश देशका धर्मी ताकूं प्रतिष्ठाका महूर्त्त ऊपर कागद दे दें घना हेतसू बुलावे। सर्व सघको नित प्रति भोजन होय और सर्व दुखितकूं जिमावै नित प्रति अरु कोई जीव विमुख न होय रात्र दिवस ही प्रसन्न रहैं। अरि कुत्ता बिलाई आदि तिर्यंच भी पोख्या जाय वे भी भूख्या न रहै। पीछे भला दिन भला महूर्त विषै शास्त्रानुसार प्रतिष्ठा होय। घनौ दान बटै इत्यादि घनी महिमा होय। ऐसी प्रतिठी प्रतिमाजी पूजना योग्य है। विना प्रतिष्ठी पूजना योग्य नाही। अरु जानें भोले सौ बरस पूजता होय तौ वा प्रतिमा पूजनें योग्य ही है। अग हीन प्रतिमा पूज्य नाही उपंग हीन पूज्य है। अग हीन होय ताकूं जाका पानी कडै टूटै नाही ता जल विषै पधराय देना याका विशेष स्वरूप जान्या चाहौ तौ प्रतिष्ठा पाठ विषै वा धर्म सग्रह श्रावकाचार आदि और श्रावकाचार विषै जान लेना। इहा सक्षेप मात्र स्वरूप दिखाया है। ऐसे धर्म बुद्धिनै लिया विनय सौ परमार्थके अर्थ जिन मंदिर बनावै है। वा नाना प्रकारके चमर छत्र सिंघासन कलस आदि उपकरन चढ़ौडै तौ वह पुरुष थोरा सा दिनामे त्रैलोकी पद पावै। वाका मस्तक ऊपर भी तीन छत्र फिरै, अनेक चमर ढुरै और इन्द्रादिक संसारीक सुखकी कहा बात ऐसे चौथा कालके भक्त पुरुष जिन मंदिर निर्मापै ताका फल व स्वरूप कह्या। अब पंचम काल विषै बनावै ताका स्वरूप कहिये है।

मानक या पन्ने लिया घना काल ताईं ना रहै ऐसा अभिप्राय सहित व मत मतांतरका पक्ष न लिया गौरव सहित महंत पुरुषनै आ बिना अपनी इच्छा अनुसार जिन मंदिरकी रचना जिहि तिहि नगर विषै वा जिहि तिहि थानक विषै बनावे है। देहराके अर्थ द्रव्य संकल्प किये बिना द्रव्य लगावै है। वा संकल्प किया द्रव्यनै आपना गृहस्थपनाके कार्य विषै लगावे है। अथवा नारियल आदि निर्म्माल वस्तु भंडार विषै एकठा करकै वाका द्रव्य लगावै है वा पंचायतीमें नाम मांड़ि बरजोरी गृहस्थान पै रुपया पइसा मंगाय लगावै पीछे भाड़े दे लेके अर्थ मंदिरके तलें मोकली दूकानै बनावै। तिन विषै कदोय छीया दरजी हरवान्या पसारी गृहस्थी आदि राखै है। वा नाजसू हाट भर देसी। गृहस्थीतो उठै कुसीलादि सेवै; कदोई रात दिन भट्टी बालै नाजकी नामें जेता नाजका कनका तेता ही जी परै। सो ऐसा पाप जहां पर्यंत मदिर रहै तहां पर्यंत हुआ करै। वाके भांडेका द्रव्य जिनमंदिरके कार्य लगावै वा पूजा करनै वारे बहुर जिनमदिर विषै कुलिग्यानै राख घोरानघोर श्रीजीका अविनय करावै। उहा ही खाय उहां ही पीवै उहां ही सोवै वा मन्त्र ज्योतिक वैद्यक कौतुक करै जुवा खेलै स्त्रीयांकी हासी मसकरी करै। देहराराकी वस्तु मन मानी वर्तै। वा वेंच खाय आप पुजावै प्रतिमाजीका अविनय करै। गृहस्थाका घरा ले जाय ऐसा पाप कुलिग्यानके करावै और कुलिंग्या देहरै आवै सो महा बिकथा कर पाप उपार्जै। प्रतिमाजीकी पूठ दे परस्परि पगा लागै। मालीकूं दैनै कि रोटी श्रीजीकौ चढ़ोडै, रात पूजा करावै वा तीन लोकका

नायकनै मान वडाईका भरचा प्रमादी हुवा बैठा बैठा पूजा करै। राजादिकनै तौ बैठनै पावै ही नाही तौ भगवानके निकट बैठना कैसे संभवै। अरु पूजा करता भगवानको अवलोकन छाड़ि स्त्री आदि नै देखै लुगायाकी खुसामदीके अर्थ माथासू ऊपर वारवार जलधारा दिखावे। सो भगवानका दर्शन उपरात जलधारा देखनेका उत्कृष्ट फल कह्या और पडित जेती जेती अरु जेती पूजा गृहस्थानपै करावै ताका नेग माग लेय। इत्यादि जेता कार्य होय सो अविधि सौं होय और पुरुप जेता आवै तेता लौकिक वात करे। वारंवार परस्पर भृष्टाचार करै प्रतिमाजीका वा शास्त्रजीका अविनय ताकी खवर नाहीं और जाजम नगारा आदि देहराकी निर्मायल वस्तु ग्रहस्थी अपना विवाहादि कार्य विषै ले जाय वरतै ऐसी विचारै नाही। यामे निर्मायलका दोष लागै है। इत्यादि जहा पर्यंत मंदिर हैं तहा पर्यत मदिर विषै अयोग्य कार्य होय धर्मोपदेशका कार्य नाम मात्र भी नाही। तातै ऐसा मंदिर करावा विना तौ न कराया श्रेष्ठ था। याके पापका पारावार नांही। जे जे अन्यमती अविनय करै तैसा ही जैनी होय अविनय करै अरु मनमे ये मान राखे मै जिनमदिर कराया है सो मैं भी धर्मात्मा हौं। सो नाम मात्र धर्मात्मा है। सो याकौ फल तौ उदय आवसी तब खबर परसी। श्रेणिक महाराजा चेलना रानीकी हास्य करनै अर्थ कौतूहल मात्र मुन्याके गलामे मृतक सर्प नाख्या हत्यौ। सो नाखत प्रमाण ही सातवा नरकका आयु वध किया। पीछे मुन्याका शांति भाव देखकर परिणाम सुलटना महां दरेग उपज्यौ। सम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई। वर्द्धमान अंतम तीर्थंकरकै निकट क्षायक सम्य-

त्त्व पाय तीर्थंकर गोत्र बांध्यौ सभानायक भया तौ भी कर्म सौं छूटो नाहीं नर्क ही लेगयौ। ऐसा परम धर्मात्मासूं कर्म गम्य न खाय। तो तीर्थंकर महाराजकै प्रतिबिंबका अविनय करै तासुं गम्य कैसे खासी। ताते श्रेणिकजीका पाप वीच याका पाप अनंत गुना अधिक जानना। सो धर्मात्मा पुरुष ऐसा अविधि कार्य शीघ्र ही छाडौ। अरु केई विरले पुरुष पंचमाकाल विषै भी पूर्व ही अविधि कही ता विना अपनी शक्ति अनुसार महा विनय सहित धर्मार्थी होय जिनमंदिर निरमापै है। नाना प्रकारके उपकरन चढौड़े है। तो वह पुरुष स्वर्गादिनै पाय मोक्षके सुखका भोक्ता होय है। बहुरि आनमती राजा जिनधर्मका प्रतपक्षी त्याका दरवारसूं नसा-यरका चबूतरासूं पांच सात रुपैयाको महीना जिनमंदिरके जाचना करि पूजादिकके अर्थ रोजीना बंधावै है सो ए महापाप है। श्री जिनको अपनै परम सेवकादि विना औरका द्रव्य लगा-वना उचित नाही। वैरीका पईसा कैसे लगाईये ताते धर्म विषै विवेकपूर्वक कार्य करना। आगे सर्व कुलिग्याकी उत्पत्ति कहिये है। दस कोडा कोडी सागर प्रमाण अवसर्पणी काल, ऐता ही उत्सर्पिणी काल ताका नाम कालचक्र है। प्रथमा सुखमा चार कोडा कोड़ी सागर प्रमाण ता विषै मनुष्यकी आयु तीन पल्यकी, काय तीन कोस। दूजा सुखमा तीन कोडाकोड़ी सागर ता विषै आयु दोपल्यकी, काय दोय कोस। तीजा सुखमा दुखमा दोय कोडा कोड़ी सागर प्रमाण ता विषै आयु एक पल्य, काय-कोस एक चौथा दुखमा सुखमा व्यालिस हजार वरस घाट एक कोड़ा कोडी सागर प्रमाण कोटि पूर्व आयु, सवा पांचसै धनुष

काय। सो प्रथम चौदा कुलकर भये। तहां पर्यंत नौ कोडा कोडी सागर ताईं जुगलिया धर्म रह्यो संयमका अभाव अरि दस प्रकारके कल्पवृक्ष ता करि दिया भोगताकी अधिकता बहुर पीछे अंतका कुलकर आदिनाथ तीर्थङ्कर भये सो जब प्रभु दिक्षा धारी तिनके साथ चार हजार राजा दीक्षा धारी सो ये मुनव्रतके परीखा सहवानै असमर्थ भये नगर अयोध्यामे तो भरत चक्रवर्त्तिके भय कर आये नाही और बन फ़ल अनछान्या पानी भक्षण करने लगे तब बनकी देवी बोली रे पापी! नग्न मुद्राधार थै अभख्यका भक्षण करौ हे। थाने शिक्ष्या है कि जिनधर्म विषै क्षुधादिककी परीखा न सही जाय तौ और लिग धारो पाछे वा भ्रष्टि ऐसा ही किया। कैई तो जटा बाध्या, केई वभूत लगाया, कई योगी, केई सन्यासी, कनफडा एक दडी, त्रिदडी, तापसी भये। कैया लंगोटी राखी इत्यादि नाना प्रकारके भेष धरे पीछे हजार वरस पाछे भगवानकै केवलज्ञान उपज्या सो केतांई सुलट दीक्षा धारी, केताईक वैसा ही रह्या ताके नाना प्रकारके भेद भये वहुरि भरत चक्रवर्ति दान देना विचारा सो द्रव्य तो बहुत अरु लेनेवारे कोई मात्र नाहीं, तब सब नगरके लोग बुलाये अरु मार्गमें हरित तृण उगाये, कछु मार्ग प्रासुक राखा अरु पुरुषनकौ आज्ञा दीनी। ईठां अप्रासुक मार्ग आयौ तब निर्दयी है हृदय जाका ते तो बहुत लोग उस ही हरित ऊपर पग दे दे आये। अरु दया सलिल कर भीजा है चित्त जाका ते उहा ही खडे रहे आगे नाही आये। तब चक्रवर्ति कही इस मार्गसे आवो तब वा फेर कही हो तो सर्व प्रकार हरित कायकों विरोधौं नाहीं। तब भरतजी उस पुरुषने दयावान जान प्रासुक

मार्गकी तरफ बुलाये। अरु वानें कह्या तुम धन्य हो सुत हमारे दया भाव पाय ऐसौ अब हम कहैं सो तुम करौ। सम्यक् दर्शनज्ञान चारित्रके चिन्हकी तौ तीन तारकी कंठ-सूत्र कहिये जनेऊ कंठ विषै धारो अरु पाक्षिक श्रावकके-धर्मकौ धारौ अरु गृहस्थ कार्यकी धर्मकी प्रवृत्ति चलावौ अरु दान लेवौ दान देवो यामे कोई प्रकार दोष नांही था मह्रा कर माननीक हो सोथौ वेही करता हुवा। सो गृहस्थाचार्य कहाये पीछै ए ब्राह्मन स्थाप केताई काल पीछे श्री आदिनाथ भगवानको पूछा यह कार्य उचित किया कै अनुचित किया। तब भगवानकी दिव्यध्वनि विषै ऐसा उपदेश हुआ यह कार्य विरुद्ध किया। आगे शीतलनाथ तीर्थंकरकै समय सर्व भ्रष्ट होसी आनमती होय जिनधर्मका विरोधी होसी पीछै भरतजी मनके विषै बहुत खेद पाय कोप करि याका निराकरन करता हुवा। सो वे होतव्यके वश करि प्रचुर फैले। विक्षित्ति नाहीं भई फेर भगवानकी दिव्यध्वनि विषै ऐसा उपदेश हुवा एतौ ऐसै ही होनहार है, खेद मत करौ ऐसे ब्राह्मण कुलकी उत्पत्ति भई जानना, सोई अबै विप्र रूप देखिये है। बहुर अंतिम तीर्थंकरके समय भगवानका मौस्याईता भाई ग्यारा अगके पाठी मसकपूरन नाम भया ताकौं महा प्रज्वलित कषाय उपजी त्याणे मलेक्ष भाषा रची। अरु मलेक्ष तुरकीकौ मत चलायौ, शास्त्रका नाम कुरान ठहरायौ। जाकी तीस अध्याय ताका नाम तीस सिपारा नाम ठहराया ऐसे घोरानघोर हिंसा ही में धर्म प्ररूप्या सो कालका दोष कर प्रचुर फैले जैसे प्रलय कालका पवन करि प्रलय कालकी अग्नि फैलै ऐसे तुरकोंकी मतकी उत्पत्ति

जाननी। बहुर वर्द्धमान स्वामीनैं मुक्ति गया पीछे इक्कईस हजार बरस प्रमान पचमकाल ताके केताइक काल बरस अठाईसके अनुमान गया तब भद्रवाहु स्वामी आचार्य भये। ता समय केवली अवधिज्ञानकी विक्षित्ति भई। ताही समय एक चन्द्रगुप्तनाम राजा उज्जैनी नगरीका भया। तानें सोला स्वप्न देख्या ताकौ फल भद्रवाहु स्वामीनै पूछ्या तब वा जुदा जुदा स्वप्नका फल बतायौ सो ही कहै। कल्पवृक्षकी टूटी डाहली देख वाकरि क्षत्री दीख्या भार छोडसी। सूर्य अस्त देखवाकर द्वादसांगपाठीका अभाव होसी। चद्रमा छिद्र सहित देखवा कर जिनधर्म विषै अनेक मत होसी, भगवानकी आज्ञासू विमुख होय घर घर मन मान्या मत स्थापसी। बारह फनहका सर्प देखवाकर बारह बरस काल पडसी, यती क्रिया आचरणसू भ्रष्टहोसी। देव विमान आपूडा जाता देखवाकर चारन मुन कल्पवासी देव विद्याधरि पचमकाल विषै न आवसी। कमल कुडा विषे ऊगा देखकर संयम सहित जिनधर्म वैश्य घर रहसी, क्षत्री विप्र विमुख होसी। नाचता भूत देखवाकर नीच देवका मान होसी, जैन धर्मसूं अनुराग मन्द होसी। चमकता अग्निया देखवाकर जिनधर्म कटै अल्प होसी, कोई समय घनौ घटसी कोई समय अल्प वधजासी, मिथ्यामतनै सेइसी। सूका सरोवर विषै दक्षिन दिशाकी तरफ तुच्छ जलकै देखवाकर दक्षिणकी तरफ धर्म रहसी, जहा जहां पंच कल्यानक भये तहां तहा धर्मका अभाव होसी। सोनाके पात्रमें स्वान खीर खाता देखवा करि उत्तम जनकी लक्ष्मी नीचजन भोगसी। हस्ती ऊपर कपि चढा देखवाकरि राजा नीत छाड़ प्रजानें बाध लूटसी। वृषभ तरुण रथकै जुता

देखवाकर नवीन स्थानमें धर्म संयम आदरसी, वृद्धपनै सिथिल होसी । ऊंट ऊपर राजपुत्र देखवाकर यती परस्पर दोषी होसी। काला हस्तीका समूह लडता देखवाकर समय समय वर्षा थोरी होसी, मनमान्या मेघ न वरपसी । ऐ सोला स्वप्नाका अर्थ अशुभनें सूचता भद्रबाहु स्वामी निमित्तज्ञानकी वलसूं राजा चन्द्रगुप्तनें याका अर्थ यथार्थ कह्या ताकर राजा भयभीत भया ऐसा स्वप्नाका फल सारा मुन्यां प्रसिद्ध जान्यो । ऐही सोला स्वप्नें चतुर्थ कालके आदि भरत चक्रवर्त्तिनै आये थे । सो वा भी याका फल श्री आदिनाथजीकों पूछ्या । तव श्री भगवानजी दिव्यध्वनि विषै ऐसा उपदेशभया आगे पंचमकाल आवसी । ता विषै हुंडा सर्पनी काल देखकर अनेक तरहका विपर्जै होसी ता करि या भव विषै वा परिभव विषै जीवनै महा दुःखका कारण होसी । सोला स्वप्ना पंचमकालमें राजा चन्द्रगुप्तनें आए । अरि राजा चन्द्रगुप्त दीक्षा धरी तामे बारा फनका सर्प देखवा थकी बारा बरसको काल पडो जान्यौ तव चौबीस हजार मुन्योंका सग छाडि यानै कही ई देशमें बारा बारा बरसकौ अकाल पडैलो ये ठहरसी ते भ्रष्ट होसी, दक्षिणमे जासी ता सुनपद रहसी। अकालका अभाव होसी पीछै ऐसा उपदेश सुन भद्रबाहु स्वामी सहित बारा हजार मुन तौ दक्षिण दिशामें विहार किया । अब शेष बारा हजार मुनि इहां ही रहते अनुक्रम तै भ्रष्ट भये। पातर, डोली, पछेडी, लाठी राखते भये। ऐसे बारह बरस पूर्ण भये पीछे सुभिक्ष्य काल भया तव भद्रबाहु स्वामी तो परलोक विषै पधारे और दक्षिण दिशातें सर्व मुन आए यांकी भ्रष्ट अवस्था देख निंदा तव केता तौ प्रायश्चित्त दंड लै छेदो-

स्थापित कर शुद्ध हुवा अरु केताइक प्रमादका वशीभूत हुवा विषय कषायके अनुरागी धर्मसू शिथिल हुवा अरु कायरपनाने धारता हुवा अरु मनमें चितवन करता हुवा यह जिनधर्मका आचार तौ अति कठिन तातै मैं ऐसे कठिन आचारन आचारवे समर्थ नाही। ऐसा ही भ्रष्ट होने होते सर्व भ्रष्ट हुआ अरु अनुक्रम तै अधिक भ्रष्ट होते आए सो प्रतक्ष अबै देखिये है वहुर ऐसेई काल दोष कर राजा भी भ्रष्ट हुवे अरु जिनधर्मका द्रोही होय गये। ऐसे ऐसे सर्व प्रकार धर्मकी नास्ति होती जान जे धर्मात्मा गृहस्थी रहे थे ते मनमे विचार करते हुए अब काई करनौ केवली श्रुतकेवली ताकौ तौ अभाव हुआ अरु गृहस्थाचार्यपूर्वे ही भ्रष्ट भये थे अब राजा अरु मुन भी भ्रष्ट भये सो अब धर्म किसके आसरै रहै। तासू अपने धर्म राखने सौ अबै श्रीजीकी ढीला ही पूजा करौ अर ढीला शास्त्र बाचौ। अरि कुवेष्यानें जिन मंदिर बाहरै निकास दियौ। जे भगवानका अविनय बहुत करै आपकौ पूजावे अरि देहराकौं घर साढव्य कर लिया। सो या बातका महत पाप जान जे ग्रहस्था धर्मात्मा कुवेष्या हलाहल समान खोटा धर्मका द्रोही जान वाका तजन किया अरु श्री वीतराग देव सो अर्ज करते भये, हे भगवान! तौ थाका वचनाके अनुसार चला तातै तेरापंथी होते सिवाय और कुदेवादिककौ हम नाहीं सेवै है, वाका सेवन नर्कादिकके कारन है अरु तुम स्वर्ग मोक्षके दाता हौ तातें तुम ही देव हौ, तुम ही गुरु हौ, तुम ही धर्म हौ तातै तुम हीनै सेवौं हो औरनै नाहीं सेवौं हौ। तुमें न सेवै है सो वह

हरामखोर है। जो ई तेरापंथी सो तुम्हारे आज्ञाकारी सेवक हैं। अरु तुमनै छोड़ तुम्हारे प्रतपक्षी है, कुदेवादिककौ सेवे हैं सो वह हरामखोर है सो हरामखोरी उपरांत संसारमें पाप नाहीं सो वे हरामखोर नर्कादिकके दु:ख पावें ही पावे। बहुरि मत होय है सो देवके नाम होय है वा गुरुके नाम होय है सो तेरा प्रकारके चरित्रके धारक ऐसे निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरु ना मानें। अरु और परग्रहधारी गुरुकौं नाहीं मानें तातें गुरुकी अपेक्षा भी तेरापंथी संभवै है। अरि तेरा प्रकारके चरित्र पालनै वारे पूर्व गुरु वर्य ताको भी मानै। अरु सप्त विसनकै सेवन हारे तीव्र कखाय ताके अवलोकन किये ही भै उपजै मानू अवार ही प्रान हरैगे ऐसे भयकरि कूरि दृष्टि स्त्रीके रागी मोह मदराके पान कर उन्मत्त भये। इंद्री विषयके अत्यंत लोलपी मोलके चाकर सादृश्य ते गुरु कहिये है। अरु देवोंके मानसीक आहारकी इच्छा भये कंठमासौ अमृत श्रवै ताकरि तृप्ति होय ताकौ कहिये है। सो चार प्रकारके देव देवांगना ताकै पाइये है। बहुरि मज्जा आहार वीर्य नामा धात शरीरकै सहकारी होय ताकौ कहिये है। सो पंखीनके अंडे ताकें पाईये है सो पंखी गर्भ मासू अंडा धरै है वे केते दिन पंखी कवला आहार विना ही वृद्धिनै प्राप्त होय है। सो वा विषै वीर्य धात पाईये है ताके निमित्त करि शरीर पुष्ट होय है। कोईके हस्तादिक लगायै वीर्य गल अडा गल जाय है। बहुरि लेय आहार सर्वांग शरीर विषै व्याप्त होय ताकौ कहिये है सो एकेंन्द्रियादिक चौ थांवराकै पाइये है। जैसे बिरष मृतका जलको

जड़से तो खेंच सर्वांग आचारवे कौ समर्थ है तीसौं अबै सुगम कर या माफिक प्रवरति करिस्यां अरु काल पूर्न करिस्यां। पीछें ऐसा उपाय करता हुवा या जिन प्रतीत शास्त्रका लोप करि जामें अपना मतलब सधै। विपय करवाय पोख्या जाय ती अनुसारने लिये। पैंतालीस शास्त्र पंडिताईका बल कर मनो कल्पत गूथै। अरु ताका नाम द्वादसांग धरया ता विंपे देव गुरू धर्मका स्वरूप अण्यथा लिख्या। देव गुरुके परग्रह ठहराय धर्म सम्यक्‌दर्शन ज्ञान चारित्र विना उपवासमे जल मिष्टानादि लैना काय कलेश वीतराग भाव बिना स्थापन कीन्हैं। सो किया तब तौ लगोटी पिछौडी भोजनका पात्र ये तीन राखे थे द्रव्यादिकके अभाव था पीछे ज्यों ज्यों काल आवता गया त्यों त्यो बुद्धि विशेप रागभावनै अनुसरती गई ताही माफक द्रव्य असवारी आदि परिगृह राखते भये। मन्त्र जन्त्र जोतिप वैद्यक करि मूर्ख गृहस्त लोकानै बस करते भये। आपना विपय कखायनें पोखते हुवे ता विपै भी कखायोंके तीव्र वसीभूत हुवे तपालो बीजमत परतरा आदि चौरासी मत स्थापे। पीछें विशेष काल दोष करि शास्त्रमाहिका मत विष ही मारवाड देश विषै एक चेला लडकर ढूंटार विंपे जाय पीछे टूटया मत चलाया। अरु पैंतालीस शास्त्र माहि बत्तीस ही शास्त्र राखे ता विषै तौ प्रतमाजीका तो स्थापन है। पूजनका विंपे फल लिख्या है आकृतम चैत्यालय वा प्रतमाजी तीन लोक विषै सख्यात है। ताका विशेष महिमा वर्णन लिख्या है। परन्तु हिन्दू मुसल्मान दिगंबर वा श्वेताबर-सूं दोष पालनैके अर्थ प्रतमाजीका वा जिन मंदिरजीका जिन थापन किया। सो काल दोष कर वा मतिकी बृद्धि प्रचुर फैल

गई । सिद्ध धर्मकी प्रवर्त्त बरजोरी भी चाल सकै नाहीं हिंसा ही प्रतिक्ष देषिये ऐसे श्वेतांवरमती उतपत्ति भई । याकौं विशेष जान्या चाहौ तौ भद्रबाहु स्वामी चरित्र विषै देख लेना। वहुर पीछैं अविशेष बुद्धि सुद्ध दिगंवर गुरू रहे थे ते केताईक काल पर्यंत तौ वाकी भी परपाटी सुद्धि चली आई । पीछे काल दोषके बसतैं कोई भ्रष्ट हौने लागे सो बनादिकनै छोड रात्रि समय भयके मारें नगर समीप आय रहे हुवे पाछे वा विषै शुद्ध मुनराज थे ते निंद्या करते हुए हाय हाय या कालकौ दोष मुनकी सिहवृत्त था सो स्यालवृत्त आदरी सिहनै बनके विषै काहेका भय । त्यों मुन्यांनें काहेका भय स्याल रात्रके समय नगरके आसैरे आय विश्राम लें त्यों ही स्यालवृत जे भ्रष्ट मुन नगरका आसरा ले हैं, प्रभात समय तो सामायक करवे कौ बेठसी अरु नगरकी लुगायां गोवर पानीके अर्थ नगरके बाहर आवसी सो याकी वैराग्य संपदाकू लूट लै जासी तब निर्धन होय नीच गति विषै जाय प्राप्त होसी अरु लोक विषै महां निंद्याने पावसी । सो नगरके निकट रहनै कर ही भ्रष्टताने प्राप्त होवै। सो और परग्रह धारक गुरूकी कहा बात । सो वे गुरू भी ऐसा ही भ्रष्ट होते होते सर्व भ्रष्ट हुवे। अरु अनुक्रमते अधिक अधिक भ्रष्ट होते आए सो प्रतक्ष अब देखिये है । बहुर ऐसे ई काल दोष कर राजा भी भ्रष्ट होते आये सर्व भ्रष्ट हुवे । अरु जिन धर्मका द्रोही होय गये सो ऐसे सर्व प्रकार धर्मकी नास्ती होती जान देख धर्मात्मा गृहस्थी रहे थे ते मन विचार करते हुवे अब काई करनौ केवली श्रुतकेवलीका तो अभाव ही हुवा अरु गृहस्थाचार्य पूर्वे ही भ्रष्ट भये थे । अरु राजा अरु मुन भी

सर्व भ्रष्ट भये सो अब धर्म किसके आसरें रहै। तातें अपने धर्म्म राखने सू अबे श्रीजीकी ढीला ही पूजा करौ अरु ढीला ही शास्त्र वांच्यौ अरु कुवेप्यानै जिन मंदिर बाहरै निकार द्यौ। ए भगवानका अविनय बहुत करें। आपको पुजांवे अरु देहराको घर साद्रश्य कर लिया बातका महत पाप जति। ये गृहस्थी धर्मात्मा कुवेप्यानें हलाहल खोटा धर्मका द्रोही जान वाका तजन किया। अरु श्री वीतराग देव सूं अरज करते भये। हे भगवान म्हा तौ थाका वचनाके अनुसार चाल हों तातै तेरापंथी होंते सिवाय और कुदेवादिकक्कौं हम नाहीं सेंवे है। वाका सेवन नर्कादिकका कारण है। अरु तुम स्वर्ग मोक्षके दाता हौ ताते तुम ही देव हौ तुम ही गुरू हौ तुम ही धर्म हौ तातै तुम ही नै सेवौ हौ। और नै नाहीं सेवौ हौ ताते तुम ही ने सेवौ सो तेरापंथी सो म्हा तुमारौ आज्ञाकारी सेवक हौ अरु तुमनै छोड तुम्हारे प्रतपक्षी है कुदेवादिक ताको सेवै है सो वह हरामखोर है इस उपरांत ससारमें नाहीं सो हरामखोर नर्कादिकके दुःख पावैं है पावें बहुर सत होय है सो देवनके देव होय हैं वा गुरूके नाम होय है। सो तेरा प्रकारके चारित्रके धारक ऐसे निरग्रंथ दिगंवर गुरु ताकौ ही मानै। अरु और ही परीग्रहीकौं नाहीं मानै ताते गुरूकी अपेक्षा भी तेरापंथी सभवै है। अरु तेरा प्रकारके चारित्रके पालनै वारे पूर्व गुरू भये ताकौ भी मानै। अरु विश्नुके सेवन वारे तीव्र कखाय ताके अवलोकन किये ही भय उपजै मानूं अवार ही प्रानकूं हरेंगे ऐसे भयंकर क्रूरि दृष्टि स्त्रीके रागी मोह मदराका पानकर उन्मत्त भये इन्द्रीनके अत्यंत

लोलपी मोलके लिये चाकर सादृश्य ताकौ भी मानै। अरु श्रावक देवादिक मानै तातै सर्वपंथी कहिये है। ऐसे याका अर्थ जानना सो तेरापंथी तौ अनादि निधन जिनभाषित शास्त्रके अनुस्वार चले आऐ हैं। अरु जेते कुमत चाले हैं सो रिखभनाथ तीर्थंकी आदितैं लै अब पर्यंत त्यों त्यों तेरापंथीकी पांत बारे निसरते गये। अरु आनमतमें परते गये तेसे दुग्ध घना ही चोखा था परंतु मदराके भाजनमें जाय परे सो वे दुग्ध अलनि कर गया। अब वाका भले मनुष्य कैसे गृहन करै त्यों ही शुद्ध जैनी होय कुगुरू कुदेव कुधर्म्म सोई भये अलीन भाजन ताकौं अंगीकार करे। ताकौ सत्पुरुष जैनी कैसे मानें जैनी तौ सोही है। जो जिनदेव सिवाय और किसहीनै न मानें। ताकी लालन पालन नाही करै। जैसे शीलवंती स्त्री होय अपने कामदेवसे भरतारकों छोड़ि अति नीच कुलके उपजे भ्रष्ट पुरुष ताकौ लालन पालन नाहीं करै। अरु वाका लालपाल करै तौ शीलवंती काहेकी। हमारी मां अरु बांझ ऐसे कहता संभवै नाहीं। ऐसा वचन कोई कहै है तौ वाकौं बावला मतवाला जानिये स्याना नाहीं त्योंही जैनी होय। जिन-देवको भी सेवै है अरि कुदेवादिकको भी सेवै वाको भी भलौ जाने है। वे पुरुष स्त्री मदरा पीय बावरे कैसी चेष्टा करै है। तातें बावरेका वचन प्रमानीक नाही। तातें देव अरिहंत गुरू निर्ग्रंथ धर्म जिन प्रनीत दयामई मानना उचित है। यही मोक्षमारग है अन्य मोक्षमारग नाहीं। केई अज्ञानी और प्रकार भी मोक्षमारग मानै है सो वे कांई करै है सर्पका मुख थकी अमृत चाहै है। वा जल विलोय घृत काढया चाहै है। बालू

रेतको पेर तेलकी अभिलाखा करै हैं । वा अग्निके विषे कमलका बीज बोय वाकी शीतल छायामें बैठ आराम किया चाहै है । इत्यादि विरोध कार्य किये फलकी निष्पत्ति, होय नाही भ्रम बुद्धि कर मानिये तो म्हां कष्ट ही उपजै । ऐसा प्रयोजन जानना । आगे श्वेतांबर दिगंबर धर्मसो विरोध चौरासी अछेरा माने है । तिनका नाम व स्वरूप वर्णन करिये हैं । केवलीकै केवअहार मानै ऐसा विचार करै नाहीं । संसार विषे क्षुधा उपरांत और तीव्र रोग नाहीं अरु तीव्र दु.ख नाहीं अरु जाकै तीव्र दुख पाइये तो परमेश्वर काहेका संसारी सादृश्य ही हुवे तो अनत सुखपना कैसे संभवे । अरु छयालीस दोप बत्तीस अंतराय रहित निर्दोष आहार कैसे मिलै । केवली तौ सर्वज्ञ है सो केवलीनै तौ दोषीक निरदोषीक वस्तु सर्व दीसै । अरु त्रिलोक हिम्यादि सर्व दोष मई भर रहै है । तौ ऐसे दोषकौ जानता सुनता केवली होय दोषीक आहार कैसे करै मनु महाराज भी सदोप अहार न करे तो सर्व मुन्यां कर सेवनीक त्रलोकनाथ इच्छा विना सदोप अहार कैसे लहे । अरु एक अहार पीछे क्षुधा १ त्रषा १ रोग १ दोप १ जन्म जरा १ मरण १ शोक ' भय-१ विस्मय १ निद्रा १ खेद १ स्वेद १ मद १ मोह १ अरति १ चिता १ ए अठारा दोष उपजै तौ ऐसे अठारा दोषके धारक परमेश्वर अन्यमती सादृश्य परमेश्वर होय गये । अरु यहा कोई प्रश्न करै तेरहां गुणास्थान पर्यंत आहार अनाहार दोनो कहा है । सो कैसे ताका उत्तर यह जो आहार छै प्रकारका है । कवल १ मानसीक २ ओज ३ लेय ४ कर्म ५ नोकर्म ६ । ताकौ अर्थ लिखये हैं सो कवल नाम मुखमें ग्रास

लेनेंका है। सो बेंद्री तेंद्री चौइन्द्री असैनी पचेन्द्री येतौ तिर्यच अरु मनुप्य नारकीनकै पाइये अरु मानसीक आहारकी इच्या भये कंठमांसूं अमृत श्रवै ताकर तृप्ति होय ताकों कहिये। अरु उज्झा आहार पंखीनके अंडेन कर पाईये है। सी पक्षी गर्भमासूं बाहर अंडा धरै है वे केते दिन अहार बिना ही बृद्धिनै प्राप्त होय सो वा विषै वीरज्य धान पाइये है। ताके निमित्त कर शरीर पुष्ट होय है। कोईके हस्तादिक लगाय वीर्य्य गलि जाय है। बहुरि लेय आहार सर्वाग शरीर विषे व्याप्त होय। ताकों कहिये है सो एकेंद्री पांचौ थावरके पाइये है। जैसे वृक्ष मृतका जलकौजड़सेती खेंच सर्वाग अपनै शरीररूप परनवावे है। सो यह चार प्रकारके आहार तौ छुध्याके निवृत्त करनेका कारण है। बहुर नौकर्म्म अहार छै सो पर्याप्ति पूर्ण करनैका कारण है। सो समय समय सर्व जीव नौकर्म्म जातकी वर्गनाका ग्रहन करै। प्रजाप्त रूप परनवावै है सो कारमान कायका तीन समे अंतरालके छोड़ वा केवलीका समुद्घात विषै प्रतरके काल जुगलका दो समय पूरण कर। एक समय बिना, आयुका अंत समय प्रजंत त्रिलोकके सर्व जीव सिद्ध अर अयोग्य चौदहां गुणस्थानवर्त्ती केवली या गुन लहै। ताकी अपेक्षा तेरा गुणस्थान पर्यंत आहार कहा है। सो तो हम भी मानै है परंतु कवला आहार छटौं गुणस्थान पर्यंत ही है। ताते आहार संज्ञा छटां गुणस्थान पर्यंत कही है। मानसीक आहार चौथा गुणस्थान पर्यंत ही है। ओझा लेय प्रथम गुणस्थान विषै है है बहुर कर्म आहार आगै कारमानके ग्रहण करनेका है। सो यह संसारी जीव सिद्ध अयोग केवली बिना

प्रथम गुणस्थानतें लगाय तेरमां गुणस्थानके अंत समय पर्यंत आयु सहित आठवा आयु विना सातवा मोह बिनाक्षे । या साता वेदनी एक करमका ग्रहण करै है । ऐसे षट प्रकारके आहारका स्वरूप जानना । तातें केवलीके कवलाहार संभवै नाही अर जे पूर्वापर विकल्प कर रहित हैं ते मानै हैं । स्वेताबर मत विषै भी आहार संज्ञा छटां गुणस्थान पर्यंत ही कही है । मोहका माता अहंकारका पक्षनै लिये वाका विचार ही करै नाहीं । यह आहार कैसा है ऐसा विचार उपजै नाही सो यह न्याय ही है । अपनै औगुण ढाकनै होय तब आपसूं गुनकर अधिक होय ताकौ औगुण पहली स्थानपै । तैसे सर्व अन्यमत्यां आपने विषयभोग सेवने आया । तब परमेश्वरके भी विषयभोग लगाय दिया । त्योंही श्वेतांबर अपने एक दिन विषै बहुत वेर तिर्यंचकी नाईं आहार करता आया तातें केवलीके भी आहार स्थाप्या सो धिक्कार होहु । राग भावाकै ताईं अपने मतलबके वास्ते ऐसे निरदोष परम केवली भगवान ताकौ दोष लगावै है । ताके पापकी बात हम नाहीं जानें कैसे पाप उपजे सो ज्ञानगम्य ही है[१]। बहुर केवलीकौ रोग[३]। केवलीकै निहार । केवलीको केवली नमस्कार करै[४] । केवलीकौ उपसर्ग[५]। प्रतमाकै भूषण ६ । अरु तीर्थंकर स्तुति पढै ७ । तीर्थंकर पहली देसना अहली जाय ८ । महावीर तीर्थंकर देवानंदी ब्रह्मानीकै घर अवतार लियो पाछै इन्द्र वा[३]। गर्भमेंसूं काढ त्रसलादे रानीके गर्भ विषै जाय मेला पीछैं वाके गर्भथकी जन्म लियो ९ । आदनाथ भाई सुनन्दा बहन जुगलिया १० । सुनन्दा बहनको आदनाथ परनी ११ । केवलीकों छीक आवै १२ । सुदकर ब्राह्मण

मिथ्यादृष्टिकौ गोतमें लीसां भाग गया १३। स्त्रीकौ महाव्रत पलै १४। स्त्रीकौ मुक्त १५। तीर्थकरनें दीक्ष्या समय इन्द्र स्वेत वस्त्र आनंदे सो मुन अवस्थामें पहरे रहे १६। प्रतमाजीकै लंगोट कंदोरा कोधिहू १७। श्रीमल्लिनाथजीकौ तीर्थंकर स्त्री पर्याय मानै १८। जुल्याके छोड़ी कायकर देव भरतक्षेत्रमें ल्याये। चौथा कालके आद तासों फिर जुगल्यौ धर्म चलसी १९। जुगलिया सो हरिवंश चल्यौ ॥२०॥ जतीके चौदा उपकरन २१। मुनशुवृत्ति तीर्थंकरकै घोडौ गनधर हुवौ २२। मुन श्रावकका घरसौं आहार ल्यावै। अरु घरका किवाड़े जोड खावै ॥२३॥ अरु दूनौ अहार करै ताका अर्थ यह जो कोई साधु अहार विहार ल्याय हौ आहार किये पाछै अवशेष बाकी रहौ ते अहारकौं वेला आद घनौपवासके धारी और कोई साधु होय ताका पेटमें खवाय दीजिये तौ दोष नाहीं। साधुकौ उदर छै सो रोटी समान छै। भावार्थ—वेला आदि घनौपवासा विषै और साधुको बच्यौ भोजन लेनौ उचित है यासैं उपवासका भंग नाहीं औ निरदोष आहार छै ॥२४॥ नौ पानी आहार करै ताका अर्थ। यह जो जलकी विधि नाही मिलै तौ नित पी अर त्रषा बुझावै। साधाको कैसो स्वाद अरु नौजातका बीधैका भेद सो। घृत १ दुग्ध १ दही १ तेल १ मीठा १ मदमांस १ सहत १ एकेबारै। अथवा कोई श्रावकानै पानी आहार पचाया होय सो भी साधुको लेना उचित है ॥२५॥ निंद्यक मारयांका पाप नाहीं ॥२६॥ जुगला भी मर नर्क भी जाय ॥२७॥ भरतजी ब्राह्मनी भागनी भागनीकौ परनैके अर्थ अपनै घरमें नाखी ॥२८॥ भरतजी गृहस्त

अवस्था विषै महला आभूषण पहरया, भावना भावता केवलज्ञान उपज्यौ ॥२९॥ महावीर जन्म कल्याणिक विषै बाल अवस्था विषै ही पगके अंगुष्टा सौं सुमेरु कंपायमान कियो ॥३०॥ पांच पंडवा- की द्रौपदी स्त्री पंच भरतारी शीलवंती महासती हुई ॥३१॥ कूवडया चेलाके काधे गुरु चढ़ा। और गुरू यों याका दड किया की चेलाके माथामें देते जाय। तब चेले छमाय तव छिमाके प्रभाव करि चेलाको केवलज्ञान उपज्यां तब चेला सूधागमन करनै लगा। तबै गुरा फुरमाय कोई चेलां सूधा गमन करनै लागा। सो तौनें केवलज्ञान उपज्या तब चेले कही गुराके प्रशाद ॥३२॥ अरु जै माली जातकौ माली सो महावीर तीर्थंकरकी वेटी परन्यौ ॥३३॥ कपल नारायणनें केवलज्ञान उपज्यौ तब कपिलनारायण नाच्यौ धातकी खंडको यह आयौ छै ॥३४॥ वसुदेवके वहत्तर हजार स्त्री हुई॥३५॥ मुनीश्वर स्पर्श सूद्रके घर आहार लेय अर कोई मांसा- दिक वैराया होय तौ साधु ऐसा बिचार करै सो साधकी वृत्ति तौ ये है। बहरावै सोई लैना अरु दिभाया पीछे परथी उपरै खैपियै तो वह जीवकी हिसा होय। तातै भक्षण ही करना उचित है पीछे गुरु खैपाका दंड प्रायश्चित ले लेंगे॥३६॥, देवता मनुष्यनिसो भोग करै सो सुलसा श्रावकनीकें देदसौ वेटौ हुवौ ॥३७॥चक्रवर्त्तीकै छह हजार स्त्री हुई ॥३८॥ त्रिपिष्टनारायण छीपाकी कुल विषै उपज्यौ ॥३९॥ बाहुबलकौ सवापांचसै धनुष शरीर उतग नहीं मानै घटि मानै ॥४०॥ अनार्य देश विषै वर्द्धमान विहार करम कियौ ॥ ४१ ॥ चौथे अरु असंजमीकौ जति पूजे ॥४२॥ देवकों एक कोस मनुष्यको चार कोसा वराबर

छ ॥४३॥ प्रानजातै प्रानकी रक्षाके अर्थ वृतिभंग कीजे तौ दोष नाहीं उपास माहै ओषध खाजै तौ दोष नाहीं ॥४५॥ समोसरनमांही तीर्थंकर केवली नगन नाही दीसै कपडा पहिरे दीसे ॥४६॥ जती हाथमै डांडो राखे ॥४७॥ मरुदेवी मातानें हस्ती ऊपर चढ्या केवलज्ञान उपज्यो ॥४८॥ भावार्थ-द्रव्यी चारित्र विना केवलज्ञान उपजै ॥४९॥ चांडालादि नीचकुली दिक्ष्या धैर मोक्ष जाय ॥५०॥ चन्द्रसूर्य मूल बिमान सहित महावीरस्वामीकौ वंदवा आये ॥५१॥ पहला स्वर्गका इन्द्र दूजा स्वर्गको जाय स्वामी होय ॥५२॥ अरु दूजा स्वर्गका इन्द्र पहला स्वर्ग मी ॥५३॥ जुगल्याकौ शरीर मुवा पीछें पढ़ाना रहै ॥ ५४ ॥ जिनेश्वरका मूल शरीरकौ दाग देय ॥५५॥ श्रावग जतीकौ स्त्री आन थिरता करावै तौ असतकौ दोष नाहीं उपजै। जती श्रावगका विकारकी बाधा मिटी ॥ ५७ ॥ अठारा दोष सहित तीर्थंकरको मानै ॥५८॥ तीर्थंकरके शरीरसूं पांच थावरकी हिंस्या होय ॥५९॥ तीर्थंकरकी माता चौदा ही स्वप्ना देखै ॥६०॥ स्वर्ग बारा ॥६१॥ गंगादेवीसूं भोगभूमिया पंचांउन हजार प्रजंत भोग भोग्या ॥६२॥ अरु बहत्तर जुगल प्रलयकाल समै देव उठा लै जाय ॥६३॥ चमठाका पानी निरदोष ॥६४॥ घृत पकवान व खरी रसोई वासी निरदोष है ॥६५॥ महावीर भगवानका माता पिता भगवान दीक्षा लिया पहली पर्याय पूरी कर देवगति गये ॥६६॥ बाहुवल मुगलकौ रूप ॥६७॥ सारा जो फल खाया दोष नाहीं ॥६८॥ जुगल्या परस्परै लरै कखाय करै ॥६९॥ त्रेसठ श-लाका पुरुषांकौ निहार मानै॥७०॥चन्द्र चौसठ जातके मानें ॥७१॥

जांदवा मास भक्षौ ॥७२॥ मानपोत्तर आगे मनुष्य जाय ॥७३॥ कामदेव चौवीस नाहीं मानें ॥७४॥ देवता तीर्थंकरका मृतक शरीरका मुख माहेकी डाढ उपाड स्वर्ग ले जाय पूजै ॥७५॥ नाभि राजा मरुदेवी जुगलिया ॥७६॥ नव ग्रैवेयकका वासी जीव देव अनुदसनौ पर्यंत जाय ॥७७॥ चेलयां आहार ल्यायौ सर्वग्य सेवाका पाता पातरामें थूको। चेलै गुर जूंठ उत्तम जान खाय गयो। तातें केवलज्ञान उपज्यौ ॥७८॥ अरु शास्त्रकौ वांचन वेठनेकौ चौका पटा ताके नीचे धरि देय, या शास्त्रकौं सिरानें दे सोवे अरु या कहै गे तो जड है। याका कहा विनय करिये अरु प्रतमाजीको कहै यह भी जड है याका कहा विनय करिये। अरु प्रतमाजीको भी कहै यह भी जड है याकौ पूजे वा नमस्कार करें कहा फल होय ॥८०॥ अरु कुदेवादिकके पूजवामे अटकाव नाहीं वह तौ गृहस्तपनाकौ धर्म है ॥ ८१ ॥ अरु औरानै तौ कहे धर्मके अर्थ अस मात्र भी हिंसा कीजे नाहीं। अरु मान बड़ाईके अर्थ सैकरा स्त्री पुरुष चैत्र मास आदि तीनौं ऋतु विषै गारा खूंदता खूंदता असंख्यात वा अनंत त्रस थावर जीवकी हिंस्या कराय अपने निकट बुलावै व आपकौ नमस्कार करावे व चालता हुवा भी जाय। आवता पाच सात कोस ताईं जाय। इत्यादि धर्म अर्थ नाना प्रकारकी हिंसा करे ताका दोष गनें नाहीं। अरु मूंढै पाटी राखे कहै पवनकायकी हिंसा होय है। सो मुखका छिद्र तो सासता मुदित रहै है अरु बोलै भी मूर्खकी आडी सांसोंसास निकसता नाही। सांसतौ नाककी आड निकसे है। ताके तौ पाटी दे नाही। अरु मूढ़ाकी लालसौं असंख्यात त्रस जीव उपजै ताका दोष

गनै ही नाही। जैसे एक स्त्री अपने लघु पुत्रको अपनै शरीरके आड़ा पट दै पुत्रकूं अंचल चुखावै मुख मूं या कहै ये लड़का पुरुष है ताते याका सपर्श किये कुशीलका दोष लागे है। अरु मैं परम शीलवंती हों ताते पुरुष नाम मात्रको भी सपर्श करना मोनें उचित नाहीं। पीछे अपने पतिको निद्रा विषै सुत मेल्हा वा खांवदकी आंख चुराय दाव घाव कर आधी रात्रके समय वा दिन विषै मध्यान समय आदि चाहै जब अपनै घौड़ेका चिरवादार नीच कुलीकूं बडा महांकुरूप निर्दई तीव्र कखाय ऐसे निंद्य पुरुषसूं जाय भोग करै। अरु वह स्त्री कदे जार नखे मोडी वेगी जाय तब वेजार ऊनै लाठी मूठी आदसूं मारै तौ भी जारसूं बिनयवान होय प्रीति ही करै। कामदेवसे निज भरतारकुं इछै नाही। तैसे ही स्वेताम्बरकौ प्रकार मुख सूं बोलनै कर त्रसकाय थावर जीवकी बाधा होती नाहीं। जो बाधा होती तौ परम दयाल षट कायके पीहर त्रस कायके रक्षक परम दिगम्बर जोगीश्वर बनोवासी संसार भोगसूं उदासीन निज देहके त्यागी परम वीतरागी शुद्धोपयोगी तरन तारन शांति मूरत इन्द्रादि देवा कर पूज्य मोक्षगामी ताका दर्शन किये ही ज्ञान प्राप्त होय। आप परका ज्ञानपना होय। ऐसे निर्विकार निर्ग्रंथ गुरू भी खुले मुख उपदेश काहेको देसी। ताके मुखके कोई प्रकार हस्तादिक कर आछादन देखवे नाहीं। सो जी वातमें कोई प्रकार हिंसा नाही। ताकौ तौ ऐसा जतन करै और भील डौव्यादिनकी वा सूद्रके घरकी अनछान्यां पानी खालके सपर्से जल मदरा मांसके संयोग सहित ऐसे गारके भाजन ता विषै रात्रसमय

पचाई रसोई दीन पुरुषकी नाई जा सूद्रके घरकी ले आवै वा जैन-धर्मकी द्रोही सो जैनधर्मकी आज्ञा कर रहित विना आदरसूं अहा-र दे सो ऐसे भोजनके रागी ताका भक्षन करतै अंस मात्र भी दरेग मानै नाही। कैसे है भोजन त्रस जीवाकी रास है। बहुर ऐसे ई त्रस जीवकी रासमई कदोईकी वस्तु अथाना संधाना नौनी काजी आदि महां अभक्षका आचर्ण करै है। ताकी संसार मै दोष गनै नाहीं अरु वाकूं प्रासुक कहै है। ए प्रासुक कैसा जैसा सोक हो तातें गृहस्थांका साग त्याग काहेको करते। सो रागी पुरुषोंकी विटंबना कहां ताईं कहिये।॥८३॥ बहुरि चित्रामकी पूतली नखै रह-नेका तो दोष गनै। अरु सैकडा स्त्री ताकौ सिखावै वदावै उपदेश देवाके ससर्ग रहे वाका लाल पाल करे। अरु वा नरी देखवेके मिस ही वाका स्पर्श करे। वा ओषध जोतिक वैदक कर मनोरथ सिद्ध करे। बहु द्रव्यक संग्रह करे। ताकरि मनमान्या विषय पोषे। आवाका सेवन करे वाके गर्भ रहा होय तो वाकों औषध दे गर्भका निपात करे। अर कहे मै जती हो, मैं साधु हों म्हांने पूजो। सो ऐसे साधु भाषा समर्थक कैसे होय। पत्थरकी नाव समुद्रविषै आप ही डूबे तो ओराने कैसे तारे। बहुर स्त्रीका भलामत वाके वास्ते वाका कपडा सहित ही ग्रहस्तपनामे ही मोक्ष वतावे। अर या भी कहे वज्रवृषभ नाराच सहनन विना मोक्ष नाहीं। अर करम भूमकी स्त्रीके अंतका तीन सहनन है तो स्त्री मोक्ष कैसे जाई। ताके शा-स्त्रमें पूर्वापरि दोषते ऐसे शास्त्र परमानीक कैसे अरु परमानीक विना सर्वज्ञका वचन कैसे। तातै नेमकर अनुमान प्रमान करि ग्रहा जान्या गया शास्त्र कल्पित हैं। कषाई पुरुषां अपना मत-

लब पोषवेके अर्थ रच्या है । बहुर केई कहे हैं स्त्रीकों मोक्ष नाही तो नवां गुनस्थान पर्यंत तीनों वेदका उदै कैसे कहा । ताका उत्तर यह जो ये कथन भाव अपेक्षा है । सो भाव तो मोहकर्मका उदयसूं होय है । अरु द्रव्यां पुरुष स्त्री नपुंसकका चिन्ह नाम कर्मके उदयसे होय है । सो भाव तीनों वेदावारेने तो मोक्ष हम भी माने हैं । द्रव्यां स्त्री नपुंसककों मोक्ष नाही । वाकी समर्थता पंचमा गुनस्थान पर्यत चढनेका है । आगे नाहीं यह नेम है । आगे एक द्रव्यां पुरुषको ही मोक्ष है । सो एकेन्द्री आदि असेनी पर्यत अरु वा संमूर्छन पंचेन्द्री वा नारकी जुगल्यां य के तो जैसो द्रव्यां चिन्ह है तैसा ही भावावेद पाइये है । अरु सैनी गर्भज पंचेन्द्री मनुष्य वा तिर्यंचके द्रव्यां माफिक भाववेद होय । वा अन वेदका भी उदय होय । यह गोमट्टसारजी विषैं कहा है । जैसे उदाहरण कहिये, द्रव्यां तो पुरुष है । अरु वाके पुरुषसूं भोग करनेकी अभिलाषा वर्तै ताका तो भावां स्त्री वेदी द्रव्यां पुरुषवेदी कहिये । अरु एकै काल पुरुष स्त्री भोग करनेकी अभिलासा होय ताका भाव नपुंसक वेद कहिये । अरु द्रव्यां स्त्री पुरुष भोगनेकी अभिलासा वर्तै ताको भाव पुरुष वेदी अरु द्रव्या वेदी कहिये । ऐसे द्रव्या पुरुष भाव तीन वेदवारे जीवकों मोक्ष होइ है । ऐसे ही तीन वेदका उदय द्रव्या स्त्री व नपुंसकके जानना । ताको पंचमा गुनस्थान तक आगे होय नाहीं । ताको ये मोक्ष माने है । ताका विरुद्धपन है । बहुरि दिगम्बर धर्म विषे वा श्वेताम्बर धर्म विषे ऐसा कहा है । अब सम्यक्तमे उत्कृष्ट एकसो आठ जीव मोक्ष जाय । अड़तालीस पुरुष वेदी बत्रीस स्त्री वेदी अठाईस नपुंसक

वेदी मोक्ष जाय। सो यह ऐसे भाव वेदके धारीकी अपेक्षा तो विधि मिले हैं। अरु द्रव्याकी अपेक्षा विधि मिलती नांही। पुरुष स्त्री तो आध आध देखनेमे आवे है। द्रव्या नपुसक लखा पुरुष स्त्रीमें एक भी देखवेमे आवे नही। तातैं भी तुम्हारे शास्त्रकी बात झूठी भई। वहुरि वाहुवल मुनिके वे ई ऐसे कहें हैं। वरस दिन ताई केवलज्ञान डोल्यो डोल्यो फिरवो करो परन्तु वाहुवलजीके परिणाम विषें ऐसा कषाय रहवो करया सो यह भूम भरतकी है। ता ऊपरे हम तिष्टे हैं। तो यह उचित नहीं। ऐसे मान कषाय कर केवल ज्ञान उपजा नाहीं। इत्यादि वावला पुरुषकी नाई असंभव कहिये हैं। तो वे अन्न मतसे कहा घटि है। जिनधर्मकी वात ऐसी विपर्जै हैं नाहीं ऐसी बात तो लडका भी कहानी मात्र कहै नाहीं। जा पुरुष कदै सिंह देष्या नाही ताके भावे विलाव भी सिंह है त्यों ही जा पुरुष वीतरागी पुरुषाका मुख थकी साचा जिनधर्म कदे सुन्या नाही ताके भावे मिथ्याधर्म ही सत्य है। तातें आचार्य कहे हैं अहो लोको, धर्मने परीक्षा कर ग्रहण करो। ससार विषें षोटे धर्म वहुत हैं षोटा धर्मके कहनहारे लोभी आचार्य बहुत है साचा धर्मके कहनहारे वीतरागी पुरुष विरले हैं। सो यह न्याय है अच्छी वस्तु जगत विषे दुर्लभ है। सो सर्वोत्कृष्ट शुद्ध जिन धर्म है सो दुर्लभ होय ही होय। तातै परीक्षा किये विना षोटा धर्मका धारन होय ताके सरधान कर अनन्त सागर विषे भ्रमन करना परे। यह जीव संसार विषे रुले है ताके रुलनेका कारन एक ही है और कोई कारन माने है सो भ्रम है। तातै धर्म अधर्मके निरधार करनेकी अवश्य वुद्धि चाहिये। घनी कहा कहिये। ऐसे श्वेताम्बर

मतकी उत्पत्ति कही। अरु ताका कामरूप कहा। आगे स्त्रीके सिखाये विना सहज सुभाव होय है। ताका स्वरूप विशेष कर कहिये है। मोहकी मूरत है। काम विकार कर आभूषत है। सोक मंदिर है। धीरजता कर रहित है। कायरता कर सहित है। साहस कर निवर्ती है। भयकर भीत है। माया कर हिरदा मैला है। मिथ्यात अरु अज्ञानका घर है। अदया, झूठा, असुच अंग, चपल अंग वा चपल नेत्र। अरु अविवेक, कलह, निश्वास, रुदन क्रोध, माया, कृपनता, हास, गिलानता, ममत्व, अदेसकपनो, अटीमर बुद्धि, बिसर्म, पीवकास्थानक है निगोद. वा कृम, वा लट, ए सन्मूर्छन निमेष आदि त्रस थावर जीवनकी उत्पत्तिकी कोथली वा जोनीके स्थानक है कोईकी अच्छी वा बुरी बात सुना पीछे हृदै विषे राप-चाने असमर्थ है। साली मोली बात करवाने परवीन है विकथाके सुनवाने अति आसक्त है। भाड विश्था बोलनेको अति अषता है। घरके षट कारज करवे विषें चतुर है। पूर्व परि विचार कर रहित है। पराधीन है। गाली गीत गावनेकी बडी बकता है। कुदेवादिकके रात जगावनेको सीत कालादि विषे परीसह सह-वाने अति सूरवीर है। गरव कर सारो घर सारो ग्रहवाराके भारने धरवा है। वा भारवाने समर्थ है। पुत्र पौत्रादि ममत्व करनेको बांदरी सादृस्य है। धर्म रतनके खोसवाने बड़ी लुटेर है। वा धर्म रतनके चोरवाने परवीन चोरटी है। नरकादि नीच गतिको लेजानेको सहकारी डलाव छै मोक्ष स्वर्गकी आगल है। हाव भाव कटाक्ष कर पुरुषके मन अरु नेत्र बाधनेको पास है। ब्रह्मा विस्नु महेश इन्द्र धरनेन्द्र चक्रवर्त सिह हस्ती आदि बड़े बड़े तिनको क्रोड़ा

मात्र वस करनेको मोह विधूलके धरया सादृस्य है। बहुरि मनमें क्यों ही वचनमे क्यों ही कोईको बुलावे कोईको सेन दे कोईसू प्रीत जोरे कोईसूं प्रीत तोरे छिनमें मिष्ट बोले छिनमे गारी देइ छिनमें लुभाय कर निकट आवे छिनमे उदास होय कर जाती रहे इत्यादि मायाचार सुभाव कामके तीव्रताके वस कर स्वयं सिद्ध पाये है स्त्रीके कारी साकी अग्नि जाननी सादृस्य कामदाहकी ज्वाला जाननी, पुरुषके त्रणकी अग्नि, नपुसकके पिजावाकी अग्नि सादृस्य काम अग्न जाननी बहुरि दान देवेको कपला दासी समान कृपन है। सप्त स्थानका मोन्य कर रहित है। चिडीवत चकचकाट किये विना दुखित है। अदरायनके सादृस्य फल रूपको धरया है। बाह्य मनोहर भीतर विष समान कडवा । देखनेको मनोहर खाये प्रान जाइ। त्योही स्त्री दीसती बाह्य मनोहर अंतर प्रान हरे है, द्रष्टि विषे सर्पनी सादृस्य है। सवङ सुर पाये विचक्षन सूरवीर पुरुषनको विभले करनेको कामज्वर उपजावनेका कारन है। रजुस्वलामे वा प्रसूत होने समय चाडालनी सादृस्य है। ऐसे ओगुन होते सते भी मानके पहार ऊपरे चढी औरनकू सादृस्य मने है। सो आचार्य कहे हैं धिक्कार होहु मोहके ताईं। सो वस्तुका स्वरूप यथारथ भासे नाही। ताही ते अनन्त ससार विषे भ्रमे है मोहके उदैते ही जिनेन्द्र देवने छोड कुदेवादिक पूजे है। सो मोई जीव काई काई अकल्यानकी बातें नाही करे। अरु अपने संसार विषे नाहीं उपमा पावे। आगे स्त्रीनके वेसर्मका स्वरूप कहिये है। मागकी सर्म होय है। सो तो स्वयमेव ही मांही। मूंछकी सर्म होय है सो मूछ नाहीं। आप्याकी

सर्म होय है सो काली कर नाषी । नाककी सरम होय है सो नाकने वेध काढ्या अरु छातीकी गडास होय है सो आडी काचळी पहिर लीनी अरु भुजाका पराक्रम होय है सो हाथ विषे चूडी पहरलीनी अरु लापी नान्ह जानेका भय होय है सो मेंधी कर लाल कर दीन्ही । काछकी सरम होय है सो काछ खोल नाखी अरु मनका गठास होय है सो मन मोहकर कामकर वेवल होय गया अरु मुषकी सर्म होय है सो मुख वस्त्रकर आक्षादन कीनी मानू ये मुष नाही आछादे है ऐसा भाव जनावे है । सो कामी पुरुष मने मुषने देखकर नरक मत जावो अरु जंघाकी सर्म होय है सो घंघरा पहर लिया । इत्यादि वेसर्मके कारण घने ही है । सो कहा लग कहिये । तातै स्त्री नपुंमक निर्लज्ज स्वभाव धरया है बाह्य तो ऐमी सर्म दिखावे सो अपने अंग सर्व कपड़ाकर आछादितके अरु पुत्र भ्राता माता पिता देवर जेठ सासु श्वसरा राजा प्रजा नगरका लोगां आदि लोग देखते गावे ता विखें मन मान्या विषे पोषे अंतरंगकी वासना कारन पाय बाहर झलके विना रहै नाही । बहुरि कैसी है स्त्री कामकर पीडित है मन इन्द्री जांकी अरु नपसूले रसना पर्यंत सप्त कुधातमई मूरत बनी है भीतर तो हाड़का समूह है ताके ऊपर मांस अरु रुधिर भरया है ऊपर नसा जारकर वेढी है । ता ऊपर केसनके झुंड है मुख विषे लटा सादृस्य हाडके दांत हैं । वहुरि भीतर वाय पित कफ मल मूत्र वीरजकर पूरित है डरा अग्र वा अनेक रोगकर ग्रसित है जरा अरु कालकर भयभीत है अनेक तराके पराधीनताको धरया है । ऐसी जायगा सन्मूर्छन उपजे है काख विषे, कुच नीचे, नाभि

तलें, जोन स्थान विपे, वा मल मूत्र विषें असख्याते मनुष्य उपजे हैं वहुरि दुग्ध द्वारा विपें वा सव शरीर विखे त्रस वा निगोद सदैव उपजो करें है। वा वाह्य तनके मेल विषे लीख जुवा अनेक उपजे हैं सो नितका उत देखिये है ही अरु केई निर्दई या मूरत वाको मारे भी है दया कर रहत है हृदय जाका सो देखो सराग प्रनामाका महातम ऐसी निधि स्त्रीको वड़े वड़े महंत पुरुप उत्कृष्ट निध जान सेवे हैं आपने कृतार्थ माने हैं वाका आलिगन कर जन्म सफल माने है सो आचार्य कहें हैं धिकार होहु मोहकर्मके ताईं अरु धिकार होहु ऐसी स्त्रीको मोक्ष माने ताको अरु सदा भयवान अत्यत कायर स्थिल संका सहित स्वभाव जाका ऐसी स्त्रीको मोक्ष कैसे होय सोलवा स्वर्ग छटा नर्क आगे जाय नाहीं अत मा तीन ही संघनन उपरांत सघनन होय नाही अन्तका तीन होय है अरु भोगभूमया जुगलियाके पुरुप वा स्त्री तिर्यंच वा मनपांके एक आदिका ही संघनन है तातै पुरुषार्थ कर रहित है तो ही तातै वाके शुक्ल ध्यानकी सिद्ध नाहीं अरु शुक्लध्यान विना मोक्ष नाही सो यह निद्यपना कही सो स्वाधीन रहित वा शील रहित स्त्री है ताका कहा है अरु सरधावान शील-वान स्त्री है सो निद्या कर रहित है वाके गुन इन्द्रादिक देव गावे है अरु मुनि महाराज वा केवली भगवान भी शास्त्र विषै वड़ाई करी है अरु, स्वर्ग मोक्षकी पात्र है तो औराकी कहा वात ऐसी निद्य स्त्री भी तिनका सो जिन धर्मका अनुग्रह कर ऐसी महमा पावे है। तो पुरुष धर्म साधे ताकी कहा पूछनी। वहु गुन आगे लघु ओगुनका जोर चले नाहीं। ये सर्वत्र न्याय है।

ऐसे स्त्रीका स्वरूप वर्णन किया। आगे दस प्रकार विद्या सीखनेका कारन कहिये है। ता विषै पच बाहिजके कारन हैं। सिखावने-वाले आचार्य। पुस्तक। पढ़नेका स्थानक। भोजनकी थिरता। ऊपरली चाकरी करनेवाले टहलुआ। आभितरके पांच निरोग शरीर। बुद्धि कषायोपषम। विनयवान। वात सल्यत्व अंग। उद्विम एवं दश। आगे शास्त्रवक्ताका उत्कृष्ट गुन कहिये है। कुलकर ऊंच होय। पुन्यवान होय। पंडित होय। अनेक मतके शास्त्रनको पारगामी होय। श्रोताका प्रश्न पेले ही अभिप्राय जानवाने समर्थ होय। सभाचतुर होय। प्रश्न सहावने समर्थ होय। अपने जिन मतके शास्त्र घनाके वक्ता होय। उकत जुगत मिलावनेको प्रवीन होय। लोभ कर रहित होय। क्रोध मान माया कर वर्जित होय। उदास चित होय। सम्यक्तदृष्टि होय। संयमी होय। शास्त्रोक्त क्रियावान होय। निसंक होय। धर्मानुरागी होय। अनमतके खडवाने समर्थ होय। ज्ञान वैराग्यका लोभी होय। परदोष ढांकवावाला होय। अरु धर्मात्माका गुनका प्रकाशक होय। अध्यात्मरसके भोगी होय। वाशिलत्व अग सहित होय। दयालु होय। परो-पकारी होय। दातार होय। शास्त्र वाच शुभका फलने नाहीं चावे। लोका बड़ाई नाहीं चाहे। एक मोक्ष ही चाहे। मोक्षके अर्थ होय। सुपने उपदेस देवेकी बुद्धि होय। जिनधर्मकी प्रभा-वना करवे विषै आसक्त चित्त होय। संयम घनो होय। हृदय कोमल होय। दया जल कर भीगा होय। वचन मिष्ट होय। हित मितने लिया वचन होय। सवद लजित होय। उतंग स्वर होय। और वकतापुरुष शास्त्रके वाचवे समै आंगली कठकावे

नाहीं। आलस मारे नाही। घूमे नाही। मंद सवद बोले नाहीं। शास्त्रसूं ऊंचा बैठे नाही। पाव पर पांव नाषे नाहीं। उकड बैठे नाहीं। गोडी दो वडिवारे नाही। घना दीर्घ शब्द उचारे नाहीं। अरु घना मद सवद भी बोले नाहीं। भ्रमायल सवद भी बोले नाही। श्रोतानकी निज मतलबके अर्थ खुसामद करे नाहीं। जिनवानीके लगे अर्थको छिपावे नाही। जो एक अक्षरको छिपावे तो महापापी होई। अनन्त संसारी होय। जिनवानीके अनुस्वार विना अपने मतलब पोषनेके अर्थ अधिक हीन अर्थ प्रकासे नाहीं। जा शब्दको अर्थ आप सो उपजे नाही ता शब्दको अर्थ मान वडाई लियां अन्यथा नाही कहै। जिनदेव न भुलाय देय। मुखसो सभा विषे ऐसा कहे। या शब्दका अर्थ कछू हमारे ताई भास्या नाही। हमारी बुद्धिकी नूनता है। विशेष ज्ञानी मिलेगा वा को पूछेंगे। नाही मिलेगा तो जिनदेव देख्या सो प्रमान है। ऐसा अभिप्राय हो व हमारी बुद्धि तुक्ष है। ताके दोष कर तत्वका स्वरूप औरका और कहनेमे आवे वा साधनमें आवे। तो जिनदेव मोपर छिमा करो मेरा अभिप्राय तो ऐसा ही है। जिनदेवने ऐसा ही देख्या है ताते भी ऐसा ही धरो है। अरु ऐसे ही ओराको आचरन कराऊं हूं। मेरे मान वडाई लाभ अहकार प्रयोजन नाहीं। सूक्ष्म अर्थकूं ओरसे ओर भासे तो मै कहा करूं। नाहीं ते मो आदि दिगम्बर देवा प्रजंत ज्ञानकी नूनता पाई है। ताते असत्य वा उभे मनो जोग वा वचन जोग बारमा गुनस्थान प्रयंत कहो है। सत्य वचन जोग केवलीके भी है।

ताते मोने भी दोप नाहीं । सो ज्ञान तो एक केवली ज्ञान मृत्य प्रकाशक है । सोई सत्य है । ताकी महमा वचन अगोचर है । एक केवल ज्ञान ही गम्य है । केवली भगवान विना और के जानवाकी समर्थ नाही । ताते ऐसे केवली भगवानके अर्थ मेरा वारंवार नमस्कार होहु । वे भगवान मोने वालक जान मो ऊपर छिमा करो । अरु मेरे शीघ्र ही केवल ज्ञानकी प्राप्त करो । त्यो मेरे भी निसंदेह सर्व तत्वके जाननेकी सिद्धिहोय । ताही माफिक सुखकी प्राप्ति होय । ज्ञानका अरु सुखका जोड़ा है जेता ज्ञ.न तेता सुख । सो मै सर्व प्रकारका निराकुलता सुखका साथी हू । सुख विना और सब असार है । ताते वे जिनेन्द्र देव मोने सरन होय जन्म मरनके दुख सो रहित करहु । संसार समुद्र सो पार करहु मेरी तो दया शीघ्र करहु । मै संसारके दुखसूं अत्यंत भयभीत भया हूं । ताते सपूर्न मोक्षका सुख देहु घनी कहा कहिये । इति वक्ता स्वरूप संपूर्न । अथा श्रोता लक्षन कहिये है सो श्रोता अनेक प्रकारके हैं तिनके दिशंतकर कहिये है । माटी चालनी, छेली, विलाव, वक्र, पाषान, सर्प, हंस, भैसा, फूटा घडा, डंस मसकादिक, जौक गाईएक ऐसे ये चौदा दृष्टांत कर या सादृश्य श्रोता चौदे प्रकार जानना । याने कोई मध्यम हैं कोई अधम हैं। आगे परम उत्कृष्ट श्रोताके लक्षन कहिये है । विनयवान होय । धर्मानुरागी होय । संसारके दुखसूं भयभीत होय । श्रद्धानी होय । बुद्धिमान होय । उद्यमी होय । मोक्षभिलाषी होय, तत्वज्ञान चाहक होय । परीक्षा प्रधान होय । हेय उपादेय करनेकी बुद्धि होय, ज्ञान वैराग्यका लोभी होय । दयावान होय मायाचार कर रहित होय,

निर्वांछिक होय। क्षमावान होय। कृपनता रहित उदार होय, प्रशमवान होय, प्रफुलित मुख होय। मोसरा पशुन रहित होय, सीलवान होय, स्वपर विचार विषे प्रवीन होय। लज्जा गर्भ कर रहित होय। ठीमर बुद्धि न होय। विचक्षन होय कोमल परनामी होय। प्रमादकर रहित होय। वात्सल्य अंगकर संयुक्त होय। आठमदकर रहित होय। आठ समकितका गुन वा आठ अंगकर रहित होय, आठमल दोषकर रहित होय, षट अनायतन तीन मूढ़ता दोषकर रहित होय। आन धर्मका साधनिक होय। सत्यवादी। जिन धर्मका प्रभावना अंग विषे तत्पर होय। गुनाधिकका मुखसूं जिनप्रनीत उपदेश सुन एकांत स्थान विषे बैठ हेय उपादेय करबाका स्वभाव होय। गुनग्राही होय। निज औगुनको हेय होय। थीर बुद्धि सिद्धि माहात्म्य होय। ज्ञान क्षयोपशम विशेष होय। कृतज्ञी होय। उपकार कृत होय अर किया उपगारने भूले नाहीं। किया उपगारने भूले है सो महा पापी है। या उपरान्त और पाप नाहीं। लौकीक कार्यके उपगारको ही सत्य पुरुष नाहीं भूले है। तो परमार्थ कार्यके उपगारको सत्य पुरुष कैसे भूले। एक अक्षरको उपगार भूले सो महा पापी है। विसवासघाती है कृतघ्नी कहिये। किया उपगार भूले है सो संसार विषे तीन महा पाप है। गुरुद्रोही। अर गुरादिक आपसो गुनकर अधिक होय। साक्षात सिष्या दिख्यादि धर्मोपदेस दे नाहीं। दे तो वे सर्व दंड देने ही जोग्य है। बहुरि गुरु आदि आपने सूं बड़ा गुनकर अधिक होय। तो उपदेस दे। अर गुरु आप सन्मुख न बोले तिनके वचनको पोषनेरूप वचन कहै। अर कदाच गुरांका कह्यां उपदेसमें कोई

तरहका संदेह वर्ते तो विसेषपने सहित प्रश्नकरताके उत्तर सुन निरसल्य खोय । चुपका होय रह्यो । वार वार गुरांके अगारू वचनालाप करे नाहीं । गुरांके अभिप्रायके अनुस्वार गुरू सन्मुष अवलोकन करे । तब प्रश्नरूप वचन बोले ऐसा नाहीं के गुरू पहिल्यां आप औराने उपदेस देने लाग जाय । सो गुरा पहली है उपदेसका अधिकारी होना ये तीव्र कषायांका लषिन है । यामें मान कषायकी मुख्यता है । अंतरंग विषे ऐसा अभिप्राय वर्ते है । सो मै भी विशेष ज्ञानवान होता तो उत्तम शिष्य होय ते पहली अपना औगुन काढे आपको वारंवार निंधे कि मैपदरेग करे । हाय मेरा काई होसी हो तीव्र पापसो कब छूटो । कब निवृत हों सो तातें अपने सदीव नूनताई मौंन पीछे कोई ओसर पाय कठ सो पुष्ट होई । वचन मिष्ट होय । आजीवकाकी आकुलता कर रहित होय । गुरुका चरन कमल विषै भ्रमर समान सदा लीन होय। साधर्मीकी सगत होय साधर्मी ही है कुटम्ब जाके बहुरि नेत्र नीक डाक सोंटीका पाषान दर्पन अग्रसारसे सरोता सिद्धान्त रूप रतनके परतनके परिष्या करनेका अधिकारी है वहुरि सुननेकी इच्छा । श्रवन । ग्रहन । धारना । समान एक प्रश्न । ईतर निहचै ये आठ श्रोतानके गुन चाहिये । ऐसे श्रोता शास्त्र विषै सराहचे जोग्य है । सोई मोक्षके पात्र है ताकी महमा इन्द्रादिक देव भी करें है। अरु महमा करनेवारे पुरुषके पुन्यका संचय होय है। अरु वाका मोह गले है गुनमानकी अनमोदना किये वाका गुनका लाभ होय है । औगुनवानकी अनुमोदना किये वाके औगुनका लाभ होय है । तातै औगुनवानकी अनुमोदना करनी नाही । इति श्रोता

वर्ननं। आगे कृत कारित अनुमोदना। मन वचन काय ये तीन करनी अरु तीन जोगाके परस्पर लपटन कर गुनचास भंग उपजे है जैसे भागाकार सावद्य जोगका त्याग करना होय। अरु आखड़ी आदि विरतका गृहन करना होय। सोया गुनचास भंग करिये ताको व्योरो कृति कारित अनमोदना ए तो तीन भाग प्रत्येक अनुमोदना रात्र संजोगी भाग एक क्हे ऐसे सात भंग ऐ तो तीन करनके भये बहुरि ऐसे ही सात भंग तीन जोगके जानने मन वचन काय ए तीन प्रत्येक इकईस जोग भग है। मन वचन मन काय वचन काय ये तीन दोप जोगी भंग है। मन वचन काय ये त्रिसंजोगी भंग हैं। ऐसे ये सात तीन जोगोका भग हुआ सो सात करनाका भग पूर्वे कहा। सो एक एक ऊपर सात सात जोगाका भंग लइये। गुनचास भग हुये सो याका विशेप कहिये है। कृतकार मन कर। कृतकार वचन कर। कृतकार काया कर मनकर। वचन कर कृतमन काय कर। कृतमन वचन काय कर। सो ऐ सात तो कृत सौ भग भये। ऐसेही ओर भी जानना कारितमन कर। कारितवचन कर। कारितमन काय कर। कारितवचन काय कर। अनमोदना वचन कर। अनमोदना काय कर। अनुमोदना वचन कर। अनुमोदना मन काय कर। अनुमोदना वचन काय कर। अनुमोदना मन वचन काय कर। कृतकारित मन कर। कृतकारित वचन कर। कृतकारित मन काय कर। कृतकारित वचनकाय कर। कृतकारितमन वचन काय कर। कृत अनुमोदना मन कर। कृत अनुमोदना वचन कर। कृत अनुमोदना काय कर। कृत अनुमोदना मनकर वचन कर। कृत अनुमोदना मनकर काय कर। कृत अनुमोदना वचन

काय कर। कृत अनुमोदना काय कर। कृत अनुमोदना मन वचन कर। कारित अनुमोदना मन काय कर। कारित अनुमोदना वचन काय कर। कारित अनुमोदना मन वचन काय कर। कृतकारित अनुमोदना मन वचन काय कर।ऐसे ये गुणचास भाग जानना। सो ईक भयनो ईक भयनोके भाग। ईक भैनो दो भैनोके भाग। ईक भैनो तिभैनोके भाग। दुभैनो ईक भैनोके भाग। दुभैनो दुभैनोका भाग। दुभैनो तिभैनोका भाग। ईक भैनोका भाग। तिभैनो दुभैनोका भाग। ई तिभौनो तिभोनोका भाग। ए गुनचास भागकी संज्ञा जाननी होय। एवं गुनचास अरु तीन काल सेती गिन्या एकसै सैतालीस भाग संपूर्ण।

आगे षोडस भावनाका स्वरूप कहिए है। दरसन विशुद्धी कहिये दर्शन नाम श्रद्धानका है। सो सरधानका निहचै विवहार विषै पचीस मल दोष रहित समकितकी निर्मलता होय ताको नाम दर्शन विशुद्धी कहिये। देवगुरू धर्मका वा आप सो गुनकर अधिक धर्मात्मा पुरषनका विनय करिये ताका नाम विनय संपन्नता कहिए। शील अरु वृत ता विषे अतीचार लगावे नाहीं। ताको शील वृत अनतीचार कहिये। मुन्याके तो पांच महावृत हैं अवशेष मूल तेईस शील है। अर श्रावकके बारा वृत तामें पांच अनुवृत तो वृत हैं। ओर अवशेष सात शील है ऐसा अर्थ जानना। निरंतर ज्ञानभ्यास हो वाको अभीक्षन ज्ञानोपयोग कहिये। धर्मानुराग होय ताको संवेग कहिये। अपनी सक्तके अनुसार त्याग करिये ताको नाम सकतिस त्याग कहिए। अपनी सक्तके अनुसार त्याग करिये ताको सक्तिस तप कहिये। निकषाय मरन करिये ताको

साधसमाध कहिये। दश प्रकारके संगका वैयावृत कहिये चाकरी करिये वा आप सोगुना कर अधिक धर्मात्मा पुरुष होय। ताकी भी पग चापी आदि चाकरी करिये ताको वैयावृत कहिये। अर्हन्त देवकी भगत करिये ताको अर्हत भक्ति कहिए। आचारजकी भगत करिये ताको आचार्य भक्ति कहिये। उपाध्याय आदि बहुत श्रुत कहिये। घना सास्त्रका जामे ज्ञान होय ताको बहुश्रुत भगत कहिये। जिनवानी समस्त सिद्धान्त गृन्थ ताकी भगत करिये। ताको प्रवचन भक्ति कहिये। षट् आवश्यमे दिन प्रति अतराय न पाडिये ताको आवस्यक प्रदान कहिये। ज्यो ज्यों धर्मका अंगीकार कर जिन धर्मकी प्रभावना होय। ताको प्रभावना अंग कहिये। जिनवानी सों विशेष प्रीत होत। ताको प्रवचन वात्सल्य कहिये। ये सोलाकारण भावना तीर्थंकर प्रकृति बधनेको चौथा गुनस्थानसूं लगाय आठवा गुनस्थान पर्यंत बधनेको कारन है। तातै ऐसे सोलाकारनके भाव निरंतर राखिये। याका विषेश विनय करिये यासूं विषेश प्रीत राखिये। याके उछवसू पूजाकर अैठा कराइये अर्घ उतारिये याका फल तीर्थंकर पद है। एव षोडसभावना सामान्य अर्थ सपूर्ण।

आगे दशलक्षनीक धर्मका स्वरूप कहिये है। न क्रोध कहियें क्रोधका अभावताको उत्तिम क्षिमा कहिये। मानका अभाव हुये विनय गुन प्रगटै तब कोमल परनाम होय ताको मार्दव कहिये। कुटिलता कहिये दगाबाजी मायाचार रहित सरल परनामी होय। ताको आर्जव कहिये। झूठ जो असत्य मन वचन कायकी प्रवृत्ति रहित होय ताको सत्य कहिये। निर्लोभता कर आतमा पवित्र

होई ताको सोच कहिये । केवल जलकर स्नान करनेका नाम सौच नाहीं है । असंजमका त्याग संजमका ग्रहन ताको संयम कहिये है । बारह प्रकारके तप ताकर आत्माको तपाय कर्मकलंकको नास करिये ताको तप कहिये । चौबीस प्रकारके परिग्रह आभ्यन्तर बाह्यके ताका त्याग ताको त्याग कहिये । किंचित कहिये तिलका तुसमात्र परिग्रह सो रहित नगनस्वरूप ताको आकिंचन कहिये। शीलका पालना तासो बृह्मचर्य कहिये । ऐसा सामान्य दश लक्षण धर्म एव दसलक्षनीक धर्म संपूर्ण । आगे रत्नत्रय धरमका स्वरूप कहिये है । 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' ऐसा दस सूत्र विषैं कह्या है । वा उमास्वाम आचार्यने दर्शन नाम श्रद्धानका कहा है। दर्शनोपयोगका नाम यहां दर्शन नाहीं । दर्शनका अनेक अर्थ है । जहां जैसा प्रयोजन होय तहां तैसा अर्थ जान लेना। सो दर्शनका अनेक नाम है। सुभावे दर्शन कहो वा प्रतीत कहो सरधान कहो। वा रुच कहो इत्यादि जानना। एवमेव ऐसेही है। यही है। अन्य नाही और प्रकार नाहीं। ऐसा सरधान होय ताको तो सामान्य दर्शनका स्वरूप कहिये। वहुरि सराहवा जोग्य कहो भावे भले प्रकार कहो भावे कार्यकारी कहो भावे सम्यक प्रकार कहो भावे सत्य कहो जथारथ कहो ये सब एकार्थ हैं। वहुरि यासो उल्टा जाकर स्वभाव होय । तासों विपर्यय वा अजोग्य कहिये। भावे बुरे प्रकार कहो । भावे अकार्यकारी कहो । भावे मिथ्या प्रकार कहो भावे असत्य कहो । भावे अजथार्थ कहो । ये सब कार्य तातै सप्त तत्वका यथार्थ सरधान होय ताको निश्चय सम्यक दरसन कहिये । अर सप्त तत्वनका अजथार्थ श्रद्धान होय ताको मिथ्या

दर्शन कहिये। तत्व नाम वस्तूके भावका है। अरु अर्थ नाम पदार्थका है सो पदार्थ तो आधार है अरु तत्व आध्येय है। सो यहां मोक्ष होनेका प्रयोजन है। सो मोक्षने कारन मोक्ष मार्ग जोज्ञ रत्नत्रय धर्म है। सो प्रथम सम्यक दर्शन कारण तत्वार्थ सरधान है। सो तत्व सप्त प्रकार है। जीव। अजीव। आश्रव। बध। संवर। निर्जरा। बंध। मोक्ष। यामे पाप पुन्य मिलाये यहीका नाम नव पदार्थ है। सो तत्व कहो भावे पदार्थ कहो। सो सामान्य भेद कहे त्याको तो सप्त तत्वा कहा अरु विशेष भेद कहे ताको नव पदार्थ कहे। याका मूल आधार जीव अजीव दोय पदार्थ हैं अरु जीव तो एक ही प्रकार है अजीव पाच प्रकार है। पुद्गल। धर्म। अधर्म। आकाम। काल। याहीकू षट् द्रव्य कहिये। काल विना पचास्तिकाय कहिये। याही ते सप्त तत्व नव पदार्थ षट द्रव्य पचास्तिकाय याका स्वरूप विशेप जान्या चाहिये। सो याका बीस भेदाभेद करिये ताको भेद कहिये। अरु याका विशेष ज्ञान ताको विज्ञान कहिये। दोनोका समुदायको भेद विज्ञान कहिये। याही ते सम्यक दर्शन होनेको भेद विज्ञान जिन वचन विपै कारन कहा है। तातें विज्ञानकी वृद्धि सर्व भव्य जीवने कारन उचित है। तिने मूल कारन जिन वानी कर कहा जैन सिद्धान्त ग्रन्थ ताका मुप्य पहली अवलोकन करनो। जेता सम्यक चारित्र आदि और उत्तरोत्तर धर्म है। ताको सिद्ध एक सिद्धान्त ग्रन्थके अवलोकनतें ही है। तातें वाचन प्रक्षना। अनुपेक्षा। आमनाय। धर्मोपदेस। ये पाच प्रकारके स्वाध्याय निरंतर करना याका अर्थ बांचना सास्त्रका वांचनेका है। प्रक्षना नाम प्रश्न करवेका है।

अनुपेक्षा नाम वार वार घोषनेका है। आमनाय नाम कालके कल्प पढ़नेका है। जो काल ज्यों पढ़नेका होय सो पढ़े। धर्मोपदेश नाम परमार्थ धर्मोपदेश देनेका है। आगे सप्त तत्व ऐ आदिका स्वरूप कहिये। सो चेतना लक्षनो जीव जामे चेतनपनो होय ताकों जीव कहिये। तामे चेतनपनो नाही ताको अजीव कहिये। तानें चेतनपनो रहित कर्म आवनेको कारन ताको आश्रव कहिये। द्रव्य भावकर दोय प्रकार है। सो द्रव्य आश्रव तो धर्मकी सक्ति जो अनुभाग ताको कहिये। तथा भावाश्रव मिथ्यातें। अविरते। कषाय। जोगे। ये संतावन आश्रवको कहिये। सो यहां चार जातके जीवका भाव लेना बहुरि द्रव्य आश्रव भाव सरवका अभाव होना ताको संवर कहिये। पूर्वे द्रव्य कर्म व सत्ता विषे वंधर्थ तिनकी सवर पूर्वक एकी देस निर्जराका होना ताको निर्जरा कहिये। बहुरि जीवके रागादिक भावनके निमित्त कारण कर्मकी वर्गना आत्मके प्रदेस विषे वधें ताको वध कहिये। वहुरि द्रव्य कर्मका उदैका अभाव होना। अरु साताका भी अभाव होना। आपका अनंत चतुष्टय स्वभाव प्रगट होना याको मोक्ष कहिये। मोक्ष नाम द्रव्य कर्म वा भाव कर्म संयुक्त होनेका वा रहित होनेका वा निर्वंध होनेका वा निवृत्त होनेका है। सिद्धक्षेत्रके विषे जाय तिष्टे है आगे धर्मद्रव्यका अभाव है। तातै धर्मद्रव्यके सहकाकी विना आगे गमन करवेकी सामर्थ नाहीं। तातै वाहीं स्थित भये उस क्षेत्रमें अरु इस क्षेत्रमें भेद नाहीं। वह क्षेत्र ही सुखका स्थानक होइ तो उस क्षेत्र विषै सर्व सिद्धोंनकी अवगाहना विषे पाचों जातके स्थावर सूक्ष्म वादर अनन्ते तिष्टें हैं। ते तो महा अज्ञानी एक अक्षरके अनन्तवें भाग

ज्ञानके घारक तीव्र प्रचुर कर्मोके उदै सहित सदीव तीन काल पर्यंत साम्वने तिष्टे है। ताते ये निश्चै करना सो सुख ज्ञान वीर्य आत्माका निज स्वभाव है। पर सजोगते नाही। अरु दुख अज्ञान वीरज ज्यो पराकर्मका नास होना। अरु मोह कपाय आदि जेतेक औदयिक भाव हैं। सो सर्व कर्मके उदैतें आतमा विषे सक्त उत्पन्न होय है। सो ये स्वभाव भी जीवका है। या भावा रूप जीव ही परनवे है। और द्रव्य परनमता नाही और द्रव्य तो जीवके निमित्त मात्र है। तातैं जो परद्रव्यके निमित पाय जीवके शक्ति उत्पन्न ताको उपादीक विभाव। वा अशुद्ध वा विकल्प वा दु खरूप भाव कहिये। भावार्थ। जीवको ज्ञानानद तो असल भाव है। अज्ञान दुख आदि अशुद्ध भाव है पर द्रव्यके सजोगते है ताते कार्यके विषें कारनका उपचार कर परभाव ही कहिये। ऐसे सप्त तत्वका स्वरूप जानना या विषे पुन्य पाप मिलाइये ताको नव पदार्थ कहिये। सामान्य कर कर्म एक प्रकार है। विशेषकर पुन्य पाप रूप दोय प्रकार हैं। सो आश्रव भी पुन्य पाप कर दोय प्रकार है। ऐसे ही सवर निर्जरा वध मोक्ष विषे भी दो भेद जानना। मूलभूत याका षट्द्रव्य है। काल विना पंचास्तिकाय है। ताका द्रव्य गुन पर्याय वा द्रव्य क्षेत्रकाल भाव वा परनाम जीव मूर्त आदि गाथाके अर्थको इहा जाने। सप्त तत्वका स्वरूप निर्मल भासे है। वा प्रमान--नय--नयनिक्षेप--अनुयोग--गुनस्थान--मार्गना--तीन लोकका स्वरूप वा मूल कर्म आठ वा उत्तर प्रकृति एकसै अड़तालीस तिनको गुनस्थान मार्गना विषे वंध उदीर्न सत्ता नाना जीव अपेक्षा वा एक जीव अपेक्षा वा नाना काल

अपेक्षा लगाइये वा त्रेपन भाव गुनस्थानके चढ़ने उतरनेको मेल इत्यादि । नाना प्रकारके उत्तरोत्तर तत्वका विशेष स्वरूप ज्यों ज्यो घना घना भेद भेद निमित नैमित्य आधार आधेय निश्चे विवहार हेय उपादेय इत्यादि ज्ञान विषै विशेष अवलोकन होय । त्यों त्यो सरधान निर्मल होइ । याहीको छायक सम्यक्तका घाताका काम तो सातवां गुनस्थान ही हुआ सो बारवां गुनस्थान पर्यंत तो क्षायक सम्यक्त ही नाम पाया । अरु केवल सिद्धोंके परम क्षायक सम्यक्त नाम पाया । तातैं सत्यक्तकी निर्मलता होनेको ज्ञान कारन है । तातैं ज्ञान ही वधावना । तासो सर्व विषै ज्ञान गुन ही प्रधान है। इहां कोई ऐसा प्रश्न करे सप्त तत्व ही का सरधान करनेको मोक्षमार्ग कहा । और प्रकार क्यो न कहा ताका उत्तर कहिये है। जैसे कोई रोगी पुरुषको रोगकी निर्वृतिके अर्थ कोई स्याना वैद्य चिन्ह देखे सो प्रथम तो ऊ रोगीकी चाप देष पीछे रोगको निश्चे करे । पीछे यह रोग कौन कारन ते भया सो जानें । अरु कौन कारनसों रोग मिटे ताका उपाय विचार अरु रोग अनुक्रम सो कैसे घटे ताका उपाय जाने अरु इस रोगसो कैसा दुषी है। रोग गये कैसा सुखी होयगा । जैसे पूर्व निज स्वभाव याका या तैं-साही मोकों रोगसों रहित कर देगा । ऐसे सानुवातके जाननहारे वैद्य होय ताही सो रोग जाय अजान वैद्यसों रोग जाय नाहीं । अजान वैद्य जम समान है । तैसे ही आश्रवादि सदा तत्वका जानपना संभवै सो ही कहिये है । सो सर्व जीव सुखी हुवा चाहे हैं । सो संपूर्न सुखका कारन मोक्ष है । तातै मोक्ष ज्ञान

विना कैसे बने वहुर मोक्ष तो बंधके अभाव होनेका नाम है। पूर्वें बंध होय तो मोक्ष होय । तातैं बंधका स्वरूप विशेप जानना। वहुर बंधका कारन आश्रव है । आश्रव विना बंध होता नाहीं। त.तै आश्रवका स्वरूप जान्या विना कैसे बनें। बहुरि आश्रवका अ-भावने कारन सवर है। सवर विना आश्रवका निरोध होय नाही तो सवरको अवस्य जानना योज्ञ है । वहुरी बधका अभाव निर्जरा विना होय नाहीं। तातै निर्जराका स्वरूप जानना। ऐसे तत्व जान्या विना नेमकर मोक्ष मारगकी सिद्धि कैसे होय । याही तें सूत्रजी विषें तत्वार्थ श्रद्धान सम्यक दरसन कहा है। सो यह सर्वत्र न्याय है। जी कारन कर उनका उपार्ज्या होय तिनसों विपर्ययकारन मेल्यां उलझाउ मिटै जैसे शीतके निमित्त कर बाई उत्पन्न भया। तो वाका विपर्जै उस्नके निमित्तते बाईकी निर्वृत्य होय। ऐसा नाहीं के शीतका निमित कर उत्पन्न भया बायका रोगसो फेर सीतके निमित्त कर बाय मिटे सो मिटे नाहीं अधिक तीव्र वध जाय। त्यो ही परद्रव्यसो रागद्वेप कर जीवनामा पदार्थ कर्मासू उलटो। सो वीतराग भाव किये विना सुलटे नाही। अरु वीतराग भाव होय सो सप्त तत्वके स्वरूप जानने ते होय। तातै सप्त तत्वका जानपना ही निश्चे सम्यक होनेको ऐसा धारन आद्वैत एक ही कारन कह्या। ऐसें सम्यक दरसनका स्वरूप जानना। तातै श्री आचार्य दया-बुद्ध कर कहें हैं वा हेतकर कहें हैं। सर्व जीव ही सम्यक दर्शनको धारो। सम्यक दर्शन विना त्रिकालमे मोक्ष नाहीं। चाहो जेतो तपश्चरन करो जी कार्यका ज्यों कारन होय ताही कारन तें वो कार्यकी सिद्ध होय। ये सर्वत्र नेम है। इति सम्यक दर्सन प्ररूपन सपूर्ण।

आगे सम्यक ज्ञानका स्वरूप कहिये है। सो ज्ञान ज्ञेयके जाननेका नाम है। सो ज्ञानावर्नी दर्शनावर्नीके क्षपोपसमतै जाननें। सम्यक्त सहित जानपनाको सम्यकज्ञान कहिये। सो मिथ्यातके उदै सहित जानपनाको मिथ्याज्ञान कहिये। यहां ज्ञान विर्षे दर्शनको गर्भित जानना। सामान्यकर दोन्याको समुदायको ज्ञान ही कहिये। सो सप्त तत्वके जानपना विर्षें संसय विमोह विभ्रम होय ताको मिथ्या ज्ञान कहिये और उत्तरोत्तर पदार्थ वा अजथार्थ वा जाने तो वाके जान्याने ते समकित नाम वा मिथ्या नाम पावे नाहीं। तातें सप्त तत्व मूल पदार्थका जानपना संसै विमोह विभ्रम कर रहित होय सम्यक ज्ञान नाम पावै है। अरु निश्चै विचारता मूल सदा तत्वका स्वरूप जान्या विना उत्तरोत्तर तत्वका स्वरूप जान्या जाय नाहीं कारन विपर्जै भेद विपर्जै स्वरूप जेतर कसर रह जाय। जैसे कोई पुरुष सोनाने सोना कहे है। रूपाने रूपा कहे है। षोटा षरा रूपैयाकी परीक्षा करे है। इत्यादि लोकीक विर्षें घना ही पदार्थाका यथार्थ स्वरूप जाने हैं। परंतु कारन विपर्जै है। मूल कृत याका पुद्गलकी परमानू चाहे। ताको जानता नाहीं। कोई परमेश्वरको कर्ता बतावे है कोई यास्त बतावै है। कोई पांच तत्व प्रथ्वी अप तेज वायु आकास मिल जीव नाना पदार्थकी उत्पत्ति कहे है। या प्रमान वा भिन्न भिन्न जुदा जुदा बनावे हैं। तातैं कारन विपर्जै जानना। बहुरि जीव पुद्गल मिल मनुष्यादिक अनेक प्रकार असमन जातकी पर्याय बनी है। ताको एक ही वस्तु माने है। सो भेद विपर्जै है। बहुरि हू आकाश धरती लग्या दीसे। एगर छोटा दीसे, जोतषीदेवाका विमान छोटा दीसे। वा चसमा

वा दुरबीन पदार्थाका स्वरूप छोटा वडा दीसे इत्यादि स्वरूप विपर्जै जानना। अरु सम्यक् ज्ञान हुआ वस्तूका स्वरूप जैसे जिनदेव देष्या है। तैसे ही सरधान करनेमे आवे। तातै पदार्थ-का स्वरूपका जानपना भी सम्यक् ज्ञानीके ही ससै विमोह विभ्रम रहित है। वहुरि संसे विमोह विभ्रमका स्वरूप कहीये जैसे चार पुरुषा सीपके पडका अवलोकन किया। सो एक पुरुष तो ऐसे कहने लागे न जाने सुवर्न है न जाने रूपा है ताको संसो कहिये। वहुरि एक पुरुष ऐसे वहते भये यातें सीपका खंड है। ताको पूर्व त्रदोष रहित शुद्ध वस्तुका स्वरूप जैसा था तैसा ही जानपनाका धारी कहिये। त्यो ही सप्त तत्वके जानपना विषें वा अपरकी जानवा विषें लगाय लैना सोई कहिए है। आत्मा कौन है वा पुद्गल कौन है ताको ससो कहिये बहुरिमें तो ररठा ही हीं ताकों विमोह कहिये। वहुरिमे वनुक्षु ताको विभ्रम कहिये। वहुरिमें चिद्रूप आतमा हूं ताको समयक् ज्ञान कहिये। मुखसो कहना ती माफिक मन विषें धारना होय सो मनका धारन जैसा जैसा होय तैसा तेसा ही ज्ञान वाको कहिये है। ऐसे सम्यकज्ञानका स्वरूप जानमा। सम्यकज्ञान सम्यकदर्शनका सहचारी है। सहचारीका साथ ही पिरले लग्या है वा विना नाही होय। ताके उदै होता वाको भी उदै होय। वाका नास होते उनका भी नास होय। ताको सहचारी कहिये। सो सम्यकदर्सन होते सम्यकज्ञान भी होय। सम्यकदर्शनके नास होते सम्यकज्ञानका भी होय। सम्यकदर्शन विना सम्यकज्ञान होय नाहीं। सम्यकदर्सन सम्यकज्ञानको कारन है। ऐसे सम्यक-

ज्ञानका स्वरूप जथार्थ जानना। इति सम्यकज्ञान संपूर्ण। आगे सम्यक चारित्रका स्वरूप कहिये है। चारित्र नाम सावद्य जोगके त्यागका है। सो सम्यकज्ञान सहित त्याग किये सम्यक चारित्र नाम पावे है। सो सम्यकदृष्टिके सरधानमे वीतराग है। प्रवृत्तिमे किंचित राग भी है। ताको चारित्र मोह कारन अरु सरधानके भावाको दर्सन मोह कारन। सो सम्यकदृष्टिके अल्प कषाय नाही गनि वीतराग भाव ही कहिये। ताते सम्यकदृष्टिको बंध निर्बंध निराश्रव ही कहिये है तो दोष नाहीं विवस्था जान लेनी। या कथा एक जांयगा सास्त्र विषै कही है। मिथ्यादृष्टिके सरधानमे वीतराग भाव नाही। वीतराग भाव विना निर्बंध निराश्रव नाहीं। निर्बंध निराश्रव विना सावद्य जोगका त्याग कारजकारी नाहीं। सुरगादिकने तो कारन है। परन्तु मोक्षने कारन नाही। ताते संसारका ही कारन कहिये। जे जे भाव संसारका कारन हैं ते ते आश्रव है। यह कार्यकारी है। अरु सम्यक् विना सावद्य जोगका त्याग करे है सो नरका-दिकके भयका दुःख थकी करे है। परन्तु अंतरंग विषै कोई द्रव्य इष्ट लागे नाही। केई द्रव्य अनिष्ट लागे है। तातें सरधान विषे रागद्वेष प्रचुर जीवे है। सम्यकदृष्टि पर द्रव्यने असार जान तजे है। ये परद्रव्य कोई सुख दुखने कारन नाहीं निमित्त भूत हैं। दुखने कारन तो अपने अज्ञादिक भाव हैं। सुखने कारन अपने ज्ञानादिक भाव हैं। ऐसा जान सरधान विषैं पर द्रव्यका त्यागी हुवा है। ताते याके पर द्रव्य सो राग नाही। जैसे फटकरी लोदकर कषायला किया वस्त्र वाके

ही रंग चढ़े। विना कषायला किया वस्तर दीर्घकाल पर्यंत रंगके समूहमे भीगा रहे तो भी वाके रंग लागे नाहीं। ऊपर ऊपर ही दीस्या करे। वा वस्त्रको पानीमे धोइये तो रंगत उतर जाय। कषायला किया वस्त्र रंग्या हुआ ता रंग कोई प्रकार उतरे नाही। त्यों ही सम्यक दृष्टिके कषाय कर रहित जीवका प्रनाम है। ताके दीर्घ काल पर्यंत परिग्रहके भारमे रहैं तो भी कर्म मल लागे नाहीं। यह मिथ्या दृष्टिके कषायकर प्रनाम कषायला है। तातैं कर्माकर सदीव लिषत होय है। वहुरि साह गुमस्ता माता धाय बालकको एकसा पलावे एकसा लाडपाल करे। परन्तु अतरंग विषै राग भावाका विषेश पड़त है। त्योंही सम्यक दृष्टि मिथ्या दृष्टिके अंतरंग भावाका अल्प बहुत्व विषेश जानना तातै वीतराग भावा सहित सावद्य योगका त्याग सोही सम्यक चारित्र जानना। इति चारित्र कथन संपूर्न। आगे वारा अनुपेक्षाका स्वरूप कहिये है। बारा नाम बारहका है अनुपेक्षा नाम चिंतवन करनेका है। सो इहा वारा प्रकार वस्तुका स्वरूप निरंतर विचारना और नाहींके वारयाका स्वरूप जान स्थित होइ परहरना। भावार्थ। यह जीव भ्रम बुद्धिकर अनादि कालसे वारा स्थान विषैं आसक्त हुआ है। तातै याकी आसक्तता छुडावनेके अर्थ परम वीतराग गुरू यह बारा प्रकार भावना याके आसक्तता सुभावसूं विरुद्ध दिखाय छुटाया है। जैसे मदवा हस्ती सुछंद हुआ जहां जहा स्थानक विषैं अटके। अपना वा विराना हिमार वहुत करे ताको चरषा वा भालावारे सांट मार वहुत हस्तीको बहुत मार देय छुड़ावै हैं। सोई कहिये

है प्रथम तो जीव संसारका स्वरूप थिर मान रमत्या है। ताको अध्रुव भावना कर संसारका स्वरूप अथिर दिखाया। शरीर सों उदास किया। बहुरि ये जीव माता पिता कुटुम्ब राजा देव इन्द्र आदि बहुत सुभटनकी मरन वांक्षता संता निरभै अमर सुखी हुवा चाहै है। काल करम सो डरप थकी सरन वांछे है। ताको असरन भावना कर सर्वत्र लोकके पदार्थ ताको असरन दिखाय सरन एक निश्चे चिद्रूप आतमा ही दिखाया। बहुरि ये जीव जगत जो संसार वा चतुर गत ताके दुःखका याको खवर नाहीं। संसार विषै कैसा कैसा दुःखे है। ताको जगत भावना कर नरकादि संसारके भयंकर तीवृ दुःखकी वेदनाको सहे ई दिखाय संसार दुःख सों भयभीत किया। अरु संसारके दुःखकी निर्वृत होनेका कारन परम धर्म ताका सेवन किया। बहुरि यह जीव कुटुम्ब सेवा कर पुत्र कलित्र धन धान्य शरीर आदि अपने माने है। ताको एकत्व भावना कर एक कोई जीवका नाहीं। जीव अनाद कालका एकला ही है। नरक गया तो एकला तिर्यंच गतिमे गया तो एकला, मनुष्य गतिमे गया तो एकला, देवगतिमें गया तो एकला। पुन्य पापकी सार्थ है। और कोई याके साथ जाय आवे नाहीं तातैं जीव सदा एकला है। ऐसा जान कुटुम्ब परवारादिकका ममत्व छुड़ाया। बहुरि यह जीव शरीरने अरु आपने एक ही मान रहा है। ताको असत्य भावनाको वस करतें न्यारा दिखाया जीवका द्रव्य गुन पर्याय न्यारा बताया। पुद्गलका द्रव्य गुन पर्याय न्यारा बताया। इत्यादि अनेक तरहसो भिन्न भिन्न दिखाय निज स्वरूपकी प्रतीत अनाई। बहुरि ये जीव शरीरको बहुत पवित्र

माने है। पवित्र मान्या सो बहुत असक्त होय। ताकी आसक्तता छुडावने अर्थ अशुभ भाव ताकरि शरीर विषै हाड मांस-रुधिर चाम-नसा जाल वाय पित्त कफ मल मूत्र आदि सप्त धात वा सप्त उपधातमय शरीरका पिंड दिखाया। शरीर सों उदास किये अरु अपना चिद्रूप शरीर महापवित्र शुच निर्मल पर्म्म ज्ञान सुखका पुंज अनन्त महमा भंडार अवनासी अषंड केवल कलोल कर देदीपमान निःकषाय शांत मूरत सबको प्यारा सिद्ध स्वरूप देवाधिदेव ऐसा अद्वैत ध्रुव त्रिलोक कर पूज्य निज स्वरूप दिखाय आप विषै ममत्व भाव कराया। बहुरि यह जीव संतावन आश्रव कर पाप पुन्य जल कर डूबे है। ताको आश्रव भावनाका स्वरूप दिखाया। आश्रव है तिनतै भयभीत किया। बहुरि यह जीव आश्रवके छिद्र मूंदनेका उपाय नाही जानता संता ताको संवर भावनाका स्वरूप दिखाया। सतावन संवरके कारण केस्या सो कहिये। दसलक्षनीक धर्म। बारा तप। बाईस परीसह। तेरा प्रकार चारित्र। नाकर संतावन किये। आश्रवके मूंदनेका उपाय बताया। बहुरि यह जीव पूर्वोक्त कर्म बध होते ताका निर्जरा होनेका उपाय न जानता संता ताके निर्जरा भावनाका स्वरूप दिखाय चिद्रूप आत्माका ध्यान होसी। भया पर्म तप ताका उपाय बताया। बहुरि संसार विषें मोह कर्मका उदय कर संसारी जीवके यह मिथ्या भ्रम लग रहा है। केईकतो ईश्वरकर्ता माने है। केई नास्ति माने हैं। केई पुन्य माने है। केई वास किये जाके आधार इत्यादि नाना प्रकारके भ्रम सोई हुवा मोह अंधकार जीव भ्रम रहा ताके भ्रम दूर

करनेको कांत भावनास्वरूप दिखाय मोह भ्रम जिनवानी किरन्या कर दूर किया। तीन लोकका करता षट् द्रव्य है। षट् द्रव्य समुदायका नाम लोक है। जहां षट् द्रव्य नाहीं एक आकास ही है ताका नाम अलोक है। इस लोक एक पदार्थ करता नाम ही ए लोक अनादि निधन अकृतम है। अवन्य जी सास्वता स्वयं सिद्ध है। बहुरि ये जीव अधर्म विषे लग रहा है अधर्म कर्त्ता तृती होता नाहीं। अधर्म क्रियाका बुरा होय है महा क्लेस पावे है। ऐसे ही अनादिकाल वीता परन्तु याके धर्म रुच कवहुं न भई ताते अधर्म छुडावनेके अर्थ धर्म भावना स्वरूप दिखाय धर्ममे लगाय अरु धर्मको सार दिखाया और सब असार दिखाया। धर्म विना या जीवका कबहुं भला होय नाहीं ताते सर्व जीव धर्म चाहें हैं। परन्तु मोहके उदय कर धर्मका स्वरूप जाने नाहीं धर्मका लक्षन तनक ज्ञान वैराग्य है। अरु यह जीव अज्ञानी हुआ सराग भावा विषें धर्म चाहे है अरु परम सुखकी वांक्षा करे है। सो यह वाक्षा कैसे है जैसे कोई अज्ञानी सर्पके मुखसो अमृत पान चाहे वा जल विलोय घृत काड्या चाहे वा वज्राग्नि विषें कमलके बीज वोय वाकी छाया विषे विश्राम किया चाहे। अथवा वाझ स्त्रीके पुत्रके विभावके विषें आकासके पुण्यका सेहरा गूंथ सुवा पीछें वाकी सोभा देख्या चाहे हैं। तो वाकी मनोर्थ कैसे सिद्ध होय। अथवा सूरज पच्छिम विषें उदय होय, चंद्रमा उस्न होय। सुमेर चलाचल होय। समुद्र मर्यादा लोपे वा सूख जाय। वा सिला ऊपरे कमल ऊंगे। अग्नि शीतल होइ। पानी उस्न होय। वाझके पुत्र होय। आकासके पुष्प लागें। सर्प निर्विषहोय।

अमृत विष रूप होय इत्यादि इन वस्तुका सुभाव विपर्जै हुआ न होय न होसी परन्तु कदाच ए तो विपर्जै रूप होंय तो होंय। परन्तु सराग भावमे धर्म कदाचि न होय। यह जिनराजकी आज्ञा है। तातै सर्व जीवा सराग भावने छोड वीतराग भावने भजो। वीत-राग भाव है सो ही धर्म है। और धर्म है सो ही दया है। दयामें अरु वीतराग भावमें भेद नाही। सराग भाव है सो ही अधर्म है। और धर्म मांही यह नेम हैं। सराग भाव सो हिंसा जाननी। और जेता धर्मका अंग है सो वीतराग भावने अनुसारता है। वा वीतराग भावाने कारन है। ताही तें धर्म नाम पावे है। और जेता सराग भाव है सो पापका अग है वा सराग भावने कारन है। ते अधर्म नाम पावे है। और अन्य जीवकी दया आदि बाह्य कारन विषें धर्म होय व न होय। जेवा क्रिया विषें वीत-राग भाव मिलें तो ता विषें धर्म होय। और वीतराग भाव नाहीं मिलें तो धर्म नाही। अरु हिंसा अस्त आदि बाह्य क्रिया विषें कषाय अस मिले तो पाप उपजे नाहीं। तातैं यह नेम ठहरया वीतराग भाव ही धर्म है। वीतराग भावने कारन रत्नत्रय धर्म है। रत्नत्रय धर्मने और अनेक कारन हैं। तातै वीतराग भावांके मुलाझे। कारनका कारन उत्तरोतर सर्व कारनको धर्म कहिये तो दोष नाहीं। ऐसे ही सराग भाव ही अधर्म है। याको कारन मिथ्या दर्शन ज्ञान चारित्र वाको उत्तरोतर ये कारन अनेक हैं। ताको अधर्म कहिये तो दोष नाहीं। सम्यक दर्शन सम्यक ज्ञान वीतराग भाव यह तो जीवका निज स्वभाव है। सो मोक्ष पर्यंत सास्वता रहे है। यासों उल्टा तीन भावका विभाव है। सो ही संसार मार्ग है स्वभाव

मोक्ष मार्ग है।

अरु मोक्षरूपी भी सम्यक चारित्र मोक्ष मार्ग है। मोक्षरूपी नाहीं। तातै सिद्धाके नहीं कह्या है। अरु सयोग अयोग केवलीके चारित्र कहया है। सो ही उपचार मात्र कहा है। चारित्र नाम सावद्य योगके त्यागका है। वीतराग भावाने कारन है। वीतराग भाव कार्य ही कारजकी सिद्ध हुआ पाछे कारन रहित नाहीं। तातै ज्ञानकी छयोपसम अवस्था वारवां गुनस्थान ही है। ताहीं ते ही हेय उपादेयका विचार है। तव ही हेय उपादेयका विचार संभवे केवली कृत हुआ कारज करनो छो सो करि चुक्या। तासो वाके सावद्ययोगका त्याग संभवे नाहीं। ऐसा मोक्ष मार्ग धर्म ताही के प्रसाद कर जीव परम सुखी होय है। ऐसे अधर्मको छुडाय धर्म भी सन्मुख कीया। वहुरि यह जीव सम्यक-ज्ञानको सुलभ माने है। ताको दुर्लभ भावनाका स्वरूप दिखाय सम्यकज्ञान विषें सन्मुख किया सो कहिये है। प्रथम तो सर्व जीवाका घर अनादि ते नित्य निगोद है। तिन मांहीसूं नि-करना महा दुर्लभ है। उहांसे निकलनेका कोई प्रकार उपाव नाहीं। जीव हीन सक्त भया है आत्मा जाका सो सक्तहीन जीव सूं कैसे निसर्नेका उपाय आवे। एक अक्षरके अनन्तमें भाग ज्ञानका क्षयोपसम रहा है। अरु अनेक पाप प्रकृ ते समूहका उदय पाइये है। अरु वहां सो छे महीना आठ समयोमें छेसौ आठ जीव निकरे हैं। ता उपरांत अधिक हीन मीसरे ही अनादिकालके ऐसे निकर व्यवहार राशि विषें आवें हैं। उतना ही विवहार राशिमें सौ मोक्ष जाय हैं। सो यह काल लब्धि महात्म

जानूं पूर्वे अनादि कालके जेते सिद्ध भये वा नित्य निगोदमें सो निकसे विनतें अनन्त गुन एक समै विषें अनादि काल सो लगाय सास्वते नित्य निगोदमे सूं निकसवो करें। तो भी एक निगोदके सरीर माहि ता जीवका अनन्तवें भाग एक ऐसेमे खाली होय नाहीं। तो कहो राजमारग बटवारा माफिक निगोद मांसू जीवका निकसना कैसे होय। अरु कोई भाग उठे वहां सो निकसता आगे भी अनेक घाटा उलंघ मनुष्य विषे भी ऊच कुल, सुक्षेत्र वास, निरोग शरीर, पांचो इंद्री वा निर्मल दीर्घ आयु, सगति जिनधर्मकी प्राप्ति इत्यादि परपरनामोंकी महमा कहा कहिये। ऐसी सामग्री पाय सम्यकदर्शन रत्नको नाहीं वांछे है। तिन दुर्बुधीका कहा पूछनो। अरु वाके अपजसकी कहा पूछनों। तीसू एकेन्द्री पर्यायसूं पंचेन्द्री पर्याय पावना महादुर्लभ है। वे इन्द्री पर्यायसूं तेइन्द्री पर्याय होना महादुर्लभ है। तेन्द्री पर्यायसूं चौइन्द्री पर्याय पावना अति कठिन है। चौइन्द्री पर्यायसू पचेन्द्री असेनी पर्याय पावना अति कठिन है। असेनीसुं सेनी तामें भी गर्भज पर्याप्तन होना महादुर्लभ है। सो ये पर्याय अनुक्रमसों महादुर्लभ था सो भी अनन्त वार पाया। परन्तु सम्यकज्ञान अनादकाल लेय अन्तक एकवार भी नाहीं पाया। सो सम्यकज्ञान पाया होता तो संसार विषें क्यों रहता मोक्षके सुखको भी जाय प्राप्त होता। तीनो भव्य जीव शीघ्र ही सम्यकज्ञान परम चिन्तामनि रत्न महा अमोलक परम मंगल कारन मंगल रूप सुखकी आकृत पंच परम गुरुकर सेवनीक त्रिलोकके पूज्य मोक्ष सुखके पात्र ऐसा सर्वोतकृट सम्यकज्ञान महादुर्लभ,

परम उतकृष्ट परम पवित्र ऊंचा जान याको भजो। घनी कहा कहा कहिये कदाचित ऐसा मोसर पायकर ईहसों चूकता भया तो बहुरि ऐसा मोसर मिलनेका नाहीं। अवर और सामग्री तो सर्व पाइये है एक रुच करनी ही रही है। सो तू या पाया विना ऐसी सामग्री पाई हुई अहली जाय। तो याका दरेग सत्पुरुष कैसे न करें। अरु कैसे सम्यकज्ञान होनेके अर्थ उद्यम नाहीं करें परन्तु करे ही करें। यह जीव फेर एकेन्द्री पर्याय विषें जाय पडे तो असंख्यात पुद्गल परवर्तन पर्यंत अनुत्कृष्ट रहै। एक पुद्गल परवर्तनकी संख्या अनन्त है। अनंते सागर अनन्ते सर्पनो वा काल चक्र अनन्तानन्त प्रमान एक पुद्गल पर्वर्तनके अनन्तमे भाग एक अंस भी पूर्न होय नाहीं। अरु एकेन्द्री पर्याय विषें दु:खका समुद्र अप्रमित है। नरकतें भी अधिक दुख पाइये है सो ऐसा अपरंपार दु:ख ऐसे दीर्घकाल पर्यंत सास्वता कैसे भोगे जांय। परंतु कर्मके वस पड्या जीव कहा उपाय करे। उहा अनेक रोग विषें कोई काल विषें एक रोगकी वेदना उदै होय। ताके दुख कर जीव कैसो आकुल व्याकुल परनवै है। अपघात कर मुवा चाहे सोये सताई पर्याय विषे सर्वमाही ही प्रवर्ते है। वा सर्व :तिर्यंच पुन्यहीन पुरुष दुख.मई प्रत्यक्ष देखनेमे आवें हैं। तिनके एक एक दु:खका अनुभवन करऐ तो भोजन रुचे नाहीं। परन्तु यह जीव अज्ञान बुद्धिकर मोह मदरापान कर भूल रहा है। सो कहुं एकांत बैठ विचार ही करे नाहीं। जे जे पर्याय वर्तमान विषे पावे तिन पर्याय सों तनमय होय एकत्व बुद्धि कर परनमें है पूर्वापर कुछ

विचार नाही ऐंसा जाने नाही के यह वा अन्य जीव कह अव-स्थामें वा सर्व पूर्व अनन्त वेर भोगी है। अरु धर्म विना बहुरि भोगेगा। यह पर्याय छूटा पाछें। धर्म विना नीच पर्याय ही पावना होयगी। तातैं गाफल न रह, नाही तो गाफल बहु दगा खाय है। मारा जाय दु ख पावे है और वैरी वस परे छे इत्यादि विचार कर सम्यकज्ञान सम्यकचारित्र रत्नत्रय धर्म पर्म निधान है सर्वोत्कृष्ट उपाध्येय जान महा दुर्लभ याकी प्राप्ति जान जिह तिहि प्रकार रत्नत्रय धर्मका सेवन करना। ऐसे दुर्लभ भावना सम्पूर्ण। इति बारानुपेक्षा स्वरूप वर्णन सम्पूर्ण।

आगे बारा प्रकार तपका स्वरूप कहिये है तप अनसन कहिये इनका अर्थ चार प्रकार, असन। पान। खादि। स्वादि। असन नाम पेटभर खानेका है। पान नाम जलदुग्धादि पीवनेका है। खादि नाम सोपाडीका है। स्वाद नाम मुखसोदिका है। यह चार जिह्वा इन्द्रीका भी विषय जानना और इन्द्रियनका नाही और इन्द्रीनका विषें और है। बहुरि आमोदर्य कहिये क्षुधा निवृत्य विषें एक ग्रास घाट दोय ग्रास घाट आदि घटिता घटिता एक ग्राम पर्यंत भोजनकी पूर्णता विषें ऊन भोजन करे ताको ऊनोदर तप कहिये। आज इहि विध भोजन मिले तो लेनी। नाहीं मिलें तो हमारे आहार पानीका त्याग है। ऐसी अटपटी प्रतिज्ञा करे। मन वोले वाके अर्थि आदि छहों रस पर्यंतका त्याग है ताको रस परित्याग कहिये। बहुरि आराम प्रमुख छोडिये कथनका विषें जाय बैठे ताको विविसन कहिये। बहुरि सीत काल विषें नदी तलाव चौपट

आदि सीत विशेष परनेका स्थानक तिष्टे विषें, ग्रीष्मकाल विषें पर्वतके सिखिर, रेतके स्थान वा चोपट आदि मारग विषै तिष्टे। वरषाकाल विषें वृक्ष तले तिष्टे इत्यादि तीनों रितके उपाय कर मन भी कस्या जाय है। परन्तु किंचित् कसा कहा जाय है। मनके कसे विना तो तप नाम पावे नाहीं। अरु अभ्यंतर तप कर मन संपूर्ण कस्या जाय है। तातै बाह्य तप वीच अभ्यंतरके तपका फल विषेश कहा है। ऐसा अर्थ जानना। आगे छह प्रकारके अभ्यंतर तपका स्वरूप कहिये है। तिन विषें अपनसूं आखडी व्रत संयम विषें भूलचाजान कर अल्प वहुत दोष लागे है। ताको श्री गुरू पास जी प्रकार मन वचन कर कृत कारित अनुमोदना कर पाप लागा होय ताको ज्योंका त्यों गुराने कहें है। अंम मात्र भी दोष छिपावे नाहीं। पाछें श्री गुरुजो दंड दें ताको अंगीकार कर फेरसूं आखड़ी व्रत संजमादिकका छेद हुए स्थापन करें। ताको प्रायश्चित् तप कहिये। बहुरि श्री अरहंतदेव आदि पंच परमगुरु वा जिनवानी, जिन धर्म, जिन मंदिर, जिनविम्ब तिनका परम उत्कृष्ट विनय करे। वा मुनि अर्जिका श्रावक श्राविका चतुर प्रकार संघ ताका विनय करे। वा दस प्रकार संघत्रया विनय करे। वा आपसूं गुना कर अधिक होय, अव्रत सम्यक्दृष्टि आदि धर्मात्मा पुरुष होय ताका विनय करिये। ताको विनय तप कहिये। बहुरि आप सो गुनाकर अधिक होय ताको वैयावृत तप करिये। वाकी पग चापी आदि चाकरी करिये आहार दीजिये। ताका उनके खेद होय ताको जीती प्रकार निवृत्य करिये। रोग होय तो ओषद दीजिये इत्यादि

विषेश चाकरी करिये ताको वैयावृत तप कहिये। बहुरि वांचना। प्रक्षना, अनुपेक्षा, आमनाय, धर्मोपदेश। ये पाच प्रकार स्वाध्यायके भेद हैं। सो वांचना कहिये शास्त्रको वाच जाना, प्रक्षना कहिये प्रश्न करना, अनुपेक्षा कहिये काव्य श्लोक आदि जो पाठ ताका वारंवार कठाग्र करनेके अर्थ घोखना। आम्नाय कहिये जी काल जोग स्वाध्याय होय। वा जो शास्त्रपाठ पढ़ने जोग्य होय। तिनका तिन काल विषें अध्ययन करे। और धर्मोपदेश कहिये धर्मका उपदेश देना ऐसे पंच प्रकार स्वाध्याय करना ताको तप कहिये। बहुरि जब जीव वा प्रमान शरीरका त्याग करना, त्याग कहिये शरीरका ममत्व छोडना। बाहूबलि मुनिकी सी नाई शरीरका कोई प्रकार शोक सर नाहीं करना। अंग उपंगको चलाचल अपनी इच्छा करना ताको विउत्सर्ग व उत्सर्ग तप कहिये। बहुरि एकाग्र चित्त निरोधोध्यान इसका अर्थ यह है। आरत-रौद्र ध्यानको छोड़ धर्म ध्यान शुक्लोधायका करना ताको ध्यान तप कहिये। ऐसें बारा प्रकार स्वरूप जानना। आगे बारा प्रकार तप तिनका फल कहिये है। आगां अनशनादि चार प्रकारके तप कर यह जीव स्वर्ग विषें कल्पवासी देव पुनीत पावे है। थोड़ीसी भोग सामग्री मनुष्य पर्याय विषें छोडसी ताको फल अनन्त पायो। सो असंख्यात कालपर्यंत निर्विघ्नपने रहसी। अरु महा सुन्दर शरीर अमृतके भोगकर त्रस असंख्यातका पर्यंत निरोग एकसा गुलाबके फूल सादृस्य महा मनोज्ञ डहडात करत आयु पर्यंत निर्भै रहसी। ताकी महमा वचना अगोचर है कहां लों कहिये। आगे स्वर्गनके सुखका विशेष वर्णन करेंगे तहां तें

ज्ञान लेना । वहुरि विव्यक्त सैयासन काय क्लेस येक कर अत्यंत अतसेवंत महा दैदीप तेज प्रताप संयुक्त इन्द्र चक्रवर्त कामदेव वा महतपुरुषका शरीर पावै है । यह तो बाह्य प्रकार षट् तप तिन विषैं प्रायश्चित्तका फल है । बाह्यके तप कर तो शरीर दम्या जाये है । अरु शरीर दम्याकर किंचित् मन दमा जाय है । ताहीतैं भीत प्रनाम पावे है । अरु मन नाहीं दम्या जाय तो एक शरीरको दव्यां तप नाम पावे नाहीं । धर्मात्मा पुरुष एक मनकी बुद्धि ताके अर्थ वहरंग तप करे हैं । अरु आनमती शरीरमें तो घनों ही कसो है । पुन मन अंस मात्र दम्या जाय नाहीं । तातैं वाको अंसमात्र भी तप न कहा । अरु अभ्यंतरके तप कर मन दम्या जाय है । मनके दमवाकर कषायरूपी पर्वत गले है । ज्यों ज्यों कर्माकी हीनता विषेश ज्ञान तपकर होय है । त्योंही तपका फल विशेष जानना । जिन धर्म विषैं कर्माकी मंदता सो ही परनामांकी विशुद्धता ताहीका नाम तप है धर्म है । ये ही मोक्ष मार्ग है वो ही कर्माके बालवाने ध्यानाग्नि छे संपूर्न सर्व सास्त्रांका रहस्य कर मोह कर्मके मंद पाड़नेका वास्ता नास करनेका है । और जेता संयम ध्यानाध्ययन ज्ञान वैराग्य आदि अनेक कारन बताये हैं । सो एक रागादिक भावां सो वधैं हैं । अरु वीतराग भावाकर खुले हैं । तातै सर्व प्रकार तीन काल तीन लोक विषैं एक वीतराग भावहै सोई मोक्ष मार्ग है । सम्यक दर्शन, ज्ञान, चारित्रको मोक्ष मार्ग कहा है । सो यह वीतराग भावाने कारन है तातै कारनके विषैं कार्यको उपचार कहा है । कारन विना कार्यकी सिद्धि होय नाही । तातै कारन प्रधान है सो प्रतक्ष यह बात अनुभवमें

आवे है। आगममें ठौर ठौर सर्व सिद्धान्त ता विषें एक सिद्धान्त भाव ही है। कर्म वर्गना सो तीन लोक वीका घडावत भरया है। सो कर्म वर्गनासों ही बंध होय है तो सिद्ध महा-राजके होय। अरु विषें भोग परिग्रहके समूहसों ही वध होय तो अवृत सम्यकदृष्टि चक्रवर्त तीर्थंकर आदि ताके होय। भरत चक्रवर्त क्षायक सम्यकदृष्टि था, तातै सम्यक्तिके महात्म कर षट् खंडकी विभूत छिआनवे हजार स्त्री योगने कर ही वध निराश्रव ही रहा ताही तें दिक्षा धरे प छें अंतमुहुर्तकाल व.ने केवलज्ञान उपार्ज्या सो सम्यकका महात्म अद्भुत है। यहा प्रश्न तुम कहते हो मुनि महाराज अवृत सम्यकदृष्टिके बंध नाहीं। तो चौथा गुनस्थानसू लगाय दसवां गुनस्थान पर्यंत अनुक्रमतें घटता घटता बध कैसे कह्या। ताकर उत्तर यह कथन है। सो तुरति सम्यक्त की अपेक्षे है। सो वंधने मूलभूत कारन एक दर्शन मोह है। जैसा दर्शन मोहते वध है तातै नाही गने। निश्चै विचारता दसवा गुनस्थान पर्यंत रागादिकोमे वध पाइये है। यह भी शास्त्र विषै कहा है। सो यह न्याय ही है। जी जी स्थानक विषे जेता रागभाव है। तेता तेता ही वध है यह वात सिद्ध भई। एक असाधारन कारन अष्टकर्म बधनेको मोहकर्म है तातै एक मोह हीको नास करनको प्रायश्चित तप विषें धर्मवुद्धि विपेश होय है। अरु जाके धर्मवुद्धि विषेश होय संसारके दुखका भय होय सोई गुरुनपे जाय प्रायश्चित दड लेय याका मनकी वात कौन जाने था याके आखडी भग गई है। परन्तु यह धर्मात्मा परलोकका भय थकी प्राय-श्चित्त अंगीकार करें हैं। यातें अनन्त गुनाफल विनय तपका है। या

विषें मन विषेश लगे है। यातें अनन्त गुनाफल स्वाध्याय तपका है। या विषे च्यारू कषाय मोह सहित विषेश गले है। अरु पाचो इन्द्री वस होय हैं। मन वस होय है। चित्तकी एकाग्रता होय है सोही ध्यान है। ध्यानसों मोक्ष विशेष है। संम्यक-दर्शन ज्ञान चारित्र निर्मल होय है। अरु पुन्यका संचय-अतिशय सहित होय हैं। जेता धर्मका अंग है ते सर्व ज्ञान चारित्र निर्मल होय है। अरु पुन्यका संचय अतिशय सहित होय है। तेता धर्मका अंग है ते सर्व ज्ञानभ्यास ते जान्या जाय है। तातै सर्व धर्मका मूल एक सास्त्रम्यास है। याका फल केवल ज्ञान है। बहुरि स्वाध्याय ने व्युतसर्ग अरु ध्यान वाका फल भी अनंतानंत गुना है। याका फल मुख्यपने एक मोक्ष ही है। बहुरि बाह्य तप कहें हैं सो भी कषाय घटावनाके अर्थ कहें है। कपाय सहित बड़ा तप करे तो वह तप संसारका ही बीज है। मोक्षका बीज नाहीं ताहीं ते अज्ञान तप कहा है। सो ही आन मतमें है। जिन मतमे नाही। ऐसे बारा प्रकारके तप ताके फल जानना। आगे तपका फल विशेष कहिये हैं। सो देखो आनमत वारे वा तिर्यंच मंद मंद कषायके महात्म कर सोलवा स्वर्ग पर्यंत जांय हैं। तो जिन धर्मके सरधा-नी कर्म काट मोक्षको न जाय। तातै तप कर कर्मोंका निर्जरा विशेष होय है। सो ही दस सूत्र विषें कह्या है। तपतै निर्जरा-तातै अवश्य आभ्यंतर वा बाह्य वारा प्रकारके तप तिनको अंगी-कार करना। तप विना कदाचि कर्म कटैं नाहीं। ऐसा तात्पर्य जानना। एवं संपूर्न। आगे बार प्रकार संयम कहिये

है। ताका स्वरूप कहिये है। सजमेतिया सयम सो सयम दोय प्रकार है। एक इद्रिय संयम एक दूसरा प्रान संथम सो इन्द्रिय संयम छः प्रकार है अरु प्रान संयम भी छः प्रकार है। पाच इन्द्री छटा मनका निरोध करे। षट् कायकी हिसा त्यागे ताको इन्द्रिया संयम प्रान संयम नि:कषाया होनेको कारन है। नि:कषाय है सो ही मोक्षका मारग है। संयम विना कदाचि नि:कषाय होय नाहीं। नि:कषाय विना बंध उदै सत्ताका अभाव होय नाहीं। तातै संयम ग्रहन करना योग है। एव संयमका स्वरूप संपूर्न। आगे जिनबिम्बका दर्सन तथा नमस्कार कर कहा भेंट धरिये कैसे अस्तुत वा विनय करिये ताका स्वरूप विशेष कर कहिये है। दोहा—मै वन्दों जिन देवको कर अति निर्मल भाव। करम बधके छेदने और न कोई उपाव। या भात चितवन कर प्रभातकी समायक किये पीछे लघु दीर्घ वाधा मेटि जल शुच करि पवित्र वस्त्र पहरे। अरु मनोज्ञ पवित्र य दोय आदि अष्ट द्रय पर्यंत रकेवी विषै धर तदुल धो रकेबीमे ले आप उ वयनायगा। चाम ऊनका स्पर्श विना महा हर्ष संयुक्त जिन मदिर आवे। अरु जिन मदिरमे घसता तीन सब्द ऐसे उच्चारे। जय नि:सही। जय नि:सही। जय नि:सही। ताका अर्थ यह जो देवादिक कोई गुप्त तिष्टे होंय ते दूर हूजो। बहुरि तीन सब्द पीछे ऐसे उच्चारे। जय, जय, जय, पीछे श्रीजीके सन्मुख खडा होय। जो द्रव्य ल्याये तिनको रकेवीमें धर तीन वार फेर श्रीजीके सन्मुख खेपिये। पीछे रकेबीको दूर मेल दोनों हस्त जोड़ न्याले अरु पोले हाथ राख तीन आ-

वर्तन कर एक श्रोनित कीजे पीछे अष्टांग नमस्कार ताका अर्थ तीन। मन वचन काय शुद्ध, दोय हाथ, दोय पग अरु माथो नवावे वाको अष्टांग नमस्कार कहिये। नमस्कार कीजे अरु तीन प्रदक्षना पहली दीजे। भावार्थ—अष्ट कर्मको ही नवाइये। अष्ट अंग कोन तिनके नाम। हाथ दोय। पग दोय। मस्तग। मन। वचन। काय। तीन ऐसे आठ अंग ताके उत्तर अघय अवयव मुख आंख कान अंगुली, आदि उपंग जानने। भगवान सर्वोत्कृष्ट हैं तासको सर्व ही अंग उपंग नमाय नमस्कार करिये। सर्वोत्कृष्ट विनै संधै है। बहुरि जिनवानी वा निर्ग्रन्थ गुरू तिनको पंचांग नमस्कार करिये। पंचांग कौन दोन्यों गोड्या धरती सू लगाय दोन्यो हस्त जोड मस्तकसो लगाय हस्त सहित मस्तक भूम सूं लगाय। यामें छाती पीठ नितंब विना पच ही अंग नए तातै पंचांग कहिये। बहुरि पीछा खडा होय तीन प्रदक्षना दीजे एक एक प्रति एक दिसाकी तरफ पहली तीन आवर्त सहित एक एक श्रोनित कीजिये। पीछे सन्मुख खडा होय। स्तुत्यादि पाठ पढ़िये। पीछे अष्टाग दडोतकर पीछे पगाही पगा होय। अपने घरको उठ आइये। अरु निर्ग्रन्थ गुरू विराजे होंय तो नमोस्तु कीजे वाका मुख थकी धर्मोपदेस सुनीजे प्रस्नका निवारन करीजे अरु मंदिर विषैं जिनवानीका उच्चार होता होय तो सरधानी पुरुष मुख थकी शास्त्र श्रवन कर अपने डेरे आइये। असरधानी पुरुपका मुखसों शास्त्र सुनना जोग्य नाहीं। शास्त्र श्रवन किये विना न आइये। भावार्थ— जिन दर्शनकी क्रिया विषैं तो अष्टांग नमस्कारवाला श्रोनित छत्तीस आवर्ति

करिये। अब स्तुति करनेका विधान कहिये। जैसे राजादिक बड़े महंत पुरुष निकट कोई दीन पुरुष अपने दुःखकी निर्वृति अर्थ जाय सन्मुख खड़ा होय मुख आगे भेंट धर ऐसे वचनालाप करे। पहिले तो राजाकी बडाई करे पीछें निकट जाय है आपको दुःख होय तो कै वार युक्तकर कहे। पीछें वाकी निर्वृतको वांछता संता ऐसे कहे। ये मेरे दुःखकी निर्वृति करो सो ही ये संसारी परम दुखित आत्मा दीन मोह कर पीडा हुवा श्रीजीके निकट जाय खडा होय भेंट आगे धर पहले तो श्रीजीकी महमा वर्णन करे। गुनावाद श्रीजीका गावे। पीछे आपको अनाद कालको मोहकर्म घोरान घोर निगोद नर्कादिकके दुःख देवे ताका निर्नय करे। पीछे वाकी निर्वृतिके अर्थ ये प्रार्थना करे। सो हे भगवान यह अष्ट-कर्म मेरी लार लागे है। मोको महा तीव्र वेदना उपजावे है। मेरा स्वभावको घात मेली है। ताके दुःखकी वातमें कालो कहूं सो अंबे ऐसे दुःखनका निपाब करिये। अरु मोकों निर्मोह स्थान मोक्ष ताको दीजिये। सो मैं चिरकाल पर्यंत सुखी हूं। पीछें भगवानका प्रताप कर यह जीव सहजा ही सुखी होय है। अरु मोहकर्म सहज ही गले है। अबै याका विशेष वर्नन करिये है। जय जय त्वं च जय त्वं च जय जय भगवान् जय प्रभू जय नाथमय करुनानिधि जय त्रिलोकनाथ जय संसारसमुद्रतारक जय भोगसूं परान्मुख जय वीतराग जय देव जय साचा देव जय सत्यवादी जय अनोपम जय बाधा रहित जय सर्वत्र प्रकाशिक केवल ज्ञान मूरत जय त्रिलोकित्रलोक जय सांत मूरत जय अविनासी जय निरंजन जय निराकार जय निर्लोभ जय अतुल महमा भंडार जय

अनन्त दर्शन अनन्त ज्ञान अनंत वीर्य अनंत सुखकर मंडित संसार सिरोमणि गनधरदेवा कर वासौ जातके इन्द्रांकरि पूज्य तुम जय वंत प्रवर्तो तुम्हारी जय होय तुम बड़ा वृद्धि होहु जय परमेश्वर जय पर्म ईश्वर जय जय अनंदपुंज मय अनंदमूर्त्ति जय कल्यान पुंज जय संसार समुद्रके पारगामी जय भव जलद् जिहाज जय मुकति कामनी कंत जय केवल ज्ञान केवल दर्शन लोचन परम पुरुष परमात्मा जय अवनाशी जय टंकोतकीर्ण जय विस्व-रूप जय विस्वत्यागी विस्व ज्ञायक जय ज्ञान करि लोकालोक प्रमान वा तीन काल प्रमान अनन्त गुण खान जय चोसट रिद्धि भंडार अनन्त गुनके ईश्वर जय सुख सरोवर मान जय संपूर्न सुखकर त्रप्ति सर्व दोष दुखकर रहित जय अज्ञान तिमिरके विध्वंसक जय मिथ्या वज्रके फोडनेको चकचूर करनेको परम वज्र जय त्वंग शीस जय त्वंग ज्ञानानंद वरसाने भव तापको दूरवाने वा भव्य जीव खेतीके पोषने या भव्य जीव खेतीके ज्ञान दर्सन सुख वीर्य आंगो-पांग तीन लोकके अग्रभाग तिष्टे हैं। परन्तु तीन लोकने एक प्रमानके भाग मात्र खेद नाहीं उपजावै हैं। भगवानके उपगारने नाहीं भूलें हैं। तातै बुद्धिकर अल्प तिष्टे हैं। तब में भगवानके अनन्तवीर्य जाके भार मस्तग ऊपर कैसे धारोगे। याका भार मेरे बूते कैसे रहा जायगा भगवान अनन्त वली में असंख्यात वली असंख्तातवली ऊपर अनन्त वलीका भार कैसे ठहरे। तिन अगारू जाय भगवानकी सेवा कहिये तो भगवान परम दयाल है। सो मेरे ताई खेद न उपजावेंगे। सो अबै प्रत्यक्ष देखिये भगवान वृद्धि होनेको मेघ सादृश्य है। अहो भगवानजी

आकास विषें ये सूरज तिष्ठे है। सो कहिये है मानो तुम्हारी ध्यानरूपी अग्निका कनका ही है। अथवा तुम्हारे नखकी ललाई आकाशरूपी आरसी विषें ये प्रतिबिंब ही। अरु हो भगवानजी तुम्हारे मस्तग ऊपरे तीन क्षत्र सोभे है। सो मानू छत्रका मिस कर तीन लोक ही सेवनेको आये हैं। अरु हो भगवानजी तुम्हारे ऊपर चौसट चमर ढुरे है सो मानू चमरीका मिसकर इन्द्रके समूह गोप्य ही नमस्कार करें है। अहो भगवानजी जे तेरे सिंहासन कैसे सोभे है यह सिंहासन नाही मानू ये तीन लोकका समुदाय एक लोक होय तुम्हारे चरनकमल सेवनेको आये हैं। सो वेसे होत संते सेवे हैं। यह भगवान अनन्त चतुष्टयको प्राप्त भये हैं। सो सिद्ध अवस्था विषें मेरे ऊपर तिष्ठेंगे। अहो भगवानजी तेरे असोक वृक्ष ऊपर तिष्ठे है। सो त्रिलोकके जीवाने शोक रहित करे है। बहुरि हे भगवानजी आपके शरीरकी क्रांत जैसा जैसा शरीर होय तैसा तैसा ही भामंडल कियो दसो दिसाने उद्योत किया है। ता विषें सात तो देखने हारेका प्रतभासे है। बहुरि हे भगवानजी तुम्हारे आभ्यंतरके आत्मीक गुन तो अनंतानंत हैं। ताकी महमा तो कौनपै कही जाई है। परंत आपाके प्रतिसय कर शरीर भी ऐसा अतिशयरूप प्रणम्या है। ताका दर्शन किये विकार भाव विले जाय। काम उपमात होय। मोह जड़ मूलो उड जाइ। ज्ञानावरनादि घातिया कर्म सिथिल होंय। पाप प्रकृति प्रलेतैं भास होय। सम्यकदर्शन मोक्षका वीर्य उत्पन्न होय। इत्यादि सर्व आभ्यंतर बाह्य विघ्न विले जाइ। सो हे भगवान ऐसे शरीरकी महमा

सहस्र जिह्वा कर इन्द्रादिक देव क्यों नाही करें। अरु हजार नेत्र कर तुम्हारे स्वरूपका निरूपन क्यों नाहीं करें। अरु इन्द्रायाका समुह अनेक सरीर वनाई भक्त आन दरसकी भीगी क्यों नाहीं नृत्य करें। बहुरि कैसो है तुम्हारा शरीर ता विषें एक हजार आठ लक्षनें पाइये है। तिनका प्रतबिम्ब आकाश रूपी आरसो विषें मानू नाहीं परया है। सो तुमारे गुनोंका प्रतिविम्ब तारेनके समूह प्रतभासे हैं। वहुरि हे जिनेन्द्र देव तुम्हारे चरनारविदके नखकी ललाई कैसी है मानू केवल ज्ञान दिसका उदय करवाने सूरज ही उहां ऊगा है। वा भव्य जीवके वर्म्म काष्ट वाने तुमा नाग्निके तिन ज्ञान होय आन नाहीं प्राप्त भया वा मगल वृक्ष तिनके कूपल ही नाहीं है। वा तप रूपी गज ताके मस्तगका तिलक ही नाहीं हैं। अथवा चिन्ता मन रत्न कल्पवृक्ष चित्रामवेल कामधेन रसकूप पारस वा इन्द्र धर्नेन्द्र नारायण वलभद्र तीर्थंकर चतुर प्रकारके देव राजाने समूह यह समस्त उत्कृष्ट पदार्थ अरु मोक्ष देनेका एक भाजन परम उत्कृष्ट निधान ही है। भावार्थ। सर्वोत्कृष्ट वस्तुकी प्राप्ति तुमारे चरनाके आराध्याये मिलै है। तातै तुमारे चरन ही उत्कृष्ट निध हैं। बहुरि भगवानजी तेरा हृदय विस्तीरन कैसे सोभे है मानू लोकालोकके पदार्थ ही अभ्यतर समाय गये हैं। तातै विस्तीर्न है। अरु तुमारी नासका ऐसी सोभे है मानू मोक्ष चढ़नेकी नसेनी है। अरु तुमारा मुख ऐसा सोहे है मानू गुलावका फूल ही विगस्या है अरु तुमारे नेत्र ऐसे सोभे हैं मानू रक्त कमल विकसायमान है। अरु तुम्हारे नेत्रामे ऐसा

आनंदरस है। ताके एक अंस मात्र भी आनंदका निर्मापन ताकर जानके देव तिनके शरीर उत्पन्न भये हैं। इत्यादिक तुम्हारे शरीरकी महमा कहने समर्थ त्रिलोकमें-कोई नाहीं। लाडला पुत्र माता पिताकू चाहे त्यों बोले पीछे माता पिता वापे बालग जानकर वासू प्रीति ही करे। अरु मन वक्षित मिष्ट वस्तु वान खावा मगाय देय। तासू हे भगवान तुम हमारे उधित माता पिता हो। अरु मैं लघु पुत्र हों सो लघु बालक जान मोपर क्षिमा करिये। हे प्रभूजी तुम समान मेरे और वल्लभ नाहीं। अरु हे भगवानजी मोक्ष लक्ष्मीके कंथ थें ही हो। अरु जगतका उधारक थेई हीं अर भव्य जीवाने उद्धारवां समर्थ थेई हो। तुमारे चरनारबिन्दको सेय सेय अनेक जीव तिरे और तिरेंगे अरु तिरे हैं। अहो भगवान दुख दूर करने थेंई समर्थ हो। अरु हे भगवान हे प्रभू हे जिनेन्द्र तुम्हारी महमा अगम्य है। अरु हे भगवान समोसरन लक्ष्मीसूं विरक्त थेंई हो। कामवानके विध्वंसक थेंई हो। मोह मल्लको जीतवाने अभूत मल्ल हो। अरु जरा वा मरनसू रहित होइ कालरूप दानाका जपने तुम ही प्राप्त भया हो। काल निर्दई अनाद कालको त्रिलोकका जीवाने निगलतो निपात करतो सो जाका निवारवाने कोई समर्थ नाहीं समस्त त्रैलोक्यके जीव कालका गालमे वसे है। तिनकू निर्भै हूवो दातातें चगल चगल नगलै है। तोभी त्रिप्त नाहीं होय। ताकी दुष्टता अरु प्रलबताने जीतवा कोई समर्थ नाहीं ताको तुम छिन मात्रमे जीता सो हे भगवान तुमकू हमारा नमस्कार होहु। बहुरि हे भगवानजी तुमारे चरनक सन्मुख आवता मेरा पग पवित्र भया अर तुम आगे हस्त

जोड़ता हाथ पवित्र भया अरु तुमारा रूप अवलोकन करता नेत्र पवित्र भया। तुमारे गुनकी महमा वा स्तुति करता जिह्वा पवित्र भई। अरु तुमारे गुननकी पंकति सुमरन करता मन पवित्र भया। तुमारे गुनानुवाद श्रवन करता श्रवन पवित्र भया। तुमारे गुननका अनमोदना कर मन पवित्र भया। तुमारे चरननकू अष्टांग नमस्कार करता सर्वांग पवित्र भया। हो जिनेन्द्रदेव धन्य आजकी घड़ी धन्य आजका दिन धन्य आजका मास वा संवत्सर सो या कालमें दर्शन करनेकूं सन्मुख भया। हे परमेश्वरजी मेरे आपका दर्सन करता ऐसा आनन्द भया मानू निधि पाई। चिन्तामन रत्न पाया वा कामधेन वा चित्रावेल घरमें आई। मानू कल्प वृक्ष मेरे द्वारे भया। वा पारसकी प्राप्ति हुई। सम्यक रतन तो मेरे सहज ही उत्पन्न भया। सो ऐसे सुखकी महमा मैं कौन कहो। अहो भगवानजी तुमारे गुनकी महमा करता जिह्वा त्रप्ति होय नाही। तुम्हारे गुन अनमोदना करता मन त्रप्ति होय नाहीं। अरु तुमारे रूपको अवलोकन करता नेत्र त्रप्ति होंय नाहीं। हे भगवानजी मेरे ऐसा उत्कृष्ट पुन्य उदय आया अरु ऐसी काल लब्धि आय प्राप्त भई जाके निमित्तकर सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्य पूज्य सो आज ऐसे देव पाये। सो धन्य मेरा मनुष्य भव सो आपके दर्शनकर सफल भया। पूर्वं अनन्त पर्याय तुमारे दर्शन विना विफल गये। अहो प्रभूजी तुम पूर्वं तीन लोक पूज्य पवित्र नव तू छोड़ संसार देहसू विरक्त होय भो भगवान भोग भाव असार जान मोक्ष उपादेय मान स्वमेव अर्हंती दिक्षा धरी। ततकाल ही मन पर्यय ग्यान भया। पीछे शीघ्र ही केवल ज्ञान सूर्यका निरावर्ने

उदै होय। लोकालोकके अनन्ते तत्व पदार्थ द्रव्य गुन पर्याय संयुक्त द्रव्य क्षेत्र काल भावने लिया तीन काल मध्य चराचर पदार्थ एक समयमे तुम्हारे ज्ञान रूपी आरसीमें स्वयमेव ही विना इन्द्रिय आन झलका ताकी महमा कहवाने सहस्र जिह्वासु इन्द्र भी समरथ नाही। वा वचनवल रिद्धके धारक गनधरादि महा जोगीसुर भी नाही। वहुरि भव्यजीवाका पुन्यके उदयते तुमारी दिव्यध्वनि निकसी सो एक अत महूर्तमे ऐसा तत्वोपदेस खिरे ताकी रचना शास्त्रमें लिखिये। तो उन शास्त्रोंसो अनन्त लोक पूर्न होयं। हे भगवान तुम्हारे गुनकी महमा कैसे करिये। वहुरि हे भगवान तुमारी वानीका अतिशय कहा कहिये। जो ऐसा खिरे अनक्षर रूप अनेक भेद लियां पीवे भव्यके कर्न सपुप्टमें पुद्गलकी वर्गना सब्द रूप प्रवर्ते। असंख्यात ऐसे चतुरन कायके देव देवांगना असंख्यात वर्ष पर्यंत प्रश्न विचारे थे। अरु असंख्याते मनुप्य वा तिर्यंच घना काल पर्यत प्रश्न विचारें थे तिनको अपनी भाषामे प्रश्नके उत्तर हुवे और जिन उपरान्त अनेक वाक्यका उपदेश देय तिस उपरान्त अनन्तानन्त तत्वके निरूपन अहला गया जूंय त्यूं अपरंपार एक जातके जलरूप वर्षा करे पीछे आम नारियल इत्यादि अनेक वृक्ष अपनी अपनी समर्थ माफिक जलका ग्रहन करे। अपने अपन स्वभाव रूप परनवे। वहुरि दर्याव तलाव कुआ वावडी आदि निवान अपने अपने माफिक जलका ग्रहन करे अरु अवषेश मेघका जल योंही जाय है। त्यों ही जिनवानीका उपदेश जानना बहुरि ता विर्षे हे भगवानजी तुम ऐसा उपदेश दिया। ये षटद्रव्य अनादि निधन हैं। तामें पांच द्रव्य तो

अचेतन जड है। जीव नाम द्रव्य चेतन है तामे पुद्गल मूर्तीक है अवशेष पांच अमूर्तीक हैं। येही छहों द्रव्यका समुदाय सो ही लोक कहिये। जहां एक आकास द्रव्य ही पाइये पांच न पाइये तासूं अलोक कहिये। लोक अलोकका समुदाय आकाश एक अनन्त प्रदेशी तीन लोक प्रमान असंख्यात प्रदेशी एक एक धर्म अधर्म द्रव्य है। अरु कालकी कालानु असंख्यात एक एक प्रदेस मात्र है। जीव द्रव्य एक एक तीन लोकके प्रमान असंख्यात प्रदेश समूह तें है जिनसो अनन्तगुने एक प्रदेस आकाशको घेरे पुद्गल द्रव्य अनंत है। सो चार द्रव्य अनादके थिर ध्रुव तिष्टें हैं। जीव पुद्गल ये गमनागमन भी करें हैं। सो दुहरा तीन लोक आकास द्रव्यके बीच तिष्ठे है। याका करता कोई और नाहीं। ये छहों द्रव्य अनन्तकाल पर्यंत स्वयं सिद्ध बन रहे है। अरु जीवनके रागभावन करि पुद्गल पिन्डरूप प्रकृति प्रदेसस्थित अनुभाग चार प्रकार बंध तासू जीव बंधे है। वाके उपदेसने जीवकी दशा एक विभावरूप होय है। निजभाव ज्ञानानंदमय धारया जाय है। जीव अनन्त सुखका पुंज है। कर्मके उदयतें महा आकुलतारूप परनवे है ताके दुखकी वार्ताको कहनेको समर्थ नाहीं। या दुखकू निवारवे अर्थ सम्यकदर्सन ज्ञानचारित्र-का उपदेस भगवान देते भये। तुमही संसार समुद्रमें डूबते प्रानीनको हस्ता लंबन हो। तुमारा उपदेस न होता तो ए सर्व प्रानी संसारमें डुबे हीं रहते तो बड़ा नल लहो तातै तुम धन्य हो अरु तिहारा उपदेश धन्य है। अरु तुमारा सासन धन्य है। तुमारा बताया मोक्षका मार्ग धन्य है। अरु धन्य तुमारे अनुसारी

मुन्यादिक सत्पुरुष ताकी महमा करने समर्थ हम नाहीं। कहां तो नर्क वा निगोदादिकके दुख वा ज्ञान वीरजकी नूनता अरु कहां मोक्षका सुख अरु ज्ञान वीर्यादिककी अनन्तता सो हे भगवान तुमारे प्रसाद कर यह जीव चतुर गतिके दुखको छोड़ मोक्षके सुखने पावे है। ऐसे परम उपगारी तुम ही हो। तातैं हम तुमारे ताईं वारंबार नमस्कार करें है। बहुरि भगवानजी म ऐसा तत्वोपदेसका व्याख्यान किया ये अधो लोक है, ये मध्य लोक है, यह ऊर्द्ध लोक है, तीन बात विलैकर वेष्टित है। वा तीन लोकका एक महा स्कध है। ता विषें अष्ट प्रतमा स्वर्ग विमान जड़ रहे है। बहुरि एकेन्द्री जीव बे इन्द्री जीव ऐते ते इन्द्री ऐते पंचे द्री ऐने तिर्यच ऐते मनुष्य ऐने देव ऐते पर्याप्त ऐते अपर्याप्त ऐते सूक्ष्म वा बादर ऐते नित्य निगोदके जीव ऐते अतीत कालके समय अनन्ते तासू अनन्त वर्गना स्थान गुने जीव रासका प्रमान है। अरु तासो अनन्त वर्गना स्थाना गुने पुद्गल रासका प्रमान है अरु तासू अनन्त वर्गना स्थान गुने अनन्त कालका प्रमान है। तासू अनन्त वर्गना स्थान गुने आकास द्रव्यका प्रदेसनका प्रमान है। तातै अनन्त वर्गना स्थान गुने धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्यका अगुर लघु नामा गुन ताका अविभाग प्रतिछेद है। तातै अनन्त वर्गना स्थान गुने सूक्ष्म निगोदिया अलब्धि अपर्याप्तनके सर्व जीवासू घाटिसू घाटि एक छोटे अक्षरके अनन्तवें भाग ज्ञान कोई ऐसा निरास पाइये है। ताका नाम पर्याय ज्ञान है वासूं कोईके ज्ञान त्रिकाल त्रिलोकमें घाट न होय। वह ज्ञान निरावरन रहे है वापर ज्ञानावरनीका

आवरन आवे नाहीं। जे आवरन आवे तो सर्व ज्ञान घात्या जाय। सर्व ज्ञान घातवा कर जड़ होय जाय सो होय नाही। सो वह पर्जाय ज्ञान विषें अविभाग प्रतिक्षेप पाइये है। तातै अनन्त वर्गना स्थान गुने जघन्य छायक सम्यकके अविभाग प्रतिछेद पाइये है। तातै अनन्त वर्गना स्थान गुने केवल ज्ञान केवल दर्शनका आविभाग प्रतिछेद पाइये है। सो ऐसा भी उपदेश तुम ही देते भये और भात उपदेस तुम दिया जो एक सुईकी अनीका डागला ऊपर असंख्यात लोक प्रमान अषध पाइये है। एक एक सखंदमें असंख्यात लोक प्रमान अंडर पाइये है। एक एक अंडा विषें असंख्यात लोक प्रमान आवास पाइये है। एक एक आवामें असंख्यात लोकप्रमान पुलवी पाइये है। एक एक पुलवी विषें असंख्यात लोक प्रमान शरीर पाइये है। एक एक शरीर विषें अंतकालके समयासूं अनंतानन्त वर्ग स्थान गुन जीव नामा पदार्थ पाइये। एक एक जीवके अनन्त अनन्त कर्म वर्गना लागी है। एक वर्गना विषें अनन्त अनन्त परमान पाइये है। एक एक परमानूके साथ अक्रम निसर सो पचये जीव राससो अनंतानन्त गुनी प्रमान विषें अनन्त अनन्त गुण वा पर्याय पाइये है। एक एक गुन वा पर्यायका अनन्त अविभाग प्रतिछेद है। ऐसी विचित्रता एक सुईकी अनीका डागरा ऊपर निगोद रासके जीवा विषें पाइये है। सो ऐसे जीव ऐसो परमानू कर वेढ़त वा वर्गना कर अक्षादित जीवांसूं तीन लोक घीका घडावत अतिसय कर पूर्न भरया है। सो एक निगोद शरीर माहिला जीव ताके अनन्तवें भाग भी निरंतर मोक्ष जाने कर तीन कालमे घटे नाहीं और

ऐसा उपदेस भी तुम ही देते भये। बहुरि वेई सुईकी अनीका डागला ऊपर पूर्वे कहे जीव तीन लोकके लाया कर्म व अकर्म रूप अनता अनन्त गुनी प्रमान वा एक सुईकी अनीका डागला ऊपर आकास पाइये है। ता विर्षे अनन्तानंत प्रमान वापुली तिष्टै है। अनंता सखंध दो दो प्रमान वाका तिष्टै है। ऐसे है। एक एक परमानू अधिक अधिक स्कंध तीन परमानू वाका स्कंध सो लगाय अनंत परमानू वाका स्कध पर्यंत अनंत जातके सकंध एक एक जातके स्कंध सो भी अनत अनत सुईका अग्र भागमे अनंत परजाय अनंत गुण अनत अविभाग प्रतिछेद तीन काल सम्वंधी उत्पाद व्यय ध्रुवकी अवस्था सहित एक समयमें जिनेन्द्रदेव तुमही देखे अरु तुमही जाने अरु तुमही कहे। अरु या परमानू वाके परस्पर रूख सचिखन दूनाकादि वार्ता नाहीं। दो दो अंसांसू अधिकता ये सग कर सजनध विषयबंध सुजातिबंध विजातिबध ऐमे परमानू वाका परस्पर बध। वा निःकारन रूख सचिकन असाका समूह ताकी परपाटी लिया बंधने कारन है। वा अकारनका स्वरूप भी तुमारे ज्ञान विर्षे झलके। अरु दिव्यध्वनि कर कहते भये सो हे जिनेन्द्रदेव तुमारा ज्ञान रूपी आरसी कैसी बडी है। ताकी महमा कहा लग कहिये। बहुरि हे भगवान हे कल्यानिधि हे दयामूरत हम कहा करे प्रथम तो हमारे सरूप ही हमने दीसे नाहीं। अरु हमने दु ख देनेवारे दीसे नाही। अरु वाका कहा अपराध हम पूर्वं किया। ताकर हमारे ताई कर्म तीव्र दु'ख देहैं। अरु ये कर्म किसी भांत सों उपसात होंय सो ही हमने दीसे नाहीं। अरु हमारा

निज स्वरूप कहा है। कैसा हमारा ज्ञान है कैसा हमारा दर्सन है। कैसा हमारा सुखवीर्य गुन हम कौन हैं। हमारा द्रव्य गुन पर्याय कहा है। पूर्वे हम किस क्षेत्रमें किस पर्यायकूं धरें तिष्टे थे। अब इस क्षेत्र ई पर्यायमे कौन मित्रने ल्याय प्राप्त किये। अरु अब हम कहा कर्तव्य करें हैं अरु कौनका परनाया परनवे हैं। सो जाके फल अच्छे लागेंगे वा बुरे लागेंगे हम कहां जायेंगे कैसी कैसी पर्याय धरेंगे सो हम किछू जानते नाही। तो हमारे खुशीका उपाय जो ज्ञान सो कैसे पावें जो हमारे ही ऐता ज्ञानका क्षयोंपसम होते परम सुखी होनेका उपाय भासे नाहीं तो एकेन्द्री आदि अज्ञानी तिर्यंच जीव वा नारकी महा कलेस कर पीडत जाके आंखके फरकने मात्र भी निराकुलताका कारन नाही। तो उन जीवनक कहा दोप परन्तु धन्य है आपकी दयालुता। धन्य है आपका सर्वज्ञ ज्ञान। धन्य है आपका अतिशय अरु धन्य है आपकी परम पवित्र बुद्धि। धन्य आपकी प्रवीणता अरु विचक्षनता सो आप दया बुद्धि कर सर्व ही वस्तुको भिन्न भिन्न बतावो हो। अरु आत्माका निज स्वरूप अनन्त दर्शन अनन्त ज्ञान अनन्त सुख अनन्तवीर्यका धनी आप सादृस्य बताया अरु द्रव्यसों रागादिक भावको उपजावन बताओ। राग-द्वेष मोह भावनकर कर्मनसू जीव बंधते आये। पीछे वा काल विषै जीव महा दुखी होते दिखाये। वीतरागता कर कर्मनसू निर्बंध निराश्रव होना दिखाया। वीतराग भावोंसू ही पूर्व संचित दीर्घकालके कर्म ताकी निर्जरा होनी बताई। निर्जराके कारन कर निज आत्माकी जाति केवलज्ञान केवल सुख प्रगट होना दिखाया।

ताहीका नाम मोक्ष है। बंध आश्रवतें छूटनेका नाम मोक्ष है। वा मुक्त है। वा हित है वा भिन्य कहो। अरु नर्क तिष्ठते जे जीव तिने मोक्ष की सिद्ध होती तो सर्व सिद्धांकी अवगाहना विषैं अनन्ते पाचों थावर सूक्ष्म वादर बताइये है तो महा दुखी क्यों होते। तातैं निरनै कर आपना ज्ञानानंद सुभाव धारया गया छे। वाहीका नाम बंध था सो ज्ञानावर्नादिक कर्म अभाव होतें सुफुरायमान हुआ जेसे सूर्जका प्रकाश वादर सूं रुक रहा था) वादलके अभाव होते संपूर्न प्रकास विगसाय मान होय त्यो ही कर्म पटल विगसे ते ज्ञान सूर्य विगसाय मान भया अरु ऊर्ध जाय तिष्टा सो जीवाका ऊर्द्ध गमन स्वभाव है ताते ऊर्ध गमन किया। अरु आगे धर्म द्रव्य नाहीं। तातैं धर्म द्रव्यके कारन विना आगे गमन किया। उहा ही तिष्टे सो अनंतकाल पर्यंत सास्वता सुख रूप तीन लोकके नेत्र वा तीन काल लोकालोकके देखने रूप ये ज्ञान दर्शन नेत्र अनंत वल अनत सुखके धारी सिद्ध महाराज तीन लोक कर तीन काल पर्यंत पूजित तिष्टसी सो हे भगवान ऐसा उपदेश भी तुमही दिया सो प्रभू इह उपगारकी महमा कहा ताईं कहिये अरु कहा तुमारी भगत पूजा वंदना स्तुति करें। ताते हम सर्व प्रकार करनेको असमर्थ हैं। अरु तुमतो परम दयाल हो ताते मो पर क्षिमा करो। तासों हे भगवान मेतो और किछू समझता नाहीं। मे तो महा अज्ञान महा मुर्ख अविवेकी तुमारी कहा भक्ति करें यह मेरे तांई वडी असंभव फिकर है। जो हम तुमारी स्तुति महमा करने लज्जायमान हों हैं। परन्तु कहा करें तुमारी भक्ति महा हठ पने कर जौवरी वाचाल करै है। सो तुमारे चरनारविंद विषें नंम्री-

भूत करे है। तातै तुमारा चरनाने वारंवार नमस्कार होहु। ये ही चरन जुगल मोने संसार समुद्र विषें परसी रापसी। वहुरि अग्नि कायके जीव असंख्यात लोक प्रदेस समान है। तातै असंख्यात लोक वर्ग स्थान एक निगोदके शरीरके प्रमान है। तातै असंख्यात लोक वर्ग स्थान गये निगोद एक शरीरकी स्थितका प्रमान है। तातै असंख्यात लोक वर्ग स्थान गये योगाके अविभाग प्रतिच्छेद है। सो भी असंख्यातके ही भेद हैं। सो हे भगवानजी ऐसा उपदेश तुमही दिया। वहुरि जे असंख्याते दीप समुद्र हैं। ए अढाई दीप प्रमान मनुष्य क्षेत्र है ताका भी निरूपन तुमही किया। यह जोतिक पटल है। ताके प्रमान जुदे जुदे दीप समुद्र तुमही कहे। वहुरि पुद्गल परमानू वा इनका स्कंधका प्रमान महां स्कंध पर्यंत तुम कहा इत्यादि अनंत द्रव्योंके तीन काल संबंधी द्रव्य गुनपर्याय वा द्रव्यके क्षेत्रकाल भाव सहित और स्थान लिये अनंत विचित्रता एक समयमें लोकालोककी तुमही देखी। सो तुमारे ग्यानकी अद्भुत महिमा तुम्हारे ही ज्ञान गम्य है। तातैं तुमारे ही ज्ञानकूं फेर भी हमारा नमस्कार होहु। अहो भगवान तुम्हारी महिमा अथवा तुम्हारे गुणनकी महमा देख अति अचरज उपजै है। अरु आनन्दका समूह उपजै है। ता करि हम अति त्रप्त हैं। तातै हे भगवान जीव दया अमृत कर भव्य जीवांने तुमही पोखो हो। तुमही त्रप्ति करो हो तुमरे वचन विना सर्व ही लोक अलोक सून्य भये हैं। तातैं समस्त जीव भी सून्य हो गये सो अब तुमारे वचन रूप किरनन कर अनादका मोह तिमिर मेरा विलय गया अब मोने तुमारे

प्रशाद कर तत्व अतत्वका स्वरूप प्रतिभासो। ज्ञान लोचन मेरे उघटे ताके सुखकी महिमा मोपे न कही जाय। तासूं हे भंगवानजी ससार सकटसे निकालनेको नि कारन परम वैद्य थे मोने अद्भुत दीखो हो तातै तुमारे चरनार बिन्दु सू वहुत अनुराग वर्तै है। सो भव भवके विषं पर्याय पर्यायके विषं एक तुमारा चरननकी सेवा ही पाउ जे पुरुष धन्य है जो तुमारे चरनाने सेवे है। तुमारे गुनाकी अनुमोदना करे हैं। तुमारे रूपने देखें है तुमरे गुनानुवाद गावें हैं। तुमरा वचनका नाम सुने हैं। मनविषें निश्चे धारे है। तुमारा चरन पूजें है। तुमारा ध्यान करें है। तुमारे गुनानुवाद गावें हैं तुमारा वचनका नाम सुने हैं। मनविषें निश्चै धारें हैं। तुमारा चरनाने अर्घ दे है तुमारी महमा भावे है। तुमारे चरनाकी रज व गधोदक मस्तकादि नाभि पर्यंत उत्तम अग तामें लगावें है। तुमारे सन्मुख खडे होय हस्तांजुली जोड नमस्कार करें हैं। अरु तुम ऊपर चमर ढोरे है ते पुरुष धन्य है। वाकी महमा इन्द्रादिक देव गावें। वे ही कृत कृत्य है वे ही पवित्र है। वाहीने मनुष्य जनम सफल किया। ताही ने भवविलाकू जलाजल दिया वहुरि हे जिनेन्द्र देव हे कल्यानके पुज हे त्रैलोकके तिलक अनत महमा लाईक परम भट्टारक केवल ज्ञान केवल दर्शन ये जुगल नेत्रके धारक सर्वज्ञ वीतराग तुम जयवत प्रवर्तो तुमारी महमा जयवंत प्रवर्तो तुमारा सासन जयवत प्रवर्तो धन्य यह मेरी परजाइ में तुम सारषें अद्भुत पदार्थ पाये ताकी अद्भुत महिमा कौन कर सके अरु तुमही माता तुमही पिता तुमही बंधव तुमही मित्र तुमही परम उपगारी तुमही, छैं

कायकी पीर हरी तुमही भवसमुद्रमें पड़ते प्रानीनको आधार हो और कोई त्रैकालमें नाही। आवागमन सों रहित करवाने तुमही समर्थ हौ। मोह पर्वतके फोड़वाने तुम वज्रायुध हो घातिया कर्मनका चूर करवाने तुम अनन्त बली हो अहो भगवान तुम दोऊ हाथ लांबा किया अरु भव्य जीवाने संसार समुद्रमाहींसू काढ़िवाने हस्तालंबन दिया है। बहुरि हे परमेश्वर हे पर्मजोति हे चिद्रूपमूर्ति अनन्त चतुष्टयकर मंडित अनन्त गुनाकर पूरित तुमारी कैसी वीतराग मूरत आनन्दमय आनन्द रसकर अहलादित महामनोग अद्वैत अकृत अनादि निधन त्रिलोकपूज्य कैसी सोहे ताका अवलोकन कर मन वा नेत्र सीव्र होय हैं। बहुरि हे केवलज्ञान सूर्ज षट द्रव्य नव पदार्थ पंचास्तिकाय सप्त तत्व चौदह गुनस्थान चौदह मार्गना वीस प्ररूपना चौवीस ठाना ग्यारा प्रतिमा बारा वृत दश लक्षनीक धर्म षोड़स भावना बारा अनुपेक्षा चार भावना अठाईस मूल गुन चौरासी लाख उत्तर गुन तीनसै छत्तीस मतिज्ञानके भेद अठारा हजार सीलके भेद साढा सेतीस हजार प्रमादके भेद अरहन्तके छयालीस गुन आचार्यके छत्तीस गुन उपाध्यायके पच्चीस गुन साधुके अट्ठाईस गुन श्रावकके एकवीस गुन समकितके आठ अंग तिनके पच्चीस दोष मुनि आहारके छयालीस दोष तिनमे बत्तीस अंतराय चौदह मलदोष नोधा भक्ति दातारके सप्त गुन चार प्रकार आहार चार प्रकार दान तीन प्रकार पात्र एकसो अड़तालीस कर्मप्रकृति बंध उदय सत्ता उदीरना अरु आश्रवका सत्तावन भेद अरु त्रेपन क्रिया इनके षट त्रिभंगी सो पाप प्रकृति अड़सट पुन्य प्रकृति सेंतालीस अघातिया प्रकृति एकसो एक घातिया प्रकृति

इकवीस सर्व घातिया छवीस देसघातियाकी प्रकृति षेत्रविपाकी चार भवविपाकी चार बहत्तर जीवविपाकी उनसठ पुद्गलविपाकी प्रकृति दस कर्नचूलका नय प्रस्तचूलका पाच प्रकार भागाहार प्रति प्रदेस संस्थित अनुभाग बंध इत्यादिक इनका भिन्न भिन्न सरूप तुमही प्रगट किया अरु उपदेस देते भये। बहुरि प्रथमानुयोग करनानुयोग चरनानुयोग द्रव्यानुयोग चार सुकथा चार विकथा तीनसे त्रेसठ कुवाद वा कुवादके धारक जोतिक वैद्यक मंत्र यंत्र पांच वा आठ प्रकार निमित्तज्ञान, न्याय नीत छंद व्याकर्न गनित अलंकार आगम अध्यात्म शास्त्र निरूपन भी तुमही करते भये चौदे धारा तेईस वर्गना जोतिगी व्यतर भवनवासी कल्पवासी सप्तनर्क तिनका पूर्वला पराक्रम सुखदुखका विशेष निरूपन तुमही करते भये। अढाईद्वीपके छेत्र कुलाचल द्रह कुड नदी पर्वत नव क्षेत्रकी मर्यादा आर्य अनार्य कर्मभूमि भोगभूमि कुभोगभूमिकी रचना आचरन अवसर्पनी उत्सर्पनी कालकी फिरन पल्य सागर आदि आठ असंख्यात सख्यात अनन्तके इकीस भेद पच प्रकार परवर्तन इनका निरूपन भी तुमही कहते भये। मनुष्यक्षेत्र त्रसनाडी सिद्धक्षेत्र लोक अलोकके भेद तुमही कहते भये। सो हे भगवान हे जिनेन्द देव हे अरहत देव हे त्रैलोक गुरु तुमारा ज्ञान कैसा है ऐसा ज्ञान तुमारे एक समयमें कैसे भया मेरे या बातका आश्चर्य तुमारे ज्ञानके अतिशयकी महमा हजार जिह्वा कर न कही जाय हम तो एक ज्ञेयने ऐके काल तुच्छ वस्तु ने नीऽ जान सके तातै हे दया मूरत आप सारषे हमकूं भी कीजिये मेरे ज्ञानकी बहुत चाह है। तुम परम दयालु हो मनवंक्षित वस्तूके देनहारे हो। तातैं मेरा मनोरथ

सिद्धि कीजिये। या बात में ढील न करोगे हे संसार समुद्रके तारक मोह मल्लके विजई घातिया कर्मके विध्वंसक काम सत्रुके नाशक समोसरन लक्ष्मी सों विरक्त आपको सर्व प्रकार समर्थ जान तारन वृद्धिकू मान आपके चरननकी सरन आयो हूं सो हे जगत बंध हे सरनागत प्रतिपाल हे पितर हे दया भंडार मोने चरनकी सरन जान रक्ष रक्ष मोह कर्मते छुड़ाय छुड़ाय कैसा है मोह कर्म लोकका समस्त जींवाने आपना पौर पकर ज्ञानानंद पराक्रम आदि समस्त जीवांका स्वभाव निधि लक्ष्मीको लूट शक्ति हीन कर जेलमें राख दिये केईक तो एकेन्द्री जात भावसीसे परे छे महा घोरान घोर दुख पावे है ताके दुखका अर्थ के तो ज्ञानी पुरुषाने भासे है। वचनन कर न कहा जाय अरु केईक जीव वेइन्द्री पर्यायमें महा दुखद है। केईक जीवांने ते इन्द्री चौइन्द्री असेनी सन्मूर्छन ताके महादुख भोगवे है सो तो दुख प्रत्यक्ष इन्द्री गोचर आवे है। सो तुम ही सिद्धांतमें दुखनका निरूपन किया तातै तुमारे वचन अनुमान प्रमानकर सत्य जान्या बहुरि केई जीव नर्कमें पड़े पडे बहुत विल्लावे हैं रोवे हैं हाय हाय शब्द करें हैं। आपतो आनकू मारे है। औरां कर आप हत्या जाइ है। तहां छेदन भेदन मारन तारन तापन सूलारोपन ऐ पाच प्रकारके दुखकर अत्यंत पीड़ित भूमिकी दुःस्सह वेदना कर परम आकुलता पाइए हैं। कोटान रोग कर शरीर दग्ध होय है ऐसे दुख सहनेकूं नारकी असमर्थ है कायर हैं दीर्घ आयु सागरा पर्यंत दुःख भोगवे हे। ऐसे मोह दुष्टके वसी हुआ फेर मोह ही करे है। अरु मोह हीने भला माने है। मोह ही के सरन रहा चाहे

है। अरु परम सुखने बांक्षे है। सो यह भूल केवल तुमारे उपदेश विना वा तुमारे गुन जाने विना तुमारी आज्ञा सिरपर धारे विना त्रिकाल त्रिलोकने दुखका कारसा मोह ताने जीत सके नाही। अरु मोहने जीत्या विना दुखकी निर्वृति होय नाही निराकुल सुखकी प्राप्ति नाही तातै तुम शीघ्र ही मेरा परम वैरी मोह ताका विनाश करो, यह कारज आपहीने करनो आयो, ताका विचार कहा करना अरु मो औगुन दिस कहा देखना, मे तो औगुनका पुज हूं सो अनादिका बन्या हू। सो मेरा औगुन देखो तो परम कल्यान कारजकी सिद्धि नास हुई। औगुन ऊपर गुन तुम हीसे सत्पुरुप करें है। कुदेवादिक नीच पुरुष है ते गुन ऊपर औगुन ही किया मे तो वाने भला जान सेया पूज्या वंद्या स्तुति कीनो तो भी मोने अनन्त संसारमे रुलाय महा त्रास दीनो ती वेदनाकी वारता बचनान कर न कही जाय सो कैसे है सत्पुरुप ताका दिष्टान्त दीने है। तैसे पारसने लोहका घन सो ठोके सो पारस ऊने सुवर्णमई करे। चदनने ज्यू ज्यू घिसे त्यू त्यू सुवास देय ईखने ज्यू ज्यू छेदे त्यू त्यू अमृत रस देय। जल आप जले दुग्धने वचाय लेय। सो ऐसा जाका जात सुभाव है। काहूका मेटा मिटे नाहीं सर्प दुग्ध दधि पिये परन्तु वह प्रान ही हरे सन आपना चाम उपडाइ अन्यकू वांधे माखी अपना प्रान देय ओराने बाधा उपजावे सो ये कुदेवादिक जे दुर्जन पुरुष ताके स्वभाव सम जानना याका सुभाव भी मिटै नाही। मत्र यंत्र तंत्र नाही तातै सुभाव तर्कनासे सो अब जिनेन्द्रदेव तुमारे प्रसाद कर कुदेवादिकका स्वरूप भली भांति जान्या सो

अब हम विध रिचतु दूर हीने तज्या धिक्कार होहु ऐसा विषफल खावाने अरु कुदेवादिकका आचरने अरु हमारी भी पूर्व अवस्थाने धिक्कार होय अरु अब मेरे हे जिनेन्द्र देव थाकी सरधा आई सो मेरी बुद्धि धन्य है अरु मैं धन्य हो मेरा जनम सफल भया मैं कृत कृत्य भया मेरे चाह थी सोई भई अब कार्य करना कछू रहा नाहीं। संसारके दुखते तीन चूल जरु दिया ऐसा तीन लोकमें वा तीन कालमें पार कौन है, सो भगवानका दर्सनतें वा पूजातें वा ध्यानतें वा सुमरनतें वा स्तुतितें नमस्कारतें अरु ज्ञानतें जिन सासनका सेवनतें जाय नाहीं। ज्यो कोई अज्ञानी मूर्ख मोहकर ठगाई है बुद्धि जाकी ऐसे अरहन्तदेवकूं छोड़ कुदेवादिकने सेवे हैं वा पूजे हैं अरु मन वांछत फलने चाहे हैं सो मनुष्य नाहीं पसु हैं या लोकमें वा परलोकमें ताका बुरा होना है। जैसे कोई अज्ञानी अमृतने छोड़ व चिन्तामनने छोड़ काच खंडने पल्ले बाधे कल्पवृक्षने छोड धतूरो बोवे त्योही मिथ्यादृष्टि श्री जिनेन्द्रने छोड कुदेवादिकका सेवन करे हैं घनी कहा कहिये वहुरि हे भगवान ऐसी करहु जो गर्भ जन्म मरनका दुखकी निर्वृत्य होय अब मेरे बूते दुख सहा जाता नाही वाका सुमरन किये ही दुख अपने तो सह्या कैसे जाय तातै कोट बातकी एक बात ये है मेरा अवगुन निवारिये अष्ट कर्मा तें मोक्ष करिये केवल ज्ञान केवल दर्शन केवल सुख अनंत वीर्य यह मेरा चतुष्टय स्वरूप घाता गया है। सो ही घातिया नासने प्राप्त होहु मेरे सुर्गादिककी चाह नाहीं मेतो परमानू पर्यतका त्यागी हूं मेरे तो त्रैलोकमे स्वर्ग चक्रीपद कामदेव तीर्थंकर पद पर्यंत चाह नाहीं। मेरे तो मेरा स्वभावकी वांक्षा है। चाहे जैसे स्वभा-

वकी प्राप्ति होय। सुख छे सो आत्म स्वभावमे छे सो में स्वभाव सुखका अर्थी हूं तातैं निज स्वभावकी प्राप्तिको अवश्य चाहूं हूं सो तुमारे अनुग्रह विना व सहकारी विना यह कार्य सिद्ध होय नाहीं तातै और सर्व कुदेवादिकने छोड तुम्हारे ही सरन प्राप्त भया हू मेरा करतव्य था सों तो कर चुक्या अब करतव्य तुम्हारा है। तुमने तरन तारन विरध धरया है सो अपना विरध राष्या चाहो हो तो मोने अवश्य तारो त्यों तारने तेंही तुमारी कीर्ति लोकमे फैली है। आगे अनंत काल पर्यंत रहेगी सो हे प्रभू आप उद्धत विरध धरयो है। अरु अनंत जीवाने मोक्षदीनी अंजनचोर सारखा अधम पुरुष ताको थोडे ही कालमें शीघ्र ही मोक्ष पहुंचाया और भरत चक्रवर्त्त सारखा बहु परिगृही ताने एक अतर महूर्तमे केवलज्ञान पाया श्रेणिक महाराजने गुरू-का अविनय किया मुनका कठ विषें सर्प डारया बोधमती हूवो ता पाप कर सातवा नर्कको आयु बधी ताकू तुम मिहरवानी कर आप सारखा एका भवतारी कर लिया इत्यादि घनाही जीवाने तारे सो अब प्रभूजी मेरी वेर क्यो ढील कर राखी है। सो यह कारन कहा है। हमने जाने तुम वीतराग परमदयालु कहावो सो मेरी दया क्यों न करो मेरी वेर ऐसा कठोर परनाम क्यो किया सो आपने यह उचित नाही। अरु में घना पापी था तो भी तुम पास पूर्वेही क्षमा कराई तातै मेरा अपराध क्यों भी रहा नाहीं। तीसों अत्रमे नेम कर ऐसा जानो हो। जो मेरे भी थोरे भव बाकी रहे हैं। सो परताप तुमारा ही है। सो तुमारे जस गायवेकर कैसे त्रप्त हूजिये सो धन्य तुमारा केवलज्ञान धन्य तुमारा केवल सुख

धन्य तुमारा अनन्त वीर्य धन्य तुमारी परम वीतरागता धन्य तुमारी उत्कृष्ट दयालुता धन्य तुमारा उपदेश धन्य तुमारा जिनसासन धन्य तुमारा रत्नत्रय धर्म धन्य तुमारे गनधरादि मुनि व श्रावक व इन्द्रादि अवृत सम्यकदृष्टी देव मनुष्य सो तुमारी आज्ञा सिरपर धारें हैं। तुमारी महिमा गावें हैं ताते घनी महिमा तुम्हारी कहा तक कहिये। तुम जयवंत प्रवर्तो अरु हम भी तुमारे चरननके निकट सदैव तिष्टैं महा प्रीतसों भी जयवंत प्रवर्तो। इति श्रीजिन दर्शन संपूर्न। बहुर मार्गमे जेती वार जिन मंदिर आगे होय निकसिये तेती वार श्रीजिनका दर्शन करे विना आगे न जाइये। अथवा बहुवार जिनमंदिरके निकट आद्या समागवन करना पड़े तब बहुवार दर्शनका साधन सधे नाहीं तो बाह्य सों नमस्कार कर आगे जाना नमस्कार करे विन न जाना अरु मदिरके विषें जेतीवार प्रतिमाजी आमू सामू गमन करता दृष्टि पड़ें तेतीवार दोनो हस्तक मस्तकको लगाय नमस्कार करिये। बहुरि जो असवारी चढ आया होय अरु जिनमंदिर दृष्टि पड़े तो असवारी तें उतर पयादे गमन करे अरु चढ़ा जिनमंदिर पर्यंत चला जाय तो यामें बडा अविनय है। अरु अविनय सोई महापाप है। अरु विनय सोई धर्म है देवगुरु अरु धर्म इनके अविनय उपरान्त अरु कुदेवादिकके विनय उपरान्त पाप तीन लोकमें हुवा न होसी न है। त्यों ही जासू उल्टा देवगुरु धर्मका विनय उपरान्त अरु कुदेवादिककी अवज्ञा उपरान्त धर्म तीन लोक तीन कालमें हुवो न होसी न है। तीसों देव गुरु धर्मके अविनयका विशेष भय राखना यामे चूके कही ठीकाना नाहीं। घनी कहा लिखिये।

कोड उपवास किये कैसा फल एक जिनदर्शन किया होय है। अरु कोड वार जिनदर्शन किये बरावर एक दिन पूजन किये कर फल होय है। तातै निकट भव्य जीव है ते श्रीजीका नित दर्शन पूजन करो दर्शन किया विन कदाच भोजन करना उचित नाहीं। अरु दर्शन किया विन कोई मूढ बुद्धि सठ अज्ञानी रोटी खाय है सो याका मुख मेत खाना बराबर है। अथवा सर्पकी वामी बराबर है जिह्वा है सोई सर्पनी है मुख है सो विलहै अरु कुभेषी कुलिंगी जिनमदिर विषें रहते होंय ते वा मंदिर विषें भूलकर भी जियें नाही। वहां गये सरधानरूपी रतन जाता रहे वहा विशेष अविनय होय सो अविनय देखवे कर महापाप उपजे जहा जहां जो भेषी रहे तहां श्रीजीकी विनयका अभाव है। सो विनय सहित एक ही वार श्रीजीका दर्शन करिये तो महा पुन्य बंध होय अरु अविनय सहित ज्यों ज्यों घनीवार दर्शन करे त्यो त्यों घना घना पाप उपजे अपने माता पिताने कोई दुष्ट पुरुष अविनय करे जो आप समर्थ होय तो वाका निग्रह करे अरु अपने माता पिताने छुडाय विशेष विनय करे अरु जो अपनी समर्थता न होय तो वा मार्ग न जाय वाका बहुत दरेग करिये तैसे ही श्री वीतराग देवका जिनविम्बका कोई दुष्ट पुरुष अविनय करे तो वाका निग्रहकर जिनविम्बका विशेष विनय करिये। अरु अपनी समर्थता न होय तो वा अविनयके स्थान कदाच न जेये। जहां कुवेष्या रहै तहां घोर अनेक तरहको पाप होय है। उहा जाने वारे कुवेष्याके पास गृहस्थ भी वाका उपदेश पाय वा सारपे ही अज्ञानी मूढ कषाई वज्रमिथ्याती होय

हैं । तातैं वाका संसर्ग दूर ही ते तजना योग्य है जो पूर्वें हल्का मिथ्यात कषाइ होय तो वहां गये अपूर्व तीव्र होय जाय तो धर्म कहां ते होय धर्मका लुटेरा यसु कोई धर्म चाहे तो वह मोहकर बावला होय जाय जैसे सर्पकू दूध प्याय वाका मुखसेती अमृत चाहे सो अमृतकी प्राप्ति कैसे होय । त्योंही कुवेष्याकी संगतिसों अधर्म होय वे धर्मके निदक परमवैरी हैं अधर्मके पोषक मिथ्यातका सहायक हैं एक अंसमात्र प्रतिमाजीका अविनय होय तो नेमकर नर्कका बंध पडे अरु जाके घोरानघोर अनेक तरहका अविनय पाइये तो वाका कहा होनहार है। सो हम न जाने सर्वज्ञ जाने अरु भेषी या कहे हे के प्रतिमाजीके केसर चन्दन लगायवो योग्य है ताका नाम विलेपन है । अनेक सास्त्रनमे कहा है । अरु भवानी भेरु आदि कुंदेवादिककी मूरत आगे स्थाप पहले वाका पूजन करे नमस्कार करे अरु प्रतिमाजीकूं गने भी नाहीं । आप सिहासन ऊपर बैठ जगतमें पुजावे अरु मालीनसे अनछान्या पानी मगाय मैला कपड़ासू प्रतिमाका प्रक्षाल करे जेते पुरुष स्त्री आवे तेता सर्व विषे कषायकी वार्ता करे धर्मका लेस भी नाहीं इत्यादिक अविनयका वर्नन कहां लग करिये सो पूर्व विशेप वर्नन कहा है । अरु प्रतक्ष देखनेमें आवे है । ताकू कहा लिखिये सुभूम चक्रवर्त हनुमतकी माता अंजनी श्रेनिक महाराज नवकार प्रतिमा निर्ग्रंथ गुरु ताका तनक सा अविनय किया था सो वाकूं कैसा पाप उपज्या अरु मिड़क वा माली शूद्रकी कन्या श्री जिनके आगे फूल चढ़ाया सो योग्य ही है । सो फूल चढायवाका वाके तनकसा अनुराग

था सो स्वर्गका पद पाया तीसूं जिन धर्मका महात्म अलौकीक है। तातैं प्रतिमाजीका वा सास्त्रका वा निर्ग्रंथ गुरूका इनके अविनयका विशेष भय राखना। कोई यह प्रश्न करे प्रतिमाजी तो अचेतन हैं ताके पूजे कांई फल निपजे ताका सामाधान मत्र तंत्र जंत्र औषद चिन्तामन रतन कामधेन चित्रावेल पारस कल्प वृक्षने अचेतन हैं अरु वांछितफल दे है अरु चित्रामका स्त्री विकार भव उपजावे हैं पीछे वाका फल नर्कादिक लागे है। त्योंही प्रतिमा जान निर्विकार शांति मुद्रा ध्यान दशाकूं धरें तिनका दर्शन किये वा पूजन किये मोह कर्म गले राग दोष विलय जाय ध्यानका स्वरूप जान्या जाय तीर्थंकर महाराज वा समान केवलीकी छवी याद आवे है सो वाके निमित्तकर ज्ञान वैराज्ञकी विशेष वृद्धि है। ज्ञान वैराज्ञ ही मोक्ष मार्ग है। अरु शास्त्र भी अचेतन है। ताका अवलोकन कर आत्म ज्ञान वैराज्ञकी वृद्धि होती देखिये है। जे ते धर्मके अंग हैं ते ते सर्व शास्त्रनतें जानिये ता जानवे कर यह वस्तु त्याग सहज ही होय जाय उपादेयका ग्रहन कर लेय पीछें मोक्ष होय जाय सो वह निर्वान अविनेस्वर है। तातै यह बात सिद्ध भई। इष्ट अनिष्ट फल कारन एक शुभाशुभ परनाम हैं। अरु इन परनामनके कारन अनेक ज्ञेय पदार्थ है। कारन विना कारजकी सिद्धि त्रिकालमे नही जैसा कारन मिले तैसा कार्य निपजे तातै प्रतिमाजीका पूजन सुमरन ध्यान अविषेक परम उछव विशेष महिमा करनी उचित ही है। जो कोई मूर्ख अज्ञानी अवज्ञा करे ते अनन्त संसार विषें भ्रमे है। चतुर गतिके जीवकूं मुख्य धर्म श्री जिन प्रतिमाका पूजन कहा है। तातै सर्व

प्रकार त्यारा वारंवार त्रैलोकमें जिनविम्ब है। तिनकूं नमस्कार होहु अरु भवभवमें इनहीका सरन होहु। याहीकी सेवा प्राप्ति होहु याकी सेवा विन एक समय भी मत जावो मोनें अनादि कालते संसारमें भ्रमन करता भाग्य उदें काल लब्धिके जोगतें यह निध पाई सो दीरघ कालका दरिद्री चिन्तामन रतनतें पाय सुखी होय त्यो मे श्री जिन धर्म पाय सुखी हूवो सो अब मोक्ष होने पर्यंत यह जिन धर्म मेरा हृदामें सदैव अंतर रहित तिष्टो यह मेरी प्रार्थन श्री जिन विम्ब पूर्न करो घनी कहा अर्जी करै दयालु पुरुष थोड़ी अर्जी किये वहुत मांगेगे। इति दर्शन संपूर्ण। आगे अपने इष्टदेवकूं विनयपूर्वक नमस्कार कर सामायिकका स्वरूप कहे हैं। सो हे भव्य तू सुन। दोहा—सात भाव जुत वंदके तत्व प्रकाशन सार। वे गुरु मम हिरदे वसो भवदधि पार उतार॥ सो सामायिक नाम समभावका है। सामायिक कहो भावे समभाव कहो। भावे सुद्धोपयोग कहो भावे वीतराग भाव कहो। भवे निकषाय कहो ये सब एकार्थ हैं। सो यह कारन कार्यकी सिद्धि होनेके अर्थ वाह्यकी क्रिया साधन कारनभूत है। कारन विना कार्यकी सिद्ध नाही। तातै वाह्य कारनका संजोग अवश्य करना योग्य है। सो द्रव्य क्षेत्र काल भाव चार प्रकार है। द्रव्य तो श्रावक एक लंगोट तथा एक औछीस वडा पनाकी तीन हाथकी धोवती अरु एक मोरपिछका राखे वहुरि सीतकालमें सीतकी परीषह उघड़ा शरीर सों न सही जाय। एक स्वेत वस्तर इह नोटे सूतका तासू डील ढंके यह उपरान्त परिग्रह राखे नाहीं चौकी वा पड़ाषा शुद्ध भूमपर बैठकर सामायिक करे अरु शुद्धक्षेत्र जामे कोलाहल शब्द न होय

बहुरि पुरुष स्त्री तिर्यंच इनका सचार न होय। अगल बगल भी इनका शब्द न होय। ऐसा एकान्त निर्जंतु स्थान अपनी अटा-रीमे व जिनमंदिरमे वा सूना ग्रहमे वा वन पर्वत गुफा विषें ऐसे शुद्धक्षेत्रमे सामायिक करे अरु कालका प्रमान कर लीजिये जा क्षेत्रमे तिष्टा होय सो क्षेत्र उठना बेठना नमस्कार करना दसों दिसा सपर्सनमें आवें। सो तो क्षेत्र मोकलो होय सो अपने प्रमाणसूं उपरान्त क्षेत्रका सामायिक काल पर्यंत त्यागे अरु काल जघन्य दोय घडी मध्य चार घडी उत्कृष्ट छह घडी प्रमान करे, प्रभात एक घडीका तडकासूं लेय एक घडी दिन चढ़े पर्यंत वा दोय घडीका तडकासू लेय दोय घडी दिन चढे पर्यंत वा तीन घडी दिन चढे पर्यंत जघन्न मध्य उत्कृष्ट सामायकका काल है। ऐसें ही मध्यान समै एक घडीसू लगाय तीन घडी पर्यंत पूर्ववत् तीन भांत करे। अरु साझ समय एक घडी दिनसू एक घडी रात पर्यंत वा दोय घडी दिनसू दोय घडी रात पर्यत ऐसे सांझ समय करे या भांत तीन काल सामायक करे कालकी जेती प्रतिज्ञा लेनी होय तासू सिवाय सवाया टोटा अधिका काल वीते होय तहां अपना पन निश्चल होय तव सामायक नाम पावै बहुरि भाव विषें आर्तरौद्र ध्यानने छोडे धर्मध्यान वा शुक्ल ध्यानकू ध्यावे ऐसे द्रव्य क्षेत्र काल भावकी शुद्धता जाननी बहुरि पद्मासन वा कायोत्सर्ग आसन राखे अंगने चलाचल न करे इत उत देखे नाहीं अंग संकोचे नाही घूमे नाही ऊंघे नाही उतावला बोले नाहीं ऐसे शब्द करे धीरा जो आपका शब्द आपही सुने और का शब्द आप रागभाव कर न सुने औरकूं राग भाव सहित देखे नाहीं आंगुली

उठावे नाहीं इत्यादि शरीरकी प्रमाद क्रिया छोड़े अरु सामायक विषें मौन राखे जिन वानी विना ओर कछू पडे नाहीं विशेष विनय सहित सामायिक करे सामायिक करनेका अगाऊ उक्षव रहै कि ये पीछे पछिताय दोय चार घड़ी निरर्थक काल गमाया ऐसा भाव न करे जो एती वेर लागी नातर कछू गृहस्तीका कार्य सिद्ध करना अरु ऐसा भाव राखे मैं अवार वृथा ही उठा अबे मेरा परनाम घना शुद्धता जो बैठा रहाता तो कर्मनकी निर्जरा विशेष होती वहुरि सामायिकमें दोयवार पंच नमस्कार पंच परमगुरु को करे बारा आवृतनि सहित चार श्रोनित करे नो वार नमोकार मंत्र पढ़े ऐते काल पर्यत एकवार खड़ा होय कायोत्सर्ग करे सो नमस्कार तो सामायिकका आदि अतमें करे। भावार्थ। चार श्रोनित बारा अवृतन सहित अरु एक कायोत्सर्ग ये तीनो क्रिया सामायिकका मध्यकाल विषें ताकी ब्यौरा सामायिक पाठका चोईस संस्कृत वा प्राकृत पाठी है। तामे या विध है तासूं समझ लेना वहुरि सामायक करती वार प्रभातका सामायक करने बैठनी वेर रात्र सम्बन्धी कुशीलादिक क्रिया कर उत्पन्न भया जो पाप ताके निर्वृत्यके अर्थ श्री अरहन्त देवसूं छिमा करावे अपनी निन्दा करे में महा पापी छूं मो इह पाप कार्य छूटतावे में कब आवेगा जबमें जाका तजन करूंगा याका फल उदें आये अत्यंत कटुक लागेगा सो हे जीव तू कैसे भोगसी यह तो तनकसी वेदना सहवेकूं असमर्थ है। तो परभोमें नरकादिकके घोरान घोर तीब्र वेदनाके दुःसह दुःख दीर्घ काल पर्यंत कैसे सहेगा जीवका पर्याय छाड़ने ते तास होता नाहीं यह तो अनादि निधन अविनाशी ताने परलोक अवश्य आपहीकूं

भोगने परेंगे। परलोकका गमन ऐसे हैं जैसे गावसो गावान्तर क्षेत्रसो क्षेत्रान्तर देससो देसान्तर कोई कारजकूं गमन करिये सो जो क्षेत्र छोडा तहा तो किछू उस पुरुषका अस्तित्व रहा नाहीं अरु जो क्षेत्रमे जाय प्राप्त भया तहां उस पुरुषका अस्तित्व ज्योंका त्यों है तो वह पुरुषकूं क्षेत्र छोडे कछू वा पुरुषका तो नाश न भया अरु कोई क्षेत्र विर्षे जाय प्राप्त भया तो तहां तिसकू उपजान कहिये परजायकी पलटन है पूर्व क्षेत्र विर्षे तो वृद्ध हुवा उत्तर क्षेत्रमें बालक भया अथवा पूर्व दु:खी था पीछे सुखी भया अथवा पूर्वे सुखी था पीछे दु:खी भया ऐसे ही परभवके शरीरका स्वरूप जानना। पूर्वे मनुष्य क्षेत्रमे था पीछे नर्क क्षेत्रमें गया पूर्वे सुखमई पर्याय थी अब ये दुखमई पर्याय भई पूर्वे कोई मनुष्यभवमें दुखी था अब पीछे देव पर्यायमे सुखी भया ऐसे ही भव भवमे अनेक पर्यायकी फिरन जाननी जीव पदारथ सास्वता है तीसों हे जीव ये पाप कार्य छोडे तो भला ही है। ऐसा दरेग करता सता दोऊ हस्त जोड मस्तकने लगाय श्री जिनेन्द्र देवकूं परोक्ष नमस्कार कर ऐसे प्रार्थना करे हे भगवान ये मेरे पाप निर्वृत्य करो तुम परम दयालु हो सो मेरे औगुन न हेरो मेरी दया ही करो मोने दीन अनाथ जान मोपे छिमा ही करो माता पिता आप ही हो सो पुत्र चाहे जैसा औगुनग्राही होय परन्तु माता पिता छिमा ही करे। अरु वाका जिंह तिंह प्रकार भला ही करे सो ए जिनेश ए जिनेन्द्र देव मोपर अनुग्रह करो। अरु यह पाप मलिनताको हरो तुमारे अनुग्रह विना पाप पर्वत गले नाहीं तातै मो ऊपर विशेष प्रीत

करो सर्व पापनका छय करो ऐसे पूर्वले पापकूं हल्का पाड़ जरित कर पीछे द्रव्य क्षेत्र काल भावका मानवा स्वरूप पूर्वे यहां ही कह आये ताके अनुसारपूर्वक त्याग कर पूर्व दिसाने वा उत्तर दिसाने मुख कर पीछी कर भूमि सोध पंच परम गुरुने नमस्कार करे पद्मासन मांड बैठ जाय पीछे तत्वनका चिन्तवन करे बारानुपेक्षाका चिन्तवन करे आपा पर का भेद विज्ञान करे निज स्वरूपका भेदरूप वा अभेदरूप अनुभवन करे वा संसारका स्वरूप दुखमई विचारे सिसारे सो भयभीत होय बहुरि वैराग्य दसा आदरे अरु मोक्षका उपाय चिन्तवे संसारके दुखकी निर्वृति वांच्छता संता पंच परम पदने सुमरे ताके गुनकी वारंबार अनुमोदना करे गुनानुवाद गावे वाका स्तोत्र पढ़े वा का आत्म ध्यान करे वा विषेश वैराग्य विचारे म्हारे कोई नाहीं में या संसारके घोरान घोर भयानक दुःख सों कब छूटों वो समय मेरे कब होसी तब दिगम्बरी दीक्षा धर परिग्रहके भयानक दुख सो छूटसी परिग्रहके भारने पटक निर्दुंद होसी पान पात्र अहार करसी बाईस परीसह जीतसी दुद्धर तप आदरसी मोह बज्रने फोर पंचा चार्ज करसी अरु अपने निज सुद्ध स्वरूपको अनुभवन करसों ताका अतमय कर वीतराग भावांकी वृद्धि होसी तब मोह कर्म गलसी घातिया कर्म सिथिल होसी वा खिर जासी अनन्त दर्शन अनन्त ज्ञान अनन्त सुख अनन्त वीर्य ये अनंत चतुष्टय प्रगट होसी सो मे सिद्ध साद्दस्य लोकालोकका देखन जानन हारा अनन्त सुख वीर्यका पुंज कर्म कलंक सूं रहित महा निराकुल आनन्दमय सर्व दुःखोंसों रहित कब होसी कहां तो मेरी यह दशा नर्क निगोदादि महा पापकी

मूर्ति दुखमई आकुलताका पुंज नाना प्रकार पर्यायके धरन हारे सो जिनधर्मके अनुग्रह बिना अनादि कालसूं लेय सिंह सर्प काग कूकर चिंटी कबूतर कीडी मकोडी आदि महां भृष्ट पर्याय सर्व धारी एक पर्याय अनन्त अनन्तन बेर धरी तो भी जिन धर्म बिना संसारके दुखका अन्त न आया अब कोई महा भाग्यके उदै श्री जिनधर्म सर्वोत्कृष्ट पर्म रसायन अद्भुत अपूर्व पाया ताकी महमा कौन कह सके केतो मैने जान्या के सर्वज्ञ जाने सो यह वीतराग परनतमय जिनधर्म जयवंत प्रवर्तो नद़ो वृद्धो म्हाने समुद्र सो काढो घनी कहा अर्ज करें ऐसा चिन्तवनकर महा वैराग्य भाव सहित सामायक काल पूर्ण करे कोई प्रकार राग द्वेष न करे। आरत ध्यान रौद्र ध्यानकू छोड आपा परकी सम्हार कर यह साक्षात चिन्मूर्ति सरूपा देखनहारा ज्ञाता दृष्टा अमूर्तीक आनन्दमई सुखका पुंज असंख्यात प्रदेशी तीन लोक प्रमान पर-द्रव्यसूं भिन्य अपने निज स्वभावका कर्ता भोगता परद्रव्यका अकर्ता ऐसा मेरा स्वसंवेदन स्वरूप ताकी महमा कौनकू कहिये यह जीव पुद्गल द्रव्यका पिण्ड ताका कर्ता भोगता नाहीं मोह कर्मके उदै कर्मकी बुद्धिकर जहां ही अपना जाने था ताकर भव भवमें नर्कादिक परम क्लेसने प्राप्त भया सो अब में सर्व प्रकार पर वस्तुका ममत्व छोड़ हुई पुद्गल द्रव्य चाहों त्यों परनवो मेरे ऐसा रागद्वेष नाहीं सोये पुद्गल द्रव्यका पसारा है। सो भावे क्षीजो भावे न क्षीजो भावे प्रलय होय भावे एकट्ठा होय जा कामें सुजाम नाहीं। याके ममत्व सो मेरे ज्ञानानंदकी बुद्धि नाहीं ज्ञाना-नन्द तो मेरा निज स्वभाव है सो वृथा पर द्रव्यके ममत्व सूं घात्या

गया ज्यों ज्यो परद्रव्यका निर्वृत्य होय त्यों त्यों ज्ञानानंद स्वरूपकी वृद्धि होय सो प्रतक्ष अनुमानमें आवे है । तातैं विवहार मात्र मेरे वैरी चार घातिया कर्म हैं । निश्चै विचारतें मेरा अज्ञानभाव वैरी है । मेरा मैं ही वैरी मेरा में ही मित्र सो मैं अज्ञान भावां कर कार्य किया सो ताके यस तैसा ही आकुलतामय फल निपज्या ताकर मै दुखी भया सो वे दुखकी बात कौनसे मित्रसो कहिये सर्व जगतके जीव मोह कर्मरूप परनमें हैं । भ्रम कर ही अत्यंत प्रचुर अनादि कालका ही महा दुख पावैं मैं भी वाहीके साथ अनादकालका दुख पावूं था अब कोई महा शुभ भागके उदेसे श्री अरहंतदेवके अनुग्रह कर श्री जिनवानीके प्रतापसे मुनि महाराजनें आदि दे परम धर्मात्मा दयालु पुरुषनका मिलाप भया अरु वाके वचनरूपी अमृत पान कराया ताके अतसय कर मोह ज्वुर मिट कषायनकी आताप मिटी अरु सांत परनामतें कामरूपी पिशाच भाग गया अरु इन्द्री श्री ज्ञानरूपी जालतें पकरी गई अरु पांच अवृतनका नाश भया अरु संयम भावकर आत्मा शीतल भया सत्यकूदृष्टि ज्ञान लोचनतें मोक्षका सुख लख्या अब हम धीरज धर शीघ्र ही मोक्षमार्गकू चाहूं हूं मोहकी सेन्या लुट जाय है । घातिया कर्मनका जोर घटता जाय है मेरी ज्ञान जोति उदै होय है । मेरा अमूर्तीक निर्मल असंख्यात प्रदेश ता ऊपरसूं कर्म रज उड़ती जाय है । ताकर मेरा स्वभाव हंस अंस उज्जल होता जाय है । सो अब मे ज्ती पद लेसी ताकर मोहका नाश होसी तपरूपी वज्रकर मोहरूपी पर्वतका खंड खंड नासकरसी घातिया कर्मनकूं परवार सहित ध्यानरूप अग्निमें भस्म करूंगा

ऐसे मेरे परम उछाह प्रवर्ते है। केवल लक्ष्मीका देखवांकी अत्यंत अभलाषा भई है। सो कब यह मेरा मनोरथ सिद्ध होय मैं या घररूप वंदी गृहने छोड निर्वृत्य होय। अनन्त चतुष्टय संयुक्त तीन लोकका अग्र भाग विषें सिद्ध भगवान मेरा कुटुम्ब तहां जाय तिष्टोंगा अरु लोकालोकके तीन काल सबधी द्रव्य गुण पर्याय सहित समस्त षट्द्रव्य नव पदार्थ ताका एक समय में अवलोकन करूंगा ऐसी मेरी दसा कब होयगी जो ऐसा मे परम जोतिमय आप द्रव्य ताकूं देख औरकौनकू देखूं और तो समस्त गेय पदार्थ जड है। तिन सूं कैसा स्नेह अरु उनसु कहा प्रयोजन जैसे की संगति करे तैसा फल लागे सो जडसू प्यार किया सो मुझने भी जड सारखा करना कहां तो मेरा केवल ज्ञान स्वभाव अरु कहा एक अक्षरके अनन्तवें भाग ज्ञान अरु कहां पूर्न सास्वता सुख अरु कहा नर्क पर्यायमें सागरा पर्यंत आकुलतामें दुख अरु कहा वीर्य अतरायके नास भये केवल दसा भये अनन्त वीर्य पराक्रम अनतानंत लोकके उठाय लेवे सारखा सामर्थ कहां एकेंद्री पर्यायका वीर्य सो रुई के तारके अग्रभाग ताके असंख्यातवें भाग सूक्ष्म एकेन्द्रीका सरीर सो इन्द्री गोचर नाहीं। वज्रादिक पदार्थमे अटके नाही। अग्नितें जले नाहीं। पानीते गले नाहीं। इन्द्र महाराजके वज्र दंड कर हन्या जाय नहीं ऐसा सूक्ष्म शरीर ताकूं लेवा समर्थ एकेन्द्री नाहीं। या कारन कर याकूं थावर संज्ञा है। अरु वेइन्द्री आद पंचेन्द्री पर्यंत ज्यो ज्यों वीर्य अंतरायका क्षयोपसम भया त्यो त्यों वीर्य प्रगट भया सो वेइन्द्री अपना सरीरकूं ले चाले अरु किंचित मात्र अपना मुखमें वा वाका वस्तु भी ले चाले ऐसे ही सर्वार्थ

सिद्धके देव वा तीर्थंकर महाराज वा रिद्ध धारी मुनि इन पर्यंत वीर्यकी अधिकता जाननी सोई केवली भगवानके संपूर्न वीर्यकी प्राप्ति जानना जेता आकाश द्रव्यका प्रमान है जेते मनका लोक होय तो भी ऐसे अनंतानंत लोकके उठायवे की सामर्थता सिद्ध महाराजके है। एती ही सामर्थता सब केवलीनके है। दोनों हीके वीर्य अन्तरायके नास होने ते संपूर्न सुख प्रगट भया है। सो मेरे स्वरूपकी महिमा भी ऐसी है सो मेरे प्रगट होय। अब तक मेरी अज्ञानताने अनर्थ किया वैसी पर्याय धार पर्म दु खी भया धिक्कार होहु यह मेरी भूलकूं अरु मिथ्यातमतीनकी संगतिकूं अरु धन्य है यह जिनधर्म अरु पंच परम गुरु अरु सरधानी पुरुष इनके अनुग्रह कर मै अपूर्व मोक्षमार्ग स्वाधीन है। ताते अत्यंत सुगम है मैं तो महा कठिन जान्या परन्तु श्री गुरु सुगम बताया सो अब मोकूं यह मारग चालता खेद नाहीं। मे भ्रम कर खेद माने था अहो परम गुरू थांरी महिमा वा अनमोदना कहा करों। मै मेरी महिमा सिद्ध सादृस्य तुमारे निमित्त ते जानी। ॐ नमः सिद्धेभ्यः। आगे अपने परम इष्ट देवकूं विधि पूर्वक नमस्कार वा गुनस्तवन कर सामान्यपने स्वर्गनकी महमा वर्नन करिए है। सो हे भव्य सावधान होय सुन दोहा। जिन चोवीसों वंदके वंदों सारद मात। गुरु निर्ग्रंथ सुवंद पुन ता सेवै अघ जात॥ पुन पुन कर्म विकारतें भये देव सुर राय। आनन्दमय क्रीडा करै बहु विध भेष बनाय॥ स्वर्ग संपदा लक्षमीको कव कहे बनाय। गनधर भी जाने नहीं जाने सब जिनराय॥ श्री गुरुसों शिष्य प्रश्न करे है। विनयवान होय काई प्रश्न करै है। सोई कहिए है हे स्वामी, हे नाथ, कृपा-

निध परम उपगारी है। संसार समुद्रके तारक हे दयामूर्ति हे कल्यान पुंज, हे आनन्दस्वरूप सर्व तत्व ज्ञायक हे मोक्ष लक्ष्मीके अभिलाषी संसार सू परान्मुख परम वीतराग जगत बंध वधे कार्यके पिता मोह विजई असरन सरन मोपर अनुग्रह कर स्वर्गनके सुखका स्वरूप कहो सो का है। सिष्य परम विनयवान है आतम कल्यानका अर्थी है ससारके दुखतें भयभीत है व्याकुल भया है वचन जाका कपायमान है मन जाका वा कोमल भया है मन जाका ऐसे होत संता श्री गुरुकी प्रदक्षना देय हस्त जुगल जोर मस्तककूं लगाय श्रीगुराके चरननकू वारवार नमस्कार कर मस्तग उनके चरन निकट धरया है अरु चरन तलकी रज मस्तगको लगावे है। आपने धन्य माने है। वा कृत कृत्य माने है विनय पूर्वक हस्त जोड सन्मुख खडा है। पीछे श्री गुरांका मोसर पाय बारबार दीनपनाका वचन प्रकाश स्वर्गनके सुखका स्वरूप बूझे बहुरि कैसा है सिप्य अत्यंत पुन्यके फल सुन वाकी अभिलाषा जाकी जब ऐसा प्रश्न होते संते अत्र वे श्री गुरु अमृतरूप वचन कर कहे हैं बहुरि कैसे है परम निर्ग्रंथ बनोवासी दया कर भीज्या है चित्त जाका या भात कहते भये हे पुत्र हे शिष्य हे भव्य हे आर्ज तेने बहुत अच्छा प्रश्न किया बहुत भली करी अब सावधान होइ सुन मे तोह जिनवानीके अनुसार कहूं हूं। ए जीव श्री जिनधर्मके प्रभाव कर स्वर्गके विमाननमे जाय उपजे है यहां की पर्यायका नास कर अंत-र्मुहूर्तकालमें उत्पन्न होय है। जैसे मेघ पटल विघटते देदीपमान सूर्य वादल बाहर निकसे तैसे उपपादक सिज्याके पट दूर

होते वह पुन्याधिकारी संपूर्न कला संयुक्त जोतिका पुंज आनंद सौम्य मूर्ति सबको प्यारा सुन्दर देव उपजे है बहुरि जैसे बारा बरसका राजहंस महाअमोलक आभूषन पहरे निद्रा ते जाग उठे कैसा है वह देव संपूर्न छहों पर्याप्ति पूर्न कर शरीरकी क्रान्ति सहित रतनमय आभूषन वस्त्र पहिरें सूर्य वत उदय होय है अनेक प्रकारकी विभूतिको देख विसमय सहित दसों दिसानकूं अवलोकन करे मनमें यह विचारे मैं कौन हूं कहां था? कहां आया यह स्थानक कौन है? यह अपूर्व और रमनीक अलौकिक मन रमनेका कारन अद्भुत सुखका निवास ऐसा अद्भुत स्थान कौन है। यह जगमग रत्नोंकी जोति कर उद्योत हो रहा है अरु मेरा देव सारखा सुन्दर आकार काहेतें भया अरु जहां तहां ये सुन्दराकार मनोज्ञ मनकूं प्यारा देवन सारखा कौन है। अरु विना बुलाये मेरी स्तुति करे है। नम्रीभूत होय नमस्कार करे है अरु मीठा विनयपूर्वक वचन बोले हैं। सो ये कौन है सो यह संदेह कैसे मिटे ऐसी सामग्री कदाच साची होय अरु कैसे है ये स्त्री पुरुष गुलाबके फूल सारखे मुख जिनके अरु चन्द्रमा सादृस्य है सौम्य मूर्ति जिनकी सूर्य सादृस्य है प्रकाश जिनका रूप लावन्य का अद्भुत है सबहीकी दृष्टि एकाग्र मो तरफ है मोने स्वामी सादृस्य मान हाथ जोड़ खडे हैं अरु अमृतमई मीठा कोमल विनय सहित म्हारा मन माफके वचन बोले है। ताकी महमा कौनकू कहिये धन्य है ए स्थान अरु धन्य ये पुरुष वा स्त्री धन्य है याका रूप धन्य है। प्रवीनता धन्य याका विनय गुन वा सज्जनता वात्सल्यता बहुरि कैसे हैं पुरुष स्त्री पुरुष तो सर्व कामदेव सादृस्य अरु

स्त्री इन्द्रानी सादृस्य तिनकी सुगंध फैल रही है। तिनके शरीरका प्रकाश कर सर्व ओर उद्योत है। जहां तहां रतन मानिक पन्ना हीरा चिन्तामन रतन पारस कामधेनु चित्रावेल कल्पवृक्ष इत्यादिक अमोलक अपूर्व निधके समूह दीसैं हैं। अरु अनेक प्रकारके मंगलीक वादित्र बाजे हैं। केई गान करें है केई ताल मृदग बजावें है, केई नृत्य करे हैं, केई अद्भुत कौतूहल करें है। केई रतनके चूर्न कर मगलीक देवांगणान सो स्थान पूरे हैं। केई उत्सव वर्ते हैं केई जस गावें है केई धर्मकी महिमा गावे हैं केई धर्मका उत्सव करें हैं सो बडा आश्चर्य है। ए कहा है, मै न जानू ऐसी अद्भुत चेष्टा आनन्दकारी अपूर्व अब तक देखनेमें न आई। सुननेमें न आई मानू यह परमेश्वरपुरी है वा परमेश्वरका निवास ही है। अथवा मेरे ताई भ्रम उपज्या है। ऐसा विचार करते सते वे पुन्याधिकारी देवताके सर्व आत्म प्रदेशों विषें सो उपग्रही अवधिज्ञान फुरायमान है ताके होते पूर्वला भवकूं निश्चय करि यथार्थ देखें है। ताके देखवे कर सर्व भ्रम विलय जाय तब फेर ऐसा विचार है। में पूर्वे जिनधर्म सेवन किया था ताका ये फल है सुप्र तो नाहीं अरु भ्रम भी नाहीं इन्द्रजाल भी नाही। मरा पीछे प्रत्यक्षमे कलेवरकूं ले जाय कुटुम्ब परवारके लोग मसान भूंममें दग्ध करें हैं। ऐसा निःसंदेह है यामें संदेह है नाहीं बहुरि कैसे हैं वे देव देवागना अरु कैसा है विभूत अरु कैसे हैं मगलाचरन कैसे हैं जन्मका जान शीघ्र ही उच्छव संयुक्त अवता भया अरु दीनपनाका विनयपूर्वक वचन लघुनाई कर प्रकासता भया कैसा वचन प्रकासता भया जय जय स्वामिन जय नाथ

जय प्रभू थे जयवंत प्रवर्तो नंदो वृद्धो आजकी घडी धन्य जामें उत्पन्न भये हम ऐते दिन अनाथ रहे सो अब सनाथ भया अरु अब मैं तुम्हारा दर्सन कर कृत कृत्य भया पवित्र भया सो हे प्रभू सपदा तुम्हारी अरु यह राज तुम्हारा अरु यह विमान तुम्हारे अरु ये देवांगनानके समूह तुमारे अरु ये हस्ती घोडा तुम्हारे अरु विद्या नाटशाला आभूषन सुगंध माला ये चमर छत्र ये वस्त्र रतनादि सर्व तुम्हारा ऐ सात जातिकी सेन्या वा गुनंचास जातकी सेना ये रतननके मंदिर ये दस जातके देव ये गिलमई बिछाई रतनानके भंडार तुमारा है। हे प्रभू हे नाथ हम तुमारा दास हैं। सो म्हां ऊ र आज्ञा कीजे सोई हमने प्रमान है। हे प्रभू हे नाथ दयामूर्ति हे स्वामिन कल्यान पुज तुमने पूर्वे कौन पुन्य किया था अरु कौन शील पाल्या कौन सुपात्रनें दान दिया कौन पूजन किया कौन सामायिक वा प्रोषध उपवास किया कौन षट् कायकी दया पाली कौन सरधानका ठीक किया अरु कौन अनुव्रत वा महाव्रत पाल्या कैसा सास्त्र अभ्यास किया के एकाविहारी होय ध्यान किया के तीर्थ जात्रामें गमन किया के वनोवास हो तपश्चरन किया वा वाईस परीसह सही वा जिन गुनमें अनुरक्त भया के जिनवा-नीका माथा ऊपर सरधा राखी इत्य दि जिन प्रनीत जिन धर्म ताके वहुरि अंग आचरन किये वाके प्रसाद कर तुम हमारे नाथ अवतरे सो हे प्रभू ये स्वर्ग स्थान है अरु हम देव देवांगना है। तुम पुन्यके फल कर मनुष्य लोकसू जिन धर्मके प्रभाव कर पर्याय पाई है। जामें संदेह मत करो सो अब हये काई कहां आपही अवधि ज्ञान कर सारो वृतान्त जानोगे धन्य आपकी बुद्धि

अरु वह मनुष्य भव धन्य जो संसार असार जान निज आत्म कल्यानके अर्थ श्री जिन धर्म आराध्या ताका फल अब ऐसा पाया धन्य है यह जिनधर्म ताके प्रसाद कर सर्वोत्कृष्ट वस्तु पाई है। जिन धर्म उपरान्न संसारमे और पदार्थ नाहीं तातै संसार सुख है सो एक जिन धर्म ही तें है। तातै परम कल्यान रूप एक जिन धर्म है। ताकी महमा वचन अगोचर है। सहस्र जिह्वा कर सुरेन्द्र भी पार पावे नाही। वा मुनेन्द्र भी पार न पावें सो यह काई आश्चर्य है जिनधर्मका फल तो सर्वोत्कृष्ट मोक्ष ही है तहा अनन्त काल पर्यंत अविनासी अतेन्द्री अनोपम बाधारहित निराकुलित स्वाधीन संपूर्न सुख पाजे अरु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान पाजे ऐसे अनन्त चतुष्टय संयुक्त आनन्द पुज अरहन्त सिद्ध ऐसे मोक्ष सुख अंतर रहित भोगवें है। ताकर अत्यत त्रप्त है। जगत पूज हैं। वाके पूजने वारे वा सारखे है हैं। सो हे प्रभू जिनधर्मकी महमा हमतें न कही जाय। अरु धन्य हो आप, सो ऐसे जिनधर्मको पूर्वे आराधा ताके फल कर यहा आय अवतार लिया सो आपकी पूर्व कमाई ताको फल जानो ताकू निर्भै चित्त कर अंगीकार करो अरु मनवछित देवों पुनीत सुखने भोगवो अरु मनकी संका दूर ही तें तजो हे प्रभू हे नाथ परमदयालु जिनधर्म वात्सल्य सबको प्यारा म्हा सारखे देवनकर पूज्य असंख्यात देवदेवांगना के स्वामी अब तुम होहु अपने किया कार्यका फल अब धारो हे प्रभू हे सुन्दराकार हे देवनके प्यारे हमपर आग्या करो सोई हम सिर ऊपर धारेगें अरु ये असंख्यात देवागना आपके दास है। तिनकू अपने जान अहंकारो यह जिनधर्म विना ऐसी संपदाको पावे नाही जासूं हे प्रभू अब शीघ्र ही

अमृतके कुंडमें स्नान कर अनोपम वस्त्र आभूषन पहिर अन्य अमृतके कुण्डमें रतनमई जारी भर और उत्कृष्ट देवों पुनीत अष्ट द्रव्यकूं हस्त जुगलमें धार मन वचन कायकी शुद्धता कर महाअनुराग संयुक्त महाआडंबरसूं जिनपूजनकूं पहली चालो पीछे और कार्य करो जासूं पहिले जिनपूजन कर पाछैं अपनी संपदाकूं सम्हार अपने आधीन करो सो अपने निज कुटुम्बका उपदेश पाय वा पूर्वली धर्मवासना सों स्व इच्छासूं उठ महा उछाहसो जिन पूजनकूं जिनमंदिर विषें जाता हुआ सो कैसा है जिनमंदिर अरु जिनबिम्ब सोई कहिये है। सौ जोजन लांबा पचास जोजन चौडा अरु पचहत्तर जोजन ऊंचा ऐसा उतंग जिनमदिर अद्भुत सोभे है। ताके अभ्यंतर एक सो आठ गर्भग्रह हैं। एक एक गर्भग्रहमे तीन कटनी ऊपर गंधकुटी निर्मापित है तामें एक एक जुदे जुदे श्रीजी पांचसै धनुष प्रमान उतंग पद्मासन सिहासन ऊपर विराजमान हैं बहुरि वेदी ऊपर ध्वजा अष्ट मंगल द्रव्य धर्म चक्र आदि अनेक अचरजकारी वस्तुके समूह पाइये है। ऐसी गंधकु-टीमें श्रीजी अद्भुत सोभा सहित विराजे हैं। एक एक गर्भग्रह विषें एक एक सास्वते अनादि निधन अकृतम जिनबिम्ब स्थित हैं सो कैसे हैं जिनबिम्ब समचतुरसंस्थान है। अरु कोट सूर्यकी जोतिने मात करता तिष्टे हैं गुलाबके फूल सारखे महामनोज्ञ हैं। शान्त मूर्ति ध्यान अवस्थाकूं घरें नासा दृष्टिकूं धारे परम वीतराग मुद्रा आनन्दमय अति सोभे है। सो कैसे हैं जिन विम्ब ताया सोना सारखी रक्त, जिव्हा वा होंठ वा हथेली वा पगतली हैं। फटक मन सारखे दांतोंकी पंकति वा हस्त

पगके नख अत्यंत उज्जल निर्मल हैं। अरु स्याम मनमई महां नरम महां सुगध ऐसे मस्तकपै केसकी अनी है। मुखकी वक्र रेखा तीर्थंकरवत् सोभे है। बहुरि कैसे है जिनविम्ब केई तो सुवर्नमई हैं। केई रक्तमणिके हैं केई नील वर्नके है। केई पन्नाके है केई स्याम वर्नके हैं। केई स्वेत फटक मनके मस्तक ऊपर तीन छत्र विराजे है मानू छत्रके मिस कर तीन लोक ही सेवाने आये हैं। चौसठ यक्ष जातके देवताका रत्नमई आकार है। ताके हस्त विषें चोसठ चमर है। सो श्री जी ऊपर बत्तीस दाहनी तरफ बत्तीस वाईं तरफ लियें खडे है। अनेक हजारा धूपका घडा धरया है। लाखा कोड्या रत्न मई क्षुद्र घंटका है लाखा कोड्या रत्नके दड रत्नमई कोमल वस्त्र सहित महा अनंग सोभे है। अनेक चंद्रक्रांत मणि सिलानकी वावडी वा सरोवर कुड नदी पर्वत महलोंकी पंक्ति सहित वन वा पुप्प वटी जिनमंदिर सोभे है। बहुरि कैसे जिनमदिर एक वडा दरवाजा पूर्वदिसा सन्मुख चौखूटा है दोय दरवाजा दक्षिन उत्तर दिसी चौखूटा है बहुरि पूव सन्मुख रचना सैकडा हजारा जोजन पर्यत आगाने चली गई है। विशेष इतना पूर्वके द्वारा आदि रचनाका लांबा चौडा उतंगका प्रमान है। तातै आधा दक्षिन उत्तर द्वार आदिका प्रमान है। ताही तै दक्षिन उत्तर द्वारको मूल्यद्वार कहैं है। बहुरि सर्व रचना कर वाहु चार चार द्वार सहित तीन महा उतग कोट हैं। वहुरि तिन मंदिरके लाखा कोड़या अनेक रत्नान सहित निर्मापित महा उतग स्थभ लागे हैं। वहुरि तीन तरफ अनेक प्रकारके सैकडा हजारा योजन पर्यंत रचना चली गई है। कठै ईतो सामान्य मंडप है कहीं

सभा मंडप है । कहीं ध्यान मंडप है । कहीं जिनगुन गान वा चरचा स्थान है । कही छत्र है कहीं महलनकी पंक्ति हैं । कहीं रतननके चौतरा हैं दरवाजेके तोरन द्वार हैं । कहीं द्वाराके आगे मानस्थंभ है । तिनकूं देखते महां मानीनका मान दूर होय है । ताते अत्यंत ऊंचे हैं । आकासकूं सपर्सें हैं । सव जाइगा हजारां सेनाकी रतनानकी माला लूमे हैं । जहां हजारा धूप घडानमें धूप खेवें हैं जागा जागा हजारां महलोंकी पंक्ति वा धुजानकी पंक्ति सोभै हैं । कैसी ध्वजा अरु कैसा है महल स्वर्ग लोकके इन्द्रादिक देवनकों वस्त्रके हालने कर मानूं सेनकर वुलावे है । कहाकर वुलावे है । कहे यहां आवो यहां आवो श्रीजीका दर्सन करो महां पुन्य उपार्जे पूर्वला कर्म कलंकने धोवो, कहीं रतनानका पुंज जगमगाट करे है कहीं हीरानकी भूमि है कहीं मानिककी कहीं सोनाकी कहीं रूपाकी कहीं पांच सात वर्न रतनानकी भूमिका है । कोई महलके थंभ हीराका है । कोईके पन्नाका कोईके मानिकका कोईके अनेक रतनाका कोईके सोना रूपाका कोई स्थानमें कल्प वृक्षोंका बन है । कहीं समान वृक्षोका वन हैं । कहीं पहुप बाड़ी छे तिनमें रतनानका पर्वत सिला महल बावड़ी सरोवर नदी सोभे है । चार चार अंगुल हरयाली दूव पन्ना साहस्य महा सुगंध कोमल मीठी सोभे है । मानों श्रावन भादोंकी हरयाली साहस्य है । अथवा आनंदके अंकूरा ही हैं । कहीं जिनगुन गावे हैं कहीं नृत्य करे हैं । कहीं राग अलाप जिनस्तुति करे हैं । कही देव द्रव्यकी चरचा करे है कहीं ध्यान करें कहीं मध्य लोकके धर्मात्मा पुरुष वा स्त्रीका गुनाकी बड़ाई करे ऐसे जिन मंदिरमें

सख्यात व असख्यात देवागना दर्सन वास्ते आवे व जांय हैं। ताकी महमा वचन अगोचर है देखतेही आवे तातै ऐसे जिन देवकू हमारा नमस्कार होय वारंवार घनी कहवाकर पूर्नता होहु, बहुरि कैसे हैं जिनबिम्ब मानू बोले हैं कि मुलकें हैं कि हसे हैं कि स्वभावमें तिष्टे है। मानू ऐसा स्यात तीर्थंकर ही है। भावार्थ– नख सिख पर्यंत जिनबिम्बका पुद्गल स्कंध तीर्थंकरके शरीरवत अंग उपग शरीरकी अवयव हाथ पग मस्तक आदि सर्वाग वर्न गुन लक्षनमय स्वयमेव अनादि निधन परनवे है। तातै तीर्थंकर सादृश्य है विशेष तीर्थंकर महाराजके शरीर विषै केवल ज्ञानमय आतमा द्रव्य लोकालोकके ज्ञायक अनन्त चतुष्टय पडित विराजें है। जिन विम्बको वे देव पूजे हैं। अरु मै भी पुज्यू हू और भी भव्यजीव पूजन करो एक नयकर तीर्थंकरका पूजने बीच प्रतिमाजीके पूजनेका फल बहुत है। सो कसो कहिये है। जैसे कोई पुरुष तो राजाकी विद्यमान सेवा करे है। अरु कोई पुरुष राजाकी छबीकू पूजे तब राजा देशान्तरसे आवे तब ई पुरुष सो बहुत राजी होय अरु या विचारे जाने हमारी छबीकी सेवा करी सो हमारी करे ही करे तातै ऐसा भक्त जान बहुत प्रसन्न होय। त्योंही प्रतिमाजीके पूजनमें बहुत अनुराग सूचे है। फल है सो एक परनामाकी विसुद्धताका ही है। अरु परनाम होंय सो कारनके निमित्तसे होंय जैसा कारन मिले तैसा कार्य उत्पन्न होय नि:कषाय पुरुषके निमित्त ते पूर्व कषाय गल जाय जैसे अग्निके निमित्तसे दूध उवल भाजनमें सूं निकसे अरु जलके संयोगसे भाजनमें निरूप परनमें त्योंही प्रतिमाजीके सांत दसाने देख निर्मल परनाम निर्विकार

सांत रूप हो है। सोई परम लाभ जानना ऐसा ही अनादि निधन निमित्त नैमित्तने लिया वस्तुका स्वभाव स्वयमेव बने है। जाके निवारने समर्थ कोई नाहीं। बहुरि और भी उदाहरन कहिये है। जैसे जलकी बूंद ताता तवा ऊपर परे तो नासने प्राप्त होय अरु सर्पका मुखने पड़े तो विष होय। कमलका पात्र ऊपर पड़े तो मोती सादृस्य सोभे सीपमें पडे तो मोती ही होय। अमृत कुण्डमे पड़े तो अमृत होय इत्यादि अनेक निमित्त कर अनेक प्रकार जलकी बूंद परनवती देखिये। और भी अनेक पदार्थ नाना प्रकारके कारन कर और सों और परनवते देखिये हैं ताकी अद्भुत विचित्रता केवली भगवान ही जाने लेस मात्र सम्यक दृष्टि पुरुष ही जाने यहां कोई प्रश्न करे प्रतिमाजी तो जड़ अचेतन हैं स्वर्ग मोक्ष कैसे देसी ताकूं कहिये है रे भाई प्रत्यक्ष ही संसारमें अचेतन पदार्थ फलदाई देखिये है। चिंतामन पारस कामधेनु चित्रावेल नव निधि जे अनेक वस्तु देते देखिये है बहुरि भोजन खाये क्षुधा मिटे है जल पिये तृषा मिटे औषधके निमित्तकर अनेक रोग सांत होय पाचो इन्द्रीनके विषयसे ये सुख होय चित्रामकी वा काष्ठकी पाषानकी अचेतन मूर्ति देखनेमें चेतन स्त्रीके निमितवत विकार परनाम होय है। साची स्त्री सरीखा पाप लागे है। त्योही प्रतिमाजीकी पूजा स्तुति करना है। सो तीर्थंकर महाराजके गुनाकी अनुमोदना है। जा पुरुषके गुनाकी अनुमोदना करे तो वाके गुन सादृस्य फल उत्पन्न होय औगुन-वान पुरुषकी अनुमोदना किये पापका फल नरकादिक लागे त्यों ही धर्मात्मा पुरुषकी अनुमोदना किये धर्मका फल स्वर्ग मोक्ष

लागे तातै प्रतिमा जो साक्षात् तीर्थंकर महाराजकी छवी है ताकी पूजा भक्ति किये महा फल उपजे है। यहा कोई फेर प्रश्न करे जो अनुमोदना करे तो वाका सुमरन ही करवो करे मूर्ति काहेको बनावे ताको कहिये है सुमरन किये तो वाका परोक्ष दर्सन होय। साद्दस्य आकार बनाये प्रतिदर्शन होय सो परोक्ष बीच प्रतक्ष विर्षे अनुराग विशेष उपजे है। अरु आत्मा द्रव्य है। सो डीला कभी दीसे नाहीं डीलाका भी वीतराग मुद्रा स्वरूप शरीर ही दीसे है तातै भक्त पुरुषने तो मुखपनो वीतराग सरीर ही का उपगार है। भावे जंगम प्रतमा होय भावे थावर प्रतमा होय दोन्याका उपगार साद्दस्य है। जंगम नाम तीर्थंकरका है। थावर नाम प्रतमाका है। जैसे नारद रावन ने सीताका रूपकी वार्ता कही तबतो रावन थोरा आसक्त भया पीछे वाका चित्रपट दिखाया तब विशेष आसक्त भया ऐसा प्रतक्ष परोक्षका तातपर्ज जानना सो वे तो चित्रपट जथावत न था अरु प्रतिमाजीका यथावत रूप है। तातै प्रतिमाजीका दर्सन किये तीर्थंकरका स्वरूप आद आवे है। ऐसा परमेश्वरकी पूजा कर बहुरि वे देव काई करे अरु कैसा कहे है सो कहिये है। जैसे बारा वरसका राजहंस पुत्र सोभायमान दीसे है। तासूं भी असख्यात असंख्यात अनन्त गुना तेज प्रतापकूं लिया सोभे है बहुरि कैसे है शरीर जाका हाड़ मास मल मूत्रके संसर्ग कर रहित कोट सूर्य्यकी जोतने लिया महा सुन्दर शरीर है। वा वहु मोलो अन्तर तासूं भी अनन्त गुनी सुगंधमई शरीर है। अरु ऐसे ही सुगन्धमई उस्वास आवे है। बहुरि सोवर्नमई पीत तपाया सोना समान लाल अथवा

ऊगता सूर्य समान लाल वा फटक मन मई स्वेत ऐसा है वर्न जाका वहुरि अनेक प्रकारके आभूपन रतनमई पहिरे है। अरु मस्तक ऊपर मुकट सो धारे हैं। अरु हजारां वरस पीछे मानसीक अमृतमई अहार ले हैं। अरु केतेक मास पीछे सांस उस्वास ले हैं। अरु कोड्या चक्रवर्त सारखे वल है। अरु अवधि ज्ञानकर आगला पीछला भवके वा दूरवर्ती पदार्थका वा गूढ़ पदार्थकूं वा सूक्ष्म पदार्थकूं निर्मल पुष्ट जाने है। अरु आठरिद्ध वा अनेक विद्या वा वैक्रियाकर संयुक्त है जैसी इच्छा होय तैसा ही करे। वहुरि रेशम सों असंख्यात गुनी विमानकी भूमिका है अरु अनेक प्रकार रतनीका चूर्न सादृस्य कोमल चूल है। अरु गुलाब अंबरी केवडा केतुकी चमेली जाय सेवती नर्गसराय वेलसोन जुही मोगरा सुगंधरा चपा आदि दे पहुपनका चूर्न समान सुगंधमई रज है। अरु कहीं अनेक प्रकारके फूल तिनकी वाडी सुगंध वाड़ी सोभे है। अरु कोटक सूर्य सारखो ता रहित सात मई प्रकाश है। अरु मंद सुगंधि पवन बाजे है मानू पवन नाहीं बाजे देवतानके आनन्द उपजावे हैं। अनेक प्रकारके रतनमई चित्राम हैं। अरु अनेक प्रकारके रतन भी सोभे हैं। तेठे वनमें अनेक बावड़ी निवान पर्वत सिला सोभे हैं। तेठें देव कीड़ा करें हैं। वहुरि देवनके मंदिरके अनेक प्रकारके रतन लागे हैं। रतनमई है। महामनोहर दंडनपर लागी धुजा हाले हैं। सो मानूं धर्मात्मा पुरुपनकूं सेनकर बुलावे है। कांई कह बुलावे हैं या कहे है आवो आवो ऐसा यहां सुख है जो और ठौर दुर्लभ जासूं इठां आय सुख भोगो आपना किया करतव्य ताका फल ल्यो बहुरि

कोडद्या जातके वादित्र बाजें हैं अरु नृत्य होय है अरु नाटक होय हैं अरु अनेक कला चतुराई वा हावभाव कटाक्ष करि देवांगना कोमल हैं । शरीर निर्मल सुगंधमई है अरु चन्द्रमाकी किरनसूं असंख्यात गुना निर्मल प्रकाशमई मुख है । बहुरि कैसी है देवांगना महा तीक्षन कोकला सारखा केट जिनका अरु मीठा मधुर वचन बोले हैं अरु तीक्षन मृग सारखा नेत्र है अरु चीता सारखी कट है अरु फटकमनी समान दंत अरु ऊगता सूर्य हथेली वा पग थली है बहुरि कैसी है देवांगना जैसे बारा वरसकी राजपुत्री सोभे तासू असंख्यात गुना अतुलने लियां पर्यंत एकादस रूप रहे है । भावार्थ—यह तरुन वा वृद्धपनाने न प्राप्त होय बालदसा सादृस्य ही रहे है बहुरि कैसी हैं देवागना मानूं यह सर्व सुख बोयके पिन्ड ही है । सर्व गुनानके समूह हैं सर्व विद्याके ईश्वर हैं सर्व कला चतुराईकी अधपति है । सर्व लक्ष्मीके स्वामी हैं । अनेक सूर्यकी क्रांतिको जीते हैं । अनेक कामका निवास है शरीर जिनका बहुरि केसे हैं देव देवी देवता तो देवीनके मनकू हरे हैं अरु देवी देवनके मनकू हरे हैं हंसनीकी चालकू जीतें हैं चाल जिनकी अनेक विक्रियामय है शरीर जिनका अनेक तरह सू नृत्य करें हैं अरु देव अनेक शरीर बनाया पुषत अनेक देवागनासूं अनेक भोग भोगवें हैं । अरु जुदे महांन महासुगंधमई कोटक चन्द्रमा सादृस्य सातमई मनकूं रंजाय मान करवावाले महादैदीप्यमान अनेक प्रकारके कल्पवृक्ष तिनके फूलन कर भूसित ऐसी सेज ऊपर देव तिष्ठे हैं । पीछे देवांगना अनेक आभूषन पहिरें जुदे जुदे महलनमें जाय हैं । पीछे दूर हीते हस्त

जोर सीस नमाय तीन नमस्कार करे हैं। पीछे देवकी आज्ञा पाइ सेज्या ऊपर जाय तिष्टे है। पीछें देव कभी गोद पर धोर हस्तादिक सपर्स वा नृत्य करने आज्ञा करे पीछें देव देवांगना अनेक प्रकारके शरीर बनाय व नृत्य करे वा गांन करें तामें ऐसा भाव ल्यावें हे प्रभो हे नाथ मैं कामवान कर दग्ध हूं ताकूं भोगदान कर सांत करो आप म्हांके कामदाह मेटवेकूं मेघ सादृस्य हौ। वहुरि कभी वे देवका गुनानुवाद गावें हैं। कभी कटाक्ष कर जानी रहे है। कभी आइ एकठी होय कभी याइ तले लोटै जाय कभी बुलाय बुलाय भी न आवे सो पहर आंका मायाचार जात स्वभाव ही है। मनमें तो अत्यंत वाह्य अरु वाहू अचाह दिखावे वहुरि कभी नृत्य करती धरतीमें झुक जाइ है। आकाशमे उठ जाय वा चकफेरी देइ वा भूम ऊपर पगांकूं अति शीघ्र चलावे व कभी देव दिसाप्रति हेरे। वा तली दृष्टि देखे देवांगना वस्त्र कर मुख आछादित कर देय वा उघाड़ देय जैसे चन्द्रमा वादल कर आछादित होय कभी वादल सो रहित दिखाई देय बहुरि कभी देव देवांगना ऊपर उछाले सो वे भयकर भाग जाइ पीछे अनुराग कर देवके शरीरसू आय लिपटे फेर दूर जाय है कभी इन्द्र सहित देवांगना मिल चकफेरी देय कभी ताल मृदंग वीन बजाय देवकूं रिजावे कभी सेजपर लोट जाय कभी उठ भागे पीछे आकासमें नृत्य करे। मानू आकासमें विज्जुली चमके अथवा आकाशमें तारान सहित चन्द्रमा सोभे है। अथवा चन्द्रमा साथ चन्द्रकला गमन करती सोभे। तैसें देवके साथ देवांगना मिल कौतूहल करे बहुरि देवांगना नृत्य करती थकी पावन भूमि ऊपर वा आकासमें नेवर आदि पगनके

गहने ताके झनकार सहित चलावे है सो कहिये है। झिम झिम झिन झिन छिन छिन तिन तिन आदि शब्दनके समूह अनेक रागने लिया गातके गहनेनके शब्द होय मानू देवकी स्तुति करें है। पीछें कोमल सेजपर देवका आलिगन करें सो परस्पर देवका संयोग कर ऐसे सुख उपजे मानू नेत्र मूंद कर सुखने आचरे है। अरु तिर्यच मनुष्यकी नाईं भोग किये सिथिल होय नाही। अत्यंत त्रप्त होय जैसे पंचामृत पिये होय। बहुरि वह देवमे ऐसी सक्ति पाइये कभी तो शरीरकू सूक्ष्म कर लेय कभी हलका शरीर करे कभी भारी शरीर करे कभी आंखके पल मात्रमें असंख्यात् जोजन चाले कभी विदेह क्षेत्रमे जाय तीर्थंकर देवकूं वंदे हैं स्तुति करे हैं। कोई स्तुति करे है जय जय भगवानकी जय प्रभूकी जय त्रिलोकी नाथकी जय करुनानदजी जय संसार समुद्र तारक जय परम वीतराग जय ज्ञानानद जय ज्ञान स्वरूप जय परम उपगारी जय लोकालोक प्रकाशक जय सुभावमय मोदित जय। स्वपर प्रकाशक जय ज्ञान स्वरूप जय मोक्ष लक्ष्मीके कंत जय सिद्ध स्वरूप जय आनन्द स्वभाव जय चेतन्य जय अखड सुधारसपूर्न जय ज्वलित सुचलित योति जय निरजनजय निराकारजय अमूर्तीक जय परमानंदेककारन जय सहज सुभाव जय सहज स्वरूप जय सर्व विघ्ननासक जय सर्व दोपरहित जय निःकलंक जय परम सुभाव नित्यं जय भव्यजीव तारक जय अष्ट कर्म रहित जय ध्यानारूढ़ जय चेतन्य मूर्ति जय सुधारसमई जय ज्ञान मई जय अनन्त सुख मई जय अनन्त दर्शनमई जय अनन्त वीर्यमई जय अतुल जय अव नासी जय अनूपम जय सुखपिन्डजय सर्व तत्व ज्ञायक जय॥

अनन्त गुनभंडार जय निज परनतिमें रमनहार जय भव समुद्रके तरनहार जय सर्व दोषके हरनहार जय धर्मचक्रके धरनहार हे प्रभूजी परम देव थें ही हो अरु हो प्रभूजी देवांका देव थे हीं हो आनमतके खंडनहार थें ही हो अरु हो प्रभूजी मोक्षमारगके चलावनहारे थें ही हो। भव्य जीवनकूं प्रफुल्लत थें ही हो अहो प्रभूजी जगतका उद्धारक थें ही हो। जगतका नाथ थें ही हो अरु कल्यानके कर्ता थेई हो दयाभंडार थें ही हो अहो प्रभूजी समोसरनको लक्ष्मीसूं विरक्त थेंई हो। प्रभूजी जगत मोहवाने समर्थ थेंई हो अरु उद्धार करवाने भी थेंई समर्थ हो प्रभूजी थाका रूप देखकर नेत्र त्रिप्त न होयं अहो भगवानजी आजकी घडी धन्य है। आजका दिन धन्य है। सो मे थाको दर्शन पायो सो दरसन करवा थकी बहु कृत कृत्य हूवो अरु पवित्र हूवो कारज करनो हो आज में कियो। अब कार्य करनो वयों रहो नाही। अहो भगवानजी थाकी स्तुति कर जिह्वा पवित्र भई अरु वानी सुन श्रवन पवित्र भयो अरु दर्शन कर नेत्र पवित्र हुआ अरु ध्यान कर मन पवित्र हुआ अष्टांग नमस्कार कर सर्व अंग पवित्र हूवो और हे भगवानजी मेरे ताईं ऐते प्रश्नका उत्तर कहो आपके मुखारविन्द तें सुन्या चाहूं हूं सोई कहिये है हे प्रभू हे देव सप्त तत्वका स्वरूप कहो अरु पंचास्तिकायका स्वरूप कहो अरु षट द्रव्य नव पदार्थका स्वरूप अरु चौदह गुनस्थान वा चौदह मार्गनाका स्वरूप अरु अष्टकर्म स्वरूप वा उत्तर कर्मका स्वरूप हे स्वामी मोने कहो। प्रथमानुयोग करनानुयोग चरनानुयोग द्रव्यानुयोग इनका स्वरूप कहो स्वामी तीन काल वा तीन लोकका स्व-

रूप श्रावक मुनिका आचरन वा मोक्षका मारग हे स्वामी थें कहो पुन्य पापका स्वरूप वा चार गतिका स्वरूप वा जीवदयाका स्वरूप वा देवगुरु धर्मका स्वरूप वा कुदेव कुगुरु कुधर्मका स्वरूप हे नाथ मोने कहो सम्यकदर्शक ज्ञान चारित्रका स्वरूप अतेन्द्री आनन्दमय निराकुलित अनोपम वाधा रहित अखडित सास्वतो अवनासी आत्मीक सुखका स्वरूप हे भगवानजी थेंही कहो धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान आरतध्यान रौद्रध्यान हे प्रभूजी इनका स्वरूप कहो। जोतिष वा वैदिक वा मत्र तत्र जत्र इनका स्वरूप कहो वा चौसठ रिद्ध वा तीनसे त्रेसठ कुवादिका स्वरूप भी कहो। अरु बारा अनुपेक्षा दसलक्षनी षोडस भावनाका स्वरूप अरु नोनय वा सप्तभगी वानी अरु द्रव्यका सामान्यगुन अरु विसेष गुन ताका स्वरूप कहो वा अधोलोक वा मध्यलोक वा ऊर्धलोक ताकी रचना वा द्वादशागका स्वरूप वा केवलका स्वरूप याने आदि दे सर्व तत्वका रूप जान्या चाहूं हूं अरु हे भगवानजी नर्क किसा पाप सो जाय है। तिर्यच कैसा पाप सूं होय मनुष्य कैसा परनाम सू होय। देव पर्याय कैसे परमान सू होय निगोद क्यो कर जाय एकेन्द्री विकलत्रय क्यों कर होय असेनी कैसा पाप सू होय सन्मूर्छन अलब्धि पर्याप्त सूक्ष्म वादर कैसा खोटा परनाम सू होय आधो बहरो गूगो लूलो कैसा पाप कर होय वावन कूवडो विकलिगी अधिकअंगी कैसा पाप कर होय कोढ़ी दीर्घ रोगी दरिद्री कुरूपी शरीर कसा पाप सूं होय मिथ्याती कुविस्नी अन्यायमार्गी चोर निर्दई अदयावान धर्मसूं परान्मुख पाप कार्यसो आसक्त अधोगामी कैसा पाप सूं होय। शीलवान संतोषी दयावान संयमी त्यागी वैरागी कुल-

वान पुन्यवान रूपवान निरोगी विचक्षन बुद्धिमान पंडित अनेक शास्त्रको पारगामी धीर वीर साहसी सज्जन सबका मन मोहन सबकूं प्यारा दानेश्वरी अर्हंत देवका भक्ति सुगतिगामी कैसा पुन्य सों होय इत्यादि प्रश्नका दिव्यध्वनि करि स्वरूप सुन्या चाहूं हूं। मो मो पर अनुग्रह कर वा दया कर मेरे ताई कहो अहो भगवानजी हमारा पूर्वला भव कहो अरु अनागत भव कहो अरु हे भगवानजी अब मेरे संसार केतो बाकी रहा अरु दिक्षा धर कब थां सारखा होहुंगा सो मोने यथार्थ कहो हमारे यह जानवाकी घनी वांछा छै। वा घनी अभिलाषा छै। ऐसा प्रश्न प'इ श्रीभगवानजीकी वानी खिरती हुई अरु सर्व प्रश्नका उत्तर एक साथ ज्ञानमे भापता भया ताके मुखकर सुनि अत्यंत तृप्ति भया पीछे स्वर्ग लोक गया पीछे कभी नन्दीसुरद्वीपमे जाय वा मेरुका चैत्याला जाइ प्रतिमाजीने वंद कभी अनेक प्रकारका भोग भोगवे कभी सभामें सिहासनपर बैठे अरु राज्यकाज करै कभी धर्मकथा करे। कभी चार जात वा सात जातकी सेन्या सज भगवानका पंचकल्याणकमे जाय वा वनादिमे क्रीड़ा करवाने जाय कभी देवांगना देव अंगुष्ट ऊपर नृत्य करें। कभी हथेली ऊपर कभी भुजा ऊपर कभी आंखकी भोह ऊपर कभी आकाशमे नृत्य करें कभी धरतीमें झुक जाय कभी अनेक शरीर बनाय लेय कभी बालक हो जाय कभी देवकी स्तुति करे। कांई स्तुति करे हे देव थाने देखवा कर नेत्र त्रप्त न होंय हे देव थांका गुनका चिन्तवन कर मन त्रप्ति नाही होंय। अरु हे देव था विना म्हांने कौन प्रीति उपजावे है। हे देव थांका दर्शन कर अत्यंत त्रप्ति होय। हे देव थांका संयोगको अंतर कभी मत करो। थांकी सेवा

जयवंती प्रवर्तो अरु थें जयवन्ता प्रवर्तो थें म्हाने कल्यानके कर्ता हो। अरु थें म्हांका मन वांछित मनोरथने पूरो। बहुरि कैसे हैं देव देवांगना जाके आंखका टमकार होय नाहीं। अरु शरीरकी छाया नाहीं अरु क्षुधा तृषा रोग नाही हजार वरस पीछे किंचित् मात्र क्षुधा लागे सो मनहीकर त्रप्ति होय हैं तातैं क्षुधा नाहीं वे केई देव अनेक तरेका स्वांग ल्यावे अरु केईक देव सुगंध-मई जल वरपावे हैं। अरु केई इन्द्र ऊपर चमर ढोरे है। कैसे ढोरे मानू चमरके मिसकर नमस्कार करे है। केईक छत्र लिया केई देव आयुध लियें दरवाजा तिष्टें है। कैईक देव माहली सभामे तिष्टें। कैईक वारली सभामें तिष्टें कैईक विरदावली बोलें हैं। कैईक देव स्तुति करें है कैईक हाथ जोड वीनती करें हैं। कैईक देव अमोलक निधि ल्याइ नजर करें है। कैईक देव ऐसे कहें है हे प्रभो कौन धर्म किया था तासू ऐसी रिद्ध पाई अरु मै भी कौन पुन्य किया था ताकर ऐसा नाथ पाया अरु कैई देव तीखा कण्ठ सों राग गावें सो रागने गावे मानू या कहें हैं हे प्रभूजी म्हांपर प्रसन्न होहु हमारी सेवा दिस देखो अरु कैईक प्रश्न करे हैं हे प्रभू जीवको कल्यान कौन वात कर होय सो मोने कहो थें सबनमें ज्ञाता हो अरु विशेष पुन्यवान हो याने आदि देय अनेक प्रकारके कौतूहल कर वा नृत्य करवावै गान करि स्तुति करि अपन स्वामीने रिझावे या जानेके कोई प्रकार देव म्हांपर प्रसन्न होय बहुरि स्वर्गामें रातदिनका भेद नाहीं रतननकी जोति वा कल्प-वृक्षनकी जोति वा सुभाव कर आकास निर्मलताके प्रभाव एकसा कोव्यां सूर्यका प्रकासने लियां सास्वता है। कैसा

है प्रकास मानो यह प्रकास नाहीं आनन्द वर्षे है। मानूं देवका पुन्य एकठा होय आया है कि मानू त्रैलोककी सुभ परमानू आन एकठी भई है। बहुरि कभी वे देव धर्मकी चरचा कर अपना देवाने पोषित करे है। अरु आनन्द उपजावे है अरु महा मनोहर वचन बोले अरु या जाने है के ऐ देव म्हारा चाकर है। मैं याका स्वामी हों सो मोने याकी रक्षा कर करनी हूं या देवकर सोभायमान दीसूं देखो यो धर्मको महातम तीसूं विना बुलाया वा विना प्रेरचा देव आन स्तुति करे है। अरु सेवा करे है यो अद्भुत कोतूहल स्वर्ग लोक विना और ठौर तो नाही होसी। देखो या विमानकी सोभा और देखो देवांगनाकी सोभा अरु देखो राग वा नृत्य वादित्र वा सुगन्ध उत्कृष्ट ऐठे ही आन एकठी हुई है। कैसे इकठी हुई है। कही तो देवांगना नृत्यगान करे कहीं क्रीड़ा करे कही देवांगना आन इकट्ठी भई हैं। कि मानू सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र ग्रह ताराकी अंकित एकठी होय दसों दिसा प्रकासित कीनी हैं कहीं देवांगना रतनोंका चूरन कर मंगलीक साथिया पूरे हैं। कोई देवांगना मीठा मीठा सुरसूं मगल गावे है मानू मंगलके मिसकर मध्य लोकसू धर्मात्मा पुरुषाने बुलावे हैं। कोई देवांगना देव आगे हाथ जोड़े ऊभी है। कोई देवांगना हाथ जोड़े स्तुति करे हैं। कोई हाथ जोड़ प्रार्थना करे हैं कोई देवांगना लज्याकर नीची दृष्टि करे है कोई देवांगना देवका तेज प्रतापने देख भयवान होय है। कोई देवांगना थरथर धुनती जाय है। हाथ जोडे मधुर मधुर वचन बोलती जाय हैं। अरु कैई देवागना या कहे हैं। हे प्रभू हे नाथ हे दया

मूर्ति कीडा करवा चालो म्हाने त्रप्ति करो बहुरि कैसा है स्वर्ग कहीं तो धूपकी सुगन्ध फैली है। कहूं देवागनाका समूह विचरे है। कहीं धुजानका समूह चाले है। कहीं पन्ना सादृस्य हरयाली होय रही है। कही पहुपवाडी फूल रही है कहीं भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। कही चंद्रकाति मनिकी सिलानकर सौभित है। तामे देव तिष्टे हैं। कही कांच सादृस्य निर्मल वा जल सादृस्य निर्मल पृथ्वी सोभे है। मानू जलके दर आयुती है। ताके अवलोकन करतें ऐसी सका उपजे है। मन यामे डूब जाय कहीं मानिक सारखी लाल सोना सारखी पीत भूमि वा सिला सोभे है कही तेल कर मथो काजल सादृस्य वा काली वादरी सादृस्य भूमि सोभे मानू पापके छिपावे पापकी माता छै इत्यादि नाना प्रकारके वर्न लिया स्वर्गाकी भूमि देवताके मनकू रमावे है। ओर सर्वत्र पन्ना सारखे हरी अमृत सारखी मीठी रेशम सारखी कोमल वावन चदन सारखा सुगन्ध सावन भादवाकी हरयाली सादृस्य पृथ्वी सोभे सदा एकसी रहे है। बहुरि ठौर ठौर ज्योतिपी देवनका विमान सादृस्य उज्जल आनन्द मदिर वा सिला वा पर्वतनके समूह तामे देव तिष्टै हैं। कहीं सोवर्न रूपाके पर्वत सोभे है। कही वैडूर्यमन पुष्पराग मोतनके समूह नाजके ढेरवत परे हैं। कहीं आनन्दमडप है कहीं कीडा मंडप है। कहीं सभामंडप है कही चरचा मंडप हैं कही केत्र मंडप है कही ध्यान मंडप है। कही चित्रामवेल कही कामधेनु कहीं रसकूप कहीं अमृत कुड भरया है। कहीं नील मन आदि मन्यां-के ढेर परे हैं। ऐसे सोभाके समूह कर व्याप्त हैं।

बहुत सुगंध वा अगनित वादित्र कर विमान व्याप्त हैं । सो याने आदि दे सुख सामग्री स्वर्गमें सर्व है और खोटी सामग्रीका अभाव है। ऐसी सुख सामग्री संसारमे नाहीं। जोमें स्वर्गमें पाजे अबे तो मध्यलोक आदि विषें सुख सामग्री है से स्वर्ग लोककी नकल एक अंसमात्र इहां पुन्यके फल लेस मात्र दिखावा निपजा है। सो स्वर्ग लोकका सुख वर्नन करवां समर्थ श्री गनधर देव भी नाहीं केवल ज्ञान गम्य है। सो यो जीव धर्मका प्रभाव कर सागरां पर्यन ऐसा सुख पावे है, जांसू हे भाई तू धर्म सेवन निरंतर कर धर्म विना ऐसा भोग कदाच न पावे तासूं अपना हित वांछने पुरुषको धर्म सेवना जोग्य छे। कैसो छे धर्म परंपराय मोक्षको कारन छे सो ऐसा सुखनई आयुने पूरा कर पुन्य पूरा होवे कर ऊठा सोचवे है तो मास छे आयुमें बाकी रहे तब वह देवता अपना मरन जाने है। सो माला व मुकट व शरीरकी क्रान्ति मंद पड़वा थकी सो देव मरन जान बहुत झूरे है। कैसे झूरे है हाय हाय अब मैं मर जासी ये भोग सामग्री कौन भोगसी अरु मैं कौन गत जासी मोने राखवा समर्थ कोई नाहीं। अब मैं कांई करूं कौनकी सरन जाऊं हमारो रक्षक कोई नाहीं हमारा दुखकी बात कोनें कहूं। ये भोग हमारा बैरी था सो सब एकठा होय मोनें दुख देवे आया है। सो योनके सारखो यो मानसीक दुख कैसे भोगऊं। कहा तो ये स्वर्ग सारखा सुख अरु कहा एकेन्द्री आदि पर्यायका दुख सो कौड़ीके अनन्ता जीवके अरु कहा हाड़ान सूं छेदे हैं, हाड़ी मेरा वा राधे सो ऐसी पर्यायमें पावासी हाय हाय यो कांई हूवो। ऐसानकी ऐसी दसा होय जाय है। फेर वह देव अपने परवारके

देवनसों कहे हैं देव हो आज मो ऊपर कालका किंकर कोप्या सो मोपर सों ऐसा सुरपदका सुख छुडावे है अरु खोटी गतिमें नाखे छे ई दुख सहवाने मै समर्थ नाहीं। घनीमे काईं काईं कहूं म्हांरा दुखकी बात सर्वज्ञ देव जाने छे और जानवा सक नाहीं ऐसा दीनपनाका वचन सुन परवारका देव तामें कोई बुद्धिवान देव शास्त्रका परगामी कहता हूवो हे नाथ हे स्वामी हे प्रभो ऐसा दीनपनाका वचन क्यो कहो। या दसा तो सबन की होनी ही है। जो कालसूं काहूको जोर नाही ई कालका वस त्रैलोकका जीव है। जासूं अब एक धर्म ही सरण है। सो थें भी धर्मको सरन लेहु आरतने छोडो आर्तध्यान तिर्यंच गतको कारण छै। अरु परंपराय अनन्त संसार करे छै तीसूं अबार किछू गयो नाहीं अब सावधानी सहित भगवानकी पूजा करो। बारा अनुपेक्षाको चितवन करो अरु अर्हंत देवको सुमरन करो। अरु आपना सहजानन्दका सम्हार करो स्वरसने पीवो जासूं जामन मरनका दुख विलय जाय अरु सास्वता सुखने पावो ई ससारसूं श्री तीर्थंकर देव भी डरया शीघ्रतासू राजसपदाने छोड बनमे जाय वस्या, तीसो थांने भी यो करनो जोग्य है। अरु सोक करनो जोग्य नाहीं पीछे वारंवार श्रीजीने याद करता हूवा अरु धर्ममय बुद्धि करता भया अरु बारा अनुपेक्षा चिंतवतो हूवो। काईं चिन्तवतो हूवो देखो भाई कुटुम्ब परवार है सो बादरकी नाई विलय जासी तथा जैसे साझ समै वृक्षपे दसूं दिससूं अनेक पक्षी आन बसे प्रात समै दसूं दिस जाते रहे अथवा जैसें हाटमे अनेक ब्यापारी-हटया भेले होंय पीछे दोय चार दिनमें जाका काम होय

सोई जाता रहे अरु तमासगीर हू जाते रहें तैसे कुटुम्ब परवारका चरित्र है। अरु माया है सो विजुलीके चमत्कार समान चंचल है। अरु जोवन है सो साझकी ललाई समान है। सो जाने आदि दे सर्व ठाठ विनासीक हैं छिन भंगुर हैं कर्मजनित हैं पराधीन हैं। ई सामग्रीमे हमारो कोई नाहीं। हमारो चैतन्य स्वरूप सासतो अविनासी है। हूं कौनको सोच करूं और कौन सो राच्यों अब असरन अनुपेक्षा चिन्तवे छे। देखो भाई था संसारमें देव विद्याधर वा इन्द्र धरणेन्द्र वा नारायन प्रति नारायन वा बल्देव वा रुद्र वा चक्री कामदेवने आदि दे कोई सरन नाहीं। ऐ भी सवकालके वस हैं। तो और कौने सरन राखसी तासूं वाह्य मोने पंचपरमेष्टी सरन है। अरु निश्चै सरन हमारो निज स्वरूप है। और त्रिकालमें सरन नाहीं। अब संसारानुपेक्षा चिंतवे हैं। देखो भाई यो जीव भूलकर मोहके वस हूवो ई संसारमें जामन मरनादि दुख सहे है। तासूं या संसारसूं उदास होय निश्चै धर्म हीको निरंतर सेवन करनो। अब एकत्वानुपेक्षाको चितवन करें हैं। देखो भाई यो जीव अकेलो है ईके कुटुम्ब परवार है नाही नर्क गयो तो अकेलो ऐठा आयो तो एकलो अरु ऐठासूं भी एकलो जासी तीसूं हमारे अनन्त दर्शन अनन्तज्ञान अनन्तसुख अनंतवीर्य यो परवार सास्वती छै। सो म्हारे साथ छै। अब अनित्यानुपेक्षाको चिन्तवन करे छे। देखो भाई छहों द्रव्य अनादि निधन अरु न्यारा न्यारा एक क्षेत्र अवगाही भेला तिष्ठे है। कोई द्रव्य काहूं सो मिले नाहीं। ऐसा ही वस्तुका स्वभाव है जामें संदेह नाहीं। चैतन्य स्वरूप अमूर्तीक अरु जो

शरीर जड मूर्तीक तासूं मेरा काईं मेल ईको स्वभाव न्यारो म्हारो स्वभाव न्यारो ईका प्रदेश न्यारा म्हारा प्रदेश न्यारा ईका द्रव्य गुन पर्याय न्यारा म्हारा द्रव्य गुन पर्याय न्यारा। तासूमें यासूं भिन्न त्रिकालका हूं। अब अशुचित्वानुपेक्षाका चिन्तवन करें हैं। देखो भाई यो सरीर महा असुच है। अरु घिनावनो है। ऐता दिन या सरीरने पोषता भया काम पड्यो तब दगा ही दिया ई सरीरने सागर भरपानी सो धोवो तो भी पवित्र न होय। यो जड अचेतन ही रहे तासूं बुधजन ऐसा सरीर सूं कैसे प्रीति करें कदाचि न करें। अब आश्रवानुपेक्षाको चिन्तवन करें हैं। देखो भाई यो जीव मिथ्यात अविरति प्रमाद कषाय योग इनकर उपजा जो भावत द्रव्यत कर्म ताकर संसार समुद्रमे डूवे हैं। कैसे डूवे हैं जैसे छिद्र सहित जिहाज जलमें डूवे। अब संवरानुपेक्षा चिन्तवें है। देखो भाई जिहाजका छिद्र मुंदे जल न आवे तैसे तप सयम धर्म कर सवर होय है। अव निर्जरानुपेक्षाको चिन्तवन करे है। देखो भाई आत्माका चिन्तवन कर पूर्वला कर्म नासकूं प्राप्त होय। जैसे जिहाजमेंका पानी उछाल दीजे जिहाज तीर पार होय वैसे आत्माकूं कर्मरूप बोझ करि रहित कर मुक्तिकी प्राप्त करे। अब लोकानुपेक्षाका चितवन करें हैं। देखो भाई यह लोक षट् द्रव्यनका पसार है। कोईका किया नाही। अब धर्मानुपेक्षाका चितवन करें। देखो भाई धर्म ही संसारमें सार है। अरु धर्म ही मित्र है। अरु धर्म ही बडो हितू है। अरु धर्म विना कोईं सरन नाहीं तातै धर्म हीको साधन करनो अरु धर्म ही आराधनों जेता त्रैलोकमें उत्कृष्ट सुख है सो धर्म हीका प्रसाद कर पावे है।

अरु धर्म ही कर मुक्ति पावे सो धर्म ही हमारो निज लक्षन है। निज स्वरूप है म्हारो स्वभाव है। सोई म्हाने गृहन करनो और कर प्रयोजन नाहीं। अत्र दुर्लभानुपेक्षाकूं चिन्तवे छै॥ देखो भाई संसारमें एकेन्द्री पर्याय सूं वेन्द्री दुर्लभ है। वेन्द्री-सूं तेन्द्री, तेन्द्री सूं चौन्द्री, चौन्द्री सूं पचेन्द्री तामें मनुष्य पर्यायमें भी धर्मीनकी संगति धर्म संयोग यह अनुक्रमसे दुर्लभसे दुर्लभ जानना, तामे भी सम्यक ज्ञान महां दुर्लभ जानना ऐसे वह देव भावना भावता हुवा पीछे आयु पूर्नकर मनुष्य पर्यायमें उच्च पद पावता हुवा अरु विना धर्म वेइन्द्रीन कर घटे है। तातै हे भाई हे पुत्र हे वक्ष धर्मका सेवन निरंतर कर धर्म ही संसामे सार है धर्म समान और हितू नाहीं। अरु मित्र नाहीं तातै सीघ्र ही पाप कार्यने छोड़ अपना हित वांछित पुरुषाने धर्म ही सेवनो ढील न करनो घनी वातकर कांई। ऐसे गुरु उत्तर दिया सुन्दर उपदेस कर आसीर्वाद दिया यह सुभावकूं ज्ञाता जानें हैं। इति स्वर्ग वर्नन संपूर्न। ॐ नमः सिद्धेभ्यः। आगे अपने इष्टदेवको नमस्कार कर समाधि मरनका स्वरूप वर्नन करिये है। सो हे भव्य तू सुन। सोई अत्र लक्षन वर्नन करिये है। सो समाधि नाम कषायका सांत परनामका है। ऐसा याका स्वरूप जानना आगे और विशेष कहिये है। जे सम्यकज्ञानी पुरुष हैं ताका यह सहज सुभाव है। जो समाधि मरन ही कूं चाहे हैं ऐसी निरंतर सदैव भावना वर्ते पाछे मरन समय निकट आवे तव ऐसा सावधान होय मानूं सूता जो सिंह ताके तांई कोई पुरुष ललकार ऐसा कहे है। सिंह अपना पुरषार्थ सम्हार थां पर

वैरीनकी फौज आई, सो गुफा माह सू निकसो, जेते वैरीनका वृंद कहिये समूह केतीक दूर है ते ते तुम सावधान होय वैरीनकूं जीतो महत पुरुषांकी यही रीति है। जो वैरी आया कायर न होय सो सिंह ततक्षन ही उठतो हूवो अरु ऐसो गुजारो मानो असाड़ मासमे मेघ गाजो सो ऐसा सिंहका शब्द सुन वैरीनकी फौजका हस्ती घोडा पुरुष सबही कंपायमान भया वा सिंहका जीतवाने असमर्थ भया हस्तीका समूह आगे पांव न धारता हूआ कैसा हस्ती डरया मानूं याका हृदयमें सिंहका आकार पैठ गया है। सो हस्तीनका धीरज न रहा क्षिन क्षिन मोने हार करे तापरि सिंहका पराक्रम सहा न जाय। तैसे ही सम्यक ज्ञानी पुरुष सोई भया सिंह ताके अष्ट कर्मही वेरी सो मरन समय कर्म जीत वाका उद्यम विशेष करे वह सम्यकज्ञानी सिंह समान सावधान होय कायरपनाने दूर ही ते छोडे बहुरि कैसा है सम्यक् दृष्टि पुरुष ताका हृदामे आत्मास्वरूप देदीपमान प्रगट प्रत्यक्ष भास्या है कैसा भास्या है ज्ञान ज्योतिने लिया आनन्द रस भरतो ऐसा साक्षात पुरुषाकार अमूर्तीक चैतन्य धातुको पिन्ड अनन्त गुनकर पूर्ण ऐसा चैतन्य देव आपको जाने ताका अतिशय कर पर द्रव्यसूं अंसमात्र भी रंजित कहिये रागी न होय है। क्यो न होय है। अपना निज स्वरूप तो वीतराग ज्ञाता दृष्टा परद्रव्य सों भिन्न स्वास्वता अविनासीक जान्या है। अरु परद्रव्यका गलन पूर्व छिन भंगुर असाता अपना स्वभाव सूं भिन्न भलीभांति नीके जान्या है। तातै सम्यक ज्ञानी मरनतें कैसें डरै अरु वह ज्ञानी पुरुष मरन समय ऐसा विचारे अब इस शरीरका आयु तुक्ष रहा है। ऐ चिन्ह मोने प्रत्यक्ष भासे। तातै

अब सावधान होना उचित है। ढील करना उचित नाही जैसे सुभट पुरुष रनभेरी सुन्या पीछे वैरीन ऊपर जावामे ढील छिन मात्र भीत करे अरु घना रोस चढ़ आवे ततछिन जाय झुके अरु वैरीका समूहने जाय जीते ऐसा जाका चित्त अभिलाषी है त्योंही हमारे भी अभिप्राय कालका जीतवाको है। सो हे कुटुम्बके लोक तुम सुनो अरु देखो ये पुद्गल पर्यायका चरित्र जो देखता देखता ही उत्पन्य भया अरु देखता देखता ही अब विलय जायगा सो में तो पहिले ही याका विनासीक सुभाव जान्या था सोई अब औसर पाय विलय जासी अब याका आयु तुक्ष रहा है तामें भी समय समय गलता जाय है। सो मे ज्ञाता दृष्टी भया देखो हों। मैं याका पडोसी हो सो मे अब देखो या शरीरकी आयु कैसे पूर्न होय। अरु कैसे नस जाय सो या हेतु कर रहा हों। अरु जाकर तमासगीर हीं याका चरित्र देखो हो। जो असंख्यात कुलकी परमानू एकठी होय सरीर निपज्या है। अरु मेरा स्वरूप चैतन्य स्वभाव सास्वता अविनासी है। ताकी अद्भुत महिमां सो मैं कौनकूं कहूं बहुरि देखो इस पुद्गल पर्यायका महातम जो अनंत पुद्गल परमानूका एकसा परनमन ऐते दिन रहा। सो यह बड़ा विसमय है सो अब यह पुद्गल परमानू भिन्य भिन्य होय और रूप परनमेगे सो जाका आश्चर्य नाहीं। जैसे लाखों मनुष्य एकठे होय मेला नाम पर्यायकू बनावे अरु केताइक काल पर्यंत मेला नाम पर्याय बन्या रहे तो याका आश्चर्य गिनिये ऐता दिन ताई लाख्यां मनुष्यनका परिनाम एकसा रहा। ऐसा विचार देखनेवाले

पुरुषनकूं अचरज उपजै है। पीछें मेलाके पुरुष जुदा देसने गमन कर जाय तब मेला नास होय सो ऐसे मनुष्यनका अन्य अन्य परनाम छा ऐसा काल एकसा रहा सो अचरज है। त्यो ही यह शरीर और भाति परनवे है। सो या सुभाव ही है थिर कैसे रहे। अब यह शरीरका राखवाने कोई समर्थ नाहीं। सो क्यों समर्थ नाही सोई कहिये है। जेते त्रिलोकमे पदार्थ है सो अपना स्वभावरूप परनमें हैं। कोई किसीकूं परनमावे नाहीं। अरु कोई किसीका भोक्ता नाहीं आप ही आवे आप ही जाय आप ही विछुरे आप ही गले आप ही पूरे तो मै इसका कर्ता भोगता कैसे मेरा राख्या शरीर कैसे रहे अरु मेरा दूर कहा यह शरीर दूर कैसे होय। मेरा कर्तव्य कछू है नाहीं आगे झूठा ही कर्तव्य माने छा मैं तो अनादिकालका खेद खिन्न आकुल व्याकुल होय महां दुख पावूं था सो यह बात न्याय ही है। जाका कर्तव्य तो क्यों चले नाहीं। वे परद्रव्यका कर्ता होय परद्रव्यकूं आपना स्वभावके अनुसार परनमामें ते खेद पावे ही पावे तातै मैं तो एक ज्ञायक स्वभाव ही का कर्ता अरु भोक्ता अरु ताहीकू वेदूं अरु ताहीको अनुभवो छूं अब जा शरीरके जाते मेरा किछू बिगार नाहीं अरु शरीरके रहे मेरा सुधार नाही यह तो परद्रव्य जैसा काठ पाखा-नमें भेद नाहीं शरीरमे यह जानपनेका चमत्कार है सो मेरा गुण शरीरका गुन नाहीं शरीर तो प्रत्यक्ष मुरदा है। जो मैं शरीरसूं निकसा सो याको मुर्दा जान दग्ध किया मेरे ईके मिलाप तें जाका जगत आदर करे हैं। जगतके ताई ऐसी खबर नाहीं जो आत्मा न्यारा है अरु शरीर न्यारा है। तातैं जगत भ्रम कर ई शरीरकूं

अपना जान ममत्व करे हैं। अरु जाके जाते बहुत झूरें हैं अरु विशेष शोक करे हैं कांई शोक करे हैं हाय हाय मारा पुत्र तू कहां गया हाय हाय म्हारा खामिंद तू कहां गया हाय हाय पुत्री तू कहां गई हाय हाय माता तू कहा गई हाय हाय पिता तू कहां गया हाय हाय द्रष्ट भ्राता तू कहां गया इत्यादि वे अज्ञानी पुरुष ऐसा विचार करे हैं अहो कौनका पुत्र कौनकी पुत्री कौनका खावंद कौनकी स्त्री कौनकी माता कौनका पिता कौनकी हवेली कौनका मंदिर कौनका धन कौनका माल कौनका आभरन कौनका वस्त्र इत्यादि सर्व सामग्री झूठी है। ऐ सामग्री किछू वस्तु नाहीं जैसे सुवा को राज वा इन्द्रजालका तमासा जैसे भूतकी माया जैसे आकास विषें वादरानकी सोभा ये सामग्री देखते तो नीकी लागे परन्तु वस्तु स्वभाव विचार तांकू भी नाहीं। जो वस्तु होती तो थिर होती नासने प्राप्त न होती तासूं मैं ऐसा जान सर्व त्रैलोकमें पुद्गलकी जेती ईक पर्याय है। ताका ममत्वने छोड़ूं हूं तैसे ही सरीरका ममत्व छोड़ूं हूं जा सरीरके जाते मेरा परनाममे अंस मात्र भी खेद नाहीं। ऐ सरीर दसा सामग्री है। सो चाहो ज्यों परनमों मेरा कछू भी परोजन नाहीं भावे क्षीजो भावे भीजो भावे परलेने प्राप्त होय भावे एकठां आन मिलो भावे जाती रहो हमारी क्यों भी मतलब नाहीं। अहो देखो मोहका महातम परतक्ष यह सामग्री पर वस्तु हैं। अरु तामें विनासीक है। अरु पर भवमें दुखदाई है। तो भी यह संसारी जीव अपना मान राख्या चाहे है। सो यह चरित्र मैं ज्ञाता भया देखूं हूं मेरा तो क्षोक्षा ज्ञान स्वभाव है ताह अवलोकों हों। अरु कालके आगमन सूं नाहीं

डरूं हूं। काल तो या शरीरका ग्राहक है मेरा ग्राहक नाही। जैसे माखी दौड दौड़ मीठी वस्तुपै बैठे अरु अगनिमे कदाच बैठे नाही त्योंही यह काल दौड दौड शरीरकूं ग्रसे है अरु मोसूं दूर भागे मैं तो अनादि कालका अविनासी चैतन्य देव त्रलोक कर पूज्य ऐसा पदार्थ हूं। तापर कालका जोर नाही सो अब कौन मरे कोन जीवे। कौन मरनका भय करे म्हांने तो मरन दीसता नाहीं। मरे छै सो पहिले ही मुवा क्षा अरु जीवे छै सो पहले ही जीवे क्षा जीवे सो मरे नाही मरे सो जीवे नाही मोह दृष्टि कर अन्यथा भासे छै अब मेरे मोह कर्म क्षय भया सो जैसा ही वस्तुका स्वभाव था तैसा ही मोकों प्रतिभास्या ताके जामन मरन सुख दुःख देख्या नाहीं। तो मै अब काहेका सोच करो मैं तो एक चैतन्य मूर्ति सास्वता बन्या हूं। ताका अवलोकन करना, मरनादिकका दुख कैसे व्यापे बहुरि कैसा हूं मै ज्ञानानंद रस कर पूर्ण भरा हू अरु सुद्धोपयोगी हुवा ज्ञान रसने आरूचाहूं वा ज्ञान अंजुली कर अमृतने पीवू हूं यह सुधामृत मेरा स्वभाव थकी उत्पन्न भया है। तातै स्वाधीन है पराधीन नाहीं बहुरि कैसा हू मै अपना निज स्वभावने स्थित हो अडोल हू अकंप हूं बहुरि कैसा हू मैं स्वरस कर निरभर कहिये अतिशय कर भरया हू अरु ज्वलित कहिये दैदीपमान ज्ञान जोतकर प्रगट अपने हीं निज स्वभाव मैं तिष्टूं हूं देखो अद्भुत ई चैयन्य स्वरूपकी महिमा ताका ज्ञान स्वभावमे समस्त ज्ञेय पदार्थ स्वयमेव झलके हैं। पर ज्ञेयरूप नाहीं परनवे हैं ताके जानता विकल्प कास्ता अंस भी न होय है। तातै निर्विकल्प अभोगति अतेन्द्री अनोपम

वाधारहित अखंडित सुख उपजे है। अरु परवस्तु कर संसारमें दुख ही है। सुखका आभास अज्ञानी जीवांकूं भासे है। बहुरि कैसा हूं मै ज्ञानादि गुण कर पूर्न भरया हूं। सो ज्ञान अनन्त गुनकी खान है। वहुरि कैसा है मेरा चैतन्य स्वरूप जहां तहां चैतन्य सर्वांग व्यापी है। जैसे लूनकी डलीका पिन्डमें सर्वांग खार रस व्याप्त है। अथवा जैसे सक्कराकी डलीका पिन्डमें सर्वांग मीठा कहिए अमृत रस व्याप रहा है। ये सक्कराकी डली एक ओक्षा ज्ञानका पुन्ज है। गोमें सर्वांग ज्ञान ही ज्ञान है विविहारसे शरीर प्रमाण हूं। निश्चय नयकर विचार सेतो तीन लोक प्रमान मेरा आकार है। अवगाहन सक्ति कर आकास समान हूं। एक प्रदेशमें असंख्यात प्रदेश भिन्न भिन्न तिष्ठें हैं। सर्वज्ञ देव जुदा जुदा देखे हैं जीवमें सकोच विस्तार सक्ति है। वहुरि कैसा है मेरा निज स्वरूप अनन्त आत्मीक सुखका भोक्ता है। एक सुख ही की मूर्ति हों चैतन्य पुरुषाकार हो। जैसे माटीका सांचामें एक सुद्ध रूपामय धातुका विम्ब निर्मापिये है। तैसे ही आत्माका स्वभाव शरीरमें जानना माटीका सांचा काल पाई गल जाय वर-जाय फूट जाय तव बिम्ब ज्योंका त्यों आवर्न रहित प्रत्यक्ष दीसे सांचेका नास होते बिम्बका नास नाहीं वस्तु पहले दो ही थीं एकका नास होते दूजीका नास कैसे होय त्योंहीं काल पाइ शरीर गले तो गलो मेरे स्वभावका विनास है नाहीं। मैं काहेका सोच करूं। बहुरि कैसा है चैतन्य स्वरूप आकासवत निर्मल है। आकासमें कोई जातका विकार नाहीं एक स्वक्ष निर्मलताका पिण्ड है। अरु कोई आकाशने खड़ग कर क्षेदा भेदा चाहे अरु अग्नकर

पा ल्या चाहे पानीमे घोल्या चाहे तो आकास कैसे क्षेदा भेदा जाय अरु कैसे जले गले कदाच आकासका नास नाहीं बहुरि कोई आकास केतांई पकडा चाहे तोडा चाहे सो कैसे तोडा पकड़ा जाय त्योंही मै आकाशवत अमूर्तीक निर्मल निराकार स्वच्छताका पिण्ड हों। मेरा नास निसी काल कोई प्रकार होय नाही। यह नेम है जो आकासका नास होय तो मेरा भी नास होय ऐसा जानना पन आकासमे अरु मेरे स्वभावमें एक विशेष है। आकास तो जड अमूर्तीक है अरु मै चैतन्य अमूर्तीक पदार्थ हों। जो मै चैतन्य था तो ऐसा विचार भया सो यह आकास जड़ है अरु मै चैतन्य हू मेरे विद्यमान यह जानपना दीसे है। आकासमे दीसे नाही यह निसंदेह है बहुरि मैं कैसा हूं जैसा निर्मल दर्पन होय। वाका निर्मल शक्ति स्वयमेव ही घट पटादि पदार्थ आन झलकें है। तैसे ही मै एक स्वच्छ सक्ति प्रगट हों मेरा निर्मल ज्ञानमय समस्त ज्ञेय पदार्थ स्वयमेव झलके है। ऐसी स्वक्ष सक्तिसू तदात्म व्याप्ति कर स्वभावमे तिष्ठु हूं सर्वांग स्वक्षता भर रही है अरु ज्ञेय पदार्थ न्यारा है। सो तुक्षताका यह स्वभाव ही है। जो सर्वतैं न्यारा रहे उस विषै सकल पदार्थ प्रतिबिम्बित है। बहुरि कैसा हूं मै अत्यंत अतिशय कर निर्मल साक्षात प्रगट ज्ञानका पुंज हू अरु अत्यंत शांति रस कर पूर्न भरया हूं। अरु भेद निराकुल कर व्याप्त हू। बहुरि कैसा हूं मै चैतन्य स्वरूप अपनी अनंत महिमा कर ब्राजमान हू कोईका सहाय नाही चाहूं हू। ऐसा स्वभावने धरूं हूं स्वयभू हू अखंड ज्ञान मूरत पर द्रव्य सू भिन्य सास्वता अविनासी परम देव हू।

और ई उपरांत उत्कृष्ट देव कौनकूं मानिये। जो त्रिलोक त्रिकाल विषें होय तो मानिये बहुरि कैसा है यह ज्ञान स्वरूप अपने स्व- भावकूं छोड अन्य रूप नाही परनवे है। निज स्वभावकी मर्यादा नाहीं तजै है जैसे समुद्र जलके समूह कर पूर्ण भरया है। पन स्वभावक छोड़ और ठौर गमन करे नाहीं। अपनी तरंगावली जो लहर ता कर अपने स्वभाव ही में भ्रमन करे है त्यों ही यह ज्ञान समुद्र सुद्ध परनत तरंगावली सहित अपने सहज स्वभावमें भ्रमन करे है। ऐसा अभूत महिमा कर व्राजमान मेरा स्वरूप परम देव ई शरीर सूं न्यारा अनादि कालका तिष्टे है। मेरे अरु ई शरीरके पड़ोसी कैसा सजोग है। मेरा स्वभाव अन्य प्रकार याका स्वभाव अन्य प्रकार याका परनमन अन्य प्रकार सो अब इस शरीर गलन स्वभाव रूप परनवे है। तो मैं काहेका सोक करूं अरु काहेका दुख करूं मै तो तमासगीर पडोसी हूवा तिष्टों हों इस शरीर सों राग द्वेष नाहीं सो जगतमे अरु परलोकमे महा दुखदाई है। यह रागद्वेष एक मोह हीने उपजे है जाका मोह वि य गया ताका राग द्वेष भी विलय गया। मोह कर पर द्रव्य विषें अहंकार ममकार उपजे है। सो ये द्रव्य हैं सो ही मैं हूं ऐसा तो अहंकार अरु ये द्रव्य मेरा है ऐसा ममकार उपजे वे सामग्री चाहे तो मिले नाहीं। अरु दूर कियें जाय नाही। तब यह आत्मा खेद खिन्न होय है अरु जे सर्व सामग्री पर जानें तो काहेका विकल्प उपजे तातै मेरा मोह पहले विलै गया अरु पहिले ही सरीरादिक सामग्री विरानी जानी हैं। तो अब भी मेरे ई शरीरके जाते काहेका विकल्प उपजै। कदाच न उपजे विकलप उपजानेवाला मोह ताका

नाश किया तासूं मैं निर्विकल्प आनन्दमय जिन स्वरूपने वारवार संभालता वा आदि करता स्वभावमें तिष्टूं हूं। यहा कोई कहे यह शरीर तुमारा तो नाहीं। परन्तु याके निमित्त कर इही मनुष्य पर्यायमें शुद्धोपयोगका साधन भली भाति होय तासूं याका यह उपगार जान्याकू पोषना उचित है। यामें टोटो नाहीं ताकूं कहिये है हे भाई तू ऐसा कहा सो या वात हम भी जाने है मनुष्य पर्याय विषें सुद्धोपयोगका साधन अरु ज्ञानका साधन अरु वैरागकी वधवारी इत्यादि अनेक गुनाकी प्राप्ति होय है ऐसा अन्य पर्यायमे दुर्लभ है परन्तु अपना संयम गुन रहा अरु शरीर है तो भला ही है। म्हाके कोई जा शरीर सू वैर नाही अरु न रहे छे तो अपना संयमादि निर्विघ्नपने राखना अरु शरीरका ममत्व अवश्य छोडना शरीरके वास्ते सयमादि गुन कदाच खोवना नाहीं। जैसे कोई पुरुष रतनका लोभी परदेश जो रतन दीपमे फूसकी झोपडी बनावे अरु उस झोंपडीमें रतन ल्याय ल्याय एकटा करे अरु जो उस झोपडीके आग लागे तो वह विचक्षन पुरुष ऐसा विचार करे जो कोई इलाज कर अग्नि बुझावनी अरु रतन सहित झोंपड़ीकू राखनी जो यह झोपडी रहसी तो फेर या झोपड़ीके आसरे फेर भी रतन भेला कर सूं। सो वह पुरुष झोंपडी वुझती जाने तो रतन रख बुझावे अरु कोई कारन ऐसा देखे जो रतन गया झोपडी रहे तो कदाच भी झोपडी राखनेका उपाय न करे जो झोंपड़ीने वरवा देय अरु अपना सर्व रतन ले घर उठ आवे पांछे एक दोय रतनने बेंच अनेक तरहकी विभूतने भोगवे अनेक प्रकारके सुवर्न रूपामई मंदिर कराय महल वा हवेली वा-

गादि वनवावे पाछे वामें थितकर रागरंग सुख वोई सवुक्त आनन्द क्रीड़ा करे अरु निर्भै भया अत्यंत सुखसूं तिष्टे सोई भेद वा ज्ञानी पुरुष है ते शरीरके रहने वास्ते। संयमादि गुननमे अतीचार भी लगावे नाहीं ऐसा विचारे संयमादि गुन रहसी तामें विदेह क्षेत्रामे जाय औतार लेस्या अरु जन्म जन्मका संचित पाप ताका अतिशय कर नास करस्या अरु अनेक प्रकारके संजम ताका ग्रहण करसूं अरु श्री तीर्थंकर केवली भगवान ताका चरनारविन्द निकट जा एक सम्यक्तका ग्रहण करस्यूं अरु अनेक प्रकारके मन वंछित प्रश्न करस्यूं अरु तिनके अनेक प्रकारके यथार्थ तत्वाको स्वरूप जानसूं। अरु राग द्वेष संसारका कारन ताकूं तीव्रपने अतिशय कर जरा मूलसों नास करसूं। अरु परम दयालु आनन्दमय केवल लक्ष्मी कर संयुक्त ऐसा जिनेन्द्र देव ताका स्वरूपके देख देख दरसनरूपी अमृत ताका अतिशय कर आचमन करस्यूं। ताका अरचन कर हमारा कर्म कलंक धोया जासी तब मैं पवित्र होसी ताका अतिशय कर शुद्धोपयोग अत्यंत निर्मल होसी तब निजरूपने अत्यंत लागसी तब क्षपक श्रेनी चढ़वाने सन्मुख होसी पीछे कर्म सत्रूसों रारकर भव भवके कर्म जड़ मूरसों नास कर केवल ज्ञान उपवासूं। पीछे एक समयमें समस्त लोकालोकके त्रिकाल संबंधी समस्त पदार्थ देखस्यूं। पीछे ऐसा ही स्वभाव सास्वता रहसी ऐसी लक्ष्मीका स्वामी है तो ई शरीर सूं ममत्व कैसे रहे। सम्यक ज्ञानी पुरुष ऐसा विचार करता तिष्टे है। हमारे दोनों ही तरह आनन्द है। अव जो शरीर रहसी तो फेर सुद्धो-

पयोगने आराधसी सो हमारे कोई प्रकारसे सुद्धोपयोगका सेवनमें कमी नाही तो हमरे परनामोंमें संकलेसता कोईकी न उपजे अरु म्हारा परनाम सुद्धस्वरूपसू अत्यत आसक्त ताकू छुडावने ब्रह्मा विस्नु महेश इन्द्र धरनेन्द्र आदि कोई चला-वाने समर्थ नाहीं । एक मोह कर्म समर्थ था त्याने तो मै पहिलेही हत्या सो अन मेरे तो त्रैलोक्यमे कोई वैरी रहो नाही । अरे वैरी नाही तो त्रिलोक त्रिकालमें दुख नाहीं । मोहे कुटुम्बके लोग हो मेरे इस मरनका भय कैसे होन तासों मे आज सर्व प्रकार निर्भै भया हू थें या वात नीके कर जानो अरु जामें सदेह मत जानों ऐसे सुद्धोपयोगी पुरुष शरीरकी स्थित पूरन जाने। तब ऐसा विचार कर आनदमे रहें है । कोई तरहकी आकुलता उपजावे नाही । आकुलता है सोई ससारका वीज है । इस ही नीति कर संसारकी स्थित है। आकुलता कर अनेक कालका संच्या हुवा सजमादि गुन अग्निमे रूई भस्म होय तैसे भस्म होय है तातै सम्यकदृष्टि पुरुष है ताके कोई प्रकार आकुलता होय नाही निश्चे एक स्वरूप हीका वारंवार विचार करना वाहीकू वारवार देखना वाहीके गुणकू चितवन करना वाहीकी पर्यायका विचार करना अरु वाहीका सुमरन करना वाही विषें थिर रहना कदाच सुद्ध स्वरूप सूं उपजोग चले तो ऐसा विचार करे यह ससार अनित्य है। ई संसारमे कोईका सरन नाही । जो सार होता तो तीर्थंकर देव क्यों छोडता तासूं मेरे निश्चे तो हमारो स्वरूप ही सरन है । बाह्य परमेष्ठी जिनवानी वा रत्नत्रय धर्म सरन है । अरु कदाच स्वप्न मात्र भी वा भूले विसरे हमारे और कोई-

सरन नाही । हमारे यह नेम है ऐसा विचार कर फेर स्वरूपमें उपजोग लगावे फेर वहांसू उपयोग चले तो अरहन्त सिद्ध ताका द्रव्य गुन पर्याय विचारे तन वाका द्रव्य गुन विचारता उपयोग निर्मल होय तब फेर आपना स्वरूपमें लगावे अरु आपना स्वरूप सारखा अरहंत सिद्ध जाने सो केसे द्रव्यत्व स्वभावमें फेर नाहीं है । अरु पर्याय स्वभाव विषैं फेर है । अरु मैं हूं सो द्रव्यत्व स्वभावका ग्राहक हूं तासूं अरहंतका ध्यान करता आत्माका ध्यान भली भांति सधे अरहंतका स्वरूपमे अरु आत्म स्वरूपमें फेर नाही भावे तो अरहन्तका ध्यान करो भावे आत्माने ध्यावो ऐसा विचार करे तो सम्यक्दृष्टि पुरुष सावधान हूवो स्वभावमे तिष्ठे हैं । आगे अब काई विचार करें अरु कैसे कुटुम्ब परवारादिकसों ममत्व छुड़ावें सोई कहिये है । अहो ई शरीरके माता तुम नीके कर जानो यह शरीर एते दिन तुम्हारा क्षा अब तुम्हारा नाहीं अब जाका आयु पूर्न भया सो कौनका राख्या रहे कभी न रहे याकी येही स्थित थी सो अब जासों ममत्व छोड़ो अब जासों ममत्व करवा कर काई अब जासों प्रीति करवो दुखका कारन छै अरु शरीर तो इन्द्रादिक देवांको भी विनसे छै जब मरन समय आवे तब इन्द्रादिक देव झुलक झुलक मुख चोघताई रहे सर्व देवाका समूह देखता कालका किंकर ले जाई ऐसो न सुनो जो कोई कालसूं बचायो यो काल सर्वभक्षी छै अरु जे अज्ञान ताकर कालके वस रहसी त्याकी याही गति होसी सो थें मोहके वसकर संसारको झूठो चरित्र देखो नाहीं । अब थें मोहका वसकर विनासीक शरीरसूं ममत्व करो छो । अरु जाने एक चाहो सो

पैलाको शरीर तो राख वोई दूर रही थे थाको शरीर तो पहिले राखो पाछे और का राखवाको उपाय कीजो था कीया भरम बुद्धि छे सो वृथा दुख हीके अर्थ छै थांने प्रत्यक्ष दीसे नाही। आज पहले ही लेही ससारमे कालसों कोई बचो अरु आगे बचसी हाय हाय देखो आश्चर्यकी बात थे निर्मै भया तिष्ठों हो सो थांके कौन अज्ञानपनो छै अरु थाको कोई होनहार छे तासूंमें थाने पूछूं हूं थांने आपापरकी किछू खबर छै जो मैं कौन छा अरु किठासू आया छा अरु पर्याय पूरी कर कहा जासी अरु पुत्रादिकसूं प्रीत करे छा सो कौन छा ऐते दिन पुत्र किठे छो अरु म्हाके पुत्रकी क्षति हुई ताकर याका वियोगको म्हाने सोक उपजो, तासू अब थें सावधान होय विचार करो भूममे मत परो थै अपनो कार्य विचारो ताका सुख पावो परको कार्य अकार्य पेलाके हाथ है। थारों करतव्य क्यों भी नाही थे वृथा ही खेद खिन्न क्यो भया अरु थें अपनो आत्मा मोह कर ससारमे क्यों डूब्यो है ससार विषें नरकादिक दुख सब थेंने ही सहना पडेला जाका बदले किछू और न होसी जिनधर्मको ऐसो उपदेश है नाही। जो पाप करे कोई और भोगवे कोई और तासो मोने अपूठी थाकी दया आवे है। सो थें हमारो उपदेश ग्रहन करो थांने महा दुखदाई होयलो केसे दुखदाई है। सो कहिये है म्हे तो यथार्थ जिन धर्मको स्वरूप जानो छो तीसो थांने भी मोह दुख देय छे अरु मैं मोहने जिन धर्मका प्रताप कर सुलभपने जीतो सो यह जिन धर्मका अतिशय जानो तासों थाने भी जिन धर्मको स्वरूप विचारवो कार्यकारी छे। देखो थें प्रतक्ष ज्ञाता दृष्टा छो अरु ये शरीरादि

परवस्तु छे आपना स्वभावरूप स्वयमेव परनवे छे काहूका राख्या है नाहीं भोला जीव भरम खाय छे तासों थें भरम बुद्धि छोड़ो अरु आपा परकी ठीक एकता करो । तासों अपनो हित सधे सोई करो । विचक्षन पुरुषांकी याही रीति छे एक आपना हितने ही चाहें । विना प्रयोजन एक पैड़ भी धरे नाही अरु थे मोह सों ममत्व जे तो घनो करस्यो ते तो घनो दुख होसी जो जीव अनन्तवार अनन्त पर्यायमें न्यारा न्यारा माता पिता पाया, सो अब वे कहां गया अरु अनन्तवार ई जीवकी स्त्री पुत्र पुत्रीका संजोग भया सो वे कहां गया अरु पर्याय पर्यायमें भ्राताकुं आप माने अरु पर्याय सूं तनमय होय रहो या जाने जो विनासीक पर्याय स्वभाव छे । अरु म्हाको स्वरूप सास्वतो अविनासी छै ऐसो विचार उपजे नाही सो थांने दूषन काई नाहीं यो मोहको महांतम छे परतक्ष सांची वस्तु झूठी दीसे अरु झूठी वस्तुने साची देखे अरु जाको मोह गल गयो ऐसो भेद वेज्ञानी पुरुष छे। तेई पर्यायसूं कैसे आयो माने अरु कैसे याकूं सत्य जाने अरु कौनको चलायो चले कदाच भी न चले तासूं मेरे ज्ञान यथार्थ भया है अरु आपा पर ठीकता भई सो मो ठगवाने कौन समर्थ है । अनादि काल सो पर्याय पर्यायमें घनो ही ठगायो ताहीतें भव भवमें जन्म मरनका दुःख सहा तासूं थें अब नीका कर जानो थांको अरु म्हांको ऐते दिनको संबंध छो । सो अब पूरो हूवो सो थानें भी अब आतम काज करवों जोग छे जो मोह करनो उचित नाहीं तातैं निज स्वरूप अपनो सास्वतो छे। त्याने सम्हालो तामें कोई तरहको खेद नाहीं अपना ही घटमें महां अमौलिक निधि है ।

त्यांने जाने जन्म जन्मका दुख जाय त्यो जेई ससारमे दुख छे तेता आप्य जान्या तांसू एक ज्ञानने ही ध्यावो ज्ञानमई ही आपनो निज स्वभाव छे ताकू पाया ही महा सुख छे। ताके पाया विन महां दुखी छे। तासू यो परतक्ष देखने जानने हारा ज्ञायक पुरुष शरीरसू भिन्न ऐसो अपनो स्वभाव ताने छोड और किस वस्तुसू प्रीत उपजे जंमे सोला स्वर्गको कल्पवासी देव कौतुक वास्ते मध्य लोकमे आय एक रक पुरुषको भेष धर रहो फेर वे रंक कैसी क्रिया करवां लागो काई क्रिया करवा लागो कभी तो काठका भार माथें धर बजारमें वेचवां जाय अरु कभी मटीको कथोरा माथे मेल स्त्रियां कने रोटी मागवा जाय। कभी मार्गमें दीनताका वचन कह रोवे। कभी राजापे जाय या भाति कहे महाराज आ जीवका कर महा दुखी छूं हमारी प्रत पालना करो कभी दांतरो ले घास काटवा जाय कभी भायाकर वृथा हो रोवे अरु ऐमा वचन कहे वाहरे वाहरे अब में काई करू हमारा धन चोर ले गया मै नीठ नीठ कमाइ कमाइ भेले कियो छो सो आज जातो रहो सो अब हूं कैसे काल पूरो करस्यों अरु कभी नग्रमें भाग न पडे तब वे पुरुष एक लडकाकूं काधे चढावे अरु लडकीकी आंगरी पकरें अरु स्त्रीकूं आगें कर ताका माथा पर क्षाजळो रांधवाकी हांडी झारवांकी बुहारि आदि सामग्री टोकरो भर दीयो अरु आपने गोदडा गुदडीकी पोट माथा लीनी। पाछे आधी रात नग्र सूं निकस्या पाछे मार्गमें कोई वेढ़ो ईतें पूछता हूवा रे भाई तू कठें चाल्या तव पुरुष कहे ई नग्र विषें वैरियोकी फौज आई सो मैं आपनो धन लेय भागूं छूं

जासों और नगर जाय गुजरान करसूं इत्यादि नाना भाति चरित्र कर तो वह कल्पवासी देव आपना सोलह स्वर्गकी विभूति ताने छिन मात्र भी न विसारे। वह विभूतका अवलोकन कर महां सुखी हूवा विचरै है। वे रंक पुरुषकी पर्यायमें भई जे नाना प्रकारकी विवस्था ता विषें कदाच अहंकार ममकार करे नाहीं। सो वे सोलवें स्वर्गकी देवांगना आदि विभूत अरु आपना देवो पुनीत सुख ता विषें नमस्कार आवे है। सोई में सिद्ध समान आत्म द्रव्य पर्यायमें नाना प्रकारकी चेष्टा करता थका अपनी मोक्ष लक्ष्मीने नाहीं विसरूं छूं। तो हो लोक हो मैं काहे । भय करो अब ऐटां स्त्री सूं ममत्व छुड़ावें हैं, अहो शरीरकी स्त्री तू ई शरीरसों ममत्व छोड़ तेरा अरु इस शरीरका ऐता ही संयोग था सो अब पूरा हुवा तेरी गर्ज ई शरीरसूं अबे सरे नाईं तासुं तू अब मोह छोड़ बिना प्रयोजन अब खेद मत करे, जो थांरा राखया यो शरीर रहे तो राख में बरजों नाहीं विना प्रयोजन खेद क्यों करूं अरु जो तूं विचार कर देखे तो तू भी आत्मा है। अरु मैं भी आत्मा हों स्त्री पुरुष पर्याय सो पुद्गली कहैं तासूं कैसी प्रीति । ये जड़ आत्मा चैतन्य ऊट बैल कैसा जोडा सो यह संयोग केसे वनें। तेरा पर्याय है सो भी तू चंचल जानता सूं आपना हित क्यों न विचारे थें ऐते दिन भोग किया ताकर काई सिद्ध हुई अरु अब सिद्ध काई होनी छे वृथा हीं भोगां कर आत्माने संसारमें डुबोयो, जो मरन समय जानों नाहीं। अर मुवां पीछे तीन लोककी संपदा झूठी तासूं हमारी पर्यायको सोक करतो जोग्य नाहीं। जो तूं म्यारी म्हाकी छे तो म्हाने धर्म उपदेश द्यो या धर्म साधवाकी

विरिया छे। अरु जो तू मतलबकी संगी छे तो थांरी तू जानें मैं थांरा डिगाया क्यू डिगशी म्हैं तो थारी दया कर तूने उप-देश दियो छे माने तो मान न मानें तो थांरी होनहार होसी सोही म्हारो, तो कछू मतलब नाहीं। तासूं अब तू म्हारा नषासू जावो अपना परनाम शात राख आकुलता मत करे। आकुलता हीं संसारका कारन छे ऐसे स्त्री समझाकर सीख दीनी अब निज कुटुम्ब परवारको बुलाय समझावे अहो कुटुम्ब परवारके अब ई शरीरकी आयु तुच्छ रही है। अब म्हारे परलोक नजीक छे तासूं अब मे थाने कहा छा ते म्हाने कोई बातका राग करो मति थांके अरु म्हाके चार दिनका मिलाप छे। जादा छे नाहीं। जैसे सराईके विषें राहगीर रात्रि भेला तिष्टे प.छे वीछुरता दुख करे यह कौन सयान तासूं छिमा भाव धारते सघला आनन्द रूप तिष्टो अनुक्रम थकी सारानकी यही रीति होनी छे। सो यह संसारको चरित्र जान ऐसा बुद्धिवान कौन है सो जासू प्रीति करै। ऐसे कुटुम्ब परवारकूं समझाय सीख दीनी अब पुत्रकूं बुलाय समझावे है। अहो पुत्र ते स्याना छै म्हासो कोई तरहको मोह कीजो मत अरु श्रीजिनेश्वरको भाषो धर्मनीके पालजो। थाने धर्म ही सुखकारी होयगो माता पिता सुखकारी नाहीं। अरु कोई मातापिताने सुखका कर्त्ता माने छे सो यह भी मोहका महातम छे। कोई किसीका कर्ता नाहीं कोई किसीका भोक्ता नाहीं सर्व ही पदार्थ अपना अपना स्वभावका भोगता करता छे। तासूं अब म्हें थांने कहा छा जो थें विवहार मात्र हमारी आज्ञा मानो छो तो मैं कहो सो करों प्रथम थें देव अरु गुरु धर्मकी अब गाढ़ी

प्रतीत करो। अरु साधर्मीनसूं मित्रता करो अरु दान तप शील संयम इन सों अनुराग करो अरु स्वपर भेद विज्ञान ताका उपाय करो। अरु संसारी पुरुषासूं प्रीत कहिये ममत्व भाव ताकूं छोड़ो। अरु सरागी जीवाकी संगति छोड़ो अरु धर्मातमा पुरुषांकी संगति करो यह लोक परलोकमें धर्मातमा पुरुषांका संगति सुखदाई छे। ई लोकमें तो निराकुलता सुखकी प्राप्ति होय अरु जसकी प्राप्ति होय अरु परलोकमें स्वर्गादिकका सुखने पाइ मोक्षमें सिव रमनीको पति होय। निराकुल अतेन्द्री अनोपम बाधा रहित सास्वता अविनासी सुखने भोगवो जासूं हे पुत्र थांने म्हारा वचन सत्य दीसे अरु यामें थांको भला होवो दीखे तो ये वचन अंगीकार करो अरु थाने म्हांको वचन झूठा दीखे अरु यामें थांको भलो होवो न दीसे तो म्हांको वचन मत मानो म्हारो तो थासूं कछू बातको प्रयोजन नाहीं। दया बुद्धि कर थाने उपदेस दियो थो मानो तो मानो न मानो तो थांकी थें जानों। अब वे सम्यक दृष्टि पुरुष अपनी आयु तुच्छ जाने तब दान पुन्य करनो होय सो अपना हाथसूं करें हैं। पाछे जेता पुरुषासों बतलावना होय तिनसूं बतलाय निसल्ल होय है पाछे सर्व कर्मका नाता काजे पुरुष स्त्रीनिने आप निकटतें सीख देय अरु धर्मका ताका पुरुषाने आपना निकट राखे। अरु आपना आयु निःकपट पूरा हूवा जाने तो सर्व प्रकार परिग्रहका जीवन पर्यंत त्याग करे। अरु चार प्रकारके अहारका त्याग करे। सर्व घरका भार पुत्रनपै डालकर आप विशेषपने निशल्य होय वीतराग परनाम धरे, अरु आपना आयुका नेम जाने पूरा होय या न होय यह संदेह रहे तो दोय

चार घटी आदि कालका मर्यादा कर त्याग करे। जाव्रत जीवे तावत धीरां धीरां त्यागे जब खाट तें उतर भूमिमें सिहकी नाई निर्भै तिष्टे जेसे वैरीनके जीतवेको शुभट उद्यमी होय रनभूमिमे तिष्टे कोई जातकी अंस मात्र भी आकुलता न उपजावे। बहुरि कैसा है वह सुद्धोपयोगी सम्यक दृष्टि जाके मोक्ष लक्ष्मीका पाणि गृहनकी वाक्षां वरते छे ऐसा अनुराग है जो अवार ही मोक्षकूं जाय वगे ताका हृदामें मोक्ष लक्ष्मीका आकार वर्तै है। ताकी प्राप्तिकूं शीघ्र चाहे है। अरु ताहीका भय थकी राग परनतिको आवने देय है ऐसा विचारे है जो कदाच हमारा स्वभाव विषैं राग परनतिने प्रवेश किया तो मोक्ष लक्ष्मी मोने वर-चे कूं सन्मुख हुई है सो जाती रहसी तातैं मैं राग परनतिकूं दूर ही तै छोडो हों ऐसा विचार करतो काल पूर्न करे ताका परनामोंमे निराकुलित आनन्द रस वरसे है। तो सातीक रस कर तामे तृप्ति है। ताके आतमीक सुख विना कोई बातकी वाक्षा नाहीं। एक अतेन्द्री अभोगत सुखकी वाक्षां है। ताहीकूं भोगवे है अरु स्वाधीन सुख है सो यद्यपि साधर्मी संयोग है। सो मेरा यो पास है। ऐसे आनन्द मई तिष्टतो सांत परनामों संयुक्त समाधि मरन करे पाछे समाधिमरनका फल थकी इन्द्रादिक विभूतिने पावे पाछे वहां थकी चय कर राजाधिराज होय पाछें केताइक काल राज विभूतने भोग अर्हंती दीक्षा धरै। पाछे क्षपक श्रेणी चढ चार घातिया कर्मोंको नास करके केवल ज्ञान लक्ष्मीने पावे कैसा है, तामें समस्त लोकालोकके पदार्थ तीन काल संबंधी एक समयमें आन झलके हैं। ता सुखकी महिमा वचन अगोचर है। इति

समाधि मरन स्वरूप संपूर्न । आगे मोक्षका सुख वरनन करिये है । श्री गुरां पास शिप्य प्रश्न करै है । कांई प्रश्न करे है हे प्रभू हे स्वामिन हे नाथ हे कृपानिधान हे दयानिधि हे परम उपगारी हे संसार समुद्रके तारक भोगनासूं परान्मुख आत्मीक सुखमें लीन तुम मेरे ताईं सिद्ध परमेष्ठी सुखनका स्वरूप कहो, कैसा है शिप्य महां भक्तिवान हैं अरु विनयवान है । अरु मोक्ष लक्ष्मीकी प्राप्तिका अभिलाषी है । सो वह श्रीगुरांका तीन प्रदक्षना देय हस्त कमल मस्तकके लगाय हस्त जोर गुरांका भौसरने पाइ वारंवार दीनपनाका वचन विनयपूर्वक प्रकासितो हूवो अरु मोक्ष लक्ष्मीका सुखने पूछतो हूवो तव श्री गुरु कहैं हे शिप्य हे पुत्र हे भव्य हे आर्य तें वहुत भला प्रश्न किया अव तू सावधान होय कर सुन यह जीव सुद्धोपयोगका महात्म कर केवल ज्ञान उपाय सिद्ध क्षेत्रमे जाय तिष्टैं सो चरम शरीरतैं किंचित ऊन प्रदेशोकी आकृतने धरे सास्वतो मोक्ष विषे तिष्टै है सो कैसे हैं सिद्ध एक एक सिद्धकी अवगाहनामें अनन्त अनन्त सिद्ध भगवान न्यारे न्यारे तिष्टे हैं कोई काहूसों मिले नाहीं । वहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान तिनके आत्मीक ज्ञानमें लोकालोकके समस्त पदार्थ तीन काल संबंधी द्रव्य गुन पर्यायने लियां एक समयमे जुगपत आइ झलकें है । ताके चरन जुगलकूं मैं नमस्कार करूं हूं वहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान परम पवित्र हैं परम शुद्ध हैं अरु आत्मीक स्वभावमें लीन छे अरु परम अतेन्द्री अनोपम बाधारहित निराकुल रसने निरंतर पीवैं हैं तामैं अन्तर परे नाही वहुरि कैसा है सिद्ध भगवान असंख्यात

चैतन्य धातुके पिन्ड न गुरु न लघु अमूर्तीक हैं सर्वज्ञ देवने प्रत्यक्ष विद्यमान न्यारे न्यारे देखें हैं बहुरि कैसे हैं सिद्ध प्रभू निःकषाय आचरन रहित हैं। बहुरि कैसे हैं सिद्ध महाराज जिन धोया है घातिया अघातिया कर्मरूप मल बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान अपना ज्ञाइक स्वभावने प्रगट किया है। अरु समय समय षट् गुनी हानि वृद्धिरूप समुद्रकी लहरवत परनमें हैं अनंतानंत आत्मीक सुखकूं आचरे है वा अस्वादे है पर तृप्ति नाही होई वा अत्यंत तृप्ति हैं अब कछू चाह रही नाही। बहुर कैसे हैं परमात्मा देव अखंड है। अजर हैं अमर हैं निर्मल हैं शुद्ध हैं चैतन्य स्वरूप है ज्ञान मूर्ति हैं। ज्ञाइक हैं वीतराग हैं सर्वज्ञ हैं सब तत्वके जानन हारे हैं अरु सहजानन्द हैं। सर्व कल्यानके पुंज है त्रैलोक कर पूज्य है। सर्व विघ्नके हरन हारे हैं। श्री तीर्थंकरदेव ताकूं नमस्कार करें हैं। सो मै भी वारंवार हस्त मस्तकके लगाय नमस्कार करूं हू। सो क्या वास्ते नमस्कार करू हू वाहीके गुनाकी प्राप्तिके अर्थ बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान देवाधिदेव हैं। सो संज्ञा सिद्ध भगवान विषें ही शोभे है अरु चार परमेष्टीने गुरु संज्ञा है देव सज्ञा नाही। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान सर्व तत्वके प्रकाश ज्ञेयरूप नाहीं परनमे हैं। आपना स्वभाव रूप ही रहें हैं अरु ज्ञेयको जाने है। कैसे जाने है। समस्त ज्ञेय पदार्थ हैं सो मानू सिद्ध ज्ञानमे पैठ गया है। मानू उखारने लग गया है। कि मानू अवगाहनास्ति कर समाय गया है। कि मानूं आचमन कर लिया कि मानूं स्वभावमें आन वसा है। कि मानूं तदात्म होय परनमें

है। कि मानूं प्रतिविम्बित है। कि मानूं पापानके उकीर काढ़े हैं। कि मानूं चित्रामकी चितेरें है कि मानूं स्वभावमें आन प्रवेश किया है कि मानूं स्वभावमें आन झलके है कि मानूं अभिन्न रूप ही प्रतिभासे है ऐसा स्वभावने लियां श्री सिद्ध भगवान आपना स्वच्छ निर्मल स्वभावरूप परनवे है। वहुरि कैसे हैं सिद्ध महाराज सांतीक रस कर असंख्यात प्रदेश भरे है। अरु ज्ञानरस कर आहलादित है। अरु सुद्ध अमृत कर श्रवैं हैं प्रदेस जाका व अखंड धारा प्रभाव वहे है। वहुरि कैसे हैं चंद्रमाका विमानमे सूं अमृत श्रवे है। अरु औरांकूं अहलादित वढ़ावे अरु आताप दूर करे अरु मन प्रफुल्ल करे है त्यों ही सिद्ध महाराज आप तो ज्ञानामृत पीवें आचरे अरु औराने आनन्दकारी ताको नाम लेत ही वा ध्यान करता ही भवताप विलय जाय अरु परनाम सांत होय आपा परकी शुद्धता होय अरु ज्ञानामृतनें पीवे अरु निजस्वरूपकी प्राप्ति होय सो ऐसा सिद्ध भगवानके हमारा नमस्कार होहु। अरु सिद्ध भगवान जयवंत होहु अरु हमें संसार समुद्रतें काढ़ो। अरु म्हांकी संसारमें पड़वाते रक्षा करो अरु म्हारा अष्ट कर्मने हरो अरु हमारा कल्यानका कर्ता होहु। अरु म्हाने मोक्ष लक्ष्मीकी प्राप्ति करो अरु हमारे हृदयमें निरंतर वसो। अरु म्हाने आप सारखो करो वहुरि कैसा है सिद्ध भगवान जाके जन्म मरन नाहीं। जाके शरीर नाहीं ज्ञान वा जीवका प्रदेश हैं। वहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान अस्तित्व वस्तुत्व वा प्रमेयत्व व अमेयत्व प्रदेसवत्व अगुरुलघुत्व चैतन्यत्व अमूर्तित्व निरंजन निराकार भोगतृत्व अभोगतृत्व द्रव्यत्व याने आदि देय

अनन्त गुनाकर पूरन भरचा है। तातै औगुन आवने जागा नाहीं। ऐसे सिद्ध भगवानकूं फेर भी हमारा नमस्कार होहु। ऐसे श्री गुरयां शिष्यने सिद्धाका स्वरूप बताया अरु ऐसा उपदेश दिया अरु आसीर्वाद दिया हे शिष्य हे पुत्र तू सिद्ध सादस्य है यामे सदेह मत करे, सिद्ध-नका स्वरूपमें अरु थारा स्वरूपमे फेर नाहीं। जैसा सिद्ध है तैसा ही तू है तू निश्चे विचार कर देख सिद्ध समान छे की नाही। देखता ही परम अनोपम आनन्द उपजेलो। सो कहवामें आवे नाहीं। तासू तू अब सावधान होय एकचित्त कर साक्षात् ज्ञाता दृष्टा तूं परका देखन जाननहारा तू देख ढील मत कर ऐसा अमृत रूप वचन श्री गुरुका सुन अरु शीघ्र ही अपना स्वरूपको विचार शिष्य करतो हूवो श्री गुरु परम दयालु वारंवार मुने याही बात कहा अरु योही उपदेश दियो सो याके कांई प्रयोजन छे एक म्हारा भला करवाका प्रयोजन छे। तासू मोने वारंवार कहे छे सो देखो हू सिद्ध समान हूं विना ही देखो यो जीव मरन समै ई शरीर माहि सू निकस परगतिमें जाय तब ई शरीरका आंगोपांग हाथ पग आंख कान नाकादि सर्व चिन्ह ज्योंका त्योंही रहे है। अरु चैतन्य रहे तातै यह जान्या गया, देखवांवाला जानवांवाला कोई और ही था या शरीरमें चैतन्य शक्ति नाहीं। यह निर्धार भया ई बातमें चेतनपनाकी शक्ति अवश्य आई बहुरि देखो मरन समै यह जीव परगतिमें जाय तब कुटुम्ब परवारका मिलई घनो पकड़ पकड कर राखे अरु ऊंडा भोंहरामे गाडा किवाड़ जड़

राखे अरु वह आत्मा सर्व कुटुम्बको देखते ही घर फोड़ निकर जाय। सो किसीने भी देखे नाहीं तातै यह जान्या गया कि आत्मा अमूर्तीक छे। जो मूर्तीक होता तो शरीरकी नाई पकड़ा रह जाता तातै आत्मा प्रत्यक्ष अमूर्तीक ही है। यामें संसय नाही यह आत्मा नेत्र इन्द्रीके द्वारा पांच प्रकारके वर्णकूं देखे हैं। अरु श्रोत इन्द्रीके द्वारा तीन प्रकार वा सात प्रकार शब्दोंकी परिक्षा करे है। बहुरि यह आत्मा नासिका इन्द्रीके द्वारा दोय प्रकारकी सुगन्ध दुर्गंध ताकूं जाने है। बहुरि रसना कर पांच प्रकारके रसकूं स्वादे है। बहुरि यह आत्मा सपरस इन्द्रीके द्वारा आठ प्रकारके सपरसकू वेदे है वा अनुभवे है वा निरधार करे है। सो ऐसा जानपना ज्ञायक स्वभाव विना इन्द्रीनमें नांही। इन्द्री तो जड़ हैं अनन्त पुद्गलकी परमानूं मिल कर बन्या है। सो जहां जहां इन्द्रियोके द्वार दर्सनज्ञान उपयोग आवता है सो वह उपयोगमय मैं हूं और नाही भरमतै और भासे छे। तब श्री गुराके प्रसाद कर मेरा भरम विलय गया मैं प्रत्यक्ष ज्ञाता दृष्टा अमूर्तीक सिद्ध सादस्य देखू हूं अरु जानू हूं अनुभवू हू। सो अनुभवनमे कोई निराकुलत्व सुख शान्तीक रस उपजे है। अरु आनन्द श्रवे है सो यह आनन्द प्रभाव मेरे अखंड असंख्यात आत्मीक प्रदेशमे धारा प्रवाहरूप होय चले है। ताकी अद्भुत महिमा मैं जानू हूं के सर्वज्ञदेव जाने वचनगोचर नाहीं। बहुरि देखो मैं बहुत ओंड़ा तैखानामें बैठ कर विचारूं मेरे ताईं वज्र मइ भीति फोड़ कर पदार्थ दीसे है ऐसा विचार होते मेरी यह हवेली देखो

प्रत्यक्ष मोने मनद्वार कर दीखे । अरु यह नगर प्रत्यक्ष दीखे यह भरतक्षेत्र मोनें दीसे अरु असंख्यात दीपक समुद्र मोने दीखें । अरु पृथ्वी तले तिष्ठता नारकी जीव मोनें दीसे वा सोला स्वर्ग वा नवग्रेवक व उत्तर वा सर्वार्थसिद्धि वा सिद्धक्षेत्र विषें तिष्ठते अनन्तानंत सिद्ध महाराज वा समस्त त्रैलोक वा अमूर्तीक धर्म द्रव्य वा ऐते ही मान अमूर्तीक एक अधर्म द्रव्य वा ऐते ही मान एक एक प्रदेश विषें ऐक ऐक अमूर्तीक कालानु द्रव्य एक एक प्रदेश मात्र तिष्टें हैं । बहुरि अनन्तान्त निगोदके जीवनसू त्रैलोक भरया है । बहुरि चारों जातिके सूक्ष्म स्थावरनसूं त्रैलोक भरया है । बहुरि जात चारके त्रस त्रसनाडीमें तिष्टें हैं । अरु नरक विषें नारकीनके महादुःख है । अरु स्वर्गन विषें स्वर्गवासी देव कीडा करें हैं । अरु इन्द्री जनित सुखकू भोगवें हैं । अरु एक एक समयमे अनन्त जीव मरते उपजते दीसें हैं । बहुरि एक दोय प्रमानूका स्कंध आदि देय अनन्त प्रमानू वा त्रैलोक प्रमानूका महास्कंध पर्यंत नाना प्रकारके पुद्गल पर्याय मोकू दीखें है । अरु समै समै अनेक स्वभावने लिया परनवता दीसे है । अरु दसों दिसाने अवलोकाकास सर्वव्यापी दीसे है । अरु तीन कालके सम्बन्धी सर्व पदार्थके पर्यायकी पलटनी दीसे है । केवल ज्ञानका जान पना प्रत्यक्ष मोकूं दीसे है । सो ऐसा ज्ञानका धनी कौन है ऐसा ज्ञान किनके भया ऐसा नायक पुरुष तो प्रत्यक्ष साक्षात विद्यमान मोने दीसे है अरु यह जहां तहां ज्ञान ही ज्ञानका प्रकाश मोनें दीसे है । किसू शरीरका ही सो ऐसा जानपनाका स्वामी और नाहीं । मैंही हूं जो और होता तो मेरे तांई ऐसी खबर कैसे

होती औरका देख्या और केसे जाने तातैं यह ज्ञानपना मेरे ही उपज्या है । अथवा यह ज्ञानपना है सो मैं हूं । तातैं ज्ञानपनामैं अरु मोनें दुजायगी नाहीं । मैं एक ज्ञानका निर्मल शुद्ध पिण्ड बन्या हूं । जैसे नोनकी डली खारका पिन्ड बन्या है । अथवा जैसे सर्कराकी डली मिष्टान अमृतका पिड बन्या है । तैसे ही मैं साक्षात प्रगट शरीर भिन्न ज्ञायक स्वभाव लोकालोकका प्रकाशक चैतन्य धातु सुखका पिड अखंड अमूर्तीक अनन्त गुन कर पूरन बन्या हूं । यामें संदेह नाहीं देखो मेरे ज्ञानकी महिमा सो अवार हमारे कोई केवल ज्ञान नाहीं । कोई मनपर्यय ज्ञान नाहीं कोई अवधि ज्ञान नाहीं । मति श्रुतज्ञान प वजे छे सो भी पूरा नाही । ताका अनन्तवें भाग क्षयोपसम भया है । ताही तैं ऐसा ज्ञानका प्रकाश भया अरु ताही माफिक आनन्द भया सो या ज्ञानकी महिमा मैं कौनकूं कहूं । सो यह आश्चर्यकारी स्वरूप हमारो छे । कोई और को नाहीं । ऐसा अपना निज मित्रने अवलोक और कौनसूं प्रीति करूं कौनकूं आराधूं अरु कौनको सेवन करूं अरु कौन पास जाय जाचना करूं ईश्वर रूप पाया विना मैं करना था सो किया सो यह मोहका प्रभाव छो मेरा स्वभाव नाहीं । मेरा स्वभाव तो एक टंकोत्कीर्न ज्ञायक चैतन्य लक्षन सर्व तत्वका जाननहारा निज परनतका रमन हारा स्वस्थानका वस करनहारा राग द्वेषका हरनहारा संसार समुद्रका तारनहारा स्वरसका पीवनहारा ज्ञानपनाका करनहारा निरावाध विराग मन निरंजन निराकार अभोगत ज्ञान रसका भोगता वा परस्वभावका अकरता निज स्वभावका कर्ता सास्वता अत्र शरीरसूं भिन्न अमूर्तीक निर्मल पिन्ड पुरुषाकार

ऐसा देवाधिदेव मैं ही हूं ताकी निरतर सेवा करवो मोने जोज्ञ है। ताके सन्मुख रहना अरु वार वार अवलोकन करना सो ताका अवलोकन करता ही सात रस धारा रूप अमृतकी छटा उछले अरु आनन्द श्रवे ताके रसकूं मै पीकर अमर हुवा चाहूं हूं। सो यह मेरा स्वरूप जयवत प्रवर्तो अरु इसका अवलोकन वा ध्यान जयवन्त प्रवर्तो इस कर अतर छिन मात्र हू मत होहु ई स्वरूपकी प्राप्त विना कैसे सुखी होहु। कदाच न होय बहुरि जैसे काठकी गनगोरकुं आकाशमे थापिये सो स्थापित प्रमाण आकाश तो गनगोरके प्रदेशमें पेठ जाय अरु गनगोर आकाशमे पैठ जाय सो क्षेत्रकी अपेक्षा एकमेक होय तिष्टे भेला ही समै समै परनवे मन स्वभावकी अपेक्षा न्यारा न्यारा भाव लिये तिष्टे। जुदा जुदा परनवे कैसे परनमे जो आकास तो समै समै अपना निर्मल अमूर्तीक स्वभावरूप परनवे सो काठकी गनगोर आकासके प्रदेशोमें सो उठाय दूर स्थापे तो आकासका प्रदेश तो वहांका वहा ही रहे काठका प्रदेश चला जाय आकासका प्रदेश एक भी ताकी लार लागे नाहीं। तासू जे भिन्न भिन्न स्वभावरूप परनमे ते न्यारा न्यारा करता न्यारा हूवा तैसे मैं भी ई शरीरसू क्षेत्रकी अपेक्षा एक क्षेत्र अवगाही होय भेला तिष्टूं हू। पन स्वभावकी अपेक्षा न्यारो छे ई को स्वरूप न्यारो छे ये तो परतक्ष जड अचेतन अमूर्तिक गलानि पूर्न स्वभावने लिया समै समै परनमें अरु मैं चेतन अमूर्तीक निर्मल ज्ञायक सुखमई आनन्द स्वभावने लियां समै पर नमूं छूं। अरु शरीरकूं न्यारा होते न्यारा हूं। शरीरके अरु हमारे भिन्नपनो प्रत्यक्ष है। जो ईका द्रव्य गुन पर्याय न्यारा म्हारा द्रव्य

गुन पर्याय न्यारा ईका प्रदेश न्यारा म्हारा प्रदेश न्यारा ईका स्वभाव न्यारा हमारा स्वभाव न्यारा और कोई ऐसे कहे पुद्गल द्रव्यसों तो वारंवार भिन्नपनो भयो पन अवशेष चार द्रव्यासों अथवा परजीव द्रव्यसों तो भिन्नपनो भयो नाहीं। ताका उत्तर ऐ हे वे चार द्रव्य तो अनादि कालसे ठिकाना बांध अड़ोल तिष्टे है। पर जीवांका संयोग प्रत न्यारा है। सो भिन्न होय तासों कांई भिन्न कहिये एक पुद्गल द्रव्य ही का उरझाव है। तातै याही कूं भिन्न करना उचित है। घना विकल्प कर कांई जानवावाला थोड़ा हीमें जानें। अरु न जानवावाला घनीमें भी न जाने तातै यह बात सिद्ध भई यह बात कला कर साध्य है। बलकर साध नाहीं। बहुरि यह आत्मा शरीरमें बसता इंद्रियोंके द्वार अरु मनके द्वार कैसे जाने। सोई कहिये है जैसे एक राजाकूं काहू बलवान वैरीने बड़ा महलमांहि बंदीखाने दिया सो उस महलमें पांच तो झरोखा है। अरु एक बीचमें सिंहासन हैं। सो कैसे है झरोखा अरु सिंहासन सो ऊं झरोखाके ऐसी शक्तिने लिया चसमा लगा है। अरु ऐसी सक्तने लियां सिंहासनके रतन लगा है सो कहिये है। सो राजा अनुक्रम सो सिंहासन पर बैठो हुवो झरोखा ओर देखतो हूवो सो प्रथम झरोखामांहि देखता तो सपरसके आठ गुनने लियां पदार्थ दीसे है। अरु सेस पदार्थ दीसैं नाहीं। बहुरि दूजा झरोखा माहि निरखो सिंहासन ऊपर बैठ तब पांच जातके रस दीसे हैं। अवशेष और कछू न दीसा बहुरि सिंघासन ऊपर बैठ तीजा झरोखा माह देखो तब गंध जातके दोय पदार्थ देखे शेष देख्या नाहीं। बहुरि चौथा झरोखामाहिं देखा

तब पांच जातके वर्न देख्या। अवशेष कछू न देखा। बहुरि पांचमां झरोखा सिंहासन ऊपर बैठा देख्या तब सात जातके शब्द देख्या अवशेष किछू न देख्या सो जब सिंहासन ऊपर बैठ दृष्टि पसार विचारे तब वासूं जाके पदार्थ तो यह मूर्तीक अरु आकार अमूर्तीक सर्व दर्से। अरु झरोखा विना वा सिंहासन विना कोई पदार्थनें जानें नाहीं। अरु वह राजा जब बंदीखाने छोडा अरु महलच्यारें काढें तो वे राजानें दसूं दिसाका पदार्थ अरु मूर्तीक अमूर्तीक विना विचार सर्व प्रतभासे सो ये स्वभाव देखवाका राजाका है। कोई महल ताको नाहीं। अपूठा महलका निमित्त कर ज्ञान आछाद्या जाय है। अरु कोई इक ऐसी निर्मल जातकी परमानूं वा झरोखा अरु सिंहासनके लागी है। ताका निमित्त कर किंचित् मात्र जानपना रहे है। दूजा महलका प्रभाव तो सर्व ज्ञानको घातवा का ही है। त्योंही ई शरीररूपी महल विषें यह आत्मा कर्मन कर बन्दीखाने दिया है। त्योंही ऐठें पाच इन्द्रीरूप तो झरोखा है। अरु मनरूप सिंहासन है। तब यह आत्मा जो इन्द्रीके द्वार अवलोकन करे तिहि तिहि इन्द्रीके विषें ई माफक पदार्थकूं देखे अरु मनके द्वार अवलोकन करे तब मूर्तीक व अमूर्तीक सर्व पदार्थ प्रतिभासे है अरु यह आत्मा शरीर रूपी बंदीखानेसूं रहित होय तब मूर्तीक अमूर्तीक लोकके त्रिकालमे बंधी चराचर पदार्थ एक समयमे युगतीय प्रतभासें है ये स्वभाव आत्माका है कोई शरीरका तो नाहीं। शरीरका निमित्त कर अपूठा ज्ञान घाता जाय है। अरु इन्द्री मनका निमित्त कर किंचित मात्र खुल्या रहे है। ऐसे ही निर्मल जातकी परमानूं इन्द्री वा मनकूं लागी है।

ताकर किंचित मात्र दीसे हैं। अरु शरीरका स्वभावका ज्ञानकूं भी घातवा काही हैं। बहुरि जातैं निज आत्माका स्वरूप जान्या है। ताका यह चहु होय है। सो और तो गुन आत्मामें घना ही है। अरु घना हीनें जानें है। परन्तु तीन गुण विशेष हैं। ताको जानें तो आपना स्वरूप जानं ही जानें अरु ताका जान्या विना कदाच त्रिकालमें भी स्वरूपकी प्राप्ति होय नाहीं अथवा तीन गुन विना दोय गुन ही को नीका जानें तो भी निज सहजानंदकी पिछान होय गुनकी पिछान विना स्वरूपकी प्राप्ति नाहीं सोई कहिये है। प्रथम तो आत्माका स्वरूप ज्ञाता दृष्टा जानें यह जानपना है। सोई मै हूं सोई जानपना है। ऐसा निःसंदेह अनुभवनमें आवे है सो तो यह अरु दूजा यह जाने यह तो रागी द्वेषीरूप, आकूल होय परनवे है। सोई मैं हूं कर्मनका निमित्त पाय कषायरूप परनाम हुवा है। अरु कर्म निमित्त हलका पड़े तब परनाम सांतरूप परनमें हैं। जैसे जलका स्वभाव निर्मल है सो अग्निका निमित्त पाइ जल उष्नरूप परनवे कदाचका निमित्त है पाय वह जल गंधरूप परनवे त्योंही यह आत्माका ज्ञानावरनादिका निमित्त कर ज्ञान घाता जाय अरु कषायनका निमित्त कर निराकुलित गुन घाता जाय है ज्यों ज्यों ज्ञानावरनादिका निमित्त हलकापरे त्यों त्यों निराकुलित परनाम होता जाय। सो यह स्वभाव जिननें प्रत्यक्ष जान्या अरु अनुभवा सो ही सम्यक दृष्टि निजस्वरूपका भोगता है। बहुरि तीजा स्वभाव यह भी जाने कि मैं असंख्यात प्रदेशी अमूर्तीक आकार हूं। जैसा आकास अमूर्तीक है तैसा ही मैं अमूर्तीक हूं परन्तु आकास सजड़

है मैं चैतन्य हूं। सो कैसा है आकाश काटा कटे नाहीं तोडा टूटे नाहीं पकड़ा आवे नाहीं रोका रुके नाही छेदा छिदे नाही भेदा भिदे नाही गाला गले नाहीं बाल्या बले नाही याने आदिदं कोई प्रकार भी नास नाहीं। मैं असंख्यात प्रदेशी प्रत्यक्ष वस्तु छू अरु मेरा ज्ञान गुन अरु परनमन गुन प्रदेसनके आश्रय है जे प्रदेश नाहीं होय तो गुन किसके आसरे रहें। प्रदेश विना गुनकी नाश होय तब स्वभावकी नास होय जैसे आकासके विषै कोई वस्तु नाहीं त्यों होय जाय सो मैं छू नाही। मैं साक्षात् अमूर्तीक अखड पदने धरचा हूं। अरु ता विषैं ज्ञान गुनकूं लिया हू, ऐसी तीन प्रकार लक्षन सयुक्त मैं मेरा शरीरकू नीका जानू हू। अनभवूं हूं कैसे अनभव हूं। सो या तीन गुनाकी मेरे आज्ञा कर प्रतीत है। अरु ज्ञान अरु परनामनकी मेरे अनुभवन कर प्रतीत है कैसे प्रतीत है सोई कहिये है कोई मेरे ताईं आय ऐसा झूठ ही कहे के तू चैतन्य स्वरूप नाही यह बात फलाना ग्रन्थमे कही है। ऐसा मोकू कहे तब मैं उसकू ऐसे कहूं रे दुरबुद्धि रे बुद्धि कर रहित रे मोह कर ठगाया हुवा तेरे ताईं कछु सुध नाहीं। तेरी बुद्धि ठगी गई है तब वह कहे मैं काई करू फलाना ग्रन्थमें कही है ऐसा कहे तो भी प्रतक्ष चैतन्य वस्तु परका देखन जाननहारा सो कैसे मानूं तब यह जानें जो शास्त्रमे ऐसा मिथ्या कहे नाहीं अरु आगे होसी नाहीं अरु मेरे ताईं या कहे आज सूर्ज शीतल ऊगा तो मै कैसे मानूं फिर कदांच या तो मानू परन्तु मेरे ताई झूठा कहे तू चैतन्य नाहीं तेरे परनमन शक्ति नाहीं। सो कदाच मानें नाही ये दोई गुनकी

मेरे अनुभव है। ये दो गुन ही का मैं पिन्ड हूं। सो या दोय गुणाकी मेरे आज्ञाकर भी प्रतीत है। अरु अनुभवन कर प्रमान है। कैसो मैं या जानूं सर्वज्ञका वचन झूठा नाहीं। तातै तो आज्ञा प्रमान है अरु मै या जानूं मेरे ताई मेरा अमूर्तीक आकार मोकूं दीसता नाहीं तो आज्ञा प्रमान है परन्तु मैं अनुमान कर ऐसा प्रदेसनके आश्रय विना चैतन्य गुन किसके आसरे होइ। प्रदेश विना गुन कदाच भी न होय। यह नेम है जैसे भौमिका विना रूखादिक किसके आश्रय होंय त्यो ही प्रदेश विना गुन किसके आश्रय होय ऐसा विचार कर अनुभवनमे भी आवे है अरु आज्ञा कर प्रमान है बहुरि प्रमान है। बहुरि कोई मेरे ताई आनकर झूठी कहे फलाना ग्रन्थमें या कही है। ये आगे तीन लोक प्रमान आत्म प्रदेशका श्रद्धान किया था मै ऐसे निःसहाय जो आत्माका प्रदेश धर्म द्रव्यका प्रदेशा सों घाट है। तो मैं ऐसा विचारूं सामान्य शास्त्र सो विशेष शास्त्र बलवान है। सो ऐसा होयगा मेरे अनुभवनमे तो कोई निरधार होता नाहीं अरु विशेष ज्ञानी यहां दीसे नाहीं। तातै सर्वज्ञका वचन प्रमाण करू हूं। परंतु मेरे ताई या कहे तूं जड़ अचेतन है वा मूर्तीक है। वा परिनमनतैं रहित है तो यामें किछू मानें नाही यह मेरे संदेह है। जासों ब्रह्मा विष्णु नारायन रुद्र कोड़ कोड़ आय कहैं। यामें याही जानों कि ये सब बावला भया है। के मोने डिगावा आया है। के मेरी परीक्षा लेहे मैं ऐसा मानूं। भावार्थ—यह जो ज्ञान परनति आपहीके होय है। सो जाकूं जानें सोई सम्यकदृष्टि है। याकूं जाने विना मिथ्यादृष्टि है। और अनेक प्रकार गुनांका स्वरूप व

पर्यायका स्वरूप ज्यों ज्यों२ ज्ञान होइ त्यो जानवो कार्यकारी है। परन्तु मुख्यपने या दोयका तो जानपना तो अवश्य चाहिये। ऐसा लक्षन जानना बहुरि विशेष गुन ऐसें जानना सो एक गुनमे अनन्त गुन हैं। अरु अनन्त गुनमें एक है। गुन गुनसो मिले नाही। अरु सब गुनमे मिल्या है जैसे सोवर्नमे पीला च कनाने आद देय अनेक गुन है। सो क्षेत्रकी अपेक्षा तो सर्व गुनामें तो पीला गुन पाइये। अरु पीला गुनमें क्षेत्रकी अपेक्षा सर्व गुन पाइये। अरु क्षेत्रकी अपेक्षा गुनसो गुन मिल रहा है। अरु सर्वका प्रदेश एक ही है। अरु स्वभावकी अपेक्षा सर्व न्यारे न्यारे हैं। सो पीलाका स्वभाव और ही है अरु चीकनाका स्वभाव और ही है। सो ऐसे आत्मामें जानना वा ऐसा द्रव्यामे भी जानना वा अनेक प्रकार अर्थ पर्याय वा विजन पर्यायका स्वरूप यथार्थ शास्त्रोंके अनुसार जानना उचित है। अवसेस जानपना कर सम्यक निर्मल होता जाय है। बहुरि या जीवके सुखकी वधवारी वा घटवारी दोय प्रकार होय है सोई कहिये है। जेता ज्ञान है तेता सुख ही है। सो ज्ञानावरनादिका उदय होते तो सुख दुख दोन्योका नास होय अरु ज्ञानावरनादिकका तो क्षयोपशम होय अरु मोह कर्मका उदय होय तब या जीवकें दुख विशेष उत्पन्न होय सो सुख तो आत्माके निज गुन कर्म उदय विना है। अरु दुख कर्मोका निमित्तकर होय है सो जीवसक्ति कर्म उदय दब गई अरु दुखसक्ति कर्मका उदय ते प्रगट होय है तातै वस्तुका द्रव्यत्व स्वभाव है। बहुरि फेर शिष्य प्रश्न करे है। हे स्वामी हे प्रभू तेरे ताई

द्रव्यकर्म वा नोकर्मसों तो मेरा स्वरूप भिन्न तुम्हारे प्रसाद कर दरस्या अब मेरे ताई रागद्वेष सुं न्यारा दिखावो सो अब श्रीगुरु कहे है हे शिष्य तू सुन जैसे जलका स्वभाव तो शीतल है अरु अग्निके निमित्त कर उस्न होय तब अपना शीतल गुनने खोवे आताप रूप होय परनवे औरानें भी आताप उपजावे पाछे काल पाय अग्निका सयोग मिटे त्यों जलको स्वभाव शीतल होय औरांकूं आनन्दकारी होय त्योंही यह आत्मा कषायोका निमित्त कर आकुल व्याकुल होय परनमे तब निराकुलित गुन दबि जाय तब अनिष्ट रूप लागे बहुरि ज्यो ज्यों कषायाका निमित्त मिटता जाय त्यो त्यों निराकुलित गुन प्रगट होय तब इष्टरूप लागे सो थोड़ासा कषायको मेटनेतै भी ऐसा शान्तीक सुख प्रगट होय तो न जाने परमात्मा देवके संपूर्न कषाय मिटे अरु अनन्त चतुष्टय प्रगट भया कैसा सुख होसी अरु थोड़ासा निराकुलित स्वभावको जान्या संपूर्न निराकुलित स्वभावकी प्रतीत आये शुद्धात्माके ऐसा संपूर्ण निराकुलित स्वभाव होसी ऐसा अनुभवनमे नीका आवे है। बहुरि फेर शिष्य प्रश्न करे है हे प्रभू बाह्य आत्मा अन्तर आत्मा परमात्मा इनका प्रगट चिन्ह कहा ताका स्वरूप कहो सो गुरु कहे हैं। जैसे कोई जनम ताई वालकने तैखानामें राख्या तैठा ही वधायो केताक दिन पीछे रात्र समय बार काढ़ो अरु वालकने पूछो सूर्य किस दिसाने ऊगे छे ताको प्रकास कैसो होय छे अरु सूर्य कैसो छे। तब वे कहें मै तो न जानो दिसा व प्रकास व सूर्यका बिम्ब कहा कहावे। तब हठकर पूछो तब और सूं और बतावे पाछे सूर्य ऊगो तब फेर कही तब वाने कही जहां

पहिले प्रकाश भयो ते तौ पूर्व दिसा छे, अरु तेठी यह सूर्य है सो सूर्ज विना ऐसा प्रकाश होता नाहीं। त्यों त्यो सूर्य ऊचा चढे है त्यों त्यो प्रकास निर्मल होता जाय है। कोई आइने जा कहे सूर्य दक्षिन दिसामें है अठीने सूर्य नाहीं तो कदाच मानें नाही औरनकुं बावला गिने कि प्रतक्ष राह सूर्यका प्रकास दीसे है। मै याका कहा कैसे मानू यह मेरे सदेह है। सूर्यका बिम्ब तो मेरे ताईं निजर आवता नाही पन ई प्रकार सूर्यका अस्त होय है। सो नियमकर सूर्य आठा ही है ऐसी अब गाढ प्रतीत आवे है। बहुरि फेर सूर्यका बिम्ब संपूर्ण महातेज प्रतापने लियां देदीपमान प्रगट भया तब प्रकास भी सपूर्ण भया पदार्थ भी जैसा था जैसा प्रतिभासवा लागा तब पूछना ताछना रहा नाहीं। निर्विकल्प होय चुक्या ऐसे दृष्टाके अनुसार दृष्टान्त जानना सोई कहिये है मिथ्यात अवस्थामें पुरुषने पूछा तू चैतन्य है ज्ञानमई है तब वे कहें चैतन्य ज्ञान कहा कहावेका चैतन्य ज्ञानमई हूगो काई था शरीरमे अरु मोमे क्या भेद है। शरीर है सोई मै हू वा सर्वज्ञका ये ये अस हू वा छिन छिनमें उपजे विनसे है वा सून्य है। तो ऐसे ही माने ऐसे होयगा मेरे ताईं किछू खबर नाहीं यह बहिरात्माका लक्षन है। बहुरि काईं गुरुका उपदेशकर ऐसा श्रद्धान आवे जो मै प्रगट ज्ञानमई आत्मा यह मेरा ज्ञानका प्रकाश प्रगट सबका देखन जान-नहारा मै ज्ञान विना ऐसा जानपना शरीरमे तो नाही। यह ज्ञानका प्रकास जहांसू आया है। तहां ही आत्मा है ज्यों ज्यों ज्ञान प्रकास बधता जाय त्यों त्यों तत्वका जानपना निर्मल होय

ऐसा श्रद्धानवे सो अंतरआत्मा है। बहुरि केवल ज्ञानरूपी सूर्य देदीपमान (उदोत) होय तब लोकालोकके चराचर पदार्थ निर्मल जैमाका तैसा प्रतिभासे है। अरु अपना असंख्यात प्रदेस भी त्यों-का त्यों प्रतिभासे सो यह परमात्माका लक्षन है। ऐसा तीन प्रकार आत्माका स्वरूप जानना बहुरि फेर शिष्य प्रश्न करे है हे प्रभू मोक्षमें और सुख तो छे पन इन्द्रीजनित सुख नाही तब श्री गुरु कहे हैं। हे शिष्य संपूर्न इन्द्रीजनित सुख मुक्तिमें संपूर्न छे। ऐसो और ठौर नाही। कैसे है सो कहें है। इन्द्रीनको सुख ज्ञानते जानों तब सुख होय सो सिद्ध महाराजके संपूर्न जानपना छे इन्द्रीनका विषय व मनका विषयरूपी पदार्थ एक समयमें सर्व जाने है। सो इनका सुख औरनके न जानना तब फेर शिष्य कहे है हे प्रभू आत्मज्ञान ऐमा ही है सो वारवार ज्ञाता दृष्टांकूं अवलोकना। भावार्थ—जो आत्माको ज्ञानमें देखना इह देखन जानन-हारा है सोई मैं हूं। मैं हूं सोई देखन जाननहारा है। मोमें अरु जामे दुजायगी नाहीं। एकत्व तदात्मपना है। जैसा अवलोकन निरंतर लगा रहे। फेर फेर वाहीकूं देखे जैसे गाय अपना वक्षाको देखता छिनमात्र भी नाही भूले वारंवार वाहीकूं देखे ज्यों ज्यों देखे त्यों त्यों अत्यंत आनन्द ही होय। सो आनन्दकी वात गौही जाने तैसे सम्यक्‌दृष्टि वारंवार अपना रूपने देखतो तृप्ति नाही। अरु अपना स्वरूपका अवलोकन करता गदगद शब्द होय अश्रुपात चल आवे अरु रोमाच होय अरु चित्त शान्ति होय मानू ग्रीष्म ऋतुमें मेघ छूटा ऐसी शान्तिता होय आवे सो ज्ञान ही गम्य है कहवां मात्र नाही और शिष्य प्रश्न करे है हे प्रभू

आत्माके कर्म कैसे बंधहैं। श्रीगुरु कहे है जैसे एक सिंह उजा-
डमे तिष्टे था तहां एक मंत्रवादी अपनी इच्छा सों भ्रमैंछो सो सिंह
वह मंत्रवादीकूं देख कोपित हूवो। तब मंत्रवादी एक धूलकी
चिमटी मंत्री नाहरका सरीर ऊपर नाख दीनी सो ताकर नाहरकी
देखन शक्ति विलय गई। अरु दूसरी चिमटी कर बावलो सारखो
हूवो या जाने मै स्याल हू। एक चिमटी कर चलनशक्ति नास
गई सो चल न सके अरु एक चिमटीका निमित कर नाहरको
आकार ही ओर भयो अरु एक चिमटीका निमित्त कर नाहर
आपने नीच ऊच मानवा लागो अरु एक चिमटीका निमित्त कर
अपना वीर्य क्षीन जानतो हूवो ऐसे आठ प्रकार ज्ञानावरनादि
कर्म जीव रागद्वेष कर जीवाका ज्ञानादि आठ गुनको घाते है।
ऐसे जानना ऐसे शिष्यने प्रश्न किया ताका गुरु उत्तर दिया सो
ऐसे भव्य जीवाने अपना स्वरूप विषें लीन होनो उचित है।
सिद्धाका स्वरूपमे आपना रूपमे सादृस्यपनो है। सो सिद्धांका
स्वरूपने ध्याय अरु निज स्वरूपका ध्यान करना घनी कहवाकर
काई ऐसे ज्ञाता स्वभावकू ज्ञाता जानै है। सपूर्न। आगे कुदेवा-
दिकका स्वरूप निर्णय करिये है। सो हे भव्य तु सूण सो देखो
जगमे भी यह न्याय है। के तो आपसों गुनकर अधिक होयके
आपनो उपगारी होय ताको नमस्कार करिये वा पूजिये जैसे
राजादिक तो गुणाकर अधिक है। अरु माता पिता उपगारी हैं।
ताकरि जगत पूजे है अरु वंदे है। ऐसा नाही कि राजादिक वड़े
पुरुष रैयत वा रक पुरुषने वदे वा पूजे अरु माता पिता पुत्रादि-
कंकूं वंदे या पूजे सो तो देखिये नाहीं अरु कदाच मतिकी मंदता

कर राजादिक बडे पुरुष होय कर नीच पुरुषको पूजे अरु मातापिता भी बुद्धिकी हीनता कर पुत्रादिककूं पूजे तो वह जगतमें हास्यकर निन्दाकू पावे कौन दृष्टान्त जैसे सिंह होय अरु स्यालकी सरन चाहे । तो वह हास्यने पावे ही पावे यह जुगत है ही तासूं धर्ममें अरहंतादिक उत्कृष्ट देवने छोड अरु कुदेवने पूजे तो काई ई लोकमें हास्यने न पावे पावे ही पावे । अरु परलोकमें नाना प्रकारके नर्कादिकके दुख अरु क्लेसकूं नाही सहे अवस्य सहे । सो क्यों सहे सो कहिये है । जो आठ कर्मोंमें मोह नामा कर्म सर्व कर्मोंका राजा है । ताके दोय भेद हैं एक तो चारित्रमोह एक दर्शनमोह सो चारित्रमोह तो ई जीवको नाना प्रकारकी कषायां कर आकुलता उपजावे है । सो कैसी है आकुलता और कैसा है याका फल सो कोई जीव नाना प्रकार संयम कर संयुक्त है । अरु वा विर्षे कषाय पावजे हैं तो दीर्घकालके संयमादिक कर संचित पुन्य जैसे अग्निमे रुई भस्म होय तैसे कषायरूपी अग्नि विषे पुन्यरूपी रुई भस्म होय है अरु कषायवान पुरुष ई जगतमे महां निन्दाने पावे है । बहुरि कैसी है कषाय षोटी स्त्रीका सेवनसूं भी ताका पाप अनन्त गुना पाप मिथ्यातका है । अरु यो जीव अनादिकालको एक मिथ्यात कर ई संसार विषै भ्रमें है । सो मिथ्यात उपरान्त और संसार विषै उत्कृष्ट पाप है नाही । अरु सास्त्रों विषें एक मिथ्यातको ही पाप लिख्या है । सो जाने मिथ्यात्वका नास किया ताने सर्व पाप नास किया अरु संसारका नास किया सो ऐसा जान सर्व प्रकार कुदेव कुगुरु कुशास्त्रका त्याग करना । सो त्याग कहा कि देव अर्हत गुरु निर्ग्रंथ तिल तुस मात्र परिग्रहसों रहित ऐसे

अरु धर्म जिनप्रनीत दयामयी वीतराग सिवाय सर्वको दूर हीं तें तजना प्रान जाय तो जावो पन नमस्कार करना उचित नाहीं। आगे अर्हंतादिकका सरूप वर्नन करिये है। सो कैसे हैं अरहन्त प्रथम तो सर्वज्ञ है। जाका ज्ञानमे समस्त लोकालोकके चराचर पदार्थ तीन काल संबधी एक सययमें झलके हैं। ऐसी तो ज्ञानकी प्रभुत्व शक्ति है। अरु वीतराग हैं। सर्वज्ञ होता अरु वीतराग न होता तो राग द्वेष कर पदार्थका सरूप और सूं और कहता तो वा विषें परमेश्वरपना संभवता नाहीं। अरु वीतराग होता सर्वज्ञ न होता तो भी पदार्थका स्वरूप यथार्थ न कहता तो ऐसा दोष कर सयुक्त ताको परमेश्वर कौन मानता तासूं तामें ये दोष होय एक तो रागद्वेष अरु अज्ञानपनों ते परमेश्वर नाही तातैं ये दोपन कर रहित अर्हंत देव ही हैं। सोई उत्कृष्ट हैं सोई सर्व प्रकार पूज्य हैं। अरु सर्वज्ञ वीतराग होता अरु तारवाने समर्थ न होता तो भी प्रभुत्वपनामें कसर पडती। सो तो जामे तारन शक्ति ऐसी है। जो कोई जीव तो भगवानका सुमरन कर ही भव समुद्रतें तिरे केई भक्ति कर तिरें केई स्तुति कर तिरें इत्यादि एक एक गुनकूं आराध मुक्ति पधारें परन्तु प्रभूकूं खेद रंच भी न भया सो महंत पुरषनकी अचित सक्ति है। जो आपने तो उपाय करनो पडे नाही। अरु ताका अतिशय कर सेवकजनाका स्वयमेव भला हो जाय। अरु प्रतिकूल पुरषांका स्वयमेव बुरा हो जाय अरु शक्तिहीन पुरुष हैं ते डीला जांय अरु पेलाका भला बुरा करे तब वेसूं कार्य सिद्ध होय। सो भी नेम नाहीं होय व न भी होय।

इत्यादि अरहन्तदेव अनेक गुन कर सोभित हैं। बहुरि आगे जिन-वानीके अनुसार ऐसा जो जैन सिद्धान्त सर्व दोष कर रहित ता विषें सर्व जीवांका हितकारी उपदेस है। अरु तामें सर्वतत्वका निरूपन है। अरु ता विषै मोक्षमार्गका मोक्षस्वरूपका वर्नन है। अरु पूर्वापरि दोष कर रहित है इत्यादि अनेक महिमां कर सोभित जिन सासन है। आगे निर्ग्रन्थ गुरुका स्वरूप कहिये है सो राजलक्ष्मीने छोड़ मोक्षके अर्थ दीक्षा धरी है। अरु अणिमा महिमा आदि दे रिद्धि जाके फुरी हैं। अरु मति श्रुति अव-धि मनःपर्यय ज्ञान कर संयुक्त है। अरु महां दुद्धर तपकर संयुक्त है। अरु निःकषाय है दयालु है छयालीस दोष टाल आहार लेहे। अरु अठाइस मूल गुन ता विषें अतीचार भी न लगावे है ईर्या समितिने पालता थका साडा तीन हाथ धरती सोधता विहार करे। भावार्थ—काहू जीवने विरोधे नाहीं। भाशा समिति कर हित मित वचन बोले है। ताका वचन कर कोई जीव दुख न पावे ऐसे सर्व जीवाकी रक्षा विषें तत्पर है ऐसा सर्वोत्कृष्ट गुरुदेव धर्म ताने छोड़ विचिक्षन पुरुष हैं ते कुदेवादिकने कैसे पूजें परतक्षही जग तके विषे जाकी हीनता देखिये है। जे जे जगतमे रागद्वेष आदि औगुन हैं ते ते सर्वसे हिंसा झूठ चोरी कुसील आरंभ परिग्रह आदि जे महां पाप ताकर ही स्वर्गादिकका सुखने पावे तो नर्कादिकका दुख कौन कर पावे सो तो देखिये नाहीं। और कहिये है देखो भाई जगतमे उत्कृष्ट उत्कृष्ट वस्तु थोरी है। सो प्रतक्ष देखिये है। हीरा मानिक पन्ना जगतमें थोड़ा है कंकर पत्थर बहुत है। बहुरि राजा पातशाह

आदि महत पुरुष थोडा है रंक आदि शूद्र पुरुष बहुत है। अरु धर्मात्मा पुरुष थोडा हैं पापी पुरुष बहुत हैं ऐसा ऐसा अनादि निधन वस्तुका स्वभाव स्वयमेव बन्या है। ता स्वभाव मेंटना सक कोई नाहीं। तामों तीर्थकर देव उत्कृष्ट हैं सो एक क्षेत्रमें एक कोई कालमे एक पाजे अरु कुदेवादिकका वृद कहिये समूह वर्तमान कालमे बहुत पाजे। कैसा कैसा कुदेवाने पूजें छें। परस्पर रागी द्वेषी वे तो कहे मोनें पूजो अरु पूजवावाला कने खावांकूं मागे अरु जा कहे मै घना दिनका भूखा छू। सो वे ही भूखा तो औराने उत्कृष्ट वस्तु देवा समर्थ कैसे होंय। जैसे कोई रक पुरुष क्षुधा कर पीडित घर घर अन्यका दाना वा रोटीका टूक झूठा मागता फिरे। अरु कोई अज्ञानी पुरुष वा कने उत्कृष्ट धनादिक सामग्री मागे वाके अर्थ वाकी सेवा करे तो वह पुरुष जगतमे हास्य न पावै पावे ही तासू श्रीगुरु कहे हैं। हे भाई तू मोहके वस कर आख्या देखी वस्तुने झूटी मत माने यह जीव ऐसी भ्रम बुद्धि कर अनादि कालका संसारमें भूला रुले कैसे रुले है। जैसे कोई पुरुषके दाहज्वरका तीव्र रोग होय ताकों कोई अज्ञानी कुवैद्य तीव्र उष्ण औषध देय तो वह रागी कैसे शान्तिता पावे त्यो ही ये जीव अनादि तै मोहकर दग्ध भया है। सो मोहकी वासना तो या जीवके सर्वस बिना उपदेसा ही बनी रहे है। ताकर तो आकुल व्याकुल महादुखी है ही। फेर ऊपर सों ग्रहीत मिथ्यातका फल अनन्त गुना खोटा है। सो तो गृहीत मिथ्यात द्रव्य लिगी मुनि सर्व प्रकार छोडे हैं अरु ग्रहीत मिथ्यात ताके भी अनन्तवें भाग ऐसा हलका अग्रहीत मिथ्यात ताके पावजे

है अरु नाना प्रकार दुद्धर दुद्धर तपश्चरन करे है । अरु अठाईस मूल गुन पाले है बाईस परीसह सहे हैं । अरु छयालीस दोष टार आहार ले है अरु अंसमात्र कषाय न करे । सर्व जीवाके रक्षपाल होय जगतमें प्रवर्त्ते अरु नाना प्रकारके शील संयमादि गुन कर भूषित है । अरु नदी पर्वत गुफा मसान निर्जन सूका वन तामें जाय ध्यान करें । अरु जाके एक मोक्षहीकी अभिलाषा अरु संसार सों भयभीत एक मोक्षहीके अर्थ ही राजबिभूतिने छोड़ दिक्षा धरी है । ऐसे होते संते भी मोक्ष कदाच पावे नाहीं । करना ही पावे याके महां सूक्ष्म केवलज्ञान गम्य ऐसा मिथ्यातका अंस लगा है । तातै मोक्ष पावे नाही झूठा ही भ्रम बुद्धि कर मान्या तो गर्ज सरे नाहीं । कौन दृष्टान्त जैसे बालक अज्ञान माटीका हाथी घोड़ा बेल बनावे अरु वाको सांचा मानकर वासूं बहुत प्रीत करे अरुवा सामग्रीकूं पाय बहुत खुसी होय पाछे वाकों कोई फोड़े ले जाय तो बहुत सोक करे रोवे छाती माथा आदि कूटे वाके ऐसा ज्ञान नाहीं कि ये तो झूठा विकल्प हैं । त्यों ही यह अज्ञानी पुरुष सोई हुवा बालक सो कुदेवादिकने तारन तरन जान सेवे है । ऐसा ज्ञान नाही के ऐही तिरवाने असमर्थ तो हमें कैसे तारसी । बहुरि और दृष्टान्त कहिये है । कोई पुरुष कांच खंडने पाइवा विषे चिन्तामन रत्नकी बुद्धि करे है अरु या जानें यह चिन्तामन रतन है । सो मोनें बहुत सुखकारी होसी यह मोने मनवांछित फल देसी सो भ्रम बुद्धि कर कांचनें चिन्तामन मानो ता कर काई हूवो अरु कांई वेसूं मनवांछित फलकी सिद्ध हुई कदाचि न होई काम पडवा पर बजारमें

बेचसी तो कौडी भी प्राप्त न होसी। त्योंही कुदेवादिकने आछा जान जीव सेवें हैं। पन वासुं किछू भी गरज सरे नाही। अपूठा परलोकमें नाना प्रकारके नरकादिकके दुःख सहना पडे तासों कुदेवादिकका सेवन तो दूर ही रहो परन्तु वा निकट रहनां भी उचित नाहीं। जैसे सर्पादिक क्रूर जनावराका संसर्ग उचित नाहीं। त्योही कुदेवादिकका ससर्ग उचित नाही। सो सर्पादिकमे कुदेवादिकमें इतना विशेष है। सर्पादिकका संगति सु इही प्रान नास होय अरु कुदेवादिकके सेवनतै पर्याय पर्यायमें अनन्त वार प्रानका नास होय। अरु नाना प्रकार जीव नरक निगोदके दुखकू सहे। तातै सर्पादिकक सेवन श्रेष्ठ है अरु कुदेवादिकका सेवन अनिष्ट जानना तातै विचक्षन पुरुष अपना हेतने वाक्षते शीघ्र ही कुदेवादिकका सेवन जो बहुरि देखो ये ससारमे ये जीव ऐसा स्याना है जो दमडीकी हाडी खरीदे तो तीन टक्कार दे सर्व ठौर साजी देख ग्रहण करे अरु धर्म सारखी उत्कृष्ट वस्तुका सेवन कर अनंत ससारके दुखसू छूटे ताका अंगीकार करनेमे असमात्र भी परिक्षा करे नाहीं। सो लोकमे गाडरी प्रवाहकी नाई और लोक पूजें। तैसे ही ये भी पूजें सो कैसा है गाडरी प्रवाह जो गाडरके ऐसा विचार नाहीं जो आगे खाई है कि कूपतें कि सिह है कि व्याघ्र है ऐसा विचार विना एक गाडरीके पीछे सर्व गाडरी चली जाय। सो अगली गाडर खाई कूपमें पडे तो पिछली भी जाय पडे अरु जे अगली गाडर नाहर व्याघ्रका स्थानकमे जाय पडे त्यो ही पिछली भी जाय पडे त्योही ये संसारी जीव है। जो कुलका

आगे खोटे मारग चाल्या तो ये भी खोटे मारग चाले। अरु वड़ा आछा मारग चाले तो आछा चाले पन याके ऐसा ज्ञान नाहीं के आछा मारग कौन अरु खोटा मारग कौन ऐसा ज्ञान हो तो खोटाकूं छोड आछा ग्रहण करै। जगतमें एक ज्ञानहीकी बडाई है जामे ज्ञान विशेष है सोई जग कर पूज्य है। ताहीकूं सब सेवे हैं अरु ज्ञान ही जीवनका निज स्वभाव है जासूं धर्म परीक्षा कर ग्रहन करनें। अब आगे कुदेवादि-कका लक्षन कहिये है सो हे भव्य तू जान जामें रागद्वेष होय सर्वज्ञपनाका अभाव होइ ते ते सर्व कुदेवादिक जानना कहा ताई याका वर्णन न करिये दोय चार दस बीस तरहके होयं तो कहना भी आवे। तातै ऐसा निश्चय करना सर्वज्ञ वीतराग हैं—तेई देव हैं। अरु ताहीका वचन अनुसार सास्त्र हैं। सो सास्त्रानुसार प्रवर्ते सो धर्म है अरु ताही अनुसार दस प्रकार वाह्य परिग्रह चौदह प्रकार अंतरग परिग्रह रहित निर्ग्रंथ वारके अग्रभागके सौमें भाग भी परिग्रह नाही। वीतराग स्वरूपके धारक तेई निर्ग्रंथ गुरु हैं। आप भव समुद्रतै तिरे औरांने तारे धर्मसे ये इस लोकमें जस बडाई किछू चाहें नाही। अरु परलोकमें स्वर्गादिककूं भी चाहें नाहीं। एक मुक्ति हू कों चाहें ऐसा देव गुरु धर्म उपरान्त अवशेष रहा सो सर्व कुगुरु कुधर्म कुदेव जानना आगे और कहिये है। केई तो खुदाकूं सर्व सृष्टिका करता माने हैं। कैइ ब्रह्मा, विष्णु, महेशकूं भेले करता माने हैं। कोई एकला नारायनकूं कर्ता माने हैं कैई एक शंकर कहिये महादेव ताकों करता माने हैं। कैई बड़ी भवानीकूं

कर्ता माने है। केई परमब्रह्मकूं कर्ता माने हैं इत्यादि कर्ता माने ताको कहिये है। जैसा येही तीन लोकका कर्ता है तो एक ने तीन लोकका कर्ता कैसे कहा अरु खुदा ही तीन लोकको कर्ता है तो हिन्दुयोने क्यों किया अरु बिस्नु आदि ही तीन लोकका कर्ता है तो तुरक किसने किया हिन्दू तो खुदाकी निन्दा करे अरु तुरक बिस्नुकी निन्दा करे कोई कहे करती बार खबर न करी तकूं कहिये है। करती बखत खबर न रही तो परमेश्वर क्यों कर ठहराया जाके एता ही भी ज्ञान नाहीं। अरु तीन लोकका कर्ता ही तो कोई दुखी कोई सुखी कोई नर कोई तिर्यच कोई नारक कोई देव ऐसा नाना प्रकारका जीव पैदा क्यो किया तैसा तैसा ही सुख दुख फल देवाके अनुसार पैदा किया तो यामें परमेश्वरका करतव्य कैसे रहा कर्महीका करतव्य रहा सो के-तो परमेश्वरहीका करतव्य कहो के कर्मका ही करतव्य कहो के दोईका भेला ही करतव्य कहो। हमारी मा अरु वाझ ऐसे तो बने नाहीं। बहुरि जीव तो पहिली न होता शुभाशुभ कर्मकू न बाधा यामें भी कर्ताका अभाव भया बहुरि जगतमे दोई चार कार्य करिये। तो भी आकुलताका सद्भाव विशेष होय अरु आकुलता है तहा तहा बडा दुख है। अरु जा परमेश्वरकूं तीन लोकमे अनन्त जीव व अनन्त पुद्गलादि पदार्थ ताका कर्ता होता अरु अनेक प्रकार जुदा जुदा परनमता अरु ताकी जुदी जुदी याद राखनी अरु जुदा जुदा सुख दुःख देना अपना संकलेश परनाम करना, ऐसा कर्ता होय ताका दुःखकी काई पूंछनी सर्वोत्कृष्ट दुःख जाहीके बाटें आया तो परमेश्वरपना काहेका रहा बहुरि एक पुरुषकूं

ऐसा कार्य कैसे बने। कोई कहेगा जैसा राजाके जुदे जुदे चाकरन कर अनेक प्रकारका कार्य कर लेय अरु राजा सुखी भया महलमें तिष्टै है। तैसे ही परमेश्वरके अनेक चाकर है। ते सृष्टिकूं उपजावें हैं विनासैं हैं। परमेश्वर सुखसूं वैकुंठमें तिष्टे है ताकूं कहिये है। रे भाई ऐसे सम्भवे नाहीं जाका चाकर कर्ता भया तो परमेश्वरको कर्ता काहेको कहिये अरु परमेश्वर वे कुटुम्बमें ही [illegible]ता तिष्टे है। तो ऐसा कैसे कहिये परमेश्वर मक्ष कक्ष आदि वैरियोंका मारवां वास्ते वा भक्तन की सहाई वास्ते चौवीस अवतार धरया अरु घना भक्तिको खेत आन पजायो अरु नरसिंह भक्ति आय दर्सन दियो अरु द्रौपतीको चीर बढ़ायो अरु टीटईके अंडाका सहाई कर अरु हस्तीने कीचमेसो निकालो। अरु भी[illegible]नीका उसेया फल खाया इत्यादि कार्य एटे आया विना कूने किया गो ऐमा विरुद्ध वचन यहां संभवे नाही बहुरि कोई यह कहसी परमेश्वरकी ऐसी ही लीला छे ताको कहिये है। रे भाई लीला तो सो कहिये जामे महानन्द उपजे सो सर्व जनकूं प्रिय लागे परमेश्वरकू तो ऐसा चाहिये जो सर्व होका भला करै। ऐसा नाही के वाहीकू तो पैदा करे वाहीकूं नास करे यह परमेश्वरपना कैसा सामान्य पुरुष भी ऐसा कार्य न विचारे बहुरि कोई सर्व जगतकूं शून्य कहिये नास माने है। ताकूं कहिये हैं रे भाई तू सर्व जगतकूं नास माने तो तू नास्तिका कहनहारा कोई वस्तु है। ऐसे ही अनन्त जीव अनन्त पुद्गल आदि प्रमान कर वस्तु प्रतक्ष देखिये है ताकूं नास्ति कैसे कहिये। बहुरि कोई ऐसे कहें हैं जीव तो छिन छिनमें उपजै अरु छिन छिनमें विनसे है।

ताकूं कहिये है। रे भाई छिन छिनमें जीव उपजे है तो कालकी बात आजकूंने जानी। अरु मे फलाना छा सो मर देव हू छो ऐसा कूंने कहा बहुरि कोई ऐसे कहे प्रथ्वी अप वायु तेज आकास ये पाच तत्व मिल एक चैतन्य शक्ति उपजावे है। जैसे हल्दी साजी मिल लाल रंग उपजावे। अथवा नील हरदी मिल हरा रग उपजावे ताकूं कहिये है रे भाई प्रथ्वी आदि पांचो तत्व तें कहा सो तो यह अचेतन द्रव्य है सो या कर अचेतन शक्ति उपजे है। यह नेम है। सो तो प्रत्यक्ष आखा देखिये है अरु नाना प्रकारके मंत्र जंत्र तंत्र आदिके धारक जे किस ही पुद्गल द्रव्यको नाना प्रकार परणवावे हैं, ऐसा आज पहिली कोई देख्यो नाहीं, फलानों देव विद्याधर मंत्र औषधि पच आदि पुद्गलको चैतन्य रूप परनवायो सो तो देखो नाही अरु आकाश अमूर्तीक अरु प्रथ्वी आदि चारो तत्व मूर्तीक पदार्थ कैसे निपजै। ऐसे होय तो आकाश पुद्गलका तो नास होय अरु आकाश पुद्गलकी जायगां सर्व चैतन्य द्रव्य होय जाय सो तो देखी नाही चैतन्य पुद्गल सर्व न्यारा२ पदार्थ आख्या देखिये है। ताकूं झूठा कैसे मानिये। बहुरि कोई ऐसे कहे है एक ब्रह्म सर्व व्यापी है। जलमे थलमे सर्व घट पटादिमे एक ब्रह्मकी सत्ता है। ताकू कहिये है रे भाई ऐसा होय तो बडा दोष उपजे कैई पदार्थ चेतन्य देखिये है कई पदार्थ अचैतन्य है। सो एक पदार्थ चेतन अचेतन कैसे होय अरु चेतन पदार्थ भी नाना प्रकारके देखिये है अरु अचेतन पदार्थ भी बहुधा देखिये है। सो सबनकूं एक कैसे मानिये बहुरि जो एक ही पदार्थ होय ताकूं कहिये कि फलानो नरक गयो, फलानो स्वर्ग गयो, फलानो

मनुष्य भयो, फलानो तिर्यंच भयो, फलानो मुक्ति गयो, फलानो दुखी, फलानो सुखी, फलानो चैतन्य, फलानो अचैतन्य इत्यादि जुदे जुदे पदार्थ जगतमें देखिये है। ताकूं झूठा कैसे कहिये अरु जे सर्व जीव पुद्गल एकसा होता तो एकके दु.खी होते सर्व दुःखी होते अरु एकका सुखी होते सारा ही सुखी होय। अरु चैतन्य पदार्थ छे ताके भी सुख दु.ख होय सो तो देख्या नाहीं। बहुरि जे सर्व ही पदार्थकी एक सत्ता होय तो अनेक नामकूं पावे अरु फलाना खोटा कर्म किया फलाना चोखा किया ऐसा क्यूंने कहना पड़े सर्व मई व्यापक एक पदार्थ हूवा तो आपकूं आप दु'ख कैसे दिया। सो कोई त्रैलोकमें नाहीं जो आपकू आप दु ख दिया चाहे। जो आपकू आप दुःख देवामें सिद्ध होय तो सर्व जीव दु खने कैसे चाहें तासू नाना प्रकारके जुदा जुदा पदार्थ स्वयमेव अनादि निधन वन्या है। कोई किसीका कर्ता नाहीं सर्व व्यापी एक बृह्मका कहवामे वडी विपरीति प्रत्यक्ष दीखे है। ताते हे सूक्ष्म बुद्धि तेरा श्रद्धान मिथ्या है प्रत्यक्ष वस्तु आख्यां देखिये तामे सदेह काई तामे प्रश्न काई आखा देखी वस्तुने भूले है। जो प्रत्यक्ष मर गया ताकू आन माने तो वा सारखा मूर्ख ससारमे और नाही। अरु तू यह कहसी मैं काई करू फलाना शास्त्रमे कही है यह सर्वज्ञका वचन है ताकू झूठां कैसे मानियें। ताकू कहिये है रे भाई प्रत्यक्ष प्रमान विरुद्ध होय ताका आगम साक्षी नाहीं। अरु वे आगमका कर्ता प्रमानीक पुरुष नाही। यह नि:संदेह है जाका आगम प्रत्यक्ष प्रमाणसों मिले सो आगम प्रमान है अरु वह आगमका कर्ता पुरुष प्रमान है।

अरु पुरुष प्रमानका वचन प्रमान सो पुरुष प्रमान होय। तासों जो कोई सर्वज्ञ वीतराग है तेई पुरुष प्रमान करवो जोग्य है सो सर्वज्ञका वचनमे तो यो कहा है। जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल ये छहों द्रव्य मिल त्रैलोक निपजा है ये छहों द्रव्य अनादि निधन हैं इनका कोई कर्ता नाही। इनका कोई कर्ता होता तो कर्ता किसका किया था अरु कोई कहे कर्ता तो अनादि निधन है तो ये छहो द्रव्य भी अनादि निधन हैं। तासो यह नेम ठहरा कोई पदार्थ किसी पदार्थका कर्ता नाही। सारा पदार्थ अपने अपने स्वभावका कर्ता है। अरु अपने अपने स्वभाव रूप स्वयमेव परनवे है। चैतन्य द्रव्य तो चैतन्य रूप ही परनवे अरु अचेतन मूर्तीक द्रव्य अचेतन रूप ही परनवे मूर्तीक द्रव्य रूप रहे। अमूर्तीक द्रव्य अमूर्तीक रूप रहे अरु जीव द्रव्य चैतन्य रूप रहे पुद्गल द्रव्य जड स्वभाव है। धर्म द्रव्यका चलनेमे सहकारी स्वभाव है अरु अधर्म द्रव्यका स्थिरकार स्वभाव है जीव द्रव्य तो अनन्त प्रदेशी है पुद्गल अवगाहन स्वभाव है। कालद्रव्यका वर्तना स्वभाव है जीव द्रव्य तो अनन्त है पुद्गल तासू अनन्तानत गुना है। अधर्म द्रव्य धर्म द्रव्य एकही है। आकास द्रव्य भी एकही है। अरु कालकी अनु भी अस्थित है। एक एक जीव द्रव्यांका प्रदेस तीन तीन लोक प्रमान है। पन सकोच विस्तार शक्ति है। तातै कर्मके निमित्तकर सदैव शरीरका आकार प्रमान है। एक केवल समुद्घात पूरन समयमें तीन लोक प्रमान होय अन्यकालमे नेम कर शरीरके प्रमान रहे। अवगाहना शक्ति कर तीन लोक प्रमान आत्माका आकार शरीरकी अवगाहना विषै समाय जाय। अरु

पुद्गलका आकार एक सूईका तारका अग्र भागके असंख्यातवें भाग गोल षट्कोनने धरै है। अरु धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्यका आकार तीन लोकके प्रमान है। अरु आकास लोकालोक प्रमान है तांही वास्ते याकूं सर्व व्यापी कहिये अरु काल अमूर्तीक पुद्गल सादृस्य-कालानु धारे है। बहुरि जीव तो चैतन्य द्रव्य है अवशेष पांचों अचेतन द्रव्य है। बहुरि पुद्गल तो मूर्तीक द्रव्य है। बाकी पांचों अमूर्तीक द्रव्य है। बहुरि आकास लोक अलोक विषै सारे पावजे है। वा पांचों लोक विषै पावजे है। बहुरि जीव पुद्गल धर्म द्रव्यका निमित्त कर क्षेत्र सों क्षेत्रांतर गमनागमन करे है। अधर्म द्रव्यका निमित्त कर स्थित भी करे अरु जीव पुद्गल विना अवशेष चार द्रव्य अनादि निधन ध्रुव कहिये स्थिर रूप तिष्टे हैं। बहुरि जीव पुद्गल तो स्वभाव विभाव रूप परनवे हैं। अवसेष चार द्रव्य स्वभाव रूप ही परनवे विभावतारूप नाहीं परनमे बहुरि जीव तो सुख दुखरूप परनमे है अवशेष पाचों सुख दुखरूप नाहीं परनवे है बहुरि जीव तो आप सहित सर्वका स्वभाव ताको भिन्न भिन्न जानें है अवशेष पांचों द्रव्य आपको जाने न परको जानें बहुरि काल द्रव्यका निमित्त कर पाचों द्रव्य परनमें है। अरु काल द्रव्य आपही कर आप परनवे है। बहुरि जीव पुद्गल द्रव्यका निमित्त कर रागादिक स्वभावरूप परनवे है। अरु पुद्गल-का निमित्तकर जीव असुभभाव रूप परनवे है बहुरि जीव कर्मोका निमित्त कर नाना प्रकारके दुखकूं सहे है। वा संसार विषै नाना प्रकारकी पर्यायकूं धरे है। अरु भ्रमन करे है अरु कर्मका निमित्त करही ज्ञान आछाद्या जाय है। ताहीको उपाधिक भाव कहिये है।

अरु कर्म रहित हूवा जीव केवल ज्ञान संयुक्त अनत सुखका भोक्ता हो है। अरु तीन काल संबधी समस्त चराचर पदार्थ एक समय विषें जुगपत जाने है। अरु दोई परमान आदि स्कधकूं असुद्ध पुद्गल कहिये है। अरु एकली परमानूने सुद्ध पुद्गलद्रव्य कहिये है। बहुरि तीन लोक पवनका वातविलाके आधार है। अरु धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्यका सहाई कहिये निमित्त है। अरु तीन लोक परमानूनका एक महास्कध नामा स्कंध है। ताकर तीन लोक जड रहा है। वे महास्कध केताइक तो सूक्ष्मरूप हैं। केताइक बादर रूप है। ऐसा तीन लोकका कारन जानना यहा कोई कहे ताका कारन तो कहा पन ऐता तीन लोकका बोझ अधर कैसे रहे। ताकू समझाइये है रे भाई ए जोतिषी देवाका असख्यात विमान अधर देखिये है अर वडा बडा पखेरु अधर आकासमे उडता देखिये हे। सो ये तो नीका बने है अरु वासुकीराजाके आधारलोक मानिये सो यह न सभवे। जो वासुकी बिना आधार काहे पे रहे अरु जो कदाच वासुकीकूं औरके आधार माने तो यामे वासुकीका कहा करतव्य रहा अनुक्रमतें परंपराय आधारका अनुक्रम आया है। तातै यह नेम सभवे नाही पूर्वे कहा सोई सभवै है। ये छहों द्रव्यका रचना जाननी ये छहों द्रव्य उपरान्त और कोई नाही। अरु छहो द्रव्य माहीसूं एकको कर्ता न मानिये। तो बने नाहीं सो ये न्याय संभवै है। ऐसे ही अनुमान प्रमानमें आवे है। याही तै आज्ञा प्रधानीसे परिक्षा प्रधानी सिरे कहा है। अरु परिक्षा प्रधान पुरुषहीका कार्य सिद्ध होय है। ऐसे षट् मत विषें जुदा जुदा पदार्थोका स्वरूप कहा है। परन्तु

बुद्धिवान पुरुष ऐसे विचारे छहो मत विषैं कोई एक मत सांचा होसी। छहो तो सांचा नाही छहोंमें परस्पर विरुद्ध है। तासूं किसा आगमका आज्ञा मानिये सो यातो बनै नाहीं तासों परिक्षा करवो उचित है परिक्षा किया अनुमान वात मिलसी सोई प्रमान छै। सो: जो छहों मतमे कोई सर्वज्ञ वीतराग है। ताका मतमें पदार्थाका स्वरूप कहा छे सोई उनमें मिले है तातै सवज्ञ वीतरागका मत प्रमान है। और मतमे वस्तुका स्वरूप कहा है सो उन्मानमें तुलै नाहीं। तातै अप्रमान है म्हारे तो रागद्वेषका अभाव छे जैसा वस्तुका स्वरूप छा तैसा ही अनुमान प्रमान किया हमारे रागद्वेष होता तो मै भी अन्यथा व्याख्यान करता रागद्वेष गया अन्यथा श्रद्धान होय नाहीं जैसाने जैसा कहिये तो रागद्वेष नाही। रागद्वेष तो कहिये जो वस्तुका स्वरूप और अरु रागद्वेष कर कहे तो और सो म्हारे ज्ञानावरन कर्मका क्षयोपसम करि ज्ञान यथार्थ भया हैं। अरु मैं भी सर्वज्ञ हों केवल ज्ञानी सारसौ हमारो निजस्वरूप है। अबार चार तिन कर्माका उदय कर ज्ञानकी हीनता दीसे है। तो काई हूवो वस्तुका द्रव्यत्व स्वभावमे फेर नाही अब भी हमारे ज्ञान छे सो केवल ज्ञानको बीज छै। तातै म्हारी बुद्धि ठीक छे जामे संदेह नाहीं। ऐसा सामान्यपने षट मतका स्वरूप कहा आगे संसारी जीव चन्द्रमा सूर्य आदि देवकूं तरनतारन माने है ताकूं कहिये हैं ये चन्द्रमा सूर्य आदि जगतकों दीसे हैं। सो ये तो विमान है सो अनादि निधन सास्वता है। या ऊपर चन्द्रमा सूर्य अनन्ता होय गया चन्द्रमाका विमान सामानपने अठारासै कोस चौड़ा है। सूर्यका सौ कोस

चौडा है। अरु ग्रह नक्षत्र ताराका विमान पाचंसे कोस जघन्य सवासै कोस चौडा है। अरु आधा गोलाके आकार गोल है। अधोभागमे सकडा है ऊपर चौडा है। ये विमान पांचो ही जातिके जोतिषी देवनके है। रतनमई इन ऊपर नगर है तिनमें रतनमई खाई हैं। रतनमई कोट रतनमई दरवाजा रतनमई महल अनेक खन सयुक्त ऊचा वडा विस्तारने लिया विमान विषैं स्थित है। ता नगरमें असख्यात देवागना वसैं हैं। ताका स्वामी ज्योतिषी देव है। बारा वरसके राजपुत्र पुत्री सादृस्य मनुष्य कैसा आकार भोग भोगते तिष्टै है ऐता विशेष मनुष्यका शरीर हाड मास लोहू मलमूत्र सयुक्त है ज्योतिषी देवका शरीर महा सुन्दर रतनमई सुगधमई कोमल आदि अनेक गुनकर सयुक्त है। देवनके माथे मुकट है रतनमई वस्त्र पहरे है। वा अनेक रतनमई आभूषन पहिनें वा रतनमई महा सुगध पहुपनकी माला पहरं ताका शरीरमे क्षुधा तृषादि कोई प्रकारके रोग नाही। बाल दसावत आयु पर्जंत देव देवागनाकी एकसी दसा रहे है। भावार्थ-देवाके जरा न व्यापे है। बहुरि विमानकी भूमकामें नाना प्रकारकी पन्ना सादृस्य हरयाली दीसे अरु नाना प्रकारके वन वावडी नदी तालाव कुंड पर्वत आदि अनेक प्रकारकी सोभा पाजे बहुरि कठें ही पहुप वाडी सोभे कहीं नव निधि वा चिन्तामन रतन सोभें। कहीं पन्ना मानक हीरा आदि नानाप्रकारके रतन ताके पुंज सोभे हैं। अरु अठे मध्यलोकमें बडा मंडलेश्वर राजा राज करे है। तैसे ही विमानमें जोतिषी देवराज करे हैं। ताका पुन्य चक्रवर्तसूं अनन्तगुना अधिक है। ताका वर्नन कहां ताईं कहिये

ज्योतिषी देव भी असंख्यात वर्षका आयु पूरी कर चयें हैं सो मनुष्य वा तिर्यंच आन उपजै हैं। सो ज्योतिषीदेव कोईने तारवा समर्थ नाहीं। सो आपही कालके वस औरांने कैसे राखें अरु कैसे औरांकी सहाइ करें सो वस्तुका स्वभाव तो ऐसे अरु जगतके जीव भर्म बुद्धि कर मानें ऐसे सो चन्द्र सूर्यादिकका विमान आकासमे गमन करै है। सो वडा विमानमूं या कहे है ये चन्द्रमा सूर्य गाड़ाके पैया समान है। अरु तारा कूड़ा समान है। सो म्हें चन्द्रमा सूर्यने प्रनाम करूं यह म्हांको सहाई करसी सो अज्ञानी जीवाके ऐसा विचार नाहीं। जो दोय चार कागदाकी गुडी आकासमे दं.सै चारसै हाथ ऊंची उडे है। सो भी नकसी कागला साद्दस्य दीसे तो सोला लाख कोस तो सूर्यका विमान ऊंचा है अरु सतरा लाख आठ हजार कोस चंद्रमाका विमान ऊंचा है अरु तारोका विमान पन्द्रा लाख असी हजार कोस ऊंचा है। सो ऐती दूरसो गाडाका पैया समान वा कूडाके प्रमान कैसे दीखती अरु ये आकास साद्दस्य हमारो भलो कैसे करसी और भी उदाहरन कहिये है सो देखो दोय तीन कोस वा पांच चार कोसका ऊंचा पर्वत धरतीमें नीचे तिष्ठे सो दस वीस कोस पर्यंत निजर आवे फेर न आवे। ऐसे इन्द्री ज्ञानकी ऐसी सक्ति है। तातैं घनी दूर सों निर्मल दीखे नाहीं। केवल ज्ञान अवधि ज्ञानतैं दूर प्रवर्ती सूक्ष्म वस्तु भी निर्मल दीसे है तो चन्द्रमां सूर्य ताराका विमान ऐसा छोटा होय ऐती दूर सों कैसे दीसे यह नेम है। बहुरि कोई या कहे। यह जोतिषी देव ग्रह नक्षत्र है। अरु संसारी जीवाकूं दुख देय हैं। सो जाने पूजा जाके अर्थ दान दिया सांतता होय है।

ताकूं कहिये है रे भाई तेरे भरम बुद्धि है। ये जोतिषी देवाका विमान अढाई द्वीपमें मेरुसूं दूर गोलके क्षेत्रमें प्रदक्षनारूप भ्रमन करे है। तो कोईका विमान तो शीघ्र गमन करै है कोईका मंद गमन करे है। ताकी चालकूं देख अरु वाकी चालकूं देख अरु वाकी चाल विषै कोईका जन्मादिक हुआ देख विशेष ज्ञानी अगाऊ होतव्यताकूं बतावे है। जाका उदाहरनकूं बतावें हैं। उदाहरन कहिये सामुद्रक चिन्हकूं देख वाका होतव्य बतावे तथा सोन असोन बतावे तैसे ही होतव्यता बतावे, आठ प्रकारके निमित ज्ञान है तामे एक जोतिष निमित्त ज्ञान है। ये आठ प्रकारके निमित्त ज्ञान कोई ईति भीति करवाने समर्थ तो नाही। जो समर्थ होय तो पूजिये जैसे हिरन स्याल कलसई इत्यादिकका सगुन अगाऊ होतव्यताका बतावनेका कारन है। सो याकों पूजिये तो काई होतव्यता मिटे कदाच न मिटे त्यों ही जोतिषी देवाने पूजवा ताका अर्थ दान दिया ईत भीत भी असमात्र मिटे नाही। उलटा अज्ञान ताकर महा कर्मका बंध होय। ताकर विशेष दुख होय दुखका देवावालानो असुभकर्म है सो जिनेश्वरदेवकूं पूज्या शान्ति होई और उपाय त्रिकाल त्रिलोकमे नाही अरु जीवके भरम बुद्धि ऐसी है। जैसे कोई पुरुषके महा दाहज्वर है अरु फेर अग्नि आदि उस्नताका उपाय करे। तो पुरुष कैसे शान्तता पावै त्यों ही मिथ्यात करतो जीव आगे ही गृसित हुआ अरु फेर मिथ्यात ही कू सेवे तो केसे सुख पावे। अरु कैसे याका कार्य होय बहुरि कोई महादेव कूं अजोनी शंभू मरन तारन माने है। अरु ताकर जगतका नास माने है।

अरु याकूं महा कामी मानें हैं सो कैसा कामी माने सोई कहिये है। महादेवका आधा शरीर स्त्रीका है आधा पुरुषका है। तासूं याका-नाम अर्द्धांगी कहिये ऐसो स्त्री सों रागी है। ताकूं कहिये है रे भाई ऐसो दुष्ट सर्व सृष्टका मारवावाला अरु महां विद्रूप ऐसो पुरुष तारवा समर्थ कैसे होय। ताका नाम सुनता ही दुख उपजै तो दर्सन कर कैसे सुख उपजै। यह जगतमे न्याय है जैसा कारन मिले तैसा ही कार्य निपजे। सो उदाहरन कहिये है जैसे अग्निका सजोगसों दाह उपजे अरु जलका संजोगसों शीतलता ही उपजें। अरु कुशीलवान स्त्रीका संजोगकर विकार भाव उपजे अरु शीलवान पुरुषका सजोगसूं विकार भाव विलय जाय। अरु विषय कषाय कर प्रानका नास होय अरु अमृतका पीवाकर प्रानकी रक्षा होय। सिंह व्याघ्र हस्ती सर्प चोर आदिक सजोग कर भय ताप ही उपजै। अरु दयालु साधुजनका संजोग कर निर्भै आनन्द ही उपजे। ऐसा नाहीं कि अग्निका संजोग कर तो शीतलता होय अरु जलका संजोग कर उस्नता होय। इत्यादिक जानना तासू हे भाई हम महादेवका असल निज स्वरूप जो है सो कहिये है सो ये महादेव कहिये रुद्र सो ये चौथा कालमे ग्यारा (११) उपजे है। ताकी उत्पति कहिये है जो जैनका निर्ग्रन्थ गुरु अरु अर्जका ऐ दोऊ भ्रष्ट होय कुशील सेवें पाछे मुनि तो ततूक्षण ही प्रायश्चित्त लेय छे दोय स्थापन कर मुनिपदकूं धर शुद्ध होय। अरु अर्जिकाकूं गर्भ रहे। सो गर्भका निपात्त किया जाय नाहीं। ताते एक जायगा नव मास परजंत गर्भ बधाइ पीछे बालक भयो कोई स्त्री पुरुषने सोंप अर्जिका भी

पीछे वैसे ही दिक्षा धरे। अरु शुद्ध होय। पाछे वे बालक आठ दस वर्षका बडा होय तब याकू न माय न बाप ऐसे लडका चतलाइ हास्य करें। तब वह बालकजीके पछे तीने जाय पूछें म्हारा माता पिता कौन है तब वे ज्यो का त्यों मुनि अर्जिकाका वृतान्त कहे। तब वह बालक आपना माता पिता मुनि अर्जिकाने जान वाही मुनि पास दिक्षा धरे-सो आगे तो मुनि अर्जिका-का वीर्य सो उपज्या तातैं महा पराक्रमी था ही पाछै नाना प्रकारके मुनि संबधी तपश्चरन कर अनेक रिद्ध फुरे वा अनेक विद्या सिद्ध होय पाछे केवली व अवधि ज्ञानी मुनि ताका मुख थकी या सुने यो महादेव स्त्रीके सयोग कर मुनिपद भृष्ट होसी। पाछे यह महादेव मुनि भृष्ट होवाका भय थकी एकान्त जायगा ध्यान धरे पाछे होनहारका जोग कर उठा ही विद्याधराकी कन्या आवे तहा वे स्नान आदि क्रीडा करे। तब वे कन्या कहे म्हे कांई जाना हमारा पिता जाने। तब महादेव कहे थारा पिता परनावे तब भी थे परनोली तब उन कही परनसी तब ऐसो कौन कराय वस्त्र दिया तब वे कन्या जाय अपने मातापिताने महादेव मुनिको सकल वृतान्त कहो। तब कन्याका माता पिता णे जानी यह महादेव महा पराक्रमी है। न परनायें तो महा उपद्रव करसी ऐसो जान कन्या परनाय पाछे वो महादेव सौ स्त्रीने भोगई सो महादेव महा पराक्रमी है। सो महादेवके वीर्यके तेज कर वे मर गई। पाछैं और भी राजपुत्री परन्या सो अनुक्रम कर सगली मर गई पाछे अन्त समयमे एक पर्वतनामा राजाकी पुत्री पारवती परनी सो याका भोग कर या टिकी सोई पारवतीने रातदिन चाहे

जवे भोगवे। कोईकी संका राखे नाहीं तासों या विपरीतता सबै नगरका स्त्री पुरुष देखवा देस देसका राजा या बात सुन घनो दुखी हूवा अरु याका जीतवाने असमर्थ हुवा तातें विशेष दुखी पाछे पारवतीका माता पिता पारवतीने पूछी। तूनें महादेवजीने पूंछथांसों विद्या कभी दूर रहे छे तब पारवती जानवेंने पूछी तब महादेव कही। एक भोग करती वार दुर रहे छे और कभी दूर न रहे है। ऐ समाचार पारवतीने पितासूं कहा तब राजा परवत आपनी दाव जान म्हादेवने मारयो तब ईका इष्टदाता देव छाने नगरमें पीडा करी। अरु या कही म्हाका धनी थे मारया तव नगरका लोगा या कही मारो सो तो पीछो आवे नाहीं अब थें कहो सोही करो जब का व्यंतर देवां कही भग (योनि) सहित महादेवके लिंगकी पूजा करो तब पीड़ा-का भय थकी नगरका लोग ऐसी ही आकार बनाय पूजा करवां लागा ऐसेही व्यंतरदेवांका भय थकी केताइक काल ताई पूजता हूवा पाछें गाड़री प्रवाह सारखो जगत है सो देखादेखी सारा मुलक पूजता हूवा सो वाही प्रवृत्त और चली आवे छे। अरु जगतके जीवाके ऐसो ज्ञान नाही जो मैं कौनने पूजों छों। अरु याको फल काई छै सो मिथ्यात्वकी प्रवर्ति विना चलाई चली आवे छै अरु धर्मकी प्रवर्ति चलाई चलाई चले नाही सो यह न्याय ही है। संसारमे तो घना जीवानें रहनो है अरु ससारसों रहित थोड़ा जीवानें होनों छै। अरु देखो स्त्रीका स्वभाव दगा-बाज सो जगतके दिखावने ऐसी लज्या करे जो सरीरका आंगो-पांग अंस मात्र भी दिखावे नाही। अरु माता पिता भाई

आदिके देखता महादेवके लिंगकी अरु पारवतीकी भगकी चौहठे निसंक पूजा करें। अरु काहूकी हटकी मनें नाहीं। सो यह बात न्याय ही है सर्व संसारी जीवाके विषयका आसक्तता तो स्वयमेव मोहकर्मका उदयकर विना सिखाई वन रहे है पाछें जामें विषय पोखया जाय ऐसा कोई बतावे धर्म तो वह क्यों न करे। पन ऐसा जीवाके ज्ञान नाहीं कि जामे विषय पोख्या जाय तामें धर्म कैसे होय जो विषय कषायमे धर्म होय पाप कौन बातमे होय सो यह श्रद्धान अयुक्त है। आगे और कहे हैं कृष्ण सृष्टि-का कर्ता अरु परमेश्वर है अरु पाछे वाकू ऐसे कहे है। कृष्णजी ढोर चराया अरु माखन चोर खाया अरु परस्त्रीसूं रमया पर-स्त्रीमे क्रीडा करी तासू कहिये हैं रे बडा महन्त पुरुष होय ऐसा नीच कार्य कभी न करे यह नेम है। नीच कार्य करे तो बडा पुरुष नाहीं कार्यके अनुसार पुरुषोंमे नीचपनो दीसे है। ऐसा नाही कि नीच कारज करे प्रभुता होय वा ऊंच कारज करतां प्रभुता घटे यह जगतमें प्रत्यक्ष दीखे है एक दोय गावका ठाकुर होते भी ऐसा निन्द कार्य करे नाहीं। तो बडा प्रथ्वीपति राजा देव वा परमेश्वर होय कैसे करे यह प्रकृति स्वभाव है बालक होय तरुन अवस्था कैसा वा वृद्ध अवस्थाका कार्य न करे अरु तरुन होय बाल वा वृद्ध अवस्था कैसा कार्य न करे। वा वृद्ध होय तरुन होय बाल अवस्था कैसा कार्य न करै। इत्यादि ऐसे सर्वत्र जानना सो कृष्णजीका प्रभुत्व सक्तिका वर्नन जैन सिद्धान्त विषैं वर्नन किया है। और मतोंमे ऐसा वर्नन नाही। सो वह कृष्ण-जी तीन खंडका स्वामी है अरु घनादेव विद्याधर अरु हजारां मुकट

बंध राजा ताकी सेवा करें अरु कोटशिला उठावां मारखो थामे बल है। नाना प्रकारकी विभूति कर संयुक्त है। अरु निकट भव्य है। शीघ्र ही तीर्थंकर पदको धर मोक्ष जासी सो भी रायराज अवस्था विषै नमस्कार करवो जोग्य नाहीं। नमस्कार करवां जोग्य दोय पद है। के तो निर्ग्रंथ गुरुके केवलज्ञानी तासूं मोक्षके अर्थ राजाने नमस्कार कैसे संभवे। और कृष्नजी गली गलीमे गोप्या संयुक्त नाचता फिरा अरु बांसुरी बजावता फिरा इत्यादि नाना प्रकार क्रिया करी कहैं सो कैसे है सोई कहिये है। भाईका सनेहकर बलभद्रजी स्वर्ग लोक सूं आप नाना प्रकारकी चेष्टा करी सो वह प्रवर्त्त चली आवे है। अरु जगतका यह स्वभाव है जैसी देखे जसी मानवा लाग जाइ नफा टोटा गिनैं नाहीं सो अज्ञानताके वस जीव काई ये यथार्थ श्रद्धान न करें। आगे और कहे हैं कि ब्रह्मा विस्नु महेस तीनोंकी स्थापना छे तीन मिल सृष्टि रची है। कैई या कहैं हैं एक जोत छे तामाहि सों चोइन्द्री उतार निकस्या है कैई या कहें बडा बडी भई है कैई या कहै है कि चौवीस अवतार भये बतावें अरु चोईस पीर एकै कहै कहवा मात्र नामसंज्ञा है। पर वस्तु भेद नाहीं कैई गंगा जमुना सरस्वती गया गौमती इत्यादि सरताको तरन तरन मानें है। कई तो पुष्कर प्रयाग आदिने तरनतारन माने हैं। कैई गो आदिने तरन तारन माने हैं अरु गौ पूंछमे तेतीस कोट देव मानें कैई जल थल प्रथ्वी पवन वनसपति यानें परमेश्वरको रूप मानें कैईक भैरव क्षेत्रपाल हनूमान यानें देव माने कैई गनेसने पारवतीको पुत्र माने अरु चन्द्रमा समुद्रको पुत्र मानें ऐसा विचारे नाहीं। जो गंगादि

न्द्री जड अचेत कैसे तारसी अरु गाय तिर्यंच कैसे तारसी अरु ताकी पूछमें तेतीस कोड देव कैसे रहसी अरु पार्वतीके हाथी पुत्र कैसे भयो अरु समुद्र तो एकेन्द्री जल ताके चन्द्रमा पुत्र कैसे होसी । केईक हनूमानको पवनका पुत्र बतावें सो एकेन्द्री पवनके पचेन्द्री महापराक्रमी देव सारखा मनुष्य कैसे होसी यह हनूमान ही पवनंजयनामा मडलेश्वर राजा ताको पुत्र है । या बात सभवे है और बाल सुग्रीव हनूमानादि बांदर वसी महापराक्रमी विद्याधर राजा है । सो इनको पसू रूप बनावे सो इनके असी हजार विद्या है । ताकर अनेक अचरजकारी चेष्टा करें केईक या कहें ये तो बादर हैं सो ऐसा विचारें नाहीं कि तिर्यंचके ऐसा बल पराक्रम कैसे होसी अरु सग्राममे लडवाका वा रामचन्द्रादि राजान सूं बतलावाका ज्ञान कैसे होसी अरु मनुष्यन कैसी भाषा कैसे बोलसी अरु ऐसे ही रावनादि राक्षकवंसी विद्याधरोंका राजा अरु ताकी राक्षसी विद्या आदि हजारो विद्या ताकर बहु रूप बनाय नाना भातिकी क्रीडा करे ताकू कहें ये राक्षस हैं अरु कोई या कहे कनककी लका सो हनूमानने अग्नि सू जारी ऐसा विचारे नाही सुवर्ण की छी तो अग्नि सो कैसे जरी अरु कोइ या कहे है कि वासुकी राजा धरती फनपे धरै है अरु यह धरती सदा अचल है । अरु सुमेर भी अचल है परन्तु कृष्नजी सुमेरकूं राई कीनी अरु वासुकी राजाको नोतो कियो अरु समुद्र मथो तामे सू लक्ष्मीको स्तंभ मनि पारजातक कहिये फूल सुरा कहिये मदरा धनंतर वैद्य चन्द्रमा कामधेनु गाय ऐरापति हाथी रंभा कहिये देवांगना सात मुखको घोड़ो अमृत धनुष पचायन संख विष ये चौदा रत्न काढ़या मो

ऐसा विचारे नाहीं । वासुकी राजाने धरती तलेसू काढ़ लियो जब धरती कौनके आधार रही अरु सुमेर उखारो तब सास्वतो क्यों रहो अरु चन्द्रमा आदि चौदा रत्न अब ताईं समुद्रमाहीं छो ता चन्द्रमा विना आकासमे गमन कौन करै छो अरु चांदनी कौनकी छी अरु ऐके रोज आदि पन्द्रह तिथि वा उजालो अंधयारो व महीनो वरप याका प्रवर्न कौन छी अरु लक्षमी विना धनवान पुरुष कैसे छा सोतो ए प्रत्यक्ष ही विरुद्ध सो सत्य कैसे संभवे और केई कहे हैं । कोई राक्षस धरतीने पातालमे ले गयो पाछे वारह रूप धर पृथ्वीका उधार किया सो ऐसा विचार नाही जो यह पृथ्वी सास्वती तो राक्षस हर कैसे ले गयो कोई जा कहे सूर्य तो कास्यप राजाको पुत्र छे । अरु बुद्धि चन्द्रमाको पुत्र छे अरु शनीचर सूर्यको पुत्र छे अरु हनूमान अंजनीकुमारके कानकी आडीमें हो जन्मा अरु दोपदीकू कहे यह महा सती है परन्तु याके पाच पाडव भरतार है । सो ऐसा विचारे नाही के कास्यप राजाके ऐने मनका विमान गर्भमे कैसे रहसी अरु ये चन्द्रमा सूर्य तो विमान हैं ताके शनिचर वा बुद्धि कैसे होसी अरु कुमारा स्त्रीके कानकी आडी पुत्र कैसे होसी अरु द्रोपदीके पांच भर्तार हुवा तो सतीपनो कैसे रहो सो ये भी प्रत्यक्ष विरुद्ध सो या बात सत्य कैसे होसी इत्यादि भर्म बुद्धि कर जगत भरम रहा है। ताका वर्नन कहा ताईं कहिये सो या बात न्याय ही है । ससारी जीवाके भर्म बुद्धि न होय तो और कौनके होय कोई पंडित ज्ञानी पुरुषांके तो होवे नाहीं अरु ऐसे ही भरम बुद्धि पंडित ज्ञानी पुरुषांके होय तो संसारी जीवमें अरु पंडितोमें विशेष काई धर्म छे

लोकान्तर छे। भावार्थ-लोककी रीतिसो धर्मकी प्रवृत्ति उलटी है। लोककी प्रवृतिके अरु धर्मकी प्रवृत्तिके परस्पर विरुद्ध है। ऐसा जानना और भी आगे जगतकी विटवना दिखाइये है। कैईकतो वड पीपर आंबरी आदि नाना प्रकारके वृक्ष एकेन्द्रि वनस्पति ताकूं मनुष्य पचेन्द्री होय पूजे है। अरु पूजवाका फल चाहे सो घनो फल पावसी तो पचेन्द्री सो एकेन्द्री होसी सो यह जुक्त ही है। जो कोई हजार रुपयाको धनी है कोई वाकी घनी सेवा करे अरु वह घना गरिष्ट होय तो हजार रुपया दे घाले किछू और बध देवाने समर्थ नाही त्यो ही एकेन्द्रीकी पर्यायसों मर एकेन्द्री होसी अरु गाय हाथी घोडा वलद याने पूज्या या सारखा होसी सिवाय फल तो किछू मिले नाही। घट ही भले मिले, कैई लकडीके लत्ता लगाय गाडे पाछे ईंधन चोर चोर काट लेना भेला करे ताकूं माता वह पूजें बहुरि अग्नि कर जलावे महा बुरा गीत गावे माथामे धूल घाल विपरीतरूप नाचे मद खाय मदोन्मत्त होय काम विकाररूप प्रवर्ते माता मोसी बहिन भोजाई सव लाज न करें अरु आप नाना प्रकार परकी मार खाय पेलाने धूल पानी कीच कर मारे। अरु गर्धवकी सवारी करें। अरु हर्षित होय काकी भोजाई वा छोटा भाईकी स्त्री इत्यादि परस्त्रीनमे नाना प्रकारकी क्रीडा करें। अरु कामचेष्टा कर आकुल व्याकुल होय महा नर्कादिक पापने उपार्जें अरु आपकू धन्य माने अरु फेर परलोकमें ऐसा पाप कर शुभ फल चाहें ऐसे कहें म्हें होली माताने पूजा छा सो म्हाने आछो फल देसी ऐसी विटम्बना जगतमे आखा देखिये है। सो ऐसा विचार संसारी जीव करे नाही। सो ऐसा महा पाप

कार्य कर आछो फल कैसे लागसी सो यह होली कौन छै। सो होली एक साहूकारकी पुत्री छी सो दासीका निमित्तसूं पर पुरुषसो रति हुई सो वह पुरुषसूं निरंतर रमै पाछे होलीने अपने मनमे विचारी जो जा बात और तो कोई जाने नाहीं दासी जाने है। सो या भी कहीं कह देसी तो हमारो जमारो खराब होसी तातै दासीने मार न्खों ऐसो सो विचारकर पाछे ईने अग्निमे जलाय दीनी सो दासी मर व्यंतरी हुई पाछे व्यन्तरी अवधिकर पूर्वलो सारो वृतान्त जानो तब यह महा क्रोधकर नगरका सारा लोगांने रोग करि पीड़ित किया पाछे वे नगरके लोग वीनती करी जो भाई कोई देव होहु तो प्रगट होहु जो थे कहो सोई करतव्य करें तब जा प्रगट हुई अरु सारो पाछलो होलीको वृतान्त कहो तब नगरके लोगा कही अब थें सबने आज्ञा करो तू कहे सो म्हें सब मिल करसी तब देवी इनकूं नीमा कर कही काठकी तो होली बना और घास फूस लगाय वाल द्यो सब मिल जाके अपवाद गावो अरु वाकों भाड करो अरु माथे धूल घाल नाचो अरु जाकी वरस प्रति स्थापना करो तब वे भयका मारा नगरका लोग ऐसे ही करता भया सो जीवांने ऐसी विषय चेष्टा नीकी लागे ही तापर यह निमित्त मिल्या सर्व करवां लागा बहुरि सर्व देसोमें फैल गई सो अबारही चली आवे है। ऐसा जानना ऐसी गनगोर दिवाली राखी सांझी इत्यादि नाना प्रकारकी प्रवृति जगमे फैली छै। ताका निवारवाने कोई समर्थ नाहीं। और भी जीवांकी अज्ञान-ताका स्वरूप कहिये है। जो शीतला वोदरी आदि शरीर विषें

लोहका विकार है । तासु अज्ञानी जीव कहैं यह तो देवकी सक्ति उपजी है । इसी बुद्धि कर वाकू पूजें पाछें पूजता पूजता ही पुत्र पुत्री मर जाय अरु के न पूजे तिनको जीवता देखिये है । तो भी अज्ञानी जीव वाने देव ही माने और कहीं ए छादना कीला-गेडी चाकी पनेडी दहंडी पथरवाडी गायकी वादनी दवत वही कुलदेवी चौथ गाज बीज अनंत इत्यादिक घनी ही वस्तुने अनुराग कर पूजें है । अरु सती अउत पितर इत्यादिक कुदेवाका कहां ताई वर्नन करिये अब सर्व कुदेव तिनका सर्व पूजवावाला तिनका कौन बुद्धिवान पंडित वर्नन कर सके एक सर्वज्ञ जानवाने समर्थ छे । सो जा जीवने अज्ञान ताका वस कर वा लोभ दृष्टि कर कोई कार खोटा कार्य करे और कौन कौन परदीनता न भाषे अरु कौन कौन या मतमें मस्तक न धारे सो अवश्य नवावे ही नवावे सो यह मोहका महात्म है । अर मोह कर अनादि कालको संसार विषें भ्रमे हैं । अरु नर्क निगोदादिकका दुख सहे हैं । त्या दुखको वर्नन करवा समर्थ श्री गनधर देव भी नाहीं । तासो श्री गुरु परमदयालु कहैं हैं हे भाई हे पुत्र जो तू अपना हितने वांछे महा सुखी हुवा चाहे तो मिथ्यात्वका सेवन तज घनी कहवां कर काई विचक्षन पुरुष तो थोडामे ही समझ जाय अरु जे धीर पुरुष हैं त्यारने चाहे जितनो कहो वे एक भी न मांने सो यह न्याय ही है जैसी जीवकी होनहार होय तैसी ही बुद्धि उपजे । ऐसे संक्षेप मात्र कुदेवादिकका वर्नन किया आगे कुधर्मका वर्नन कहिये है । कुधर्म कोने कहिये जामे हिंसा झूठ चोरी कुशील परिग्रहकी वाञ्छामे धर्मस्थामें और दुष्ट जीव कू वैरयाकू सजा

करानी अरु भगताकी सहाई करनी अरु रागद्वेष रूप प्रवर्ति अरु अपनी बड़ाई परकी निन्दा ऐसा ज मैं वर्नन होय । पांचो इन्द्रियांके पोषनमें धर्म जानें । अरु तालाब कुआ बावड़ी आदि निवा नवा बागादि बनावनेमे धर्म मानें अरु श्राद्धका करवामे अरु रात्रिभोजन करवा विषैं धर्म मानें अरु जग्य करवा विषैं धर्म माने ताका जा विषै वर्नन होय अरुयों कर प्राग आदि तीर्थका करवा विषैं अरु विषय कर आसक्त नाना प्रकारके कुदेव ताका पूजवां विषैं धर्म मानें ताका जा विषैं वर्नन होय अरु दस प्रकारका खोटा दान ताका ब्योरो स्त्री दासी दासको दान हाथी घोड़ा ऊंट ऐसा बलध गाय भैंस अरु धरती ग्राम हवेली वहुरि छुरी कटारी वरछी तरवार लाठी राहु केतु गृहके निमित्त लोह तिल तेल वस्त्रादि देना अरु गाड़ा रथ वहल आदिका देना दंड वा रूपा सोना आदि धात वा ताका गहने बनाय देना काकड़ी खरबूजादिक फलका देना मरा सकरकंद सूरन आदि कंदमूलका देना अरु नाना प्रकार हरित कायका देना अरु ब्राह्मन भोजन करावना वहुरि कुल आदिन्यानकूं जिवावना लाहन आदिका करना इत्यादि अनेक प्रकारके खोटा दान हैं । ताका जामें वर्नन होय या न जानें कि ये दान पापका कारन हैं । हिंसा कषाय विषयकी आसक्तता वा तीव्रता या दान दिया होय छे । तातै ये दान पापका कारन छै जाका फल नर्कादिक है और जामें श्रृंगार गीत नृत्यादि अनेक प्रकारकी कला चतुराई हावभाव कटाक्ष जामें ताका वर्नन होय अरु वस्तुको स्वरूप और भांत अरु कहै और भांत ऐसा अजथार्थ पदार्थमें वर्नन होय इत्यादि जीवको भव भवमें दुखके कारन ताका जामें वर्नन होसी

परमार्थका किछू कथन नाहीं। ऐसे शास्त्रका नाम कुशास्त्र है सो या शास्त्रकूं सुन्यां अरु मान्यां जीवका नेमकर बुरा ही होय भला अंसमात्र भी नाहीं। ऐसे कुशास्त्रका स्वरूप कहा आगे कुगुरांका स्वरूप कहिये है। सो कैसे हैं कुगुरु कैईयक तो परिगृही है कैईक महाक्रोधी हैं, कैईक महामानी हैं. कैईक महा मायाचारी हैं कैईक महां लोभी हैं, कैई महां कामी परस्त्री भोगता सके नाहीं। बहुरि कैसे हैं कुगुरु कैई पंचाग्नकर घना जीव बारें हैं। कैईक अनछाना पानी सूं सपड़ धर्म माने हैं। कैईक सारा शरीरकूं खाक लगावें हैं। कैई जटा बधावें हैं कैईक ठाड़ेस्वरी कहिये एक वा दोय हाथ ऊंचा किये हैं। कैईक अग्नि ऊपर औंधा मुख किये हैं कैईक ग्रीष्म समय बालू रेतमें लोटे हैं कैई झगार कंथा पहरे हैं। कैईक बाघंबर धारें हैं। कैईक तिलक छापा धारे हैं। कैईक लंबी माला गले धारें कैईक खे का रंगा वस्त्र धारें। कैईक स्वेत वस्त्र धारे हैं कैईक लाल वस्त्र धारें हैं। कैईक कटाटई धारें कैई घासका कपड़ा धारें कैईक मृगकी चाम धारें हैं। कैईक सिंहकी खाल धारें हैं। कैईक नग्न होय नाना प्रकारके वस्त्र धारें हैं। कैईक बनफल खाय हैं कैईक कूकरा आदि तिर्यंच राखे हैं। कैईक मौन धारे हैं कैईक पवन चढ़ावें हैं। कैईक जोतिस वैद्यक मंत्र यंत्र तंत्र करे हैं। कैईक लोकनको दिखावनेके लिये ध्यान धारें हैं। कैईक आपकूं महन्त माने हैं कैईक आपकूं सिद्ध माने हैं। कैईक आपकूं पुजाया चाहें कैईक रागादिकका पूज्या थका राजी होय हैं। कैईक न पूजे तापर क्रोध करे कैई कान फड़ाय भगुआ वस्त्र धारें कैईक मठ बंध है

लाखों रुपैयाकी दौलत राखे हैं । अरु गुरूकी ठमक राखे है अरु भोला जीवोंने पगां पड़ावै हैं । इत्यादि नाना प्रकारके कुगुरु पाईये है । तांकूं कहा तांई कहिये । और जुगति कहिये है । जो नंगा रहें कल्याण होय तो तिर्यंच सास्वता नंगा रहे हैं याका कल्यान क्यो न होसी जामों यथार्थ प्रतीत विना सर्व निष्फल है । जैसे एका विना विंदी कामकी नाहीं और श्रीगुरु कहें हैं हे पुत्र तूने कोय वापको बेटो कहे तो दुख लगे । अरु कोय गुरु थारे कहे तो रत्नमात्र भी दुख न लहै । सो माता पिता कांइ स्वारथका सगा अरु वासुं एक पर्यायका सम्बन्ध ताकी तो प्यारे ऐसी ममत्व बुद्धि छै । अरु गुरु जाका सेवनतैं जरा मरनका दुख विलय जाय अरु स्वर्ग मोक्षकी प्राप्ति होय ताकी तुम्हारे या प्रतीत तासूं थांरी परनति थानें दुखदाई नाहीं । तासूं जो तूं अपना हितने वांछे छै तो एक सर्वज्ञ वीतराग जो जिनेश्वर देव ताका वचन अंगीकार कर अरु ताके वचनके अनुसार देव गुरु धर्मका श्रद्धान करि । इति कुदेवादिक वर्नन संपूर्ण भया ।

॥ इति श्री पं० रायमल्लजी कृत श्रीज्ञानानंद श्रावकाचार ग्रन्थ संपूर्ण । शुभं मगं ॥

सद्बोध रत्नाकर कार्यालय (सागर) में मिलने-वाली पुस्तकोंका

सूचीपत्र।

आदिपुराण (महापुराण पूर्ण) बडे टाइप औ' मूल्य १६)
हरिवंशपुराण-(जैन रामायण) पक्की जिल्द और मूल्य ६)
भारतवर्षीय दि० जैन डारेक्टरी, मूल्य ८)
रत्नकरण्डश्रावकाचार मूल्य ९)
पद्मनदिपच्चीसी मूल्य ९)
ज्ञानार्णव पक्की जिल्द और मूल्य ४)
स्याद्वादमंजरी संस्कृत और भाषाटीका सहित मूल्य ४)
आराधना-कथाकोष-पृ० ११६२, मूल्य सिर्फ ४)
जैन सम्प्रदायशिक्षा-पक्की जिल्द मू० ३।।।)
अर्थ प्रकाशिका-उत्तम छपाई, मोटे कागज और ३।।)
प्रवचनसार-भाषाटीका मू० ३)
पुण्यास्रवकथाकोष-पृष्ठ ३४० मू० ३)
सागारधर्मामृत (पं० आशाधरकृत पूर्ण ग्रंथ) मू० २।।)
नाटक समयसार-मू० २।।।)
धर्मप्रश्नोत्तर (श्री सकलकीर्तिकृत) मू० ॰)
श्रेणिकमहाराजका बृहत् जीवनचरित्र-मू० सिर्फ १।।)
पाण्डव पुराण-छन्दबद्ध २।।।)
चारुदत्त चरित्र मू० १) क्रियाकोष- मू० १)

दयानंदछलकपटदर्पण-(आर्यसमाजका खंडन) २)
पुरुषार्थसिद्धयुपाय-भाषाटीकासहित। मूल्य १)
पंचास्तिकाय-मूल्य २)
सप्तभंगीतरंगिणी-भाषाटीकासहित। मू० १)
बृहद्द्रव्यसंग्रह-भाषाटीका। मू० २)
गोम्मटसार-मूल्य जीवकाण्ड २॥) कर्मकाण्ड २)
त्रिलोकसार-(भाषाटीका) पक्की जिल्द मूल्य ४॥)
लब्धिसार (क्षपणासारगर्भित) मूल्य १॥)
परमात्म-प्रकाश भाषाटीकासहित मूल्य ३)
जिनशतक-मूल्य ॥।)
तत्वज्ञानतरंगिणी-हिन्दी भाषाटीका मू० १॥)
आत्मप्रबोध-हिन्दी अनुवाद मू० २॥)
सुभाषितरत्नसन्दोह-भाषाटीका। मू० २॥)
योगसार-भाषाटीका मूल्य २)
परमाध्यात्मतरंगिणी-भाषावचनिका। मूल्य ३॥)
मकरध्वजपराजय-हिन्दी अनुवाद। मू० ॥=)
आराधनासार भाषाटीका-मू० १।)
जिनदत्तचरित-मू० १)
संस्कृत-प्रवेशिनी-मू० २)
धर्मरत्नोद्योत-कविताग्रन्थ। मू० १)
जैनबालबोधक-प्रथमभाग मू० ।) द्वितीयभाग ॥)
भाषानित्यपाठसंग्रह-मू० ॥।=)
पंचपरमेष्ठीपूजा-मू० ।)

त्रैवर्णिकाचार–मराठी टीका मू० ३)

पंचाध्यायी–भाषाटीका सहित पक्की जिल्द मू० ५॥)

ज्ञानानद श्रावकाचार-मू० १॥)

भक्तामरकथा–मूल्य १)

चन्द्रप्रभचरित–हिन्दी अनुवाद । मूल्य १)

नेमिपुराण–हिन्दीमे अनुवाद । मू० २)

सम्यक्त्व कौमुदी–मू० १=)

सुदर्शनचरित्र–मू० ॥–)

यशोधरचरित–मूल्य ।)

पवनदूत–हिन्दी अनुवाद । मू० ।)

श्रेणिकचरितसार–≡) सुकुमालचरितसार–)॥

अकलंकचरित्र-मूल्य ≡)

नागकुमारचरित्र–मूल्य ।)

चौवीसठाणा–चर्चा चौवीस दण्डकसहित । मूल्य ॥)

छहढालासार्थ–≡) नियम पोथी)॥

हिन्दी भक्तामर–)॥ हिन्दी कल्याणमदिर–)॥

कर्मदहनविधान–मू० पांच आने

अनुभवानन्द–अध्यात्म ग्रन्थ मू० ।)

सुशीला उपन्यास–मू० १।)

गृहस्थ धर्म–मू० १=)

समयसार–शीतलप्रसादजी कृत । टीका मू० २॥)

दशलक्षण धर्म मू० ।–)

सोलहकारणधर्म मू० ।=)

श्रीपालचरित नंदीश्वरव्रतका अपूर्व महात्म्य मू० ॥।

महावीरचरित हिन्दी अनुवाद मू० १॥)

भारत दि० जैनयात्रादर्पण मू० २)

धर्मसंग्रहश्रावकाचार भाषाटीका मू० २)

जम्बूस्वामी चरित ।)

षट्पाहुड मू० १)

वसुनदिश्रावकाचार मू० ॥)

परमात्मप्रकाश मू० ।=)

पुरुषार्थसिद्ध्युपाय भाषाटीका मू० ।)

आप्तपरीक्षा भाषाटीका मू० ।-)

जैन तीर्थयात्रा विवरण नकशा सहित मू० ।=)

समयसार नाटक भाषाटीका सहित मू० २॥)

सत्यार्थयज्ञ मू० ॥)

संशयतिमिरप्रदीप (तेरहपंथका खण्डन) मू० ॥।

मनमोदन पंचशती मू० १=)

सिद्धक्षेत्रपूजासंग्रह-मू० ॥)

पञ्चमंगल सार्थ मू० ≡)

पूजाविधानसंग्रह मू० ।=)

अठारहनाते मू० -)

इन्द्रियपराजय शतक मूल और हिंदी अनुवाद मू० =)

कल्याणमंदिर स्तोत्र मू० ।)

मोक्षमार्गकी कहानियां मू० ।≡)

बालबोधजैनधर्मशिक्षक प्रथम भाग -॥, द्वितीयभाग =)

देवदर्शन मू० -)
पंचामृत प्रक्षाल अर्थसहित मू० -)।
प्रतिष्ठासारोद्धार मू० १।।।=)
तीसचौबीसी पाठ पं० वृंदावनजीकृत मू० ३)
परीक्षामुख भाषाटीका ।=)
हिंदी भक्तामर और प्राणप्रिय काव्य मू० -)
गिरनार-महात्म्य ।।-)
बालबोध जैनधर्म प्रथम भाग)।।, द्वितीय भाग -, तृतीय भाग=), चतुर्थ भाग ।-)
सीताचरित्र≡)
प्रद्युम्नचरितसार ।=)
द्वादशानुप्रेक्षा -)
यशोधरचरित भाषाटीका २)
तेरहद्वीप पूजाविधान २।।)
प्राचीन जैनइतिहास पहला भाग मू० ।।।)
श्राविकाधर्म =)
धन्यकुमारचरित्र ।।।)
पंचकल्याण विधान पं० बखतावरलालकृत मू० ।=)
जैनार्णव। १०० पाठोंका सग्रह। मू० १)
जैनसिद्धान्त संग्रह–१०० विषयोंका सग्रह मू० १।।)
सम्मेदशिखर महात्म्य–(पूजनविधान) मू० ।)
आत्मानुशासन–पक्की जिल्द २)
चौबीसीपाठ मूल्य ।=)

जिनेन्द्र पंचकल्याणक-मूल्य ‒)
जैनपदसंग्रह पहला भाग-मू० ।≈)
जैनपदसंग्रह दूसरा भाग-मू० ।)
जैनविवाहविधि-मू० ≈)
तत्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका-मूल्य ।।।≈)
दर्शनकथा-भारामल्लजीकृत मू० साढे तीन आने
दर्शनपाठ मू० ‒)
भक्तामर और तत्वार्थसूत्र-मू० ≈)
दानकथा-(चार दानकथा) मू० ≈)
द्रव्यसंग्रह-मू० पांच आने
द्यानतविलास-(धर्मविलास) मू० १)
निशिभोजनकथा-मू० ≈) निर्वाणकाण्ड-मू० ≈)
नित्यनियमपूजा संस्कृत तथा भाषा-मू० ।)
नियमसार-भाषाटीकासहित मू० २)
नेमिचरित-मूल्य ।) त्रेपन क्रिया विवरण ‒)।।)
न्यायदीपिका-मू० ।।।)
पार्श्वपुराण-मू० १)
प्रवचनसार परमागम-मू० १।)
भक्तामरस्तोत्र सार्थ मूल्य ।‒)
भाषापूजासंग्रह-मू० ।।≈)
समाधिमरण और मृत्युमहोत्सव-मू० ‒)।।
मोक्षमार्गप्रकाशक-मू० १।।)
रत्नकरंड श्रावकाचार सान्वयार्थ-मू० ।≈)

विनती संग्रह–मू० ।)

वृन्दावन–विलास–मू० ।||)

सामायिक पाठ और आलोचनापाठ–मू० एक आना ।

सूक्तमुक्तावली मूल्य छह आना ।

ज्ञानसूर्योदय नाटक–मु० ||)

शत्रुंजय पूजनादि गुटका |≡)

जिनगुणगायनमंजरी ।) रविव्रत कथा –)

सल्लेखना–मृत्युमहोत्सव ।) दीपमालिका विधान (दीवाली पूजन) –)

बृहत्स्वयम्भूस्तोत्र (अर्थ सहित) ||) बुधजन सतसई ।=)

महावीर चरित्र (पूजन सहित) –)||

जैन उपदेशी गायन (प्र० भाग) = द्वि० भाग ≡)

प्रातःस्मरण मंगल पाठ –)

जैन स्त्रीशिक्षा प्र. भाग –)|| द्वी भाग =)

श्राविका धर्म =)

जैन नित्य पाठसंग्रह (रेशमी गुटका) ||

प्रभंजन चरित्र ।)

धर्मचर्चा संग्रह ||)

आराधना स्वरूप ।)

केवल संस्कृत ग्रन्थ।

लघीयस्त्रयादिसंग्रह मू० ।=)

सागारधर्मामृत मू० |≡)